कुशवाहा कान्त

परदेसी

पहला भाग

"छैला !"

"चल हट !...छोड़ मेरा रास्ता !"

"ऐसे तो हटूंगी नहीं मेरे रसिया !...पाँव की धूल तो हूँ नहीं कि एक चुल्लू पानी से धो डालोगे। मैं तो आँख की किरकिरी हूँ, जिसे आसानी से नहीं निकाल पाओगे अलबेले !"

"चुप रह कमीनी !...हटती है या नहीं ?"

"हट जाऊँगी, जल्दी क्या है ? कोई नागिन तो हूँ नहीं कि तुम्हारे पाँवों में घेरा डाले पड़ी रहूँगी। मैं तो हवा का झोंका हूँ, कभी यहाँ कभी वहाँ...हाँ, यह तो बताओ, इतने सबेरे किधर चल दिये मेरे राजा, हाथ में महुवर लेकर ? आज किस नागिन पर डोरे डालने का इरादा है तुम्हारा, इस महुवर की मीठी तान सुना-कर ?"

"देख लजारो ! तेरी यह बेवक्त की जिद मुझे अच्छी नहीं लगती। जिस दिन सबेरे-सबेरे तेरी सूरत देख लेता हूँ, उस्ताद कसम, उस दिन मेरा कोई भी काम नहीं हो पाता।...अच्छा हट जा तू रास्ते से...मुझे साँप पकड़ने जाना है।"

"अय-हय ! साँप पकड़ने के लिए इतनी उतावली ! कभी कोई बड़ा-सा अजगर पकड़ लाओ तो गाँव-भर की दावत ही हो जाय किसी दिन...सच कहती हूँ टिकोरा ! अजगर का मांस खाये बहुत दिन हो चुके हैं। पिछले महीने तुम्हीं तो पकड़ लाये थे एक...और यह देखो, गेहुँवन के चमड़े की यह चोली तो मेरी फट ही चली। ...क्या अपनी लजारो का तुम्हें कुछ भी खयाल नहीं रसिया ? मेरे मन की भी तो कर दिया करो कभी !"

"कर दूंगा रे, कर दूंगा तेरे मन की भी, मगर इस तरह हर

वक्त मेरे सिर पर फन निकालकर मत खड़ी हुआ कर। कभी अजगर मिला तो लाकर तेरी जीभ तर कर दूंगा···अच्छा, अब हट मेरे सामने से !"

"अभी नहीं···एक बात और···"

"पूछ !"

"मेरे कब बनोगे राजा ? अब तो बहुत दिन हो गये···मैं तुम्हारे लिए तड़पती रहती हूँ और तुम हो कि दिन-रात साँपों से ही अपनी तबीयत बहलाने में लगे रहते हो।"

"क्या बकवास करती है तू भी लजारो ! हम सँपेरे हैं न, साँप-अजगर से खेलना तो हमारा खानदानी पेशा ही है। तू भी तो सँपेरे की ही बिटिया है, फिर ऐसा क्यों कहती है रे कमीनी ? परसों तू भी तो उस्ताद से कोई मन्तर सीख रही थी। झूठ कहता हूँ ?"

"नहीं तो !···जब तुम साँप पकड़ने के इतने मन्तर-जन्तर जानते हो तो तुम्हारी बनने के लिए मुझे भी दो-चार सीखने ही चाहिये···कौन जाने कभी मुझे परखने के लिए तुम कोई साँप ही फेंक दो मुझपर और वह मुझे काट खाये, तब ?"

"हहहह ! सँपेरों के खानदान में पैदा होकर तू सिर्फ अजगर ही खाना सीख पाई। उस्ताद की बिटिया को देख न, क्या मजे से गेहुँअन का फन हाथ में दाब लेती है !"

"उस मुई मैना का नाम न लो मेरे सामने। उसीने तुम्हारा दिमाग फिरा दिया है। तुम मैना को अपनी बनाकर गाँव का उस्ताद बनने का जो सपना देख रहे हो, उसे पूरा नहीं होने दूँगी मैं कभी, इसे जान रखो !"

"मैं जानता हूँ तेरी हस्ती, तू मेरी राह का काँटा है··मगर यह न भूल, टिकोरा इतनी हस्ती रखता है कि उस्ताद भी झख मारें। मेरे आगे तेरी एक न चलेगी।"

बीसों मील घने जंगल के बीच मील-भर का एक छोटा-सा मैदान और उसमें बसा हुआ भयानक सँपेरों का एक मामूली-सा गाँव···

आधुनिक जगत् के सम्पर्क से दूर···

साँप पकड़ना, उनका मांस खाना और उनका चमड़ा किसी

आते-जाते रोजगारी के हाथ बेच देना अच्छे दामों पर, यही गाँव-वालों का काम था।

कभी-कभी पिटारियों में साँप बन्द कर गाँव के युवक-युवतियों का गिरोह शहर चला जाता और बाबू लोगों को साँप के तमाशे दिखा कुछ पैसे वसूल कर लाता। कभी कोई चतुर सँपेरा, शहरी लोगों को साँप काटने की दवा भी बेच आता, जो बिल्कुल बेकार रहती।

यहाँवालों के पास काटने की दवा न थी, मन्त्र थे, जिनके बल पर वे लोग भयानक-से-भयानक साँप का विष उतार सकते थे। साँप के जहर से बीसों दिन पहले मरे हुए व्यक्ति को जिन्दा कर सकते थे।

"मान जाओ टिकोरा!... मुझे अपनी बना लो मेरे छैला!"

"चल हट! कभी अपना मुँह भी देखा है?"

"देखती तो हूँ रोज ही, तुम्हारी आँखों में अपनी सूरत।"

"मेरी आँखों में नहीं, कभी किसी गेहुँवन की आँखों में देख तब पता चलेगा।"

यह थी लजारो!—

गाँव की एक शोख लड़की, हर किसी के आगे अपना दिल फेंक चलनेवाली। जब कभी कमर पर बल डाल, आँखों के आगे से निकलती तो सँपेरे नागिनों से खेलना भूल जाते।

हवा में फहराते हुए सिर के बाल, सीने पर कसी हुई साँप के मुलायम चमड़े की चोली, कमर में बँधा हुआ अजगर के चमड़े का घुटनों तक लहँगा और सारा बदन खुला, जिसपर खेलती हुई पन्द्रह साल की अलस जवानी!

और वह था टिकोरा!—

गाँव का एक खूँखार सँपेरा! सभी लोग उसकी छाया तक से भी डरते थे। सँपेरों के उस्ताद का भी अपमान कर दिया करता था कभी-कभी।

हट्टा-कट्टा शरीर, आँखें साँपों की-सी चमकदार और बदन पर वही अजगर के चमड़े की पोशाक!

"लो मैं हट जाती हूँ...ओ री मेरी दैया! इस तरह घूरते हो

मुझे तुम कि बाप रे बाप ! तभी तो इतने बड़े-बड़े अजगर तुम्हारी आँखों की चमक से पस्त हो जाते हैं।"

"अब आई तू ठीक रास्ते पर।" टिकोरा बोला—"शैतान बगैर चोट खाये मानती ही नहीं···अच्छा तो मैं चला लजारो !"

'मेरे लिए अजगर लाना न भूलना···मैं मसाला पीस रखूँगी।" जाते हुए टिकोरा को पुकारकर कहा लजारो ने।

"अच्छा !" दूर होते हुए टिकोरा की आवाज आई।

मैदान पीछे छूटता गया और दूर-दूर तक फैला हुआ घना जंगल नजदीक आने लगा।

हाथ में साँपों को रिझानेवाली तुम्बी लिये बढ़ा जा रहा था टिकोरा।

लजारो ने व्यर्थ की बातों में उसका काफी समय नष्ट कर डाला था इसलिए वह अपने लम्बे-लम्बे कदम तेजी से बढ़ाये जा रहा था।

जंगल अब काफी घना हो चला था। विशाल पेड़ों पर बैठे हुए कितने ही अजीब तरह के बड़े-बड़े पक्षी अपने पर फटफटा रहे थे। वृक्षों से लिपटकर शान्त पड़ी हुई लताएँ हाथ बढ़ाकर टिकोरा का पैर पकड़ लेती थीं और वह गिरते-गिरते बचकर क्रोध से उन्हें दूर हटा देता था।

दो मील के बाद ही जंगल की सघन भयानकता बढ़ गई।

अब टिकोरा मुश्किल से आगे बढ़ पाता था। पग-पग पर उसका पैर उलझता था। शरीर में कांटे चुभते थे। सिर किसी डाल से टकराता था। जमीन पर पड़े हुए सूखे पत्ते अजीब स्वर से चीख उठते थे।

फिर भी टिकोरा बढ़ा ही जा रहा था।

एकाएक वह चमककर रुक गया।

उस भयानक जंगल में कोई अजीब चीज देखी थी उसने।

एक पेड़ था पीपल का—चारों ओर से सघन झाड़ियों से घिरा हुआ।

बड़ी कठिनता से पहुँच पाया वह उस पीपल के नीचे।

जमीन पर झुककर उसने कोई चीज उठाई। गौर से देखने लगा वह। आंखों में अगम आश्चर्य भर उठा था। बड़ी देर तक

वह उस चीज को ध्यानपूर्वक देखता रहा।

फिर बड़बड़ा उठा—"या उस्ताद! इस घने जंगल में यह कीमती जूता! सो भी सिर्फ़ एक!···इसका जोड़ा क्या हुआ?"

टिकोरा नजरें घुमाकर इधर-उधर खोजने लगा उस कीमती जूते का जोड़ा। मगर बहुत देखने पर भी उसे दूसरा जूता नहीं दिखाई दिया।

टिकोरा ने अपने हाथ में पकड़े हुए उस अकेले जूते पर फिर नजर डाली।

साँभर के कीमती चमड़े का आधुनिक ढंग से बना हुआ वह जूता बड़ा ही आकर्षक था। किसी बड़े घर के नौजवान के पैरों की शोभा बढ़ाता रहा होगा।

मगर यह अकेला कैसे पड़ गया?

इसका साथी कहाँ गया?

हो सकता है कोई साहब यहाँ घूमने आये रहे हों और किसी जंगली जन्तु पर निगाह पड़ते ही छोड़ भागे हों, एक जूता पहने हुए और एक यहाँ छोड़कर!

मगर ऐसे भयानक जंगल में कोई शहरी बाबू घूमने ही क्यों आने लगे?

टिकोरा साँप पकड़ना भूल गया और पीपल के तने का सहारा ले सुस्ताने लगा। अब भी वह रह-रहकर उस अनोखे जूते को देखता जा रहा था।

तभी पीछे की झाड़ी से एक धीमी सरसराहट सुनाई पड़ी।

टिकोरा चौंक उठा।

शायद पीछे कोई भयानक जन्तु छिपा है···या हो सकता है यह जूतेवाला ही हो!

टिकोरा ने सँभलना चाहा परन्तु सँभल न पाया।

किसी ने एक मोटी रस्सी से उसकी कमर पेड़ के तने से बाँध दी। एक ही क्षण में यह सब हो गया कि बेचारा टिकोरा कोई फुर्ती भी न दिखा सका।

टिकोरा विवश था, फिर भी आकस्मिक विपत्ति से अचेतन नहीं हो पाया था।

उसकी दृष्टि जब अपनी कमर की मोटी रस्सी पर पड़ी तो उसके मुख से चीख निकलते-निकलते बची।

वह रस्सी नहीं थी। किसी मनुष्य-भक्षी भयानक अजगर का शरीर था, इतना मोटा कि पेड़ के तने-जैसा।

टिकोरा की दृष्टि तेजी से ऊपर गई।

उसके सिर से कुछ ही ऊपर उस दीर्घाकार अजगर का खुला मुख था और उसकी लपलपाती हुई बड़ी सी जीभ उसके समूचे शरीर का एक ही ग्रास बनाने को प्रस्तुत थी।

उसका मुख इतना बड़ा था कि उसमें गाय का एक बछड़ा पूरा समा जाय।

यद्यपि टिकोरा ने अपने सँपेरा-जीवन में इतना बड़ा अजगर कभी नहीं देखा था, फिर भी वह घबड़ाया नहीं।

पहले से यदि वह जानता होता कि उसके ऊपर होता हुआ यह आक्रमण किसी अजगर का है तो इतना न घबड़ाता। साँपों-अजगरों से खेलना, युद्ध करना तो उसका जन्मजात पेशा ही था।

अब टिकोरा सँभल चुका था। शत्रु भयानक है तो क्या! टिकोरा गुफा-जैसे उसके मुख से डरनेवाला नहीं। इस भयानक जन्तु के पेट में जाकर भी वह बाहर निकलने की ताकत रखता है।

उसने अपनी कमर में बँधे एक बड़े-से छुरे पर नजर डाली।

उसकी कमर का बन्धन अब और भी कसता जा रहा था। अगर वह जल्दी नहीं करता तो भीमकाय अजगर अपना शरीर कसते-कसते उसकी जान ही ले लेगा।

अब उस अजगर का मुख और भी फैल गया था और टिकोरा के सिर से केवल एक बालिश्त ऊपर लटक रहा था।

टिकोरा ने बड़ी फुर्ती से अपने हाथ का छुरा अजगर के जबड़े में घुसेड़ दिया।

एक तीव्र फुफकार की आवाज आई और अजगर का मुख कुछ दूर हो गया। शायद वह भयंकर जन्तु भी समझ गया था कि उसका शत्रु काफी खतरनाक है।

अजगर की छोटी-छोटी आँखें टिकोरा की ही ओर थीं। टिकोरा ने भी अपने नेत्र उसकी आँखों में डाल दिये। दोनों प्रतिद्वन्द्वी एक-

दूसरे की ताकत आजमाने लगे।

टिकोरा मन-ही-मन कोई मन्त्र बुदबुदा रहा था। आँखें उसकी अजगर की आँखों से टक्कर ले रही थीं।

जब कभी अजगर का सिर उसके पास आ जाता तो वह छुरे का वार कर देता और अजगर फुफकारकर अपना सिर पीछे हटा लेता।

काफी देर तक यह क्रम चलता रहा। टिकोरा बराबर बुद-बुदाता जा रहा था। सँपेरा उस दुर्दान्त अजगर को वश में करने के लिए मन्त्र पढ़ रहा था।

धीरे-धीरे अजगर का खुला मुँह बन्द होने लगा और थोड़ी ही देर में एकदम बन्द हो गया। खुली हुई छोटी-छोटी आँखें भी धीरे-धीरे बेहोश-सी होकर ढँपने लगीं। टिकोरा की कमर का बन्धन भी ढीला हो चला।

देखते-देखते अजगर का मोटा शरीर मदहोश हो लुढ़ककर टिकोरा के सामने आ गिरा।

विजयी टिकोरा के मुख से खुशी की चीख निकल पड़ी—

"वह मारा !...आ गये न बच्चू फन्दे में ? आज लज्जारो तो क्या, सारे गाँव का पेट भर जायगा...लबालब !...पचीस-तीस मन से क्या कम गूदा होगा इस शरीर में !"

टिकोरा ने हाथ का छुरा कमर में खोंसा, अकेला जूता हाथ में उठाया, फिर अजगर से बोला, "चलो बेटा ! आज तो तुम्हारे साथ धीरे-धीरे चलते-चलते शायद शाम तक गाँव पहुँच पाऊँगा।"

अजगर अबतक निश्चेष्ट पड़ा हुआ था।

टिकोरा ने तुम्बी मुँह से लगाई और फूँक मारी।

बड़ा ही सुरीला मनमोहक स्वर निकलकर पेड़ों की चोटियों पर थिरकने लगा। पत्ते झूम-झूमकर उस मादक ध्वनि का स्वागत करने लगे। चिड़ियाँ दूर-दूर से उड़कर पीपल की डाल पर बैठने लगीं।

थोड़ी ही देर बाद अजगर ने अँगड़ाई ली। आँखें खुल गईं उसकी।

"होश में आ गये बेटा ?...चलो !" टिकोरा ने कहा।

आगे-आगे तुम्बी बजाता हुआ टिकोरा चला और पीछे-पीछे घिसटता हुआ अजगर।

मोटा शरीर होने के कारण अजगर की रफ्तार इतनी कम थी कि टिकोरा को रह-रहकर क्रोध आ जाता था और वह लगता था अजगर को पैरों से ठोकर मारने।

तुम्बी बजाते-बजाते टिकोरा का मुँह थक गया था, फिर भी अजगर को गाँव तक लाने के लिए तुम्बी का बजाना आवश्यक था।

आखिर दूर से ही गाँव की आबादी चमकी।

टिकोरा और तेज चला।

कोने पर ही मिल गई लजारो।

"तू यहाँ खड़ी है ?" पूछा टिकोरा ने।

"हाँ !"

"कब से ?"

"तब से ही !" लजारो ने कहा—"तुम्हारी राह देखते-देखते आँखें थक गईं रसिया ! कुछ भी तो तरस खाओ अपनी इस पुजारिन पर। सवेरे से यहीं खड़ी हूँ। बाप-रे-बाप ! अरी मैया !"

बातें करते-करते लजारो की निगाह टिकोरा के कुछ पीछे पड़े हुए भीमकाय अजगर पर पड़ गई और चीखकर वह दूर भागी।

"डर मत रे लजारो !…तेरा अजगर लाया हूँ, देख न !… इधर आ हरामी !"

लजारो डरते-डरते कुछ और पास आई।

"दैया रे ! इतना मोटा अजगर तुम पकड़ कैसे लाये रे अलबेले ?"

"भला तू कहे और मैं न जाऊँ ?…जा, गाँव-भर को खबर कर दे—आज रात नाच, गाना, शराब…हाहाहा !…बड़ा मजा आयेगा लजारो !"

टिकोरा इतनी भयानक हँसी हँसा कि चाहनेवाली लजारो भी डर गई।

"ए जी ! तुम ऐसे न हँसा करो, मुझे डर लगता है।" लजारो ने कहा—"तुम आओ, मैं दौड़कर सबको खबर करती हूँ।"

और लजारो दौड़ गई।

टिकोरा आगे बढ़ा। अजगर भी पीछे-पीछे चला।

थोड़ी ही देर बाद गाँव से सैकड़ों तुम्बियों के बजने की मीठी-मीठी आवाज आने लगी। लजारो के मुख से इतने बड़े अजगर का पकड़ा जाना सुनकर सभी हर्ष से नाचने लगे थे।

टिकोरा जब गाँव के उस्ताद के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ सारा गाँव ही उमड़ा दीख पड़ा। बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी खुशी-भरी नजर से आते हुए टिकोरा और अजगर को देख रहे थे।

"उस्ताद···ओ उस्ताद! ···टिकोरा आ गया···देखो, कितना बड़ा अजगर लाया है!" कितने ही लोग चिल्ला उठे।

तबतक टिकोरा भी आ पहुँचा।

"उस्ताद कहाँ है?" उसने पूछा।

"घर में हैं···आते ही होंगे।" किसी ने कहा।

उसी समय सामने की झोंपड़ी से हाथ में लाठी लिये हुए पचास के ऊपर का एक वृद्ध निकला।

वही था सँपेरों के गाँव का सरदार—उस्ताद फेरई।

दुबला-पतला शरीर, लम्बा कद, झुर्रीदार चमड़ा, आखों की भौं तक के बाल सफेद, आयु के भार से झुकी कमान-जैसी कमर।

उस्ताद को देखते ही सब अदब से खड़े हो गये। तुम्बियों का बजना बन्द हो गया। शोर थम गया।

टिकोरा सामने आया।

"टिकोरा! आज क्या पकड़ लाया है रे?" उम्र के अन्दाज से उस्ताद का स्वर काँप रहा था।

"एक अजीब जानवर लाया हूँ उस्ताद!" टिकोरा ने कहा—'पचीस-तीस मन का होगा ही। गाँववाले दो दिनों तक खूब पेट भरेंगे। देख लो, वह क्या पड़ा है जमीन पर!"

"कुछ-कुछ देख रहा हूँ टिकोरा! आखें अबतक थोड़ा-बहुत साथ देती चल रही हैं···काफी बड़ा तो है रे! कहाँ से पा गया बेटे?"

"शिकार कर लाया उस्ताद! ···यह तो कहो बच गया, वर्ना यह तो खुद मुझे ही निगल जाना चाहता था···तो आज रात जलसा पक्का रहा!"

"जैसी सबकी मर्जी!" उस्ताद ने कहा—"सबको थोड़ा-थोड़ा

काटकर दे दो। उस नीम के पेड़ के नीचे दो महीने पहले जो घड़ा जमीन में रखा गया था, उसे खोदकर निकाल लो।"

घड़े से उस्ताद का तात्पर्य शराब के घड़े से था।

"सब लोग टोकरा लाओ!" टिकोरा ने गाँववालों से कहा।

भगदड़ मच गई। सब अपना-अपना टोकरा लेकर वहाँ पहले पहुँचना चाहते थे।

"वह तेरे हाथ में क्या है रे?" उस्ताद ने टिकोरा से पूछा।

"यह?...जूना है उस्ताद! बड़ा नसीफ, बड़ा शानदार!... मगर इसका जोड़ा नहीं है।"

"अकेला ही है बेचारा? तब तो तू पहन भी नहीं सकता इसे। कहाँ मिल गया यह तुझे?"

इसी को देखकर तो रुका था उस्ताद, कि यह अजगर दीख पड़ा...एक पीपल के पेड़ के नीचे यह जूता पड़ा था। इसका जोड़ा खोज रहा था मगर वह तो मिला नहीं, यह अजगर ही मिल गया।" टिकोरा बोला।

उस्ताद चुप रहकर कुछ सोचने लगा।

तबतक टोकरे लिये हुए गाँववाले आ पहुँचे।

"तो इसे काटूँ उस्ताद?" टिकोरा ने पूछा।

"हाँ, पहले इसकी गर्दन काट डाल," उस्ताद ने कहा—"फिर धीरे से पेट चीर, ताकि खाल खराब न हो..बड़ी लम्बी-चौड़ी खाल होगी बेटा! उस कोने में कटार रक्खी है, जाकर उठा ला। मैना, ओ मैना! जरा टिकोरा को कटार तो दे दे बेटी!"

आँखों में तीर और हाथों में कटार लिये बूढ़े उस्ताद फेरई की जवान बेटी मैना झोपड़े से बाहर निकली।

कटार पकड़ते-पकड़ते ही आँखों के तीर से टिकोरा का कलेजा घायल हो गया। उसने मुस्कराते होठों और कुछ कहती आँखों से मैना की ओर देखा।

मैना के नेत्र लाज में भरकर जमीन की छाती पर घाव करने लगे।

गाँव-भर में मैना अपनी गम्भीरता और सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थी। किसी से अधिक बोलती न थी। जवान होने पर भी

किसी की आँखों के सामने नहीं पड़ती थी। अपने काम से काम था उसका।

और टिकोरा उसके इसी मौन पर फिदा था।

गाँववाले अजगर का मांस पाने के लिए अब बेताब हो उठे थे।

टिकोरा निश्चल पड़े हुए भीमकाय अजगर के पास आया।

हाथ की कटार उठी।

कटार काफी तेज थी और चलानेवाले के हाथ में भी कम ताकत न थी।

सो एक ही वार में अजगर का सिर अलग जा गिरा।

लोगों के मुख से खुशी की एक अजीब-सी चीख निकली।

मगर टिकोरा अपना हाथ रोककर ध्यान से कोई चीज देख रहा था।

अजगर के खून से लथपथ कटे हुए सिर के पास ही कोई चीज पड़ी हुई थी, जिसे टिकोरा ने झुककर उठाया और आश्चर्य-विस्फारित नेत्रों से देखने लगा।

अन्य लोगों की दृष्टि भी उस चीज पर पड़ी।

"उस्ताद!" टिकोरा का विस्मित स्वर था।

"क्या है बेटे?"

"जूता।"

"कैसा जूता?"

"जैसा मैंने उस पेड़ के नीचे पड़ा पाया था न, ठीक वैसा ही··· उसी का जोड़ा इस अजगर के कटे सिर से निकला है उस्ताद!"

"अजगर के सिर से?" उस्ताद कुछ सोचने लगा—"अजीब बात है यह तो!"

"देखो उस्ताद! दोनों जूते एक-से ही हैं।" टिकोरा ने दोनों जूते उस्ताद के सामने ला रखे।

"हाँ, हैं तो दोनों एक-समान।" उस्ताद बोला, "टिकोरा, मालूम होता है, यह अजगर कोई आदमी निगल गया है···"

"आदमी?" सभी के मुख से हैरानी की आवाज निकली।

"हाँ! इसके पेट में जरूर कोई आदमी है।" उस्ताद उतावली के साथ बोला—"टिकोरा! जरा होशियारी से इसका पेट चीर।

बेटा ! अगर अधिक देर न हुई होगी तो मैं उसे बच
जल्दी कर बेटा ! पता नहीं किस बड़े आदमी को यह नि
है । ये जूते तो किसी अमीर के ही लगते हैं ।"

टिकोरा अजगर के पास दौड़ा आया । उस्ताद भी पास खड़ा हुआ ।

टिकोरा ने कटार अजगर के शरीर में चुभाई ।

"और धीरे से बेटा !...बहुत सँभलकर !" उस्ताद ने चेतावनी दी ।

टिकोरा अपने फन में माहिर था । अजगर का पेट धीरे-धीरे फटने लगा ।

"उस्ताद !" टिकोरा चिल्लाया ।

"क्या है ?"

"उस आदमी का पैर..."

"ठीक है," उस्ताद बोला और खुद भी जमीन पर बैठकर गौर से देखने लगा—"सँभलकर कटार चला बेटे !...बदन इसका अभी खराब हुआ नहीं मालूम देता ।...ओ मैना ! चारपाई बिछा दे बेटी, और उसके नीचे कड़ाही में खूब आग जला दे !...जरा जल्दी कर तू भी...ओ चमकू ! तुम लोग कई आदमी दौड़कर कई घड़े पानी ला रखो...जाता क्यों नहीं जल्दी ? काम के वक्त बदन में जरा फुर्ती लाना सीख !"

"उस्ताद !" टिकोरा ने कहा—"यह देखो, इसके हाथ में घड़ी है, उँगली में सोने की अँगूठी...मेरे बाप ! जरूर यह कोई अमीर आदमी है ।"

उस्ताद अजगर के चीरे जाते हुए पेट पर झुका हुआ चुपचाप गम्भीर भाव से देख रहा था, सब-कुछ ।

अजगर का प्राण ज्यों-ज्यों निकल रहा था, त्यों-त्यों उसका शरीर ऐंठा जा रहा था ।

देखकर उस्ताद बोला—"अरे ! तुम लोग इसे दबाये रहो ! शैतान ऐंठ कितना रहा है ? जरा धीरे से टिकोरा ! जरा भी हाथ बहका तो इस आदमी को कटार जा लगेगी ।"

मैना ने चारपाई बिछाकर उसके नीचे ढेर-सी आग सुलगा दी

थी। चमकू और उसके साथियों ने बीसों घड़े पानी ला रखा।

"उस्ताद! यह तो अभी बिलकुल जवान है।" टिकोरा की आवाज आई—"यह देखो, इसका मुँह…जैसे सवेरे का सूरज!"

"सच! बेचारा नौजवान है।" उस्ताद बोला—"इसे धीरे से उठाकर चारपाई पर डालो…देखो, बदन को जरा भी झटका न लगे…जल्दी करो तुम! खड़े-खड़े मुँह क्या देख रहे हो?"

उस्ताद का हुक्म पाना था कि अजगर के पेट से निकाला हुआ बेहोश नौजवान आहिस्ता से उठाकर चारपाई पर डाल दिया गया।

उस्ताद चारपाई के पास आया और उस युवक का चेहरा गौर से देखने लगा; फिर उसकी छाती पर हाथ रखकर देखा।

"धड़कन का पता नहीं चलता, मर गया लगता है!" उस्ताद बोला—"मगर इसकी कोख कुछ गरम है अभी…शायद बच जाय!"

उस्ताद ने उसकी बन्द पलकें पलटकर देखीं और सोचते हुए बोला—"कुछ-कुछ उम्मीद तो है। बेटी मैना! मेरा थैला तो ले आ दौड़कर।…टिकोरा! तू अजगर को बाँट दे काट-काटकर और सब लोग जलसे की तैयारी करो। हम और मैना इस जवान को सँभालने की कोशिश करेंगे। भाग्य में होगा तो बच ही जायगा बेचारा।"

उस युवक की चिन्ता छोड़कर गाँववाले अपने जलसे की फिक्र में लगे।

झोपड़ी के भीतर से हाथ में मैला-सा एक बड़ा थैला लिये मैना बाहर आई और लाकर वह थैला उस्ताद के सामने रख दिया।

बूढ़े शरीर की फुर्ती इस समय देखते ही बनती थी। लपककर उस्ताद ने झोला खोला और उसमें से कोई बुरादा निकाल चारपाई के नीचे जलती हुई आग में छोड़ दिया।

तीव्र गन्ध का एक विकराल धुआँ उठा, जिससे बेहोश युवक का सारा शरीर ढँक गया।

उस्ताद जमीन पर बैठ गया और मन-ही-मन कुछ बुदबुदाने लगा। बीच-बीच में वह थोड़ा-थोड़ा बुरादा लेकर आग में भी छोड़ता जाता था।

मैना चुपचाप खड़ी थी।

गाँववाले टोकरा भर-भरकर अजगर का मांस ढोये जा रहे थे।

मन्त्र पढ़ते-पढ़ते उस्ताद की आँखें बन्द हो चलीं। बूढ़े शरीर में रह-रहकर झुरझुरी उठने लगी। आग से तीव्र गन्ध का धुआँ बराबर उठता रहा।

"मोरपंख···" उस्ताद के मुख से निकला।

दौड़कर मैना मोरपंख की बनी हुई मोरछल उठा लाई। उस्ताद उठ खड़ा हुआ और मोरछल हाथ में लेकर उसी से युवक का बदन सहलाता हुआ दूसरा मन्त्र पढ़ने लगा।

मैना बड़े गौर से उस युवक का चेहरा देख रही थी—कितना सलोना चेहरा है इसका! ऐसा तो गाँव में किसी का नहीं। यहाँ जो भी हैं, सभी खूँखार आकृतिवाले।

बेचारा नौजवान!

जी उठे तो कैसा रहे! ···कितना अहसान मानेगा यह हमारा!

मैना की दृष्टि युवक की अँगूठी पर चली गई। कीमती हीरे की अँगूठी अजीब ढंग से चमक रही थी। उस चमक पर मैना की आँखें टिक नहीं पाईं। पलकें ढँप गईं उसकी।

"मैना!"

उस्ताद ने पुकारा तो मैना चौंक पड़ी।

"बापू! ···जी जायेगा यह?"

"तू चुप भी रह! चारपाई के नीचे से आग उठा ले और घड़ा उठाकर इसके बदन पर खूब पानी डाल···मैं इसका बदन धोता हूँ।"

मैना ने बड़ी तेजी से सब काम किया।

वह पानी डालने लगी। उस्ताद अपने हाथों से रगड़-रगड़कर युवक का बदन धोने लगा।

घण्टों नहलाने के बाद उस्ताद ने सूखे कपड़े से उसका सारा बदन पोंछा।

फिर झोले से एक बड़ी-सी बोतल निकाली।

उसमें था साँप का तेल—भयानक कोब्रा तथा विषैले जानवरों की चर्बी से बनाया गया।

"बेटा! चल इसके बदन की मालिश कर।" बोला उस्ताद।

बाप-बेटी उस अजनबी के बदन पर साँप के तेल की मालिश करने लगे।

"जरा जोर लगाकर बेटी !···अब मौत इसे नहीं पा सकती··· मालिश करती चल। इसके बदन का कालापन दूर होता जा रहा है···देख रही है न ?"

मालिश चलती रही कई घण्टों तक।

उधर गाँव के बीचों-बीच बड़े-से इमली के पेड़ के नीचे जलसा हो रहा था। सारे ग्रामीण आ पहुँचे थे। अजगर का मांस खाकर और कुल्हड़-पर-कुल्हड़ शराब पीकर सब मतवाले हो रहे थे।

नगाड़े बज रहे थे। तुम्बियों की मधुर आवाज दूर-दूर तक गूँज रही थी। कई स्त्रियाँ और पुरुष गलबाँही डाले नाच रहे थे मस्त होकर। साँप की चर्बी की मशालें जल रही थीं।

टिकोरा और लजारो रोशनी से दूर एक अँधेरे कोने में उलझ रहे थे। टिकोरा पी रहा था, लजारो पिला रही थी। बीच-बीच में खुद भी दो-एक कुल्हड़ पी लेती थी।

"चलो नाचें रसिया !" लजारो ने लड़खड़ाती आवाज में कहा।

"अभी नहीं रे छबीली ! अभी पिलाती चल···जबतक बदन की एक-एक हड्डी बेहोश न हो जाय, तबतक नाचने में मजा क्या आयेगा ? आज तुझे निहाल कर दूँगा अलबेली ! तू बहुत दिनों तक तड़प चुकी मेरे लिए।"

"अब तो कभी मैना के पास नहीं जाओगे मेरे राजा ?' लजारो ने टिकोरा के गले में बाँह डालते हुए पूछा।

"छोड़ उस ऐना-मैना की बात रे !···इस वक्त तो तेरे ही पास हूँ···भर ले, जी भरकर पी अपना···भर न, एक कुल्हड़ और भर !"

"लो !"

"पहले तू पी।" कहकर टिकोरा ने कुल्हड़ लजारो के होठों से लगा दिया। लजारो ने दो घूँट पिये—"अब मुझे दे, या कुल तू ही गट कर जायेगी ?" लजारो से छीनकर टिकोरा ने कुल्हड़ खाली कर दिया।

"नाचेगी तू ?"

"तुम्हारी महुवर की आवाज पर मेरे छैला, मैं नाचते-नाचते जान न दे दूँ तो कहना ! चलते हो ? नगाड़े गड़गड़ा रहे हैं कब से।"

"पैर में घुँघरू बाँध रखे हैं या नहीं ?"

"देखो रसिया ! देख लो।" कहकर लजारो ने घुँघरू बँधे हुए अपने पैर हिलाये। घुँघरू का मादक स्वर तुम्बी और नगाड़े की आवाज में घुल-मिलकर विलीन हो गया।

"रसीली ! तू तो आज खूब बन-ठनकर बैठी है।" टिकोरा ने कहा—"चल फिर देखूं तो कितना नाचती है···मन्तर फूंककर महुवर बजाऊंगा, समझ ले !"

"मुझे क्या डराते हो अलबेले ! एक-एक तान पर हजार-हजार बल खाऊँगी।"

दोनों उठकर डगमगाते पैरों से बीच जलसे में आ खड़े हुए।

उन्हें देखकर नगाड़े की आवाज और तेज हो गई। महुवरें जोर-जोर से बजने लगीं।

"चल रे छबीली !" मुँह से अपनी महुवर लगाते हुए बोला टिकोरा।

और जवाब में लजारो के पाँव बोल उठे—छम् ! छम् !

टिकोरा ने महुवर फूंक मारी। दूसरी महुवरों का बजना रुक गया।

नगाड़ा बज उठा—टक-टक-धिन !

लजारो के पाँव बोले—छमछननन !

महुवर मीठी आवाज में गाने लगी ; लजारो बेहोश-सी हो नाचने लगी।

उधर उस बेहोश युवक के बदन में साँप के तेल की मालिश हो रही थी। महुवर की सुरीली तान, नगाड़े की गड़गड़ाहट तथा घुंघरू का छमछननन वहाँ तक सुनाई पड़ रहा था।

"तू जलसे में नहीं जायगी मैना ?" उस्ताद ने पूछा।

"नहीं बापू !"

"जा, देख आ न ! ···अब तो इसकी साँस भी चलने लगी है। थोड़ी देर और मालिश करने पर यह होश में आ जायगा।"

"बापू ! यह कौन होगा ?" उत्सुक वाणी में पूछा मैना ने।

"मैं क्या जानूं ! होगा कोई अमीर शहर का। इसकी मौत वहाँ खींच लाई थी मगर हमारे हाथों बच गया बेचारा !"

"इसकी अँगूठी बड़ी अच्छी है बापू ! देखो न, अँधेरे में कितनी चमक रही है !"

"अमीरों के घर के पत्थर तक चमकते हैं बिटिया ! फिर यह तो सोने की अँगूठी है ! इसका नग भी हीरे-पन्ने का होगा।"

"पत्थर भला कैसे चमकते होंगे बापू ? ऐसे ही पत्थर होंगे इन परदेसी बाबू के घर भी ?" नादान मैना को पत्थरों के चमकने की बात पर बेहद आश्चर्य हो रहा था।

"यह सब तू नहीं समझ पायेगी मैना !"

"समझने की कोशिश करूँगी बापू ! तुम बताओ तो सही ! सुनती हूँ, शहरों में चाँद की तरह उजले पत्थर होते हैं।"

"होते हैं जरूर···उन्हें संगमरमर कहते हैं।"

"तो वे चाँद की तरह ही चमकते होंगे, क्यों बापू ? तब तो घर में मशाल भी न जलानी पड़ती होगी। वैसा ही एक पत्थर का टुकड़ा तुम भी लाओ बापू !"

"अरी, चुप भी रह छोकरी ! समझ नहीं सकती कुछ तो क्या, फिजूल माथापच्ची करती है···जबान के साथ-साथ अपने हाथ भी तनिक तेज चला···अब यह परदेसी होश में आता जा रहा है··· जोर-जोर से मल न···और लगा ले तेल···बस कर या पूरी बोतल ढाल देगी ? इसके पैर के तलवे की मालिश कर।"

मैना तेजी से तेल मलने लगी। मगर उसकी निगाहें युवक के निस्तेज मुख पर ही लगी रहीं।

"बापू !"

"क्या है छोरी ?"

"इसे अजगर निगल गया था, फिर भी जिन्दा हो उठा, यह कितने अचरज की बात है··· है न बापू ?"

"इसमें कोई अचरज नहीं। अजगर के पेट में जाकर जीव कई घण्टों तक जिन्दा रहता है। धीरे-धीरे उसकी जान निकलती है मैना !···तू बात सुनने लगती है तो अपना हाथ क्यों रोक देती है

छोरी ?"

उसी समय अजनबी युवक के मुख से एक धीमी, किन्तु स्पष्ट कराह की आवाज निकली।

"बापू !···परदेसी जिन्दा हो गया बापू !" खुश होकर बोली मैना।

"बिटिया ! अन्दर जाकर थोड़ी शराब उठा ला···फिर इसके बाद खाना पकाने का इन्तजाम कर। लोग जलसा मना रहे हैं और हम यहाँ अबतक भूखे ही पड़े हैं।" उस्ताद बोला।

"इसकी जान बचाकर हमने कितना पुन्न कमाया बापू, सो तो न कहोगे ?"

कहकर मैना झोपडी में चली गई।

कुछ ही देर बाद वह मिट्टी के एक कुल्हड़ में थोड़ी-सी तेज शराब भर लाई।

"मैं इसका मुँह खोलता हूँ···" बोला उस्ताद—"तू इसे पिला दे···देखूं, कितनी है ? हाँ, ठीक है···सब पिला दे !"

मुख में शराब पड़ते ही युवक के बदन में हल्का-हल्का कम्पन उठ खड़ा हुआ।

"अब ठीक है बेटी ! तू चूल्हा जला, जरा जल्दी करना !"

मैना चली गई।

बूढ़ा बैठा हुआ युवक के तलवे सहलाता रहा। क्षण-क्षण पर उसमें जीवन के लक्षण प्रकट होते जा रहे थे।

कुछ ही दूर पर हो रहा जलसा अब पूरे जोर पर था।

महुवर की आवाज बड़ी स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

एकाएक बूढ़े उस्ताद ने देखा कि युवक का एक हाथ उठा, फिर दूसरा, और तब दोनों हाथ महुवर की गति पर नृत्य के भाव प्रदर्शित करने लगे।

उस्ताद चौंककर उठ खड़ा हुआ।

युवक की आँखें बन्द थीं, मगर हाथ नाच रहे थे ; पैरों में भी अब गति आ रही थी धीरे-धीरे।

उस्ताद कुछ देर तक यह विचित्र घटना देखता रहा। वह चकित था कि युवक अभी तक जब होश में नहीं आया था, फिर

उसके हाथों और पैरों के इस नृत्य का क्या तात्पर्य ?

और अब तो महुवर की ताल पर युवक का सिर भी झूम रहा था, जैसे मदोन्मत्त कोई नाग उस मादक स्वर-लहरी पर मुग्ध हो अपना फन निकाल झूमता है।

"मैना !...ओ मैना !" पुकारा उस्ताद ने।

उसके स्वर में इतनी हैरानी थी कि सारा काम छोड़ मैना दौड़ी आई।

"क्या है बापू ?"

मगर तुरन्त ही उसकी दृष्टि युवक की उस विचित्र भाव-भंगिमा पर पड़ी। वह काँपकर बूढ़े बाप से लिपट गई। अँधेरी रात में बेहोश युवक का अंग-संचालन वास्तव में भयंकर लग रहा था।

"बापू !...यह क्या है बापू ? क्या हो गया है इस परदेसी को ?" मैना का स्वर भयभीत था।

"मैं सोच रहा हूँ..." उस्ताद गम्भीर आवाज में बोला—"बेटी, दौड़कर जा और जलसे से आती हुई महुवर की आवाज बन्द करा दे...कह दे, जलसा हो मगर महुवर न बजे। दौड़कर जा मैना !"

मैना आज इतनी तेज दौड़ी, जैसे उसके शरीर की भरपूर जवानी का बोझ एकदम फूल-सा हल्का हो गया हो।

उस्ताद हैरत में भरा खड़ा ही रह गया।

थोड़ी ही देर में जलसे से आती हुई महुवर की मीठी आवाज बन्द हो गई। उस्ताद ने आश्चर्य से देखा कि अब युवक का अंग-संचालन भी बन्द हो गया है।

मैना भी आ पहुँची। युवक को निश्चल देखकर उसे कुछ सन्तोष हुआ।

"क्या बात थी बापू ?"

"मेरा खयाल ठीक उतरा...इसपर अजगर की छाप पड़ गई है, तभी महुवर की आवाज पर यह नाचने लगा। इसका दिमाग डर से इतना बिगड़ गया है कि यह अब अपने को भी अजगर ही समझने लगा है। होश में आ जाने पर सब ठीक हो जायगा...तू

थोड़ी शराब और ला !"

युवक को एक कुल्हड़ शराब और पिलाई गई।

"अच्छा तू बैठ इसके पास···मैं खुद खाना बनाये लेता हूँ। देख, अब इसने आँखें खोल दी हैं। जल्दी ही यह पूरे होश में आ जायगा। तू इसके तलवे सहलाती बैठी रह···इसे धीरे-धीरे बुलाने की कोशिश कर !"

बूढ़ा उस्ताद अन्दर चला गया। मैना परदेसी का तलवा मलने लगी।

युवक की आँखें खुल गई थीं। साँस भी मजे में चल रही थी। कभी-कभी अङ्गों में हरकत भी हो जाया करती थी।

"परदेसी ! ···होश में आओ परदेसी !"

परदेसी की जगह अगर कोई पत्थर का पुतला भी होता तो मैना की मीठी पुकार सुन उसकी जबान हिल उठती।

मगर युवक न हिला, न डुला।

उसके नेत्र एकटक ऊपर लगे हुए थे—आसमान की छाती पर, जहाँ छोटे-बड़े तारों की विचित्र आँख-मिचौनी हो रही थी।

"बोलो जी परदेसी ! ···उधर आसमान पर क्या देख रहे हो ? मर गये होते तो वहाँ जाते, अब तो जी उठे हो। आँखें नीची करो न ! देखो, तुम्हारा पैर सहला रही हूँ मैं।"

मगर परदेसी के नेत्र आसमान की सवारी छोड़ नीचे नहीं उतरे।

"अजी ओ बाबू ! ···सुनते हो ? या आँखें खोलकर भी कानों का फाटक बन्द ही किये रहोगे ?"

"......"

"मैंने कहा—अब आसमान के तारों का गिनना छोड़ो और जमीन पर के चाँद गिना करो परदेसी ! जरा अपने आसपास तो देखो ! तनिक पलकें भी झपका लिया करो, वरना एकटक देखते-देखते आँखें जवाब दे डालेंगी।"

परदेसी की पलकें जरा-सी हिलीं, आँखों की पुतलियाँ नीचे उतरकर मैना के सलोने नेत्रों पर आ टिकीं।

हाथ-पैर हिले और उसने करवट बदली।

"लेटे रहो अभी चुपचाप ! करवटें बदलते-बदलते रात तो भले ही कट जायगी मगर बदन में दर्द भी खूब होगा।" बोली मैना।

तभी उस्ताद ने पुकारा—"ओ मैना !"

"क्या है बापू ?...हाथ जल गया क्या ?"

"नहीं तो...बाहर मेरा थैला रखा है, उसे लाकर यहाँ रख जा तो !"

मैना थैला उठाकर अन्दर आई।

'लो बापू ! ...परदेसी होश में आ गया है, अब घूर-घूरकर ताक रहा है। अभी उसने अपने-आप करवट भी बदली है।"

"भगवान् का गुन गा रे लड़की, जिसने मेरे हाथों उसकी जान लौटाई...चल उसके पास बैठ। वह उठकर बैठना चाहे तो थोड़ा-सा सहारा दे देना। परदेसी है न, मुसीबत का मारा।"

उस्ताद फिर चूल्हा फूंकने में तल्लीन हो गया।

मैना अभी दरवाजे के पास ही पहुँची थी कि बाहर से किसी भयानक अजगर की फुफकार सुनाई दी और अँधेरे में जमीन पर कोई बड़ा-सा जन्तु रेंगता हुआ दीख पड़ा।

"बापू !"

चिल्लाती हुई मैना भीतर भागी।

"क्या है रे ?...डरती क्यों है ? कोई साँप या अजगर ही तो होगा !" बोला उस्ताद—"सँपेरे की बिटिया होकर साँपों से डरती है ?"

"नहीं बापू, वह दूसरी तरह का जानवर है...बिल्कुल दूसरी तरह का।" मैना हाँफती हुई बोली।

"दूसरी तरह का ? कैसा रे ?"

"अँधेरे में ठीक से देख न पाई बापू !"

"चल, मैं चलता हूँ।"

बूढ़े ने मशाल उठाई और दरवाजे पर आया। पीछे-पीछे मैना भी थी।

तभी फिर अजगर-जैसी गहरी फुफकार सुनाई पड़ी।

मशाल की रोशनी में कुछ देखकर मैना चीख उठी—"यह तो वही है बापू !"

सचमुच वही था !

बिल्कुल वही !

वही युवक ! वही परदेसी !

ठीक अजगर की तरह मुँह से फुफकारता हुआ, जमीन पर उसी ढंग से घिसटता आगे बढ़ा चला आ रहा था।

"बापू !"

"चिल्ला मत छोरी !" उस्ताद आश्चर्य में भरकर खड़ा था।

"फों !"

"बापू ! यह आदमी है या अजगर ?"

"हट मैना ! भाग उधर से···अरेरेरे !" उस्ताद के मुख से घबड़ाहट की आवाज निकल पड़ी।

जमीन पर रेंगता हुआ वह मानव-अजगर मैना के पास तक पहुँच चुका था।

उस्ताद ने पुकारा मगर मैना सँभल न पाई और उस मानव-अजगर ने उसे अपने हाथों में लपेट लिया और उसका सिर अपने मुँह के पास ले-जाकर निगलने का प्रयत्न करने लगा।

घबड़ाये हुए उस्ताद ने शीघ्र ही अपने को सँभाला। मैना चीख रही थी। वह बोला, "घबड़ाती क्यों है ? तुझे निगल थोड़े ही जायगा ? है तो आदमी ही ! शैतान की एक-एक हरकत अजगरों जैसी है, वैसे ही फुफकारना, वैसे ही रेंगना···मैं अभी इसके होश ठिकाने लगाये देता हूँ।"

उस्ताद मन-ही-मन कुछ बुदबुदाने लगा।

देखते-ही-देखते उस मानव-अजगर का शरीर ढीला पड़ने लगा और वह मैना को छोड़कर उस्ताद के पैरों पर आ लेटा।

"अब बच्चू का दिमाग ठिकाने आया !" उस्ताद हँसकर बोला।

मैना उठकर हाँफती-काँपती खड़ी हो गई एक किनारे।

"इस मैना को क्या हो गया है उस्ताद ?···इस तरह घबड़ाई-सी क्यों है ?" तभी भीतर आता हुआ टिकोरा बोला—"अरे, यह जवान अच्छा हो गया क्या ?"

"अच्छा तो हो गया बेटा," उस्ताद ने कहा—"मगर इसके

दिमाग में अजगर का भूत आ घुसा है।"

"कैसा ?"

"यह बोलता है अजगर की तरह, चलता है वैसे ही जमीन पर रेंगकर। अजीब जानवर से पाला पड़ा है टिकोरा ! अभी यह मैना को पकड़कर निगल जाना चाहता था।"

"अच्छा ? हुक्म दें तो इन अजगर बाबू को भी ठिकाने लगा दूं ?" टिकोरा के मुख पर क्रूरता के भाव आ गये थे।

"नहीं टिकोरा ! जिसकी जान बचाई है, उसे चंगा करने की कोशिश करूँगा। ऐसा सुन्दर जवान पता नहीं किस घर का चिराग होगा। इसे ले-चलकर बाहर चारपाई पर लिटा दे बेटे !···इसे मंतर से बाँध लिया है मैंने, अब बिना मेरी मर्जी के हिल-डुल भी नहीं सकेगा यह।"

"इसका पिंड छोड़ो उस्ताद ! यह अब नहीं जी सकता···अगर जियेगा भी तो अजगर बनकर ही रहेगा।"

"चुप रहो तुम टिकोरा !" उस्ताद बिगड़कर बोला—"ऐसी बात फिर कभी मत कहना ! मैं इसे अभी ठीक करूँगा। ले चलो, उठाओ इसे।"

जलती आँखों से उस्ताद को घूरता हुआ टिकोरा बोला—"बिगड़ो मत उस्ताद ! सच पूछो तो इसकी जान मैंने ही बचाई है। मैं उस अजगर को यहाँ न लाता तो क्या तुम कभी इसका पता पा सकते थे ?"

कहते-कहते टिकोरा ने उस युवक को पीठ पर लादा और बाहर चारपाई पर ला पटका। युवक यद्यपि होश में था, आँखें भी खुली थीं, फिर भी उस्ताद के मन्त्र-बल से वह निश्चेष्ट पड़ा था।

"इसे जिला नहीं सकते उस्ताद ! अजगर के बदन की गर्मी ने इसे पागल बना दिया है। अब यह दो-चार दिन और चल ले, बस !" टिकोरा ने कहा।

कुछ सोचता हुआ उस्ताद बिगड़ा—"तू चल दे यहाँ से अभी ! अपने उस्ताद की करामात देखनी है तो जबान पकड़े चुप खड़ा रह !"

मगर टिकोरा वहाँ न रुका; पैर पटकता हुआ चला गया।

वह उद्दण्ड युवक उस परदेसी को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने लगा था। उसे डर था कि कहीं यह होश में आकर मैना का प्यार न पा ले।

"बेईमान कहीं का! अपने को लगाता है।" उस्ताद बड़बड़ाया—"मैना! मेरा थैला ला और कड़ाही भी।...मौत का भूत जब इसके सिर से उतर गया तो भला अजगर का भूत कैसे नहीं उतरेगा ?"

चारपाई के नीचे आग सुलगाई गई।

थैले में से कोई दूसरी जड़ी निकालकर उस्ताद ने आग पर रख दी। धुआँ काफी निकला मगर पहले-जैसा तीव्र गन्धवाला नहीं।

थोड़ी-थोड़ी देर पर मंत्र पढ़कर वही जड़ी आग में डालने लगा उस्ताद।

बहुत देर के बाद मदहोश युवक के मुख से धीमी आवाज निकली—"धुआँ लग रहा है...आग हटाओ!"

परदेसी के मुख से मानव-स्वर सुनकर मैना खुशी से उछल पड़ी।

उठता हुआ बोला उस्ताद—"अब यह आदमी बन गया। भगवान् की दया है...आ छोरी, चल खाना परस दे। बूढ़ी ठठरी में जब भूख लगती है तो रहा नहीं जाता।"

मैना झोपड़ी के अन्दर चली गई।

उस्ताद फेरई ने चारपाई के नीचे की आग हटा दी और तब परदेसी को उठाकर धीरे से बैठा दिया।

⊙

"क्या है ?"

"अजगर का मांस।...थोड़ा खा लो परदेसी! बदन में ताकत आ जायगी।...क्यों, क्या सोचने लगे ?"

"कुछ तो नहीं!"

"कुछ तो जरूर सोच रहे हो। हम गरीब सँपेरे हैं न! हमारा खाना ही यही है। तुम लोग अमीर हो, रोज ही पकवान खाते रहे होगे, फिर यह खाना क्यों पसन्द आये ?"

"सो बात नहीं।" परदेसी बोला—"कुछ याद नहीं आता कि

मैं अमीर था या गरीब। यह भी नहीं मालूम कि किसी जान का मांस खाया हूँ या नहीं।"

"इसे तो खाना ही पड़ेगा। हम भी तो तुम्हारी तरह आदमी ही हैं! फिर जब हमें इसमें स्वाद मिल सकता है तो तुम्हें क्यों न मिलेगा? खा लो जी! मुझसे हठ करोगे तो अच्छा नहीं होगा!"

"तुम तो व्यर्थ नाराज होती हो।" कहा परदेसी ने—"लाओ खा ही लूं।"

परदेसी खाने लगा।

"यह तो बड़ा स्वादिष्ट है! तुमने पकाया है इसे?"

"नहीं तो कौन?"

"तुम बता नहीं देती तो मैं इसे हलवा ही समझता। तुम मेरे लिए बड़ा कष्ट उठाती हो। किस तरह तुम्हारा बदला चुका सकूंगा?"

"रहने दो जी! बात बनाने की आदत अच्छी नहीं होती। हमारा बदला क्या चुकाओगे तुम? पहले अपना बदला तो चुका लो इस अजगर से, जिसने तुम्हें निगला था और जिसका मांस तुम इस वक्त खा रहे हो।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" परदेसी ने खाते-खाते पूछा।

"मेरा नाम नहीं जान सके तुम अबतक?···अभी ही तो बापू ने मुझे मैनावन्ती कहकर पुकारा था। गाँव का एक-एक बच्चा तक जानता है। यकीन न आये तो पूछ देखो किसी से।"

"तुमसे तो पूछ ही लिया, दूसरों से पूछने की क्या बात है?"

"यहाँ तुम्हारी तबीयत तो लग रही है न?" मैना ने पूछा।

"तबीयत?···हाँ, लगेगी क्यों नहीं?···मुझे तो कुछ याद भी नहीं मैना, कि तुम लोगों के अलावा और भी किसी को अपने इस जीवन में देखा है कभी। लगता है, यह गाँव ही मेरा अपना है। इससे दूर की बात तो कुछ सोच भी मैं नहीं पाया! मैं कौन था, कहाँ से आया, क्यों आया, इन प्रश्नों पर विचार करता हूँ तो मस्तिष्क में अन्धकार के आगे कुछ दिखाई नहीं पड़ता। ज्यादा सोचने लगता हूँ तो अन्तर में आँधी-सी चलने लगती है, खोपड़ी उद्वेग से फटने-फटने को हो जाती है। मेरे स्थान पर तुम होती तो समझ पाती मेरी विवशता।"

"जाने क्या बकने लगे तुम ?" मैना ने ठुड्डी पर गुलाब की टहनी-जैसी सुकुमार उँगलियाँ रखकर आश्चर्य का भाव प्रदर्शित किया—"अच्छा तुम्हारा नाम क्या है ?"

"नाम ?" परदेसी ने दोनों हाथों से अपना मस्तक पकड़कर जोरों से दबाया—"यह न पूछो मैना ! ऐसे सवालों से मुझे बेहोशी-सी आ जाती है। मैंने कहा न, मुझे कुछ याद नहीं जो तुम्हें बता सकूँ। सोचने की बहुत कोशिश करता हूँ मगर अतीत के दृश्य कभी मानस-पट पर उभरते ही नहीं।"

"अरे ! तुम्हें अपना नाम भी याद नहीं रहा ?" मैना अगम आश्चर्य में भरकर बोली—"दइया रे, यहाँ के साँपों को तो चाहे जितना दूध पिलाओ मगर वे जहर उगलना नहीं भूल पाते और तुम आदमी होकर अपना नाम-पता तक भूल गये ?"

मैना ने परदेसी का हाथ अपनी कोमल हथेलियों में भर लिया—"तुम झूठ बोलते हो परदेसी !···बोलते हो न ?"

"नहीं तो ! तुमसे झूठ नहीं बोल सकता मैना ! तुम्हें देखकर दिल कहता है, मैं तुम्हारे साथ बहुत दिनों से रहता आ रहा हूँ···मैं तुमसे बहुत सालों से परिचित हूँ। मुझपर अविश्वास मत करो तुम !"

"ऐसी क्या बात है परदेसी ! तुम भी तो मुझे बहुत अच्छे लगते हो। सच जानो इतनी बड़ी हुई, गाँव का कोई आदमी मुझे इतना अच्छा नहीं लगा था अबतक। तुम जाना चाहो कभी तो शायद मैं तुम्हें जाने भी न दे सकूँ अब तो।"

"मैं जा ही कहाँ सकता हूँ ?" परदेसी विवश करुण स्वर में बोला—"तुम लोगों को छोड़कर अब जा ही कहाँ सकता हूँ मैना !"

"तुम तो बड़े भुलक्कड़ हो परदेसी !" कहा मैना ने—"अपनी जिन्दगी में मैंने तुम्हारे-जैसा लापरवाह आदमी नहीं देखा। कम-से-कम इस गाँव में तो कोई नहीं···टिकोरा है न ! वही टिकोरा, जिसने तुम्हें अजगर के पेट से निकाला था···ओ मेरी मइया ! उसे तो एक-एक बात सालों तक याद रहती है।"

"सालों तक ?"

"हाँ जी ! झूठ थोड़े ही कह रही हूँ ? अब तो मैं बड़ी हो गई

हूँ न ! जब छोटी थी और टिकोरा के साथ खेला करती थी तो जाने कब मैंने क्या कह दिया था, मुझे तो कुछ याद नहीं। अब टिकोरा कहता है कि मैंने उससे ब्याह रचाने का वादा किया था।"

"टिकोरा से ब्याह करोगी तुम मैना ?"

"नहीं जी, उसकी बात कह रही हूँ सिर्फ। बड़ी-बड़ी मूंछों से भला कौन लड़की खेल सकेगी ? लजारो भले ही रीझ जाय उसकी डरावनी आँखों पर, मुझे तो बाबा डर लगता है टिकोरा को देखकर ही। एक दिन तो जाने क्या मुझसे माँग रहा था···क्या कहते हैं उसे ?—बोसा ! क्या मरद औरत का बोसा भी लेता है परदेसी ? तुमने कभी लिया है किसी का ?"

"मुझे याद नहीं कुछ।" परदेसी हैरान था उस अबोध युवती की बात सुनकर, जो जवान तो हो गई थी मगर जवानी किसे कहते हैं यह नहीं जानती थी ; जैसे बाल्यावस्था के ही वृक्ष में कुदरत ने जवानी के फल लगा दिये हों—"मुझसे बेकार की बातें मत करो मैना !"

"तुम बड़े ढीठ हो परदेसी ! मुझे डाँटते हो। बेकार की बात तो तुम्हीं करते हो—मुझे यह नहीं याद, यह नहीं मालूम···मैं तो जो नहीं जानती वह पूछ रही हूँ। शहर के बाबू हो, थोड़ी सीख मुझे भी दे दोगे तो हमारे-जैसे छोटे नहीं हो जाओगे !···सुना तुमने ? बापू कह रहे थे, तुम किसी बड़े खानदान के हो।"

"रहा होऊँगा कभी," परदेसी शुष्क स्वर में बोला—"अब तो सब-कुछ भुलाकर तुम्हीं लोगों का हो चला हूँ। यह लो इसे···"

"खा चुके सब ?···लो हाथ धो डालो। पेट भरा या नहीं ?"

"वह तो तुम्हें देखकर ही भर चुका।" बोला परदेसी।

"जाओ जी, बड़े वैसे हो तुम ! भला मुझे देखकर किसी का पेट क्या भरेगा ?···टिकोरा कहता है, मैं बड़ी सुन्दर हूँ। तुम्हें कैसी लगती हूँ परदेसी ? सुन्दर ही तो ? या और कुछ ?"

"......"

"बोले नहीं कुछ ?"

"सोच रहा हूँ।" एकटक मैना की आँखों में देखता हुआ बोला परदेसी।

"सोच लो खूब, मगर इस तरह मेरी ओर मत देखो ! देख तो रहे हो तुम मेरी आँखों में, लगता है जैसे कलेजा तक जला जा रहा हो मेरा। देखो न ! कितनी जोर-जोर से धड़कने लगा है !"

कहकर मैना ने परदेसी का हाथ अपने सीने पर रख लिया।

"देखा ?"

"हाँ !"

"क्या मिला ?"

"थोड़ी-सी राहत !" परदेसी ने कहा।

"मैं पूछती हूँ, मेरा कलेजा धड़क रहा है या नहीं ?"

"धड़क तो रहा है।"

"तो फिर इस तरह मेरी ओर मत देखो !" मैना बोली—"देखते-देखते तो तुम मेरा कलेजा निकाल लोगे। परदेसी ! तुम्हारा इस तरह देखना मुझे अच्छा तो लगता है, फिर कलेजा क्यों धड़कने लगता है ? ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। तुम क्या आये, मेरी जिन्दगी में दर्द भरते आये। तुम तो अब ठीक हो न परदेसी ? कोई दर्द, कोई दुःख ?"

"कुछ नहीं।"

"मुझे भी अपने साथ ले चलोगे न ?"

"कहाँ ?"

"अपने घर !···कैसा है तुम्हारा घर परदेसी ? तुम्हारे यहाँ के भी पत्थर चमकते हैं क्या ? बापू कहते थे कि अमीरों के घर के पत्थर भी चमकते हैं।"

"मैं जा ही कहाँ रहा हूँ मैना !···किधर जाऊँ ? जानती हो मेरा घर, तो पहुँचा दो।"

"भूल गई थी परदेसी, कि अब तुम्हारा कोई घर नहीं। बापू ! ओ मेरे बापू !"

"क्या है री छोरी ?" झोपड़ी में से चिल्लाकर बोला उस्ताद—"चिल्लायेगी तो ऐसा, जैसे कोई अजगर ही निगल रहा हो। है क्या ?"

"सुनते हो इस परदेसी की बात ?" मैना पुकारकर बोली—"कहता है···"

"क्या कहता है ?"

"तनिक बाहर निकलो बापू !···इधर आओ तो बताऊँ।"

उस्ताद झोपड़े से निकलकर बाहर आ खड़ा हुआ। हाथ में उसके एक विकराल साँप था।

"क्या है रे ?"

"बापू ! यह परदेसी कहता है कि इसे कुछ भी याद नहीं। अपना नाम, अपना घर, सब-कुछ भूल गया है यह बापू !···भूल गया है या झूठ बोल रहा है, तुम्हीं पूछ देखो।"

"क्यों बाबू ! घर जाने का इरादा नहीं क्या ?" उस्ताद ने पूछा।

"काश, मैं जा सकता !" परदेसी एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर बोला—"मुझे तो कुछ भी याद नहीं आता उस्ताद !"

"कुछ भी नहीं ?"

"नहीं !"

उस्ताद बेहद गम्भीर बनकर कुछ सोचने लगा।

"अजीब बात है !" बोला वह—"ईश्वर का नाम लो बाबू ! वही पार लगायेगा। इस बीमारी की कोई दवा इस बूढ़े के पास नहीं।"

"तो अब यह परदेसी यहीं रहेगा बापू ?" मैना ने पूछा।

"रहने दे बेटी !···इस बदनसीब को अपने दिन गुजारने दे यहाँ। कभी इसकी याद लौटेगी तो हमारे दिन फेर देगा यह। किसी बड़े घर का लाल है मैना ! इसकी सेवा कर। कोई तकलीफ इसे न हो बेटी !"

"नहीं होगी इसे कोई तकलीफ बापू !" मैना ने कहा।

"उस्ताद, अब कसा है यह आदमी ?"

उस्ताद ने देखा—आँखों में क्रूर लालिमा और चेहरे पर भयानक भाव लिये खड़ा था टिकोरा।

"आ टिकोरा !" उस्ताद बोला—"हाँ ! अब तो इसकी तबीयत सँभल गई है।"

"तो लाओ, इसे मैं इसके घर पहुँचा दूँ...ज्यादा दिनों तक यहाँ रहकर क्या करेगा ?"

"सो तो ठीक है मगर इसका घर कहाँ है, यह कौन था, कुछ बताता ही नहीं।"

"कहता क्या है ?" टिकोरा ने पूछा।

"यह सब भूल गया बेटे !" बोला उस्ताद।

"क्या अनहोनी बोलते हो उस्ताद !" टिकोरा विचित्र तरीके से हँस पड़ा—"बनता होगा यह उस्ताद ! भला कोई अपना घर भी भूल सकता है ?"

"मगर यह तो सचमुच भूल गया, टिकोरा ! इसके चेहरे से यह नहीं लगता कि यह झूठ बोल रहा है। भगवान् की लीला के आगे हमारी हस्ती ही क्या ?"

"मगर यह यहाँ नहीं रह सकता उस्ताद !" टिकोरा के स्वर में भयानक दृढ़ता छिपी थी।

"तो फिर यह जायगा ही कहाँ ?" उस्ताद का स्वर स्थिर था।

"जहाँ इसका जी चाहे चला जाय यह।" टिकोरा की आवाज और भी तेज हो गई थी—"दुनिया-भर के लोगों की परवरिश करने का कोई हमने ठेका ले रखा है क्या ?"

"इन्सानियत का तकाजा है बेटे !" उस्ताद गम्भीर स्वर में बोला—"तुझे परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। यह बोझ भी बनेगा तो मेरे ही सिर का ; तेरे घर कभी भीख माँगने नहीं जायगा।"

"मगर उस्ताद ! गाँववाले इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

"किसे ?"

"इसका इस गाँव में रहना।" टिकोरा ने कहा।

"गाँववाले नहीं बर्दाश्त करेंगे या तू ?.. तेरे सिवा किसमें इतनी हिम्मत है जो उस्ताद के सामने सीना तानकर खड़ा हो सके ? तुझे मैंने बहुत दफे माफ किया और तू बराबर शैतान ही होता जा रहा है। मेरी ताकत न भूल टिकोरा !"

"तुम्हारी ताकत मैं जानता हूँ उस्ताद ! तुम्हीं मेरी ताकत नहीं जानते। अबतक तुम टिकोरा को बच्चा ही समझ रहे हो। तुम्हारे

हाथ में साँप है न ? ताकत आजमाना चाहो तो चलाओ।"

"यह बात !" उस्ताद की बूढ़ी नसें आवेश से फूल आईं—"सँभल छोकरे ! तुझे आज मजा न चखाया तो अपने उस्ताद का चेला नहीं।"

"डराओ मत उस्ताद !···चलाओ साँप !" कहता हुआ टिकोरा वहीं जमीन पर बैठ गया।

उस्ताद भी उससे चार गज की दूरी पर हाथ में साँप लिये जा बैठा।

"बापू !" मैना दौड़कर उस्ताद के गले से लिपट गई—"इसे माफ कर दो बापू !···टिकोरा को माफ कर दो ! इसकी जान मत लो बापू ! मेरे अच्छे बापू !"

"चल हट छोरी !" उस्ताद उसे ढकेलकर बोला—"इस छोरे की इतनी हिम्मत कि मुझे ललकारे !"

"उस्ताद, जरा जल्दी करो !" व्यंगपूर्ण स्वर में टिकोरा ने कहा।

"अभी ले !"

उस्ताद ने हाथ का विकराल साँप जमीन पर छोड़ दिया, फिर कोई मन्त्र पढ़कर एक चुटकी धूल उसपर फेंकी।

देखते-ही-देखते शान्त पड़ा हुआ साँप फुफकार मारकर फन निकाल खड़ा हो गया।

मन्त्रों से सनी धूल की दूसरी चुटकी पड़ते ही वह प्रबल वेग से दौड़ा टिकोरा की ओर।

टिकोरा भी मन-ही-मन कुछ पढ़ रहा था। तेजी से दौड़े आते साँप पर उसने सात कौड़ियाँ फेंक मारीं।

कौड़ियाँ जाकर साँप के सिर पर ताज-सी चिपक गईं और साँप मुर्दे की तरह होकर पड़ रहा।

"देख लिया उस्ताद, टिकोरा की ताकत को ?" बड़ी जोर से हँसा टिकोरा।

"फिर सँभल छोकरे !"

उस्ताद ने जमीन से एक चुटकी और धूल उठाई और साँप की तरफ मुँह करके हवा में फूंक दी।

इस बार तो साँप इतनी फुर्ती से सजग हुआ कि टिकोरा भी दङ्ग रह गया।

उसने कौड़ियाँ फेंकीं, धूल फेंकी, मन्त्र पढ़े···

मगर सब बेकार!

साँप भयानक फुफकार छोड़ता हुआ बढ़ता ही गया।

उस्ताद बराबर मन्त्र पढ़ रहा था। आँखें क्रोध से लाल-लाल हो उठी थीं।

चिल्लाया उस्ताद—"चला छोकरे! अपने सभी मन्त्र चला इस साँप पर! रुक नहीं सकता यह···रुकेगा नहीं कभी।"

टिकोरा मन्त्र पढ़कर साँप को रोकने की कोशिश करता हुआ भाग रहा था बेतहाशा और क्रोधित साँप आँधी की तरह उसका पीछा कर रहा था।

"बापू!···इसे छोड़ दो बापू!" मैना चिल्ला रही थी।

'नहीं!"

अंगार-सी आँखें लिये उस्ताद तनकर खड़ा था।

"उस्ताद!···मुझे बचाओ उस्ताद!" टिकोरा की चीख सुनाई पड़ी।

साँप ने टिकोरा को पकड़ लिया था और अपने शरीर से उसका पैर बाँधता जा रहा था। टिकोरा भय से काँपता हुआ खड़ा चीख रहा था।

"क्यों छोरे! और लड़ेगा?"

"मैं हार बैठा उस्ताद! मुझे माफ कर दो!"

"माफ कर दूं?···नमकहराम! तुझे मन्तर सिखाया था मैंने तो क्या इसीलिए कि तू मुझपर ही अपना बल दिखा?" उस्ताद गरजा।

"अब कभी गुस्ताखी नहीं करूँगा उस्ताद!"

'उस्ताद के बच्चे! अभी चाहूँ तो यह साँप ऐसा काट खाये कि दुनिया की कोई भी ताकत तुझे मौत से न बचा सके।"

'नहीं उस्ताद! ऐसा न कहो! हाथ जोड़ता हूँ, अब कभी कोई गलती हो जाय तो कहना।" गिड़गिड़ा रहा था टिकोरा।

"जाने दो बापू!···छोड़ दो इसे!" मैना ने भी मिन्नत की।

"छोड़ देता हूँ।"

कहा उस्ताद ने और पुनः कोई मन्त्र पढ़ने लगा।

उद्दण्ड साँप ने अपने बन्धन ढीले कर दिये और धीरे-धीरे उस्ताद के पास आ रहा। उस्ताद ने उसे उठाकर अपने हाथ में ले लिया।

छूटते ही टिकोरा इस तरह भागा कि उसकी पीठ तक दिखाई न दी। मगर जाते-जाते भी मैना ने उसकी आँखों का क्रूर भाव पढ़ ही लिया।

"यहाँ के लोग तो बड़े भयानक हैं।" परदेसी धीरे से बड़बड़ाया।

"डरने की कोई बात नहीं बाबू!" उस्ताद बोला—"यह तो यहाँ की नित्य की घटना है। ऐसी लड़ाई तो तुम अब अक्सर देखा करोगे।"

"मेरे तो रोंगटे खड़े हो गये उस्ताद जी!" परदेसी के स्वर में अबतक भय की छाप थी।

"यह टिकोरा जाने क्यों तुमसे जलने लगा है शैतान!...मगर बाबू, मेरे रहते तुम्हारी आँख में एक किरकिरी भी न खटकने पायेगी। खूब आनन्द से रहो तुम। दिमाग ठीक हो जाय और अपने वतन की याद आये तो चले जाना खुशी-खुशी। हमारे मेहमान हो तुम, और हम गरीबों के साथ भरसक तुम्हें तकलीफ नहीं होने पायेगी।"

'बापू! देख लेना, यह टिकोरा अब भी अपनी करनी से बाज नहीं आयेगा। जाते-जाते ऐसी आँखों से मुझे घूरता गया है कि हाय दैया!...बापू! टिकोरा से हमने कभी ब्याह रचने का वादा किया था क्या?" मैना ने पूछा।

"कब?"

"कहता है बचपन में!—टिकोरा से कभी मैंने ऐसा कहा होगा बापू? झूठ ही तो बोल रहा था हरामी! बचपन की बात तो मुझे याद रही नहीं।"

"उसे बकने दे तू मैना!" उस्ताद बोला—"उस्ताद की बेटी के साथ ब्याह रचाने के लिए बहुत बड़ी हस्ती चाहिये। वह दो दिन

का काँटा अपने को बड़ा तीखा समझने लगा है।"

"तुमने उसे इतने मन्तर क्यों सिखा दिये बापू ?"

"अरी छोरी !···अक्ल जो उसकी बड़ी तेज है।" उस्ताद बोला—"अपनी शैतानी वह छोड़ दे बस, तो ऐसा बन जाय कि सारे गाँव के ऊपर···मैना ! अन्दर मैं तेल तैयार कर रहा था। चलकर मुझे कुछ मदद ही दे दे। इस बाबू को भी लेती चल।"

तीनों झोपड़े में आये।

चूल्हे में आग जल रही थी। कड़ाही में तेल खौल रहा था। जलते हुए तेल से इतना तेज बदबूदार धुआँ उठ रहा था कि परदेसी को अपनी नाक बन्द कर लेनी पड़ी।

उस्ताद चूल्हे के पास जा बैठा। हाथ के साँप को उसने गले में लपेट लिया। भयानक साँप सिद्धहस्त मदारी के गले में फूल की माला बना पड़ा रहा।

"मैं क्या काम करूँ बापू ?" मैना ने पूछा, फिर परदेसी की ओर देखकर बोली—"परदेसी ! तुम बैठ क्यों नहीं जाते ?"

परदेसी बैठ गया।

उस्ताद बोला—"तू उन पिटारियों को इधर ला बारी-बारी से और उन्हें खोलकर साँपों को कड़ाही में छोड़, तबतक मैं आँच ठीक किये दे रहा हूँ।"

उस्ताद चूल्हा फूँकने लगा।

मैना कोने में रखी एक पिटारी उठा लाई। खोलते ही एक विकराल गेहुँअन फन निकाल खड़ा हो गया। मैना ने तेज हाथों से उसका फन पकड़ लिया और उसे उठाकर खौलते हुए तेल में जिन्दा ही छोड़ दिया।

परदेसी का कलेजा धड़क उठा ! आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

मैना दूसरी पिटारी लाई।

फिर तीसरी, चौथी, तब पाँचवीं, छठी और सातवीं···

"अब रहने दे बेटी !···वह मटकी उठा ला, जरा सँभालकर। बड़े-बड़े पहाड़ी बिच्छू भरे हैं उसमें ! हाथी को डंक मार दें तो उनका सारा बदन पिघलकर बह चले ; पत्थर की चट्टान को एक ही डंक में दो टुकड़े कर दें, ऐसे बिच्छू हैं।"

मैना मटकी उठा लाई। बड़ी वजनी थी।

"धीरे से इसका ढक्कन खोलकर एक-एक बिच्छू बाहर निकाल, मगर पहले मन्तर पढ़ ले, फिर इस कड़ाही में बारी-बारी से छोड़।" उस्ताद ने कहा।

मैना ने मटकी का ढक्कन खोल दिया और निश्चिन्त होकर हाथ भीतर डाला।

एक बालिश्त का बड़ा भयानक काला बिच्छू था। मैना ने उसे कड़ाही में छोड़ दिया।

इसी प्रकार बीसों बिच्छू छोड़े गये।

"अब उस कोने में रखी वे हरी पत्तियाँ कड़ाही में छोड़।"

उस्ताद कहता जा रहा था और मैना करती जा रही थी। इसी प्रकार कड़ाही में कितने ही जानवर और जड़ी-बूटियाँ छोड़ी गईं।

इसके बाद उस्ताद उठा और दूसरी कोठरी में जाकर, रस्सी में बँधा हुआ तीन फीट लम्बा और एक फीट चौड़ा एक भयानक बिसखोपड़ा खींच लाया।

बिसखोपड़ा को ठीक कड़ाही के ऊपर छत से उल्टा टाँग दिया उस्ताद ने, फिर एक नुकीली कील उसके मस्तक में ठोंक दी।

बिसखोपड़ा जोरों से छटपटाया। उसके मस्तक से एक-एक बूंद खून निकलकर खौलते तेल में गिरने लगा।

"अब दो घण्टे तक यह ऐसे ही रहेगा।" उस्ताद आराम की साँस लेकर बोला—"मैना! तू इस परदेसी को थोड़ा घुमा-फिरा ला। ले, यह साँप भी लेती जा। इसकी भी तबीयत बहल जायगी तेरे साथ।"

उस्ताद ने गले का साँप निकालकर मैना की ओर बढ़ाया।

मैना ने उसे लेकर उसी तरह माला बना अपने गले में पहन लिया और परदेसी से बोली—"चलो परदेसी!"

"कहाँ?" चौंककर बोला परदेसी। यहाँ की भयानक कार्य-प्रणाली देखकर वह विस्मित था।

"घूमोगे नहीं कुछ?" बोली मैना—"पड़े-पड़े पैरों में जंग लग जायगी।"

"चलो, देखूँ तो क्या-क्या चीजें अभी और दिखाई पड़ती हैं।"

डरता हुआ बोला परदेसी।

"तुम तो अभी से डर गये जी ! फिर हमारा साथ क्या दोगे ?" हाथ पकड़कर मैना परदेसी को बाहर निकाल ले गई।

दोनों गाँव की दुबली-पतली पगडंडी से आगे बढ़े।

"यह···" रुकती-सी आवाज में बोला परदेसी, जब उसकी दृष्टि मैना के गले में पड़े हुए साँप पर पड़ी।

"ओह ! यह साँप ?" मैना हँसी—"यह भी तो घूमने चल रहा है। यह बापू का पुराना साँप है। इसके पास मणि है और यह उड़ भी सकता है। हमारे साथ रहकर भी तुम इतना डरते हो परदेसी ? उतने बड़े अजगर के पेट में उतर गये, तब तो डर नहीं लगा तुम्हें ?"

"कहाँ ले चल रही हो मैना ?" परदेसी ने थोड़ी देर बाद कहा—"गाँव तो पीछे छूट गया।"

"मेरा साथ तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या ?"

"लगता तो है। कैसे मालूम कि नहीं लगता ?···मगर चलोगी कहाँ तक इस तरह ?"

"सामने देख रहे हो ?" मैना बोली।

"देख तो रहा हूँ।" परदेसी ने उँगली उठाकर कहा—"थोड़े पेड़ हैं और ऊँचा टीला !"

'टीला नहीं जी ! बापू कहते हैं, वहाँ किसी जमाने में एक महल था जिसकी छत पर चढ़कर वहाँ के लोग तारे तोड़ लाया करते थे, बादलों को पकड़कर पानी पिया करते थे, मगर सूरज को नहीं पकड़ सकते थे। मैं पूछती हूँ बापू से क्यों, तो कहते हैं इतना गरम होता है सूरज कि उसे छुओ तो हाथ में छाले पड़ जायँ। हाँ, परदेसी ! एक बात मुझे बताओ तो ?"

"क्या ?" परदेसी ने पूछा।

दोनों आगे बढ़े जा रहे थे, बातें करते हुए।

"यही कि सूरज और चन्दा तो एक ही आसमान में रहते हैंन ! फिर एक गरम और एक ठण्डा क्यों होता है ? सूरज चमकता है तो गर्मी से पसीना छूटने लगता है, चाँद चमकता है तो ठंडक से हवा तक ओस बन जाती है···ऐसा क्यों होता है बाबू ?"

कहकर मैना ने परदेसी का हाथ पकड़ लिया।

परदेसी बोला—"तुम तो ऐसी बात पूछती हो जिसका कोई जवाब नहीं। क्या बताऊँ तुम्हें !"

'तो यह कहो कि तुम्हें मालूम ही नहीं। शहर के लोग भी यह सब नहीं जानते, बड़ा अचम्भा है इसी बात का। मगर इस महल में रहनेवाले उस बात को जानते रहे होंगे।"

"तो क्या यह टीला सचमुच कोई महल था ?"

"हाँ जी ! मैना की जीभ कभी झूठ नहीं बोलती। अभी वहाँ चलकर तुम खुद देख लोगे। टीले के नीचे टूटी-फूटी कितनी ही कोठरियाँ हैं।"

बातें करते-करते दोनों टीले पर पहुँच गये।

टीले के उस पार उतरते ही किसी समृद्धिशाली भवन के ध्वंसावशेष मिलने लगे।

दीर्घाकार बड़े-बड़े खम्भे, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े चारों ओर पड़े थे। ऐसा लगता था कि उस युग का जागता-खड़ा भवन, आज थककर पाँव पसारे जमीन से लिपट सोया पड़ा हो।

"उसमें कहाँ घुस रही हो ?" परदेसी ने रोका।

"आओ न ! डरते क्यों हो जी ?" मैना बोली—"जरा सिकुड़कर मेरी तरह इस दरार में घुसो तो !"

"बड़ी सँकरी दरार है यह तो ! उस पार न जाने क्या होगा !"

"उस पार समूचा कमरा है जी ! एकदम साबुत !···बैठने-लेटने को काफी जगह है···इसे कोई जानता नहीं। एक दिन बापू मुझे यहाँ लाये थे···बापू बहुत बूढ़े हैं न ! वे तो इस जगह की इतनी बातें जानते हैं कि गाँव का आदमी सपने में भी न देख सका होगा।···आओ न !"

उस पतली-सी भयावनी दरार की राह सिकुड़कर मैना भीतर घुसी। बड़ी मुश्किल से परदेसी भी भीतर हो पाया।

"उफ् ! बड़ा अँधेरा है यहाँ तो मैना !" परदेसी घबड़ाकर बोला—"कुछ दिखाई भी तो नहीं पड़ता···कहाँ घुमाने लाई हो मुझे ?"

"अरी मैया ! मरद होकर भी बड़ा डरते हो तुम तो

परदेसी !···यह कोठरी ही तो है ! बापू को जब भी कोई मन्तर जगाना होता है तो इसी जगह आते हैं कि कोई जान भी नहीं सकता।"

"इस अंधेरे में तो मैं नहीं रुक सकता मैना !" परदेसी मैना के शरीर से सटकर खड़ा हो गया।

मैना का शरीर सिहर उठा, परदेसी के स्पर्श से। वह उसके और पास खिसक आई। इस परदेसी का स्पर्श उसे जाने कैसा मादक लग रहा था ! भोली मैना ने कभी किसी पुरुष के स्पर्श में इतनी विह्वलता का अनुभव नहीं किया था।

"मैं अभी उजाला करती हूँ।"

कहकर मैना ने अपने गले का साँप निकाल जमीन पर छोड़ दिया और कुछ बुदबुदाने लगी। अँधेरे के कारण परदेसी कुछ देख भी न सका।

एकाएक उस अँधेरी जगह में हल्के हरे रंग की मद्धिम रोशनी फैल गई।

चौंककर परदेसी ने उस ओर देखा।

चमक रही थी कोई छोटी-सी चीज जमीन पर जिसके चारों ओर घेरा डाले मैना का साँप पड़ा था चुपचाप।

"यह क्या है मैना ?···यह कौन-सी चीज चमकने लगी ?" परदेसी ने आश्चर्य की दृष्टि से मैना की ओर देखा और कुछ सहमकर उसके और निकट हो रहा।

मैना ने हँसकर अपना दाहिना हाथ उसके गले में डाल दिया; बोली—"नही जानते ?···यह मणि है, जो चमक रही है।"

"मणि ? कहाँ से आई ?"

"यह इसी साँप के अन्दर रहती है। बापू कहते हैं, यह चीज अनमोल है। ऐसा साँप गाँव में किसी के पास नहीं।"

"अजीब साँप है यह तो मैना !"

"हाँ !·· मगर मन्तर के बल पर ही यह अपनी मणि उगलता है, नहीं तो किसी आदमी के सामने साँप कभी अपनी मणि नहीं निकालते। अब भी अगर कोई इसकी मणि छूने की कोशिश करे तो यह उसे जिन्दा न छोड़े।···बैठो परदेसी ! देखा, कितनी साफ

जगह है ! इस चट्टान पर बैठो ।"

परदेसी बैठ गया । मैना भी उसके गले में बाहें डाल बैठ रही ।

परदेसी ने हल्के उजाले में चारों ओर देखा । कोठरी लम्बी-चौड़ी थी और अधिक कूड़ा-करकट भी वहाँ नहीं था । साफ हवा पता नहीं किधर से आ रही थी ।

कोठरी की छत ऊबड़-खाबड़ थी । मालूम होता था कि बड़ा-सा आलीशान मकान पूरी तरह गिर नहीं पाया और यह कोठरी साफ बच गई । कोठरी में कई दरवाजे भी दिखाई पड़ रहे थे मगर सबके अन्दर धराशायी भवन के कंकड़-पत्थर भरे हुए थे ।

"ये दरवाजे कैसे हैं मैना ?"

"महल के गिरने से सभी बन्द हो गये ।" मैना बोली—"सिर्फ वह सामनेवाला दरवाजा ठीक है । बापू कहते थे, इसमें का रास्ता कहीं दूर जाकर निकल गया है । बापू ने इसमें बैठने से मना कर दिया है ।"

"जगह तो बड़ी अच्छी है मगर भयानक बहुत है । तुम न होती तो मेरी हिम्मत छूट जाती । तुम यहाँ अक्सर आती हो क्या ?"

"कभी-कभी जी, बापू के साथ ।" मैना बोली - "आज सोचा, तुम्हें भी यह जगह दिखा ही दूँ···बापू से मत बताना परदेसी ! सुनेंगे तो आँखें कपार पर चढ़ा लेंगे ।"

"किसका था यह मकान ?"

"मकान ?···महल कहो जी इसे, महल ही था यह । बापू कहते थे, कभी यहाँ बड़े अमीर लोग रहा करते थे । एक बार इधर बहुत बड़ा भूडोल आया और महल की यह गत बन गई । कोई न बचा परदेसी !"

"भूडोल ?"

"सच जी !···बहुत बड़ा भूडोल !···भला कितना बड़ा रहा होगा वह भूडोल परदेसी ?"

"मैं क्या जानूँ ?"

"भूडोल भी नहीं जानते तुम ?···जरा ठीक से बैठो, मैं लेट जाऊँ । दो रात तुम्हारी वजह से सो भी नहीं पाई ।" मैना परदेसी की गोद में सिर रखकर लेट गई—"देखो, अब कितना आराम मिला

मुझे !···हाँ, तो भूडोल जब आता है तो यह जमीन काँपने लगती है, जैसे साँप को देखकर तुम शहरी लोग काँपते हो।"

"मैं जानता हूँ।" परदेसी ने अपना हाथ मैना के सिर पर रख दिया और धीरे-धीरे सहलाने लगा।

"तुम जादू जानते हो क्या परदेसी ?" मैना इस तरह से बोली, जैसे धीरे-धीरे बेहोश हो रही हो।

"नहीं तो !"

"तुम मेरा सिर सहला रहे हो न ? लगता है, जैसे मेरे दिल में कोई साँप चलने लगा हो···हटाना चाहकर भी तुम्हारा हाथ नहीं हटा पा रही हूँ, जादू ही तो है यह !"

परदेसी की हथेली मैना के सिर पर दौड़ती रही।

"परदेसी !"

"बोलो ?"

"भूडोल भला क्यों आता है ?"

"तुम्हीं बता दो।"

"दैया रे ! तुम्हारी उँगलियाँ साँप-सी रेंगने लगी हैं मेरे बालों में। मन्तर जानकर भी बच नहीं पा रही हूँ। यह सब क्या है परदेसी ?"

"कुछ नहीं।" परदेसी का क्रम चलता रहा—"तुम कहती चलो भूडोल की बात···क्यों आता है भूडोल ?"

"बापू कहते थे, यह पिरथी नाग भगवान के फन पर टिकी है। सैकड़ों बरस पर नाग भगवान जब साँस लेते हैं तो उनका बदन हिल जाता है और जमीन काँपने लगती है।"

"वही नाग न, जिसे तुम लोग खा जाते हो और जिसका चमड़ा पहनते हो ?"

"धत् ! नाग भगवान की तो हम लोग पूजा करते हैं। सभी साँप तो नाग नहीं होते परदेसी ! हम लोग नाग कभी नहीं पकड़ते। उफ् ! अपनी उँगलियाँ रोक लो बाबू, नहीं तो मैं साँप बाँधने का मन्तर पढ़ती हूँ।"

"मैना !" परदेसी की आवाज अगाध प्रेम से सनकर बड़ी ही लुभावनी बन गई थी। हाथ रुक नहीं सका।

"परदेसी !" मन्त्र पढ़ने के बदले बेहोश होती-होती बोली मैना। उसके दोनों हाथ परदेसी के गले में जा पड़े।

"मन्तर न पढ़ो मैना! ऐसे ही चलने दो इन हाथों को। कई रातों से जग रही हो न? इस तरह से क्या कुछ आराम नहीं मिलता तुम्हें?"

"आराम?···मिल तो रहा है···मगर अब तुम्हारी आवाज भी साँप बन गई है और मेरे कानों में चल-फिर रही है। मुझे सँभलने दो परदेसी! बापू कसम, इतना नशा तो बापू की घड़े-भर शराब में भी नहीं होगा।"

"तुम शराब भी पीती हो रानी?" परदेसी का मुख नीचे झुकते-झुकते मैना के मस्तक तक आ गया था। उसकी एक-एक साँस मैना के चेहरे पर लोटने लगी थी।

"रानी? क्या-क्या कह रहे हो परदेसी? अपनी एक-एक बात से तुम डँसे जा रहे हो।" मैना का स्वर अब पूरा मदहोश हो चला था—'शराब की बात पूछते हो? हम सभी तो शराब पीते हैं! मगर लड़कियाँ उतना पी कहाँ सकती हैं मरदों के मुकाबले! तुम नहीं पीते क्या परदेसी?···उफ्!"

"क्या हुआ मैना?"

"अपना मुँह ऊपर उठा लो परदेसी! तुम्हारी साँस बड़ी गरम लग रही है···मैं पागल हो जाऊँगी।"

मगर परदेसी ने अपना मुँह दूर करने के बदले अपने होंठ मैना के मस्तक पर रख दिये।

"यह क्या हुआ बाबू?"

"क्या?"

"यही मेरे माथे पर···क्या चीज रख दी तुमने?"

तभी मैना की खुली आँखें बन्द हो गईं, परदेसी के अधरों को अपनी ओर बढ़ता देखकर।

आँखों पर हल्का बोझ-सा पड़ा, फिर उठ गया।

मैना ने नेत्र खोल दिये तो वे परदेसी की आँखों से जा टकराये।

"रानी!"

"बाबू ! तुम तो मेरे बापू से भी ज्यादा जानते हो।"

"जानता तो कुछ नहीं था मैना, अब तुम चाहे जो सिखा दो।"

परदेसी ने मैना की ठुड्डी जरा-सी ऊपर उठाई। मैना की आँखें फिर बन्द हो गईं। होंठ कुछ कहते-कहते भी तड़पकर बेहोश हो गये। ललाम गालों की एक-एक नस काँप-काँप उठने लगी।

"मैना !"

"परदेसी !"

"आँखें खोलो मैना ! मेरी ओर तनिक देखो !"

"नहीं, अब नहीं परदेसी ! देख सकती तो देखती ही, मगर पलकें उठ नहीं रही हैं। तुमने क्या कर दिया है मुझे बाबू ? अपना कुछ भी तो नहीं रहा मेरे बस में ! बापू से भी बढ़कर तुमने जगह पा ली मेरे दिल में परदेसी ! सोचती हूँ, तुम मुझे इतने अच्छे जो लगने लगे हो, कभी चले गये तो क्या हाल होगा मेरा ?"

"कभी यहाँ से जाने लायक हुआ तो तुम्हें भी अपनी छाया बनाकर ले चलूँगा मैना !"

परदेसी के होंठ मैना के बेहोश अधरों पर हलकी-सी दौड़ लगा गये तो मैना का शरीर एकाएक इस तरह सिहर उठा कि परदेसी ने उसके धड़कते हुए दिल को अपने सीने में छिपा लिया।

"चलो परदेसी ! कितनी देर हो गई ! बापू घबराते होंगे।" उठती हुई मैना बोली।

"चलो।"

दोनों दरार से बाहर आये। देखा तो चारों ओर घड़ीभर रात का अन्धकार छा चुका था।

"दैया रे ! देखो, बापू आज कितना बिगड़ते हैं।" मैना ने भयभीत स्वर में कहा।

"तुम्हारा साँप तो भीतर ही रह गया मैना !"

"नहीं जी, यह पीछे क्या पड़ा हुआ है जमीन पर ?" कहकर मैना ने पुनः साँप की माला पहन ली।

"और इसकी मणि ?"

"इसने अपने पेट में डाल ली।" बोली मैना—"अपनी मणि छोड़कर भला यह हट सकता है कहीं ? अब जरा तेज पैर बढ़ाओ।

परदेसी ! लो मेरा हाथ पकड़ लो, कहीं ठोकर न लग जाय।"

दोनों तेजी से गाँव की ओर चले। एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहने के कारण उन्हें बड़ा सहारा मिल रहा था और हृदय को एक अजीब आनन्द भी।

"परदेसी ! मुझे भी ले चलोगे न अपने साथ ?"

"ले तो चलूँगा ही।" बोला परदेसी—"तुम्हें यहाँ छोड़कर मेरे पैर एक पग भी नहीं बढ़ सकेंगे आगे।"

"कैसा होता है शहर ?···शहर में भला क्या-क्या चीजें होती हैं जी ?"

"यह सब तो मुझे याद नहीं रहा मैना ! कभी शहर पहुँचा तो शायद सब-कुछ याद आ जाय···अरे, वह क्या है ?"

चलता-चलता परदेसी डरकर रुक गया। दूर अँधेरे में उँगली उठाकर मैना को कोई चीज दिखाई उसने।

"कुछ भी तो नहीं है जी ! बहुत डर जाते हो तुम।" मैना ने हँसकर कहा।

"बीच पगडण्डी पर कोई छाया खड़ी थी मैना !···अभी-अभी मैंने देखा है, दौड़कर वह उस बरगद के पीछे चली गई।"

"धत् !···बढ़ो आगे।"

दोनों फिर तेज-तेज चलने लगे।

"शहर में इतनी छोटी पगडण्डियाँ तो होती न होंगी, क्यों परदेसी ?" पूछा मैना ने।

"अब तो तुम्हें ले ही चलूँगा कभी···चलकर खुद देख लेना।"

"हा-हा-हा !···चलकर खुद देख लेना···" बरगद के पेड़ के पीछे इतना प्रबल अट्टहास सुनाई पड़ा कि दोनों सहमकर गिरते-गिरते बचे। सुनसान अँधेरी रात में वह हँसी बड़ी भयानक लगी।

"भूत···!" जोरों से चिल्लाई मैना और परदेसी से जा लिपटी—"कोई भूत है परदेसी ! बापू कहते थे इस महल के सभी आदमी मरकर भूत बन गये हैं।"

स्वर काँप रहा था मैना का।

"भूत !···हा-हा-हा !" फिर वैसा ही विकट अट्टहास।

और तब बरगद के पीछे से एक धुँधली-सी छाया निकलकर

इनकी ओर बढ़ी।

अब तो परदेसी का भी शरीर भय से काँपने लगा था।

"परदेसी!" बदहवास परदेसी को मैना ने सजग किया।

"क्या यह सचमुच भूत है मैना?"

"नहीं जी! कोई आदमी है।" शंकित स्वर में मैना बोली—"देखो अब आ पहुँचा···अरे, यह तो···"

"टिकोरा है मैना! तुम्हारा टिकोरा!" आती हुई अदृश्य छाया कुछ-कुछ स्पष्ट होती बोली।

"तुम?···टिकोरा, तुम इधर?" मैना अब और भी डर गई थी क्योंकि टिकोरा तो भूत से भी ज्यादा खतरनाक था।

"चला आया था इधर मैना!" अजीब क्रूर स्वर में बोला टिकोरा—"अंधेरी रात में तुम दोनों को गाँव पहुँचने में तकलीफ होती न!"

"हम पहुँच जायेंगे खुद ही, तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं··· छोड़ो रास्ता।" मैना बोली।

"भला उस्ताद की बेटी का रास्ता कौन रोक सकेगा?···कुछ बात तो सुन लो फिर चली जाना। इतनी जल्दी भी क्या है?··· दो-चार घड़ी इस परदेसी के साथ गुजरीं, अब टिकोरा को दो-चार पल ही दे दो!···किधर गई थी इस छैला के साथ?"

"तुमसे मतलब?" मैना बोली।

'इन्सान को जब भूख लगती है मैना, तब वह पेट भरने की जगह खोज ही लेता है···मगर तुमने तो ऐसी जगह खोज निकाली कि यह टिकोरा भी न जान सका। चला तो था तुम दोनों के पीछे ही, मगर उस टीले के पास जाकर तुम ऐसी गायब हुई कि खोजते-खोजते आँखों की पुतलियों में दर्द हो चला, फिर भी तुम नहीं मिली···लाचार यहीं बैठा रहा कि कभी तो तुम लौटोगी ही इस रास्ते।"

"बापू की मार को तुम इतनी जल्दी भूल गये?"

"नहीं मैना! भूल सकता तो तुम्हारे पीछे क्यों लगता?··· इन्सान जब ताकत से नहीं जीत सकता किसी को, तो पीछे से वार करता है; धोखा देता है, दगाबाजी पर उतर चलता है। तुम, या

यह परदेसी कोई भी टिकोरा का वार नहीं बचा सकता।"

टिकोरा दो पग आगे बढ़ आया। मैना और परदेसी सहमकर पीछे हट गये।

"मैना रानी! तुम्हारे गले में तो वही साँप है न!···वही मणि वाला, जो उड़ सकता है···वही तो है! जानती हो न, किसी को काट ले यह तो उस्ताद के भी सब मन्तर छूमन्तर हो जायँ।"

"एक दिन तुम्हीं को काटेगा यह कि साँस भी न ले पाओगे तुम।"

"काटेगा कभी, आज तो नहीं न! सन्नाटा तो है ही, तुम्हारी चीख भी शायद उस्ताद के कानों तक नहीं पहुँच पायेगी।"

"हे भगवान्! क्या करना चाहते हो तुम टिकोरा?" मैना बहुत भयभीत हो उठी थी।

"मैं?···मैं इस साँप पर मन्तर डालना चाहता हूँ।" तेज आवाज में बोला टिकोरा—"अब कोई भी इस साँप से परदेसी को नहीं बचा सकता। मन्तर की एक चुटकी धूल के पड़ते ही यह तुम्हारे परदेसी के बदन में अपना जहर उगल देगा···हा-हा-हा!"

"टिकोरा! दगाबाजी ठीक नहीं···वार करना हो तो बराबरी का वार करो। इस भोले-भाले परदेसी की जान तुम क्यों लेना चाहते हो?"

"इसलिए कि यह मेरी राह का काँटा है। इसे छोड़कर तू मेरी न बनेगी···नहीं न?···तभी तो मैं इसे हटाना चाहता हूँ। अब भी तू आकर मेरे गले में हाथ डाल दे तो देख, यह परदेसी जीता रहता है या नहीं?···मंजूर है?"

"नहीं···नहीं···नहीं!"

टिकोरा दो पग पीछे हटा। झुककर जमीन से एक चुटकी धूल उठाई उसने।

मैना चिल्ला उठी—"टिकोरा! इस बेगुनाह की जान न ले! पैरों पड़ती हूँ तेरे!"

"मैना ओ मैना!"

तभी दूर से बूढ़े उस्ताद की पुकारती हुई आवाज आई।

मैना हर्ष से उछल पड़ी—"बापू आ पहुँचे···खड़ा तो रह

शैतान ! अब भागा तो मरद का बच्चा नहीं···देख तेरी क्या दुर्गति बनती है अभी !"

मगर उस्ताद की आवाज सुनते ही टिकोरा को तो जैसे पर लग गये।

"मैना···!"

"यहाँ हूँ बापू ! चले आओ इधर।"

"यहाँ क्या कर रही है रे कमीनी, अँधेरे में खड़ी होकर ?··· परदेसी बाबू कहाँ गये ?"

"यह तो हैं।"

"या भगवान् ! यह लड़की भूतों की तरह अँधेरे में घूमा करती है···इधर कहाँ आई थी ?"

"उस टीले पर तो बैठी थी···नीचे नहीं उतरी थी बापू ! परदेसी से पूछ लो हम दोनों को थोड़ी-सी नींद आ गई थी।"

"कितनी दफे कह दिया कि इधर न आया कर···हाँ, टिकोरा दीख पड़ा था इधर ?"

"क्यों बापू ?"

"चमकू कह रहा था कि वह गाँव-भर में पागलों की तरह घूमकर लोगों को धमका रहा है···बदला लेगा कमीना ! बचकर रहना उससे बेटी, पूरा करैत है लुच्चा !"

"इधर तो नहीं आया बापू !" मैना झूठ बोल गई, "नहीं तो शायद व्यर्थ का झगड़ा उठ खड़ा होता।"

"अच्छा चलो तुम लोग !"

आगे-आगे उस्ताद फेरई और उनके पीछे मैना तथा परदेसी चल पड़े।

⊙

"परदेसी ! ···ओ परदेसी बाबू !"

परदेसी ने घूमकर देखा तो एक युवती थी अपरिचित, अनजान।

वह रुक गया ; गौर से उसकी ओर देखने लगा।

उसे रुका देखकर युवती अपनी नाजुक कमर पर लाख-लाख बल देती और अपनी आँखों के कमान से हजार-हजार तीर चलाती आ खड़ी हुई उसके सामने।

परदेसी के नेत्र उस युवती के मुख से उतरते-उतरते, उसके सारे सौन्दर्य का निरीक्षण करते, पैरों तक आ रहे।

सुन्दरता तो है, मगर मैना-जैसी नहीं। हाँ, कुछ अदाओं में तो मैना से भी बढ़-चढ़कर थी वह!

"क्या है?" परदेसी ने पूछा।

"आज अकेले ही हो क्या?"

"हाँ, बैठे बैठे घूमने को जी चाहा तो इधर निकल आया।"

"और मैना?" युवती ने पूछा।

"उस्ताद और मैना कहीं गये हैं।···क्या चाहती हो तुम मुझसे?"

"गाँव की लड़की परदेसी से जो कुछ चाह सकती है, वह तो तुम मैना को दे चुके हो पहले ही··अब मेरे लिए बचा ही क्या रह गया है तुम्हारे पास? तुम्हारा दिमाग भी तो सही नहीं कि तुम मुझमें और मैना में फरक देख सको। मैना के भाग बड़े अच्छे हैं बाबू! तुम्हें पाकर कौन निहाल नहीं होगी?"

"चलता हूँ अब।" परदेसी बोला।

"बैठो न थोड़ी देर परदेसी!" युवती ने परदेसी का हाथ पकड़ लिया—"इस पत्थर पर बैठ जाओ···सन्नाटा तो है ही, कोई देखेगा भी नहीं। कुछ बातें ही कर लो मुझसे। कोई देखेगा भी तो कुछ नहीं बोलेगा···इस गाँव में सब-कुछ चलता है। जिससे जिसका दिल लगे, उसे ले बैठे।"

परदेसी को बैठना पड़ा। युवती भी परदेसी से इतनी सटकर बैठी कि बीच से हवा का गुजरना मुश्किल।

परदेसी को कुछ घबराहट हुई तो युवती ने अपने नाज़ुक हाथ उसके कन्धे पर रख दिये।

घबड़ा क्यों रहे हो परदेसी?"

"नहीं तो! मगर मुझे घूमकर जल्द ही गाँव लौटना है।"

"लौट जाना, इतनी जल्दी क्या है? तुमने अभी मैना को ही देखा है बाबू! मगर इस गाँव में एक मैना ही नहीं है? कितनी ही तो और हैं, जो तुम्हारे एक इशारे पर लुट सकती हैं!···मुझे ही देखो, टिकोरा कहता है मुझ-सी इस गाँव में कोई नहीं। उस्ताद

की बेटी होकर मैना चाहे जितने ऊँचे उठ जाय, मगर खुद अपनी हस्ती पर वह लजारो को जीत नहीं सकती।"

"लजारो कौन ?"

"मैं और कौन ?···मुझे नहीं जानते ? यहाँ के नौजवानों की आँखों से पूछो, जिनमें मैं घर किये बैठी हूँ। सँपेरों की आहों से पूछो, जो मेरी जवानी देखकर निकला करती हैं। गाँव के बेजान पत्थरों से पूछो, जिनपर मेरे पैरों के निशान हैं। यहाँ की मस्तानी हवा से पूछो, जिनके एक-एक झोंके पर मेरे नाच की गत लहरा रही है। इन पेड़-पत्तों से पूछ देखो, जो मुझे आते देखकर खुशी से पागल हो झूम-झूम उठते हैं···सभी तो मुझे जानते हैं परदेसी ! एक तुम्हीं नहीं जान पाये अबतक, और मैना के आगे लुट बैठे।"

लजारो परदेसी के और पास खिसक आई। परदेसी और भी दूर सरकने लगा तो लजारो ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया।

"मुझे जाने दो लजारो !"

"भाग नहीं सकोगे परदेसी ! जब से आये हो, मेरा दिल छीन बैठे हो···लजारो तुमपर कुर्बान हो गई बाबू ! मुझसे दूर न भागो !"

"मैं भागूँगा नहीं, छोड़ दो मुझे !"

"ताकत हो तो छुड़ा लो अपने-आप।" लजारो ने परदेसी को और भी कसते हुए कहा—"परदेसी ! मेरे दिल की आग देखकर घबड़ाओ मत, जल नहीं जाओगे तुम ! मेरी प्यास बुझा दो मेरे रसिया, सिर्फ एक चुल्लू मीठे पानी से···लजारो ज्यादा नहीं चाहती, सिर्फ एक चुल्लू। देख रहे हो न, यह सुनसान जगह, यह मस्त हवा के धीमे झकोरे, चुपचाप खड़े हुए ये बेजबान पेड़, तुम्हारे गले में माला बनी हुई मेरी नाजुक बाहें···और तुम्हें क्या चाहिये मेरे राजा ?"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये लजारो !···मुझे छोड़ दो ! मुझ आफत के मारे पर रहम करो !"

मगर लजारो की आँखों में तो साँप खेल रहा था। उसने आवेश में आकर परदेसी का मुँह चूम लिया।

और परदेसी ने उसे इतनी जोर से ढकेला कि लजारो का सारा

बदन धूल से नहा उठा और सूरत बड़ी ही भयावनी बन गई।

वह फुफकारती हुई उठी तो उसने परदेसी को भागकर दूर जाते हुए देखा।

"कमीना कहीं का! सामने खाना देखकर भी भूख नहीं लगी हरामी को।"

लजारो बदन की धूल झाड़ने लगी। तभी—

"चोट तो ज्यादा नहीं आई?···हा-हा-हा!"

लजारो ने चौंककर दृष्टि घुमाई।

"मैं ही तो हूँ लजारो! अरे, मुँह पर इतनी धूल लग गई है तेरे? उस्ताद कसम! यह परदेसी पूरा बैल है···कितनी जोर से धक्का दिया था तुझे!"

"टिकोरा···मेरे छैला!"

टिकोरा ही था—आँखों में भयानक मुस्कराहट खेल रही थी; तनकर खड़ा था, जैसे ताड़।

"छैला कहती है मुझे!" विचित्र तरह से हँसकर बोला टिकोरा—"छैला तो तेरे सभी हैं! पूजा के वक्त जो पत्थर सामने पड़ जाय, वही भगवान्!···हा-हा-हा! भूख अजीब है लजारो! रोज नया-नया खाना माँगती है तेरी जीभ!"

"मुझे जलाओ मत रसिया!"

"तू तो खुद जलते-जलते कागज की डली बन गई है अलबेली, कि हर किसी की आँख में जा गड़ती है। दिल तो तेरा एक चीज पर टिक ही नहीं पाता कभी। सीना इतना चौड़ा हो गया है तेरा कि हर किसी का दिल समा जाय···पहले चमकू था, फिर टिकोरा··· और अब तो परदेसी की बारी है!"

"मैं तो योंही उससे कुछ बातें कर रही थी मेरे राजा!"

"बातों-बातों से ही तो बात बढ़ती है रे!···अच्छा है, यह परदेसी कोई बुरा तो नहीं···इसे फाँस ले तो मेरा भी रास्ता साफ हो जाय।"

"मेरा दिल तो सिर्फ तुम्हें चाहता है छबीले!"

"तभी तो!···बैठेगी नहीं थोड़ी देर?"

"बैठूंगी नहीं भला तुम्हारे साथ?"

दोनों पत्थर पर आ बैठे।

"मुझे माफ कर दो मेरे रसिया! सच जानो, अपना दिल बहला रही थी मैं।" टिकोरा का हाथ पकड़कर बोली लजारो।

"मैं जानता हूँ···एक काम करेगी तू लजारो?"

"करूँगी मेरे राजा! कहो तो तुम्हारी आँखों में डूबकर दिल में तैरने लगूँ।"

"काम बड़ा मुश्किल है···उस्ताद का डर भी···"

"उस्ताद से मैं नहीं डरती। बोलो क्या करना है?"

"परदेसी को इस गाँव से हटा दे, या उसे अपना बनाकर मैना की तरफ से उसका दिल मोड़ दे।"

"मैं सब समझती हूँ टिकोरा, तुम्हारी चाल!" लजारो जरा तेज होकर बोली—"परदेसी चला जाय या मेरे फन्दे में आ जाय तो तुम मैना को ले उड़ो।"

"नहीं रे!" कहकर टिकोरा ने लजारो का शरीर अपनी बलिष्ठ बाहों में भर लिया—"मैं तो सिर्फ उस्ताद और मैना से बदला लेना चाहता हूँ। उस्ताद ने अभी उस दिन मेरी जान मारते-मारते छोड़ दी, सो भी इस परदेसी की ही वजह से। मैं अपनी बेइज्जती भूल नहीं सकता। टिकोरा के दिल का घाव इतनी जल्दी अच्छा नहीं होगा अलबेली! उस्ताद की जान लेकर ही मुझे सच्चा सुख मिलेगा।···तुझे अपनी समझकर बता रहा हूँ। मेरी मदद करती चल तू, फिर दस-पाँच दिनों में मुझे उस्ताद बना देखेगी।"

"और मैं?" टिकोरा के प्रगाढ़ आलिङ्गन से बेहोश होती लजारो बोली।

"तू तो मेरी रानी है ही!" कहकर टिकोरा ने उसका मुँह चूमा।

"मेरे रसिया!" आसमान पर बेसहारे उड़ती हुई लजारो ने कहा—"तुम सचमुच मेरे हो···कभी दगा तो न करोगे मेरे साथ? कभी मैना को पाने का सपना तो नहीं देखोगे अब?"

"नहीं रे नहीं!···तुझे विश्वास नहीं होता क्या?"

"होता है मेरे राजा! तुम्हारी आवाज कह रही है कि तुम्हारे दिल में मेरी मुहब्बत है। मैं हर तरह से तैयार हूँ। मेरी जान लेकर

भी तुम खुश हो सको तो लजारो का मुँह 'सी' नहीं करेगा।"

"मेरी लजारो !" टिकोरा ने उसे अपनी गोद में बिठाते हुए कहा—"तू परदेसी को मैना से दूर कर, मैं उस्ताद की खबर ले लूंगा।"

"कैसे होगा यह सब ?"

"सुन, कान में कहूँगा, नहीं तो हवा पर तैरकर आवाज भी आजकल दूर-दूर तक पहुँचने लगी है।"

टिकोरा कुछ कहने लगा। उसके मुँह के पास कान लगाये लजारो सुनती रही।

एकाएक लजारो चिल्ला उठी—

"नहीं-नहीं, परदेसी की जान नहीं…"

"सुन लजारो !" टिकोरा ने उसे मजबूती के साथ पकड़ लिया और अपनी प्रज्ज्वलित आँखें उसके हताश नेत्रों में डाल दीं—"अपने फायदे की बात सोच ! अपने सुख के लिए दूसरों का सुख छीनना ही पड़ता है। वक्त कम है छबीली ! जल्दी से जवाब दे !"

लजारो धीरे से उठ खड़ी हुई। चेहरा उतर गया था, जैसे उसके हृदय में भीषण उथल-पुथल मच रही हो।

"क्या कहती है ?"

"मैं तैयार हूँ।" लजारो के मुख से निस्तेज स्वर निकला।

⊙

परदेसी ने झोपड़े में पैर रखा तो मैना का कहीं पता नहीं था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

"मैना !"

"…" कोई जवाब नहीं।

तभी झोपड़ी के कोने से किसी के सिसकने की आवाज आई।

परदेसी वहाँ पहुँचा।

देखा—जमीन पर पड़ी हुई मैना सिसक रही है। आँखों से इतना पानी गिर रहा है कि सावन-भादों हाय-हाय कर उठें।

"मैना !" परदेसी ने उसे उठाया—"क्या हुआ रानी ?"

"मुझे छोड़ दो परदेसी ! क्या करोगे मेरे आँसू पोंछकर ?"

"मेरी मैना !" परदेसी ने मैना को उठाकर अपनी गोद में

बिठा लिया—"क्यों रो रही हो तुम ? क्या हुआ है तुम्हें ?…मुझे नहीं बताओगी ?"

"नहीं।" सिसकी भरते हुए मैना ने कहा।

"क्यों ?"

"दिल कहता है कि तुम मुझे छोड़ दोगे, तुम मेरे साथ दगा करोगे।"

"नहीं मैना ! मैं दगाबाज नहीं…मुझपर विश्वास करो।"

"कैसे विश्वास करूँ ? अपनी आँखों से तो सब देख आई !"

"क्या देखा ?" परदेसी ने पूछा।

"तुम लजारो के पास बैठे थे, बातें हो रही थीं, और…"

"और तुम नाराज हो गई ?"

"पता नहीं मैं क्यों नाराज हो गई परदेसी !…पहले तो किसी लड़की को किसी मरद के पास बैठे देखकर मुझे बुरा नहीं लगता था, मगर जाने क्यों मैं तुम्हें किसी लड़की के पास देखना नहीं चाहती। तुमने कैसा जादू कर दिया है मुझपर बाबू, कि मेरा दिल भी मेरे बस में नहीं रहा ?…क्या कह रही थी लजारो ?"

"बहुत-कुछ कह रही थी।" परदेसी ने उसे अपनी भुजाओं में लपेटते हुए कहा—"मगर तुमने नाराज होकर अच्छा नहीं किया। मैं तुम्हारा हूँ रानी, और हमेशा तुम्हारा ही रहूँगा।"

परदेसी ने मैना के अधरों पर एक दीर्घ चुम्बन अंकित कर दिया।

"ऐसा न किया करो बाबू !" मैना सब-कुछ भूलकर बोली।

"कैसा ?"

"ऐसा !" मैना ने 'वैसा' करके दिखाते हुए कहा—"मुझे पागल कर देता है यह। तुम्हारे मुँह मिलाते ही जाने कैसा नशा छा जाता है मुझपर !"

"नशे से परहेज तो तुम्हें नहीं मैना ?"

"मगर यह नशा बड़ा तेज होता है बाबू !…दो-एक कुल्हड़ दो तो पी लूँ, मगर यह शराब मुझे न पिलाया करो। होश में रहूँगी तो तुम्हें कुछ सहारा ही दूँगी, बेहोश हो गई तो बोझ बन जाऊँगी तुम्हारे सिर।"

"अब भी तो बोझ ही बनी हो ! सिर पर न सही, गोद में ही। मगर तुम्हारा बोझ भी तो कितना प्यारा है मैना ! जी चाहता है इसी तरह तुम्हें गोद में लिये बैठा रहूँ।"

"कब तक भला ?" मैना की आँखों में ऐसा सरल भाव था कि देखकर परदेसी दंग रह गया।

"जब तुम चाहो···या जबतक मुझमें शक्ति रहे।"

"बिटिया !" उस्ताद की आवाज आई।

मैना चौंककर बोली—"छोड़ो मुझे···बापू आ गये।"

"बैठी रहो ऐसी ही।"

"हट !" कहकर मैना उठ खड़ी हुई।

लाठी टेकता उस्ताद अन्दर आया। उसके हाथ में लम्बा-सा काला साँप था, जो इस तरह फुफकार रहा था कि परदेसी का कलेजा तक दहल गया।

"आ गये बापू ?"

"हाँ ! बड़ी मुश्किल से यह गेहुँवन मिला।" बोला उस्ताद—"देख न, कैसा तेज है ! तू इसे पकड़कर पिटारी में बन्द कर, और मैं जरा साँस ले लूँ। इस शैतान ने बूढ़े तन को बड़ा थकाया आज।"

उस्ताद ने लाठी दीवार के सहारे रख दी और हाँफता हुआ चारपाई पर जा बैठा।

मैना उस्ताद के समीप आई। मन-ही-मन कुछ पढ़कर उसने वह भयानक साँप हाथों में पकड़ लिया और ले-जाकर पिटारी में बन्द कर आई।

"परदेसी बाबू नहीं दिखते ?" उस्ताद ने पूछा।

"यहीं तो हैं बापू ! घाम लग गया है तुम्हारी आँखों को, सो देख नहीं पा रहे हो।"

"क्या है बाबा ?" परदेसी सामने आकर बोला—"कुछ कहना है क्या ?"

"नहीं बेटा !" उस्ताद थके स्वर में बोला—"कैसे हो तुम ? यहाँ तबीयत तो लग रही है न ?"

"हाँ।"

"मैना तो कोई शैतानी नहीं करती ?"

"नहीं बाबा ! यह तो इतनी सीधी है कि जहाँ बैठा दो, वहीं बैठी रहती है बिना हिले-डुले ।" मुस्कराकर बोला परदेसी ।

मैना ने तिरछे-तिरछे देखा परदेसी की ओर।

बूढ़ा उस्ताद बेटी की प्रशंसा सुन फूल गया ; बोला—"मेरी बिटिया कभी किसी को दुःख नहीं पहुँचाती बाबू !···और तुम्हें तो यह खूब रिझायेगी । किसी बड़े घर में होती, तो उजाला करती रहती अपने करतब से । यहाँ गाँव में इसकी कदर कौन करे ?"

एकाएक उस्ताद को कुछ याद आया—

"वह जड़ी लाई बेटी ?" उसने पूछा।

"ओह बापू ! मैं तो भूल ही गई ।"

"क्या कर रही थी अबतक रे ?" उस्ताद जरा बिगड़कर बोला—"कभी कोई काम बताओ, तो इसे साँप सूँघ जाता है !"

"मैं अभी लिये आती हूँ बापू ! ख़फा न हो, तुम्हारी तरह बड़ी हो जाऊँगी तब देखना कि कितना याद रखती हूँ ।"

"अच्छा जा, दौड़ जा ।"

मैना जाने लगी, मगर दरवाजे से पुनः लौट आई ।

"क्या है ?" उस्ताद ने पूछा ।

"बापू !"

"बोल न, है क्या ?···तनिक जल्दी जबान खोल नहीं तो शाम हो जायगी ।"

"इस परदेसी को भी साथ ले जाऊँ बापू ?" मैना ने हिचकते हुए पूछा ।

"परदेसी के बिना अब एक पग भी तुझसे चला नहीं जाता, क्यों रे ?"

"मुझे डर लगेगा ।"

"पहले तो नहीं लगता था ?"

"मैं क्या जानूँ पहले-पीछे की बात ? साफ कहे देती हूँ, परदेसी नहीं जाएगा तो मैं भी नहीं जाऊँगी ।"

बूढ़ा गम्भीर हो चला । उसकी नादान बेटी को क्या हो गया है, शायद यही सोच रहा था वह ।

"अच्छा ले जा इसे भी," बोला वह—"मगर तेज जाना और

जल्द लौटना···उस दिन की तरह देर की तो पूछूंगा तुझसे।"

"जल्दी आऊँगी बापू!" मैना उठ खड़ी हुई—"चलो परदेसी!"

परदेसी का हाथ पकड़कर वह अल्हड़ छोकरी खींच ले चली।

उस्ताद चारपाई पर लेट गया और सोचने लगा परदेसी और मैना की बात—

दोनों में कितना साथ हो गया है इन दो-चार दिनों में ही! परदेसी अपना सब-कुछ भूल गया है। मैना ही उसकी जान है अब। मगर जब उसकी याद लौटेगी और वह अपने घर चला जायगा, तब मैना का क्या हाल होगा? वह जो इतने सपने आजकल देख रही है, क्या भूल पायेगी इन्हें कभी?

"उस्ताद!"

"कौन है?" उस्ताद की विचारधारा भंग हो गई।

"मैं हूँ—टिकोरा।" आवाज आई और टिकोरा अन्दर आ रहा, चौकन्नी दृष्टि से इधर-उधर देखता हुआ।

उस्ताद के मस्तक पर चिन्ता की रेखायें उभरीं, फिर विलीन हो गईं; लेटे-ही-लेटे बोला वह—"क्या है टिकोरा?"

टिकोरा चारपाई के पास आकर उस्ताद के पैरों के पास बैठ गया।

उस्ताद चौकन्ना हो गया—पता नहीं यह जहरीला नाग ऐसे समय चुपचाप उसके पास क्यों आया है?

"उस्ताद!" कहकर टिकोरा धीरे-धीरे उस्ताद का पैर दबाने लगा।

उस्ताद हिला-डुला नहीं। लेटे-ही-लेटे उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और कुछ सोचने लगा।

"मुझे माफ कर दो उस्ताद!"

"टिकोरा!"

"माँफी माँगने आया हूँ। बड़ी गलती की थी उस दिन। होश आया, मगर देर से।" टिकोरा बराबर पैर दबाता जा रहा था।

"माँफी क्यों माँगता है तू? अपने को सुधार, बस इसी में मुझे खुशी होगी।"

"मैं सुधर गया हूँ उस्ताद! जी चाहे आजमा लो।"

"आजमाने की जरूरत नहीं, बेटे! वक्त सब-कुछ जाहिर कर

देगा।"

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। टिकोरा पैर दबाता रहा। उस्ताद आँखें बन्द किये लेटा रहा।

"एक बात···" टिकोरा रुक गया।

"कुछ कहना है ?"

"हाँ उस्ताद, मगर···डर लग रहा है।"

"सुना !"

"अब तो मैं काफी बड़ा हो गया हूँ उस्ताद ! है न ?"

"पूरा जवान समझ अपने को अब तो।"

"समझ भी आ गई मुझमें, सुधर भी गया हूँ···अब और क्या चाहते हो उस्ताद ?"

"कुछ नहीं !" उस्ताद बोला—"इतना ही बहुत है। भगवान् करें तू खुश रहे !"

फिर थोड़ी देर तक बातचीत बन्द हो गई।

"मैना घर में नहीं है न उस्ताद ?" पूछा टिकोरा ने।

"नहीं, मैं अकेला ही हूँ···बड़ा उलझ गया है आज तू, साफ-साफ कह !"

'मैना भी तो अब बड़ी हो गई ?"

"अभी उतनी बड़ी तो नहीं···हो ही जायगी···वही तो इस बुढ़ापे का सहारा है बेटे !"

"मुझे भी अपना बना लो उस्ताद ! मेरा सहारा कुछ कम नहीं रहेगा। हम और मैना मिलकर तुम्हारी खूब सेवा करेंगे।"

"तेरा मतलब ?" एकाएक उस्ताद को होश आया।

"मैना की सगाई मेरे साथ कर दो उस्ताद !" कहते-कहते टिकोरा ने पैर दबाना बन्द कर दिया।

उस्ताद उठकर बैठ गया। कुछ तेज स्वर में बोला—"टिकोरा ! जो कुछ तू है इस वक्त, उसको देखते हुए मैना को पाने का खयाल छोड़···मैना तेरे पास रहकर सुख नहीं पायेगी।"

"बचपन में उसने वादा किया था उस्ताद !"

"बचपन अब बीत गया, उसके साथ वह वादा भी। तू बराबर ब्याह के लिए मैना को तङ्ग करता आ रहा था···मैना मुझसे सब

कह देती थी। उससे निराश होकर अब तू मुझपर रंग चढ़ाना चाहता है ?"

"मगर मैना को मुझसे ब्याह करना ही होगा उस्ताद !" टिकोरा उठकर खड़ा हो गया और लाल-लाल आँखों से घूरने लगा उस्ताद को। गिरगिट ने एक ही क्षण में रङ्ग बदल लिया।

"टिकोरा !" उस्ताद भी क्रोध में आ गया था—"उतर आया न अपने असली रूप पर !"

"चाहो जो कहो उस्ताद, मगर मैना को मैं लेकर ही रहूँगा··· नहीं···नहीं तो···"

"नहीं तो ?"

"टिकोरा साँप नहीं है उस्ताद, कि उसपर तुम्हारा मन्तर चल जायगा। तुम्हें शायद मालूम नहीं कि तुम्हारी मासूम बेटी उस परदेसी के साथ आजकल क्या खेल खेल रही है ?"

"मालूम है मुझे।" उस्ताद बोला—"तुझे इसमें घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं।"

"तो मैना तुम्हारा ही इशारा पाकर परदेसी पर डोरे डाल रही है ?"

"बन्द कर अपनी जबान टिकोरा !"

"मुझ-जैसे बिरादरी के जवान को छोड़ तुमने एक अजनबी को मैना के लिए चुना, ऐसा इस गाँव में कभी नहीं हुआ।"

"मगर अब होगा।" उस्ताद उठ खड़ा हुआ—"मैं इस गाँव का उस्ताद हूँ। कानून बनाना मेरे हाथों में है।"

"उस्ताद ! अब गाँववाले इतने अन्धे नहीं कि तुम जिधर चाहो उनकी नकेल पकड़कर घुमा दो। तुम्हें पञ्च के सामने जवाब देना होगा।"

"मैं दे लूंगा।"

"टिकोरा को भूल मत जाना उस्ताद ! बदले की आग मेरे दिल में धधक रही है, जो तुम्हें, मैना को और जो भी मेरे रास्ते में पड़ेगा, सबको राख कर देगी।"

"नमकहराम !"

"मेरी कमर का छुरा देख रहे हो न ? अगर चाहूँ तो मन्तर

पढ़ने के पहले ही तुम्हारी जबान को खामोश कर दूँ, तुम्हारी जान ले लूं। टिकोरा से उलझना साँपों का खेल नहीं उस्ताद ! अपनी इन बूढ़ी हड्डियों को मुकाबले के लिए तैयार रखना !"

पैर पटकता हुआ टिकोरा चला गया।

उस्ताद का काँपता शरीर धम्म से चारपाई पर गिर पड़ा। मुँह से निकला—"बदजात ! कमीना ! लुच्चा !"

"बापू ! क्या है बापू ?"

परदेसी के साथ मैना आ पहुँची थी।

"वह हरामजादा टिकोरा था।" हाँफते हुए बोला उस्ताद।

"क्या कह रहा था बापू ?"

"कहेगा क्या कमीना ? ऊलजलूल बक रहा था···शाम को पंचायत जुटायेगा।"

"कैसी पंचायत ?"

"तू चुप रह मैना ! अब सवाल-पर-सवाल करके मेरा दिमाग खराब न कर !" कहकर उस्ताद लेट गया।

शाम को—

गाँव के सारे संपेरे जमा थे, बड़े-से इमली के पेड़ के नीचे।

पाँच बूढ़े, जो उस्ताद के नीचे पंच कहलाते थे, ऊँचे चबूतरे पर बैठे थे। कई मशालें जल रही थीं। कई सौ की भीड़ थी। शोर-गुल भी काफी हो रहा था।

पंच के पास खड़ा टिकोरा तेज आवाज में बोल रहा था—

"तुम बताओ, कभी हुआ था ऐसा हमारी जमात में ? उन्हें उस्ताद हमने माना है, इसलिए नहीं कि खुद ही कानून बनायें और अपनी मर्जी से तोड़ा करें। आखिर हम लोगों का भी कुछ दावा है कि नहीं ? उस्ताद उस परदेसी को अपनी बेटी ब्याहना चाहते हैं, जिसके न घर का पता, न नाम का और न बिरादरी का। क्या यह जुल्म नहीं ? तुम लोग आँखें बन्द करके उस्ताद के पीछे चलो और उस्ताद तुम्हारी किसी बात की कदर न करें, यह कहाँ का इन्साफ है ? मैंने मैना को ब्याहना चाहा तो मेरी जान जाते-जाते बची। तुम लोग बताओ कि मैं उस परदेसी से किस बात में कम हूँ ?"

"उस्ताद आ गए !" किसी ने चिल्लाकर कहा।

तभी सारा शोर-गुल शान्त हो गया। टिकोरा की जबान भी बन्द हो गई। हड़बड़ाकर लोग उठ खड़े हुए और चबूतरे पर उस्ताद के पहुँचने के लिए जगह बना दी।

उस्ताद की कमर चिन्ता से आज और झुकी दिखाई दी।

बड़ी मुश्किल से लाठी के सहारे वह चबूतरे पर जा खड़ा हुआ।

"बैठो तुम लोग!" स्वयं न बैठकर सबको बैठने की आज्ञा दी उस्ताद ने।

सभी बैठ गये, मगर टिकोरा तनकर खड़ा ही रह गया।

'तू भी बैठ टिकोरा!" उस्ताद गरजकर बोला।

उसके स्वर में इतना तेज था कि टिकोरा की सारी शेखी हवा हो गई और वह चुपचाप बैठ गया।

"क्या बात है?" उस्ताद बोला—"यहाँ इतनी भीड़ क्यों है?"

"टिकोरा ने हमें यहाँ बुलाया है।" पञ्चों में से एक वृद्ध ने कहा।

"टिकोरा ने बुलाया है···टिकोरा कौन है तुम्हें बुलानेवाला?" मैं अभी जिन्दा हूँ, मेरा हुक्म क्यों नहीं लिया गया?"

"हम लोग अभी आपको बुलाने ही वाले थे उस्ताद!" दूसरे पञ्च ने कहा।

"उस्ताद तुम्हारा बेटा नहीं, जिसे जब चाहा बुला लिया।" उस्ताद तड़प-तड़पकर बोल रहा था। सारी जमात चुपचाप बैठी थी—"मैं तुम्हारा बाप हूँ। कोई भी काम करने के पहले मेरा हुक्म ले लेना जरूरी है। इस टिकोरा में अभी इतनी ताकत नहीं कि मेरा सामना कर सके। इसके बहकावे में आकर तुम लोग मेरी हस्ती भूल बैठे?"

एक शब्द भी किसी के मुख से नहीं निकला।

"मैं तुम लोगों की हमदर्दी और मेहरबानी से उस्ताद नहीं बना हूँ···बना हूँ तो अपनी ताकत से, करतब से। बूढ़ा शरीर देखकर मत भूलो! मैं चाहूँ तो कल सबेरे सारा गाँव मुर्दा बना मिले। गाँव में इस वक्त हजारों जहरीले साँप पिटारियों में बन्द होंगे। मन्तर से जगा दूँ उन्हें तो वे पिटारियाँ तोड़ बाहर निकल आवें और एक-एक को ऐसा काटें कि सांस लेने के पहले ही जान निकल जाय। तुम लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है?"

"हमें माफ कर दो उस्ताद !" तीसरा पंच बोला—"हमसे बड़ी गलती हुई कि यहाँ आने के पहले तुम्हारा हुक्म नहीं लिया···मगर टिकोरा ने हमें जो कुछ सुनाया, उससे हम बहुत अचरज में पड़ गये हैं।"

"क्या कहा है टिकोरा ने ?" उस्ताद का स्वर अब कुछ शान्त हो चला था।

"यह कहता है कि उस्ताद मैना का विवाह··परदेसी से करेंगे। क्या यह सच है ?"

"सच है।"

"मगर उस्ताद ! ऐसा तो कभी नहीं हुआ ?"

"अब होगा, समझे !" उस्ताद फिर गरज पड़ा—"मेरे हुक्म से होगा यह···जिसमें हिम्मत हो, मुझे रोके !"

"हम रोकते नहीं उस्ताद ! हम अब भी तुम्हारा हुक्म मानने को तैयार हैं, मगर तुम्हारे आधीन रहकर क्या हमें इतना भी अधिकार नहीं कि हम तुमसे कोई वजह पूछ सकें ?"

"मैं बताता हूँ वजह।" उस्ताद कहने लगा, कुछ शान्त स्वर में—"वह परदेसी जिस मुसीबत में हमारे पास आया, इसे सारा गाँव जानता है। वह अपनी जिन्दगी की सारी बातें भूल गया है। अगर मैं उसे निकाल दूँ तो वह जायगा कहाँ ? उसका इस दुनिया में कौन है, इसे वह जानता भी नहीं। क्या उसे अपने घर से निकाल देना ठीक होगा ?"

"कभी नहीं !" इस बार बहुत-से लोग चिल्लाये।

"वह परदेसी है जरूर, मगर दिमाग खराब हो जाने की वजह से अब तो हमारी ही जमात का बन गया है। मेरा इरादा है कि उसे मन्तर-जन्तर सिखाकर पूरा सँपेरा बना दूँ। सँपेरा बन जाने पर क्या तब भी उसका ब्याह नहीं हो सकता ?"

"हो सकता है।" पंचों ने कहा।

"ठीक है, अब तुम लोग पंचायत खत्म करो और इस टिकोरा की बातों में कभी मत आना !" उस्ताद बोला।

पंचायत खत्म हो गई।

○

'मैना ! ...बिटिया...!" उस्ताद ने पुकारा।

"......" मैना ने कुछ उत्तर न दिया। शायद उसकी बोझिल पलकें नींद की शिकार हो गई थीं।

रात काफी बीत चुकी थी, फिर भी उस्ताद जाग रहा था। आज उसे नींद नहीं आ रही थी। टिकोरा की शरारत बराबर बढ़ती जा रही है। जो कुछ हो रहा है, सब मैना और परदेसी के कारण। यों तो उस्ताद के सामने कोई भी नहीं टिक सकता, मगर पीठ-पीछे टिकोरा उसे छुरी भोंक दे तो वह कर ही क्या सकता है ?"

यही था उस्ताद की चिन्ता का कारण।

यदि वह मर गया तो उसके पीछे मैना और परदेसी की जान एक क्षण सुरक्षित नहीं रह सकती। टिकोरा को उस्ताद ने काफी मन्त्र सिखा दिये थे और अब वही धोखे से उस्ताद की जान लेकर स्वयं सँपेरों का सरदार बनना चाहता था। पंच भी उससे डरते थे।

झोपड़े में अँधेरा था। बाहर कितने ही कीड़े-मकोड़े और जानवर भयानक स्वर में बोल रहे थे।

बूढ़ा शरीर भी कितना विवश होता है ! जरा-सी चिन्ता के कारण सारी रात नींद हराम !

उस्ताद उठकर बैठ गया चारपाई पर। उसका पालतू साँप सिर के पास गुड़ली मारे पड़ा था। उसने उसे उठाकर हाथ में ले लिया और उसका मुलायम चमड़ा सहलाने लगा। साँप ने दो बार फुफकार मारी।

तभी झोपड़ी का दरवाजा लड़खड़ाया और दबे पाँव कोई जन्तु भीतर आया।

उस्ताद चौकन्ना हो गया। देख तो नहीं सका कुछ अँधेरे में, मगर कानों ने आहट अवश्य सुनी। वह धीरे से चारपाई से उतरा और दीवार से दबकर एक ओर खड़ा हो गया।

मैना और परदेसी बगल के कमरे में सो रहे थे। खुले दरवाजे की राह दोनों की गहरी साँसें वहाँ तक सुनाई पड़ रही थीं।

उस्ताद ने कुछ मन्त्र पढ़कर हाथ का जहरीला साँप ज़मीन पर रख दिया।

अन्दर आनेवाला जन्तु धीरे-धीरे दबे पाँव उस्ताद की चारपाई की ओर बढ़ रहा था।

चारपाई के पास आकर रुक गया वह। अंधेरे के कारण चारपाई के दूसरे किनारे पर खड़े हुए उस्ताद को वह न देख सका।

उसके हाथ में कोई चीज चमकी, शायद छुरा था। दूसरे ही क्षण वह चमकती चीज उस्ताद की चारपाई की ओर तेजी से गिरी और आवाज हुई धस्स।

उसी समय झोपड़े में हल्के हरे रंग की रोशनी फैल गई।

उस्ताद के मुख से निकला—"टिकोरा तुम ?"

टिकोरा ही था!

हाथ मे छुरा लिये पागल-सा उस्ताद की ओर देख रहा था।

"अब तुम बच नहीं सकते उस्ताद!" वह बोला—"चारपाई से उठ गये तो क्या? एक वार खाली गया, दूसरा तो तुम्हारी जान लेकर ही रहेगा!"

छुरा लिये तेजी से लपका वह उस्ताद की ओर।

"फों !"

साँप की भयानक फुफकार ने उसे रोक दिया।

उसने देखा—उस्ताद और उसके बीच साँप फन निकाले खड़ा है और उसकी उगली हुई मणि से झोपड़े में रोशनी हो रही है।

"आगे नहीं बढ़ सकते बेटे!" उस्ताद धीरे से हँसकर बोला—"साँप मन्तर से बँधा है। आगे पैर बढ़ाओगे तो काट खायेगा।"

चुपचाप खड़ा हुआ टिकोरा क्रोध से दाँत पीसने लगा। उस्ताद और उसके बीच में साँप की एक भयानक दीवार थी, जिसे लाँघकर उस्ताद पर वार करना सरल न था।

"मैंने कहा था न, कि गाँववालों की मिहरबानी से मैं उस्ताद नहीं बना हूँ।" उस्ताद ने कहा—"बना हूँ तो अपनी ताकत से··· और उस ताकत के मुकाबले में तुम-जैसे छोकरे नहीं टिक सकते।"

"आज बच गये उस्ताद! देखूंगा कबतक बचे रहते हो। टिकोरा को मामूली लड़का मत समझना, जो जरा-सी हार से पस्त हो बैठे।" बोला टिकोरा।

"तेरा दम ही तो देखना चाहता हूँ मैं।" उस्ताद मुस्कराकर

बोला—"और इसीलिए तेरी जान छोड़ता जा रहा हूँ···खूब वार कर बेटे! कभी सुधर गया तू, तो इतनी हिम्मत देख तुझे यहाँ का उस्ताद बनाकर ही मरूँगा।"

"मैं अपने बल पर उस्ताद बनूँगा।" टिकोरा क्रोध से बोला—"मुझे तुम्हारी मदद नहीं चाहिये!"

"अच्छा अब तू जा···आज रात की लड़ाई खत्म हुई। ज्यादा चिल्लायेगा तो परदेसी और मैना की नींद टूट जायगी।"

"मैं जा रहा हूँ उस्ताद! मगर याद रखना तुम!"

"मुझे याद है बेटे!···बचपन में जिसे गोद में बैठाकर मन्तर सिखाये थे, वही टिकोरा है तू। गले में साँपों की माला डाले चार साल पहले जिसके पीछे-पीछे घूमा करता था, वही उस्ताद हूँ मैं। कुछ भी भूला नहीं हूँ टिकोरा! मेरा अहसान तू ही भूल गया। तूने मुझसे साँप का मन्तर सीखा, अब खुद साँप बनकर मुझे डँसना चाहता है।···तुझे डँस लूँ मैं तो लोग यही कहेंगे कि उस्ताद ने छोरे की जान ले ली।"

"देखना है कि अब कौन किसकी जान लेता है उस्ताद!" पैर पटकता हुआ टिकोरा चला गया।

उस्ताद ने आगे बढ़कर झोपड़े का दरवाजा बन्द किया, फिर चारपाई पर आ लेटा। साँप भी अपनी मणि निगलकर सिरहाने बैठ रहा। झोपड़ी में फिर अँधेरा छा गया।

परदेसी और मैना की गहरी साँसें अब भी सुनाई पड़ रही थीं। जवानी की नींद हिमालय-सी अचल होती है—चाहे भूकम्प आये, चाहे आँधी, कोई परवाह नहीं।

"मैना!" उस्ताद ने कुछ तेज स्वर में पुकारा।

"बापू!" इस बार मैना का उनींदा स्वर सुनाई पड़ा।

"बहुत गहरी नींद आती है तुझे तो?"

"नहीं बापू! मैं तो जग ही रही हूँ···नींद तो अब ऐसी हो गई है कि बुलाने पर और दूर भागती है।" मैना का स्वर कुछ सजग हो गया था।

"सच कहती है तू? जग तो नहीं रही थी। कई बार पुकारा, बोली भी नहीं?"

"मैं बिल्कुल जग रही थी बापू !" मैना उठकर उस्ताद के पास आई—"क्या हो गया है तुम्हें ? नींद नहीं आ रही है क्या ?"

"इधर क्या हो गया, कुछ जान पाई तू ?"

"नहीं तो !"

"क्यों ?"

"सपना देख रही थी बापू !"

"झूठी कहीं की !" उस्ताद बोला—"बैठ जा और मेरा पैर दबा···जागते-जागते भी कोई सपना देखता है ?"

"क्या हुआ बापू ?" मैना चारपाई पर बैठकर पैर दबाते हुए बोली।

"टिकोरा आया था।" उस्ताद बोला गम्भीर आवाज में।

मगर उस शान्त स्वर के पीछे छिपी हुई स्पष्ट आशंका एवं भय की झलक को मैना ने लक्ष्य कर लिया ; बोली—"घबड़ा गये हो तुम बापू ? टिकोरा से डर लगने लगा है तुम्हें क्या ?"

"नहीं, डरता नहीं रे !" उस्ताद ने कहा—"मगर यहाँ से तबीयत ऊब चली है। यहाँ इन्सान को डँसनेवाले इन्सान पैदा हो गये हैं। बचपन में टिकोरा को गोद में खिलाया था, इसलिए नहीं कि जवान होकर रात में छुरा भोंकने आये मेरे सीने में।"

"छुरा लेकर आया था टिकोरा ?" मैना का स्वर भयभीत हो उठा।"

"हाँ।"

"और तुमने उसे फिर छोड़ दिया बापू ? टिकोरा को तुम क्षमा क्यों करते चल रहे हो ?"

"जिसके पास ताकत है, वही तो क्षमा कर सकता है छोरी ! टिकोरा की जान लेकर मुझे क्या मिल पायेगा ?"

"मगर उसे छोड़ते चलने से तुम्हारी जान को भी तो खतरा है बापू !"

"वही तो सोच रहा हूँ, मेरे बाद तेरा क्या होगा ? इस परदेसी की कौन मदद करेगा ? मेरे न रहने पर टिकोरा के सामने कौन खड़ा हो सकेगा ?"

"टिकोरा की जान ले लो बापू ! सच जानो, एक दिन पछताओगे

उसे क्षमा करके।"

"मैं दूसरी बात सोच रहा हूँ।" उस्ताद धीरे से बोला।

"क्या सोच रहे हो बापू?"

"सोचता हूँ तुम्हें और परदेसी को लेकर शहर चल पड़ूँ।"

"शहर?" मैना चौंक पड़ी—"शहर चलोगे बापू तुम?"

"हाँ, पेट तो भगवान् भर ही देगा। इतने जन्तर-मन्तर आते हैं; लोगों का कुछ भला ही होगा। शहर में कितने लोग साँप के जहर से मर जाते होंगे!"

"यह तो बड़ा अच्छा है बापू!···भला कितनी दूर होगा शहर यहाँ से?"

"बहुत दूर! चार दिन का रास्ता होगा।" बोला उस्ताद।

"तो चलो न बापू, अभी चल दो। शहर देखने की मेरी बड़ी साध है।"

"अभी तो नहीं, दो-तीन दिन बाद चल देंगे।"

"रात में ही निकल चलना, नहीं तो टिकोरा पीछा करेगा।"

"यह तो पीछा करेगा ही छोरी!" उस्ताद ने कहा—"मैं ऐसे रास्ते से चलूँगा कि वह सिर पटककर रह जायगा, मगर हमें पा नहीं सकेगा!"

"किधर से चलोगे?"

"उस टीलेवाली दरार से—नीचे-नीचे ही वह रास्ता जंगल के उस पार बहुत दूर जाकर नदी के किनारे निकला है। मैं कई बार उस रास्ते गया-आया हूँ। मेरे सिवा वह रास्ता किसी ने देखा नहीं है। हम लोग आसानी से पहुंच जायँगे। शहर वहाँ से सिर्फ बीस कोस रह जाता है।"

"तो जरूर चलोगे न बापू?"

"जरूर रे! छोड़ दूँगा अब यह गाँव।" बोला उस्ताद—"रहने दे अब···जा सो रह।"

मैना उठकर सोने चली गई।

O

परदेसी अभी-अभी ही स्नान करके आया था और कमर में अजगर के चमड़े पर मोरपंख टाँककर बनाई गई एक छोटी-सी लुङ्गी

पहने हाथों में अजगर के दाँतों की बनी एक अजीब ढंग की कंघी लिये अपने बाल सँवार रहा था।

गोरे बदन पर अबतक पानी की कुछ चमकती बूंदें अटकी हुई थीं। मैना सामने खटोले पर बैठी हुई एकटक परदेसी की ओर देख रही थी। बोली वह—"बाल इतना न सँवारा करो परदेसी!"

"क्यों?"

"नजर लग जायगी किसी की तो तड़पा करोगे।" अब तो मैना जवान पलकों के कमान से कटाक्ष के तीर चलाना भी सीख गई थी।

"तुम्हारी ही नजर ऐसी है, मैना, जो मुझे बेकार कर सकती है।" परदेसी ने कहा—"अपनी आँखों को जरा पर्दे में ही रखा करो रानी!"

"रानी कहकर तुम मुझे बहुत पुकारते हो जी!...जानते हो रानी किसे कहते हैं?...कभी बापू से राजा-रानी का किस्सा सुन लो...बड़ा मजा आता है। मगर उस रानी और मुझमें बहुत फरक है परदेसी!"

"कोई फर्क नहीं है मैना!"

"है कैसे नहीं?" मैना बोली—"उसके पास तो उड़नेवाला घोड़ा था, जो आदमी की तरह बोल भी सकता था। रानी उसपर चढ़कर दूर-दूर की सैर कर आती थी।...जरा दूर हटकर बैठो परदेसी! इस तरह तो वह राजा भी नहीं बैठा होगा अपनी रानी के पास...एक बार अपने राजा के साथ घोड़े पर उड़ी जा रही थी। एक जादूगर ने उन दोनों को देख लिया और जादू के जोर से बकरा बनाकर...अरी दैया! छोड़ो न मुझे! क्या कर रहे हो यह?"

"कुछ तो नहीं मैना!"

"कुछ तो कैसे नहीं जी?...बापू के सामने तो चुप बैठे रहते हो, उनके जाते ही लगते हो मुझे छेड़ने। आने दो आज बापू को, न कह दिया तो मेरा नाम ..."

"ऐसी बातें बापू से नहीं कही जातीं मैना!" कहा परदेसी ने।

"तब कैसी बातें कही जाती हैं?...मैं बापू से कुछ छिपाती नहीं। कल ही तो मैंने कह दिया था कि परदेसी मुझे बहुत अच्छा

लगता है। जब वह मेरे पास बैठता है तो मेरा दिल गुदगुदी से भर जाता है। सुनकर बापू हँस दिये। भला सच बात पर हँसने की क्या जरूरत थी परदेसी ?"

"तुम बड़ी भोली हो मैना !" परदेसी ने मैना के शरीर को अपने हाथों में जकड़ रखा था।

"अपना मुँह तो अब दूर ही रखो। देखो न, मेरे होंठ सूज आये हैं कि नहीं ?"

"झूठ बोलती हो ?···कहाँ सूजे हैं तुम्हारे होंठ ?"

"नहीं सूजे हैं ?···मगर दर्द तो हो रहा है !" कहकर मैना परदेसी की गोद में लेट गई—"कर लो जी ! जो तुम्हारे जी में आये। तुम खुश रहो तो मुझे थोड़ा दर्द ही सही, यह कोई बड़ी बात तो नहीं !"

परदेसी ने उसका सिर हाथों में उठा लिया। मैना की आँखें बन्द हो गईं ; होठों पर क्षीण-सी मुस्कुराहट छा गई। परदेसी का मुख नीचे झुका और—

"अब बस करो परदेसी ! तुम्हारे मन की बात हो गई न ?··· अरी दैया ! तुम मुझे पकड़ पाते हो तो अजगर की तरह निगल ही जाना चाहते हो।" मैना ने आँखें खोल दीं—"तुम कितने सुन्दर हो परदेसी ?"

"सुन्दर हूँ मैं ?"

"नहीं तो क्या ?···देखोगे अपना चेहरा ?···एक सौदागर एक बार बापू को एक चीज दे गया था, जिसमें आदमी की सूरत साफ दिखाई पड़ती है।"

"लाओ तो !"

मैना दौड़कर एक छोटा-सा शीशा उठा लाई।

परदेसी ने शीशे को अपने हाथों में ले लिया। अपनी सूरत पर दृष्टि पड़ते ही वह चौंक पड़ा। उसकी भूली हुई याद पर इतना कड़ा धक्का लगा कि सारा शरीर ही काँप उठा। चेहरे पर घबड़ाहट फैल गई।

"क्या हुआ परदेसी ?" मैना ने उसे अपने हाथों में भरकर पूछा—"शीशा देखकर घबड़ा गये तुम ? यह तो शहर में बहुत

होता होगा ?"

"मैना, यह सूरत मेरी पहचानी हुई है, फिर भी याद नहीं आता कि इसे कहाँ देखा है।" परदेसी अस्त-व्यस्त स्वर में बोला—"जरूर मैं इस आदमी को भी जानता था···आज भूल गया हूँ, फिर भी एक क्षीण स्मृति उभर आई है मस्तिष्क में।"

"अरे भोले बाबू ! इस शीशे में तो तुम अपनी ही सूरत देख रहे हो।" कहा मैना ने।

"अपनी ?···यह मेरी सूरत है ?···ओह ! मैं तो बहुत परेशान हो गया था मैना !" परदेसी कुछ आश्वस्त हुआ। यहाँ आकर उसने कभी अपनी सूरत देखी न थी, इसलिये इतना भ्रम हुआ उसे।

"अरी दैया ! आज देखो तो बापू मुझे कितना बिगड़ते हैं। जाते-जाते जड़ी लाने को कह गये थे और मैं भूलकर तुमसे बातें करने लगी···मैं जाती हूँ परदेसी ! बहुत जल्द लौटूंगी। तुम कहीं जाना मत ! जाओगे तो ठीक नहीं होगा।"

"अकेले मेरा दिल नहीं लगेगा मैना !···मैं भी चलूंगा तुम्हारे साथ।"

"कहीं टिकोरा मिल गया तो ? ना जी ना, मैं तुम्हें कहीं नहीं ले चलूंगी। भला चाहो तो चुपचाप इस खटोले पर लेट जाओ और उँगलियाँ चटकाओ मजे से।"

"मैना !" परदेसी ने उसे पकड़ लिया—"तुम न जाओ रानी !"

"मुझे जाना जरूरी है। अच्छा ले लो एक और उसकी याद करते-करते रास्ता देखते रहना !" कहकर मैना ने स्वयं ही अपना मुँह आगे कर दिया।

परदेसी ने उसे चूम लिया और मैना खुशी-खुशी झोपड़े से बाहर चली गई।

खटोले पर लेटकर परदेसी झोपड़े की फूस की बनी छत देखने लगा।

तभी खुले दरवाजे पर किसी की छाया दीख पड़ी। परदेसी ने नजर घुमाई तो लजारो को अन्दर आते देखा।

लजारो एक-एक पग पर कमर लचकाती और जवान देह पर चार-चार बल देती आकर सामने खड़ी हो गई। परदेसी धीरे से

उठकर बैठ गया।

"बड़ी देर से बाहर छिपी थी परदेसी !" खटोले पर बैठती हुई बोली लजारो—"घबड़ा गये मुझे देखकर क्या ?"

"क्या करने आई हो लजारो ?"

"काम तो कुछ था नहीं···दिल नहीं माना तो तुमसे मिलने चली आई। बुरा किया मैंने ?···नहीं न ?···बहुत तड़पा रहे हो बाबू मुझे। सच कहती हूँ, रात दिन तुम्हारी ही याद आती रहती है। सोती हूँ तो नींद नहीं आती। खाती हूँ तो भूख भाग जाती है।"

लजारो ने अपना दाहिना हाथ परदेसी की गर्दन में लपेट दिया। परदेसी ने छुड़ाना चाहा मगर लजारो का शरीर उसके और निकट होता गया।

"हाथ हटा लो लजारो !" परदेसी परेशान होकर बोला।

"यह औरत का हाथ है मेरे रसिया ! कुछ मजा ही देता होगा तुम्हें·· नागिन नहीं कि तुम्हें डँस ले। सब-कुछ मैना को ही दोगे या मुझे भी ?"

"क्या दूँ तुम्हें ? क्या दे सकता हूँ मैं ?"

"बहुत-कुछ दे सकते हो तुम मेरे राजा !···मैना के होठों से कम मिठास मेरे होंठों में नहीं···मैंने क्या देखा नहीं ? बाहर ही तो थी ! सब-कुछ देख चुकी हूँ। मेरा भी एक बोसा लेकर देखो !"

लजारो ने अपने होंठ आगे बढ़ा दिये।

परदेसी उसके मुख को दूर हटाता हुआ बोला—"मुझे नहीं चाहिये तुम्हारा बोसा।"

"चाहिये क्यों नहीं ? शर्मा रहे हो परदेसी ! ले लो न एक !"

"नहीं।"

"मुझे मैना न समझना बाबू !" लजारो कुछ तेज स्वर में बोली—"मैं लजारो हूँ ! लजारो के दिल में बसकर किसी दूसरे के न बनने पाओगे तुम ! टिकोरा से कम खतरनाक मुझे मत समझना। साँप अगर जहरीला होता है तो नागिन के दाँतों में कम जहर नहीं होता।"

एकाएक लजारो को कुछ याद आ गया।

वह नम्र होकर बोली—"अरे ! मैं तो तुमपर नाराज हो गई

परदेसी !···बुरा न मानना ! मैना को ही प्यार करो तुम ! मुझे कोई दूसरा ही मिल जायगा···मगर इस तरह यहाँ अकेले कब तक बैठे रहोगे ? चलो, कुछ दूर घूम लो। पीपल के नीचे साँप और नेवले की लड़ाई हो रही है। कभी देखा नहीं होगा···उठो न !"

"मैं नहीं जाऊँगा।" बोला परदेसी।

लजारो ने उसके गले में से अपना हाथ निकालकर कहा—"अब भी नाराज हो बाबू ? अब तो तुम्हें मैना के लिए छोड़ ही दिया। थोड़ी देर मेरे साथ घूमने से ही मेरे तो बन नहीं जाओगे परदेसी ! नहीं, तुम्हें चलना ही होगा।"

लजारो ने जबर्दस्ती उसका हाथ पकड़कर उठाया और झोपड़े के बाहर खींच ले चली।

"नेवले और साँप की लड़ाई बड़ी मजेदार होती है परदेसी ! देखोगे तो वाह-वाह कहोगे। वह पीपल का पेड़ दिखलाई पड़ रहा है न ? उसी के नीचे दोनों को लड़ता छोड़कर मैं तुम्हें बुलाने आई थी।··· यह नेवले की आवाज आई···जरा तेज चलो ! देखना है कौन जीतता है ?"

दोनों पीपल के पेड़ के नीचे पहुँच गये।

परदेसी ने देखा—एक लम्बा काला साँप और एक मोटा-सा नेवला आपस में लड़ रहे हैं। लड़ाई बड़ी गम्भीर चल रही है। साँप की फुफकार और नेवले की चीख से परदेसी घबड़ा गया।

"मुझे डर लग रहा है लजारो ! जाने दो मुझे।"

"और पास चलो···डरने की कोई बात नहीं।" कहकर लजारो उसे और नजदीक खींच ले गई। अब वे लड़ाई की जगह से केवल दस हाथ दूर थे।

"ऐसी लड़ाई तुम्हारे शहर में कभी होती है ?" पूछा लजारो ने।

"क्या पता ?" धड़कते सीने पर हाथ रखे बोला परदेसी।

"मगर मुझे तो पता है !" किसी ने पीछे से कहा।

टिकोरा की आवाज सुनकर परदेसी काँप उठा। मगर टिकोरा इस समय शान्त था। उसके चेहरे की भयंकरता कुटिल मुस्कुराहट के पीछे जा छिपी थी।

"लड़ाई देखने आये हो बाबू, लजारो के साथ ?" बोला वह—"मैं तो उधर से आ रहा था, तुम दोनों को देखकर यहाँ आ गया !···बहुत देर से लड़ रहे हैं क्या ये दोनों ?"

"हाँ !" टिकोरा को आँखों से कुछ इशारे करती हुई बोली लजारो।

परदेसी को अब उस लड़ाई में आनन्द आने लगा था। वह टिकोरा और लजारो की सुध भूलकर उन दोनों वीरों को देख रहा था, जो जान की बाजी लगाकर एक-दूसरे पर आक्रमण कर रहे थे।

टिकोरा और लजारो पीछे खिसककर परदेसी से कुछ दूर हो गये थे।

फुसफुसाकर लजारो बोली—"कब से यह तमाशा कर रहे हो ?"

"तुम दोनों को आते देखा, तभी से।" टिकोरा भी बहुत धीरे से बोला—"छोड़ते ही दोनों लड़ने लगे।"

"अब जल्दी से अपना काम कर डालो। बड़ी मुश्किल से इसे यहाँ तक घसीट लाई हूँ।"

"घबड़ाओ मत···अब यह बच नहीं सकता। मेरी चुटकी में मन्तर की धूल है। साँप पर छोड़ते हो···उस्ताद और मैना तो नहीं थे न ?"

"कोई नहीं था···मैना का बोसा ले रहा था यह !"

"अच्छा !···मैंने इसकी जान बचाई और यह मेरी ही चीज पर अपना रंग चढ़ाने लगा···खैर ! अब तो यह दो-चार मिनट का ही मेहमान है।"

दोनों चुप हो गये।

साँप और नेवला लड़ रहे थे और परदेसी वह भयानक लड़ाई एकटक देख रहा था।

"अब जल्दी करो रसिया !" फुसफुसाई लजारो।

"ले···तू भी क्या कहेगी !"

कहकर टिकोरा ने चुटकी में ली हुई धूल पर फूंक मारी और उसे साँप की ओर करके हवा में छोड़ दिया।

लड़ते हुए साँप में गजब की फुर्ती आ गई। उसने नेवले को लपेटकर कई जगह काट खाया। नेवला मृतप्राय होकर पड़ रहा।

जीतकर भी साँप का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने एक भीषण फुफकार की और तब तेजी से परदेसी की ओर दौड़ा।

परदेसी हक्का-बक्का खड़ा था। भागते ही नहीं बना उससे।

लजारो और टिकोरा दौड़कर और पीछे हट गये। साँप तेजी से दौड़ा आ रहा था।

"यह क्या ?" टिकोरा के मुख से आश्चर्य की एक चीख निकल गई।

उसने देखा, साँप के जहर से बेहोश पड़ा नेवला एकाएक सजग हुआ और भयंकर वेग से दौड़कर उसने साँप को जा पकड़ा।

दोनों में फिर भयंकर जंग छिड़ गई।

"यह क्या हुआ ?···टिकोरा! यह कैसे हुआ रे? नेवले का जहर दूर हो गया ?" लजारो ने पूछा।

टिकोरा तो स्वयं आश्चर्यचकित था; बोला—"अजीब बात है! मेरा मन्तर कट गया ?"

उसने चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा, मगर आस-पास तो कोई नहीं था।

"रसिया! देखो न, नेवला मजबूत पड़ता जा रहा है क्या ?"

टिकोरा कुछ बोला नहीं; झुककर जमीन से एक चुटकी धूल उठाई और मन्त्र पढ़कर साँप की ओर फूँक दिया।

मगर कोई असर न हुआ।

परदेसी भयभीत नेत्रों से चुपचाप तमाशा देख रहा था। वह भागना चाहकर भी भाग नहीं पाता था। पैर जैसे इतने वजनी हो गये थे कि उठाये नहीं उठते थे।

"लो, तुम्हारा साँप दो टुकड़े हो गया!" लजारो की हैरान-सी आवाज आई—"नेवला मजे से उसका लहू चाट रहा है। तुम्हारे मन्तर में कुछ दम नहीं है क्या ?"

"नेवले को कोई और बल मिल गया लजारो!···उस्ताद की कारिस्तानी है यह···अपने झोपड़े में से ही मन्तर फेंका है उसने शायद।"

"मगर उन्हें पता कैसे लगा होगा ?"

"लग गया होगा।" टिकोरा दाँत पीसकर बोला—"मगर परदेसी

इतनी जल्दी नहीं बच सकता। मैं जानता हूँ, यह महुवर की आवाज पर नाचने लगता है। मन्तर फूंककर ऐसा नाच नचाऊँगा इसे कि गिरकर मर न जाय तो कहना!"

टिकोरा ने कमर से लटकती हुई महुवर निकाल ली और कुछ मन्त्र पढ़कर उसे मुँह से लगा लिया।

"इसे जाने दे अलबेले!"

"नहीं!...तू जरा दूर हटकर खड़ी हो जा। आज टिकोरा हारनेवाला नहीं। झोपड़ी में से उस्ताद क्या जान सकेगा कि मैं इसे नचा रहा हूँ!"

लजारो दूर हट गई।

टिकोरा ने महुवर में फूंक मारी। ऐसा मोहक स्वर निकला कि परदेसी का शरीर काँप उठा। वह उधर से घूमकर टिकोरा के सामने आ खड़ा हुआ।

महुवर के स्वर ने उसके मस्तिष्क में तूफान लाना शुरू कर दिया; जोर से बोला—"यह महुवर बन्द करो टिकोरा!"

मगर आवाज बन्द न हुई। महुवर के स्वर के साथ टिकोरा के गाल फूलते-पिचकते रहे।

परदेसी पर मदहोशी-सी छाने लगी। दिमाग उड़ चला। पैर काँपने लगे।

"टिकोरा!" लजारो चिल्लाई।

महुवर बजती रही।

परदेसी की आँखें बन्द हो गईं, पैर आगे-पीछे पड़ने लगे, शरीर झूमने लगा, हाथ हवा में उठ गये!

दूसरे ही क्षण परदेसी कूद-कूदकर, झूम-झूमकर नाचने लगा। नाचते-नाचते वह गिर पड़ता और टिकोरा के पैरों के पास जमीन पर अपनी नाक रगड़ने लगता। फिर उठ खड़ा होता; फिर नाचता, फिर गिरता।

"जाने दो टिकोरा! छोड़ दो इस परदेसी की जान!" लजारो चिल्लाई।

टिकोरा की आँखें मन्त्र पढ़ते-पढ़ते और महुवर में फूंक मारते-मारते लाल हो रही थीं। चेहरा बड़ा ही भयानक हो गया था।

नाचते-नाचते परदेसी की गति तेज होती जा रही थी। आँखें उलट रही थीं। मुँह से फेन बहने लगा था। जमीन पर घिसते-घिसते नाक लहूलुहान हो गई थी।

महुवर की आवाज उत्तरोत्तर मादक और तेज होती जा रही थी। तभी—

हवा का एक तेज झोंका आया।

टिकोरा के मुख से भयानक आर्तनाद निकला। वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। महुवर की लम्बी नली उसके मुँह में घुसकर अटक गई। मुँह से खून गिरने लगा।

टिकोरा ने महुवर मुँह से निकालने की कोशिश की, मगर लगातार खींचने पर भी बाहर न निकली।

परदेसी का नाचना रुक गया था और वह धीरे-धीरे अब होश में आता जा रहा था।

लजारो तो जैसे पत्थर-सी बनकर खड़ी थी। उसे होश ही नहीं था। कैसे क्या हो गया, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

तभी उसके कन्धे पर किसी ने हाथ रख दिया।

चौंककर घूमी वह तो उस्ताद!

"कमीनी!" उस्ताद का बूढ़ा शरीर क्रोध से काँप रहा था—"तू भी इस छोकरे के साथ मिल गई?"

उस्ताद की बूढ़ी हथेली इतनी जोर से लजारो के जवान गाल पर बैठी कि वह चिल्ला उठी—"उस्ताद! मुझे माफ करो। इसने मुझे बहका दिया था।"

उस्ताद, जमीन पर गिरकर तड़पते हुए टिकोरा के पास आया और उसकी पसली पर एक लात मारकर बोला—"आज भी तेरी ही हार रही। जान तू ले ही लेता परदेसी का, मगर भगवान् की दया से मैं इसी राह लौटा···बड़ी देर उस पेड़ के पीछे छिपा सब देख रहा था।"

टिकोरा मुख से तो कुछ बोल नहीं सकता था; हाथ बढ़ाकर उसने उस्ताद के पैर पकड़ लिये।

"माफी तो तू कई बार माँग चुका," बोला उस्ताद—"मगर जा छोड़ देता हूँ। अब भी लड़कपन से बाज आये तो ठीक है।"

उस्ताद ने कोई मन्त्र पढ़कर धूल डाली।

परदेसी अब तक सजग हो चुका था।

उस्ताद उसके पास आ उसका हाथ पकड़कर बोला—"चलो बेटा! अकेले कभी मत आया करो!"

उस्ताद और परदेसी चले गये।

लजारो टिकोरा के पास आई।

टिकोरा उठ खड़ा हुआ था। महुवर उसके मुँह से निकल गई थी। खून बहने से चेहरा बड़ा ही भयानक हो रहा था; दाँत पीसकर बोला—"यह उस्ताद हवा बनाकर सब जगह पहुँच जाता है। अब इसकी जान ही लेकर छोड़ूँगा। इसके रहते परदेसी की जान लेना मुश्किल है।"

"जाने दो छैला, मुझे लेकर मौज करो।" बोली लजारो।

"करूँगा न, घबड़ाती क्यों है? पहले अपने दुश्मनों से तो निपट लेने दे! एक काम करेगी तू?"

"कह दो मेरे राजा! अभी कर लाऊँ···तुम्हारी ही खातिर तो उस बूढ़े ने मुझपर तमाचा चला दिया।"

"मैं उसका हाथ न काट लूँ तो कहना! उसके बदन की बोटी-बोटी पकाकर गाँववालों का पेट भर दूँगा···सुन इधर!"

टिकोरा और लजारो चुपके-चुपके पुनः कोई योजना बनाने लगे।

⊙

रात का अँधेरा झोपड़ी में घुसकर सो रहा था। चाँद को डूबे चार घण्टों से ऊपर बीत चुके थे। बाहर के पेड़-पौधों पर आसमान से ओस की बूंदें उतर-उतरकर बैठ रही थीं।

परदेसी और मैना अलग-अलग बिस्तरों पर सोये थे, परन्तु जमीन पर सोये रहने के कारण स्वप्न देखते-देखते वे एक-दूसरे के बिलकुल नजदीक पहुँच गये थे।

इस समय मैना की बायीं टाँग परदेसी की कमर पर थी और परदेसी का दाहिना हाथ मैना की पीठ पर पड़ा था। दोनों के मुख केवल दो-चार अंगुल की ही दूरी पर रह गये थे।

एकाएक मैना के मुख से एक तेज चीख निकली—"बापू···! बापू···!"

परदेसी की नींद खुल गई। उसने मैना को भरजोर अपने सीने से दाब लिया; देखा—मैना का सीना बड़े वेग से धड़क रहा था। सारा शरीर भय से काँप रहा था। आँखें खुल गई थीं और अँधेरे में इधर-उधर भयभीत गति से घूम रही थीं।

"मैना! क्या हुआ रानी?" पूछा परदेसी ने।

"बापू! बापू को टिकोरा ने छुरा···परदेसी! बापू को बचाओ···देखो, उनकी छाती पर चढ़ा है!" मैना पुनः चीख उठी।

परदेसी ने उसे पकड़कर झकझोर दिया, फिर कहा—"सपना देख रही हो मैना? होश में आओ!"

"सपना···" मैना को होश आ गया।

"अपने को सचेत करो!" बोला परदेसी—"तुम अपने झोपड़े में हो। तुम्हारे बापू बगल की कोठरी में सो रहे हैं।"

"सो रहे हैं?" उठकर बैठती हुई बोली मैना—"मैं तो डर गई थी परदेसी! कितना डरावना सपना था कि पूछो मत!"

"क्या देखा तुमने?"

"देखा कि बापू को टिकोरा ने छुरा मार दिया है और बापू का शरीर खून से डूब-उतरा रहा है। बापू का मणि वाला साँप टिकोरा के गले में चुपचाप पड़ा है। मैं बहुत डर गई हूँ परदेसी! चलो बापू के पास।"

"उन्हें सोने दो···बड़ी रात तक तो जाग रहे थे। नींद खुल गई उनकी तो बेचारे फिर सो नहीं सकेंगे।"

"मेरा कलेजा धड़क रहा है। जरा और पास आ जाओ तुम। मुझे अपनी गोद में छिपा लो परदेसी!"

परदेसी ने उसके फूल-से शरीर को उठाकर अपनी गोद में रख लिया। उसके अधरों पर दो-चार चुम्बन अंकित कर दिये।

"सबेरे बापू से कहूँगी कि अब यह गाँव छोड़ दें।" कहा मैना ने कुछ आश्वस्त होकर।

"गाँव छोड़कर कहाँ चलोगी?"

"तुम्हारे शहर में चलकर बसूँगी अब तो। देखते नहीं, इस गाँव में अब रोज ही लड़ाई-झगड़े हुआ करते हैं? टिकोरा बापू से जीत तो सकता नहीं, फिर भी छोटा दुश्मन कम खतरनाक नहीं होता।

बापू एक दिन शहर चलने की बात कर रहे थे।"

"टिकोरा जाने दे तब तो !"

"वह जो महल है न ! जिसमें उस दिन हम लोग···वहीं से रास्ता है शहर जाने का, जिसे टिकोरा भी नहीं जानता। पहले तो बापू कह रहे थे कि जमीन के अन्दर वह रास्ता शहर तक गया हुआ है, मगर कल शाम को जब पूछा तो बोले कि थोड़ी ही दूर पर एक नदी की घाटी में जाकर वह रास्ता खत्म हो जाता है। उसके बाद उस नदी के किनारे-किनारे जाने से बहुत दूर पर शहर मिलता है।··· परदेसी ! सपने में बहुत जोर से चिल्लाई थी क्या ?"

"हाँ, तभी तो मेरी नींद खुली।" बोला परदेसी।

"अब तक मेरा डर दूर नहीं हुआ···देखो !" कहकर मैना ने परदेसी का हाथ अपने सीने पर रख लिया—"अच्छा जी, यह तो बोलो कि इस सीने के अन्दर है क्या, जो किसी नई बात के होते ही धड़कने लगता है ? मैं तो समझती थी कि तुम्हारी गोद में लेटने पर ही ऐसा होता है, मगर अब तो सपना देखकर भी दिल धड़कने लगता है।··· सच परदेसी ! बड़ा डरावना सपना था। तुम देखते तो और जोर से चिल्लाते। चलो न, बापू से पूछें।"

"क्या पूछोगी ?"

"यही कि मेरा सीना क्यों धकड़ने लगा है इतना आजकल ?"

"जाने दो मैना !" परदेसी ने कहा—"रात अभी काफी है। उस्ताद को आराम कर लेने दो।"

"नहीं जी ! मैं तो बापू को जगाऊँगी जरूर···मैं घबड़ा रही हूँ कितना !···चलो उठो !"

मैना उठी। परदेसी भी उसका हाथ पकड़कर खड़ा हुआ।

तभी बाहर कोई जानवर अत्यन्त भयानक स्वर में बोला। डरकर मैना परदेसी के शरीर से जा लिपटी।

"क्या था परदेसी ?" फुसफुसाकर पूछा मैना ने।

"कोई जानवर था।"

"आज तो बहुत जानवर बोल रहे हैं। बापू भी कैसी नींद सो रहे हैं आज ? मेरी चीख सुनकर भी नहीं जगे और यह जानवर बोला तब भी नहीं। पहले तो कभी ऐसा नहीं होता था परदेसी !

जरा-सा खटका सुनकर ही मुझे पुकार बैठते थे बापू···क्या हो गया है उनको ?"

दोनों धीरे-धीरे कोठरी से बाहर निकले।

"मेरा हाथ पकड़े रहो जी ! बड़ा डर लग रहा है अब भी तो।" मैना ने कहा।

परदेसी ने उसका कन्धा पकड़कर अपनी बगल में दबा लिया।

दरवाजे पर पहुँचकर मैना ने पुकारा—"बापू !"

उस्ताद की आवाज नहीं आई।

"बापू···! ओ बापू···!"

दूर पर से एक भयानक स्वर आया, मगर उस्ताद जगा नहीं। आज की नींद उसकी बड़ी गहरी थी।

"बापू तो बोलते ही नहीं !" मैना की आवाज भय एवं आशंका से अजीब तरह की हो गई थी।

परदेसी का हाथ पकड़कर अन्धकार में टटोलते-टटोलते मैना उस्ताद की चारपाई के पास आ खड़ी हुई।

पुनः धीरे से पुकारा—"सो गये बापू ?"

और दिनों तो किसी के पुकारने पर उस्ताद के पहले ही वह भयानक मणिधर, जो हमेशा उस्ताद के सिरहाने पड़ा रहता था, फुफकार उठता था, परन्तु आज तो दोनों ही चुप थे।

मैना ने धीरे से झुककर उस्ताद का सिर टटोला, फिर जल्दी-जल्दी सारी चारपाई टटोलने लगी।

"क्या हुआ मैना ?"

"चारपाई खाली है परदेसी !" मैना ऐसे स्वर में बोली, जैसे कोई उसका गला घोंट रहा हो—"साँप भी नहीं है। इतनी रात को बापू गये कहाँ ?"

मैना परदेसी का हाथ पकड़कर खींच ले गई झोपड़े के कोने में और मशाल पकड़ाकर चकमक रगड़ चटपट रोशनी की।

अजगर की चर्बी की मशाल भकभकाकर जल उठी। तेज रोशनी झोपड़ी में फैल गई।

मैना आँखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखने लगी, मगर उसका बूढ़ा बाप कहीं दिखाई न पड़ा।

"बापू···!" चीखकर मना परदेसी के कन्धे से लग फूट-फूट-कर रो पड़ी—"बापू चले गये···मुझे अकेले छोड़कर, बापू कहाँ चले गये परदेसी ?···बापू···! बापू···! ओ बापू···!"

परदेसी आश्चर्यचकित-सा खड़ा था। उस्ताद कहीं जाता तो मैना से अवश्य कहकर जाता।

"सपना सच निकला परदेसी!···तुम कहते थे झूठा होगा। मेरे बापू कहाँ हैं इस वक्त ?····मेरा दिल कह रहा है कि उनके ऊपर जरूर कोई आफत आई है, नहीं तो मैना की पुकार सुनकर उनकी जबान रहनेवाली नहीं।"

"चलो, थोड़ी दूर बाहर चलकर खोजें।" बोला परदेसी।

"तुम यहीं रहो, मैं खुद खोजकर आती हूँ। तुम्हारा बाहर चलना ठीक नहीं। बापू बड़े बेवक्त हमें छोड़ गये परदेसी! रात में टिकोरा आ गया तो मैं कैसे बचाऊँगी तुम्हें? अब आसरा ही कौन-सा है ?"

"अच्छा तुम्हीं अकेली जाओ, मगर जल्दी लौटना!" परदेसी ने कहा।

आँसू पोंछकर मैना दरवाजे की ओर बढ़ी।

मगर दरवाजे तक पहुँचने के पहले ही बाहर के अन्धकार में कोई चीज देख चीखती हुई आकर परदेसी से लिपट गई।

"क्या है मैना ?"

"कोई इधर ही आ रहा है।"

"कहाँ ?"

"बाहर के अँधेरे में।"

"उस्ताद ही होंगे मैना! तुम तो बहुत डर जाती हो।"

"बापू नहीं हैं।" मैना ने कम्पित स्वर में कहा—"बापू झुक-कर चलते हैं। वह ताड़ की तरह तनकर चला आ रहा है। टिकोरा होगा परदेसी! वही होगा···अब ?···हाय बापू! मेरे परदेसी को बचाओ। टिकोरा आ रहा है बापू, और तुम जाने कहाँ हो ?··· परदेसी, तुम बापू की चारपाई के नीचे छिप जाओ। जल्दी करो न!"

"और तुम ?"

"मेरी फिकर छोड़ो···मेरी जान के ऊपर कोई खतरा नहीं।" मैना ने घबराये स्वर में कहा।

परदेसी दौड़कर चारपाई के नीचे हो रहा।

तभी बाहर से आनेवाला दरवाजे पर आ खड़ा हुआ; बोला—"मैंने देख लिया है। अब छिपना फिजूल है।"

चारपाई के नीचे छिपे हुए परदेसी का सारा शरीर काँप उठा। आखिर शैतान ने देख ही लिया।

मगर आनेवाले पर दृष्टि पड़ते ही मैना को संतोष हुआ कुछ; बोली—"चमकू! तू यहाँ इस वक्त?"

"हाँ रे, डर गई क्या? परदेसी बिचारे को चारपाई के नीचे क्यों छिपा दिया है?" उस्ताद और मैना के हमदर्द चमकू की आवाज थी यह।

सुनकर परदेसी बाहर निकल आया।

"छिपने में तो बहुत तेज हो बाबू! मुझे भी टिकोरा समझ लिया था क्या?" कुछ हँसकर बोला चमकू—"उस्ताद लौटे कि नहीं?"

"कहाँ से?···बापू तो यहाँ हैं ही नहीं। मुझसे कहकर भी तो नहीं गये कुछ!" बोली मैना।

"अब तक नहीं लौटे?" चमकू चिन्तित स्वर में बोला।

"मैं तो बहुत परेशान हो रही हूँ चमकू! बिना कहे बापू कभी नहीं जाते थे।"

"तीन घण्टे हुए मैंने लजारो के साथ जाते देखा था।" बोला चमकू—"मैं बाहर ही सोया था। उन्हें जाते देखकर बोला नहीं कुछ; सोचा, शायद किसी जरूरी काम से जा रहे हों। मगर काफी देर होने पर भी जब वे नहीं लौटे तो मुझे डर-सा लगा। फिर सोचा शायद पिछवाड़े से चले गये हों, इसलिए उन्हें देखने इधर चला आया।···आजकल लजारो और टिकोरा में बड़ी साँठ-गाँठ चल रही है न!"

"चमकू! बापू की खैर नहीं दीखती। अभी-अभी मैं एक बुरा सपना देखकर जगी हूँ। चल, कहीं उनकी खोज करें।"

"मगर चुड़ैल लजारो के साथ उस्ताद चुपचाप चले क्यों

गये ?···कोई बहुत डरावनी बात हो गई है मैना ! खोजने को कहती है तो चल···इस परदेसी को छोड़ दे यहीं। बाबू, तुम दरवाजा बन्द कर अन्दर ही बैठ रहो !"

हाथ में जलती मशाल लिये आगे-आगे चमकू चला और उसके पीछे मैना।

धीरे-धीरे गाँव पीछे छूट गया।

वह बड़ा-सा पीपल, जिसके नीचे उस दिन परदेसी ने साँप और नेवले की लड़ाई देखी थी, अँधेरे में दूर से ही दीख पड़ा, जैसे कोई बड़ा-सा दैत्य आसमान सिर पर लादे चुपचाप खड़ा हो।

पीपल के नीचे पहुँचते ही चमकू एकाएक चौंककर रुक गया।

"क्या है चमकू ?" मैना ने आगे बढ़कर पूछा।

"वह देख !" चमकू ने उँगली से दूर जमीन पर पड़ी हुई कोई चीज दिखाई।

दोनों लपककर आगे बढ़े।

बाँस की एक लाठी खून से सनी हुई पड़ी थी। आस-पास की जमीन पर भी काफी खून गिरा था।

"यह लाठी तो उस्ताद की है !" चमकू बोला।

मैना रोती हुई दौड़ी और लाठी को उठाकर उससे लिपट गई।

"बापू ! यह अपनी लाठी छोड़कर तुम कहाँ छिप बैठे हो ?···सामने आओ बापू ! मेरे बापू···!"

चमकू भी गम्भीर हो रहा था। मैना का रुदन उसका कलेजा दहला रहा था। उसने मैना को उठाया—

"चुप रह मैना !···यह खून देख रही है न !···जो कुछ होना था वह हो चुका, अब सँभाल अपने को। उस्ताद टिकोरा से हार गये। अब ज्यादा चिल्लायेगी तो तू भी हारकर बैठ रहेगी।"

"मैं क्या करूँ चमकू ? कहाँ जाऊँ ? बापू को कैसे देखूँ ?"

"बापू को देखने का सपना छोड़ अब। अपनी और परदेसी की जान बचा। अभी रात है, कहीं भागना चाहे तो चल दे···सुबह होने पर कुछ कर न पायेगी।"

परिस्थिति की जटिलता ने मैना को चैतन्य किया। उसका रोना बन्द हो गया, मगर आँसू बहते रहे।

चमकू बोला—"तुझे अब इस गाँव में एक छन भी नहीं ठहरना चाहिये।"

"मैं चली जाऊँगी चमकू !···बापू से मैंने शहर का सारा रास्ता पूछ लिया था···परदेसी को लेकर अभी चल दूँगी। बापू भी हमारे साथ शहर चलनेवाले थे, मगर···पहले ही चल दिये।"

दोनों झोपड़े की ओर चल पड़े। चमकू ने अब मशाल बुझा दी थी। इस समय तो टिकोरा के आतंक से सारा गाँव ही मैना का दुश्मन बना बैठा था, ऐसी दशा में मशाल जलाकर रास्ता चलना ठीक न होता।

झोपड़े के दरवाजे पर पहुँचकर चमकू ने मशाल जलाई। मैना चौंककर बोली—"हैं ! दरवाजा तो खुला है। परदेसी से तो कह गई थी कि दरवाजा बन्द करके अन्दर बैठे। परदेसी !·· ओ परदेसी···!"

परदेसी का कोई उत्तर नहीं आया। शायद आँखें लग गई थीं उसकी।

मैना का माथा ठनका। चमकू भी चौकन्ना हो गया।

ये दोनों मशाल लिये अन्दर घुसे। कई बार परदेसी को पुकारा, मगर कोई उत्तर नहीं आया।

"परदेसी भी गया मैना !" चमकू बोला—"शायद हमारे जाने के बाद टिकोरा इधर आया था। अब तू ही अकेली बच रही है। भागना चाहे तो भाग जल्दी···टिकोरा तेरी ही खोज में होगा इस वक्त।"

"अब मुझे भी टिकोरा ले चले। अकेली बचकर किधर जाऊँगी ?" मैना हताश स्वर में बोली।

"तू एकाध दिन कहीं छिपकर बैठ सके तो अच्छा है। मैं परदेसी की खबर लेकर तुझे दूँगा। इस तरह टिकोरा के हाथ में पड़ना ठीक नहीं। है कोई ऐसी जगह तुझे मालूम ?"

"है।"

"तो चल जल्दी। मेरे उस्ताद की बेटी है तू, तेरी कुछ भलाई कर दूँ तो उस्ताद की आत्मा आसीरबाद देगी···मगर जल्दी जरा !"

"अभी चलती हूँ ···उस कोठरी से एक चीज ले लूँ···तू इस मशाल को बुझा दे, दूर से टिकोरा जान जायगा।"

चमकू ने मशाल तुरन्त बुझा दी।

मैना अँधेरे में टटोलती हुई दूसरी कोठरी में आई।

अन्दर काफी अन्धकार था। मैना झोपड़ी की दीवार पर कोई चीज टटोलने लगी। एकाएक उसका हाथ किसी चीज पर जा पड़ा, तो वह चौंक उठी। उसने टटोला, जिसपर उसका हाथ पड़ा था। वह किसी की उँगली थी। उसने जरा और ऊपर टटोला तो कलाई; और ऊपर हाथ बढ़ाया तो पूरा हाथ।

"हे ईश्वर! इस अँधेरे में कौन खड़ा है?"

मैना का कलेजा धड़क रहा था पूरे वेग से। टटोलते-टटोलते उसके हाथ और ऊपर बढ़े तो किसी के कन्धे पर जा पड़े।

वह बड़ी जोर से चिल्लाई—"चमकू! मशाल जलाओ, यहाँ अँधेरे में कोई खड़ा है।"

चमकू ने तुरन्त मशाल जलाई और दौड़कर कोठरी में आया। अन्दर आते ही जो कुछ उसने देखा, उससे उसका सारा रक्त जम गया।

मैना कई पग पीछे हट गई। पैर काँपने लगे। आँखें बन्द हो गईं।

"हाहाहाहा! भाग रही थी मैना रानी!···भागनेवाले के पैर दो, और पकड़नेवाले का दिमाग एक, फिर भी तुम्हें हारना ही पड़ा ··हाहाहाहा!"

टिकोरा था वह! इतनी भयानक हँसी हंस रहा था कि चमकू और मैना के पैरों के नीचे की जमीन तक हिल-हिल उठती थी। उस्ताद का पालतू मणिधर उसके गले में लिपटा पड़ा था।

"अब भाग नहीं सकती तुम।" टिकोरा ने आगे बढ़कर मैना का हाथ पकड़ लिया—"टिकोरा ने कभी अपनी हार नहीं माना। आज टिकोरा सारे गाँव का उस्ताद है। अपने बल से उस्ताद बना हूँ मैं। किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि मेरे सामने खड़ा हो सके!"

"टिकोरा!" मैना उसका पैर पकड़कर बोली—"मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है?"

"कुछ नहीं।" बोला टिकोरा भयानक रूप में हँसकर—"मेरा कोई बिगाड़ ही क्या सकता है? मेरी-तेरी लड़ाई तो सिर्फ जिद की है। तू अपनी जिद छोड़ तो देख!...तेरा बापू और परदेसी, सब टिकोरा के शिकार बने, अब तू बचकर जायगी ही कहाँ?"

टिकोरा ने छटपटाती हुई मैना को उठाकर हाथों पर ले लिया और ले चला।

चमकू के सामने आकर वह रुका। उसके पेट में एक लात मारकर बोला—"क्यों रे गेहुँवन! तेरी हिम्मत कि तू मेरे रास्ते का काँटा बने?"

लात खाकर चमकू गिर पड़ा।

मैना को गोद में उठाये चला गया टिकोरा। चमकू जमीन पर पड़ा-पड़ा जलती हुई मशाल को देखता रहा।

⊙

आज टिकोरा सँपेरों का सरदार है। गाँवभर में उसने जलसा मनाने की आज्ञा दे दी है। अपने घर से पका-पकाया अजगर का मांस तथा शराब का कुल्हड़ उसने गाँवभर में बँटवाया है। लोग मग्न होकर जलसे की तैयारी कर रहे हैं। बूढ़े उस्ताद फेरई को सभी भूल चुके हैं। किसी में इतना साहस नहीं कि टिकोरा से उस्ताद के गायब होने के विषय में पूछे।

शाम को सैकड़ों मशालें जल उठीं। नगाड़े गड़गड़ाने लगे। महुवरें बजने लगीं। शराब के नशे में बुत्त सँपेरे मनमाना नाच नाचने लगे।

टिकोरा के झोपड़े की एक कोठरी में परदेसी और मैना साथ-साथ बन्द थे। दोनों अपने जीवन से निराश हो चुके थे। सन्तोष केवल यही था कि दोनों साथ-साथ थे। मरते-मरते भी एक-दूसरे के आँसू पोंछ सकते थे।

अंधेरा फैल चुका था चारों ओर।

बन्द झोपड़ी में परदेसी जमीन पर बैठा था। रोती हुई मैना का सिर उसकी गोद में था और धीरे-धीरे उसके मुलायम बालों को सहला रहा था।

मैना चुप थी; केवल सिसक-सिसककर रोती जा रही थी।

परदेसी चुप करा रहा था उसे—"रोओ मत मैना! जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ, और जो कुछ होनेवाला है उसे सहने की ताकत इकट्ठी करो मन में।"

"मरने का कोई उपाय नहीं हो सकता परदेसी? टिकोरा के हाथों बेइज्जत होने से तो मर ही जाना ठीक है। देखो, मेरा गाल कितनी बेरहमी से काट खाया है उसने।"

"कौन-सा उपाय बताऊँ मरने का?"

"मुझे चाहते हो तो मेरा गला दबा दो अभी!"

"तुम्हीं मेरा गला दबा दो मैना!" परदेसी बोला—"मेरे ही कारण यह सब हो रहा है।"

"तुम मरद होकर मेरा गला नहीं दबा सकते तो मैं औरत होकर ऐसी हिम्मत कहाँ से लाऊँ?···बाहर जलसा हो रहा है न?"

"सुनाई तो पड़ रहा है शोरगुल।"

"जलसे से खाली होकर शराब में बुत्त टिकोरा सीधे मेरे पास आयेगा और हरामी तड़पा-तड़पाकर अपनी हविस पूरी करेगा। भगवान् भी क्या बुरे का साथ देते हैं परदेसी? बापू कहते थे भगवान् हमेशा इन्साफ करता है। मगर बरबाद हो जाने पर भगवान् का इन्साफ लेकर क्या करूँगी मैं?"

"चुप रहो मैना! शायद कोई आ रहा है।" परदेसी ने धीरे से कहा।

"वही होगा परदेसी!···टिकोरा ही आ रहा होगा। हाय बापू! मेरी पुकार सुन लो···तुम्हारी मैना तुम्हें पुकार रही है। बापू!···जीते हो तो आकर मुझे बचाओ। मर गये हो तो साँप बनकर मुझे आ डँसो···मेरे बापू!" मैना सिसकने लगी।

तभी बन्द कोठरी का दरवाजा खटका। बाहर से कोई कुण्डी खोल रहा था, बहुत आहिस्ता से।

परदेसी उठकर खड़ा हो गया। मैना उसके पीछे जा दुबकी।

कोठरी का दरवाजा खुला और दबे पाँव कोई अन्दर आया।

"मैना!···" आनेवाले ने पुकारा बहुत धीरे से।

यह किसकी आवाज आई? किसका स्वर सुना मैना ने?

उसका कलेजा धड़क गया। उसके कान अपने बापू की आवाज

पहचान गये । वह चीखकर दौड़ी—"बापू ! मेरे बापू !"

"नहीं रे, मैं हूँ मैना…चमकू ।" आनेवाले ने कहा ।

अर्द्धविक्षिप्त मैना हताश हो गई, फिर भी चमकू को देखकर उसे कुछ धैर्य मिला ; बोली—"क्या है चमकू ?…कैसे आ सका तू यहाँ ?"

"लजारो लाई है मुझे ।" चमकू बोला—"तुम्हारी रखवाली वही कर रही थी…जल्दी निकलो यहाँ से । लजारो अब सम्हल गई है । टिकोरा ने इसे फाँसकर अपना काम बना लिया, अब इसे धोखा देकर तुम्हें अपनी बनाना चाहता है…यह तो है पीछे खड़ी लजारो । तुम्हें यहाँ से भगा देना चाहती है ।"

"जल्दी करो मैना बहन, नहीं तो आ जायगा वह ।" लजारो की धीमी आवाज आई ।

जल्दी-जल्दी मैना और परदेसी बाहर आये ।

"किधर से जायगी ?" चमकू ने पूछा ।

"हमें एक मशाल देकर महलवाले टीले तक पहुँचा दो, आगे का रास्ता मैं खुद खोज लूँगी ।" बोली मैना ।

"मशाल मैं लिये हूँ, चलो जल्दी !" चमकू ने कहा ।

सब दबे पाँव अँधेरे में उस टीले की ओर बढ़े । रास्ते में कोई बातचीत नहीं हुई । थोड़ी ही देर मे मैना उस महल के पास पहुंच गई, जहाँ से शहर आने-जाने का रास्ता उस्ताद फेरई ने उसे बताया था ।

वहाँ पहुँचकर मैना ने संतोष की साँस ली, फिर बोली—"बस, अब ठीक है । टिकोरा अब हमें नहीं पा सकता । तुम्हारी भलाई मैं कभी नहीं भूलूंगी लजारो !…तूने मेरी जान बचा ली ।"

"मैंने जो कुछ तुम्हारे साथ किया है, उसका बदला भगवान् मुझे देगा मैना !" लजारो रो पड़ी कहते-कहते—"मैंने तुम्हें बरबाद कर दिया…उस्ताद की जान मैंने ही ली…टिकोरा की मीठी बातों में आकर मैंने जो कुछ किया उसे एक चुड़ैल ही कर सकती है । अब तो तुम जा रही हो बहन ! सुनना चाहो तो सुना दूं, अब तो शायद ही कभी भेंट हो सके तुमसे ।"

"कहो, क्या कहती हो ?" मैना ने कहा ।

"कल रात कितना अँधेरा था, देखा ही होगा तुमने ?" टिकोरा की मीठी बातों ने मेरे दिल में और अँधेरा भर दिया। आधी रात को मैं तुम्हारे झोपड़े पर हाँफती-हाँफती दौड़ी गई। धीरे से उस्ताद को पुकारा। उस्ताद जाग रहे थे। गले में साँप की माला पहने बाहर निकल आये। मुझे देखकर चौंक पड़े। बोले—

'लजारो, तू ?'

'हाँ उस्ताद ! मुझे बचाओ !'

'क्यों आई है इतनी रात को तू ?'

'टिकोरा से मुझे बचाओ उस्ताद ! पटककर मेरी इज्जत लूट रहा था, मौका पाकर तुम्हारे पास भाग आई। मुझे मेरे झोपड़े तक पहुँचा दो मेरे बापू ! रास्ते में ही हरामी बैठा हुआ है।' मैं काँपती हुई बोली।

उस्ताद की आँखें क्रोध से लाल हो गईं ; बोले वह—'चल तू, मैं अभी उसे देखता हूँ। उसकी इतनी मजाल कि गाँव की बेटियों पर डाका डाले ?'

लाठी टेकता उस्ताद चल पड़ा। कोठरी में सोये परदेसी और मैना को उसने अपने जाने की सूचना भी न दी। मैं भी उसके पीछे-पीछे चली।

पीपल के पास पहुँचकर मैंने अपना दाहिना पैर उस्ताद के पैरों में डाल दिया। उस्ताद लड़खड़ाकर गिर पड़ा। तभी पेड़ के पीछे से एक काली छाया निकली और उसके हाथ का छुरा उस्ताद की पीठ में पूरा घुस गया।

लगातार कई छुरे खाकर उस्ताद साँस भी न ले पाया और शान्त हो गया।

'खूब किया लजारो ! खूब !' टिकोरा था वह।

झुककर उसने उस्ताद के गले का मणिधर निकाला और कोई मन्त्र पढ़कर उसे अपने गले में पहन लिया। फिर उस्ताद की लाश को पीठ पर लादे अपने झोपड़े में आया।

'लजारो ! मैं लाश को काटता हूँ, तू चूल्हा जला !' बोला टिकोरा।

'क्या करोगे ?' मैंने पूछा।

'तू चुपचाप करती चल, जो मैं कहूँ।' टिकोरा ने कहा—'इस बूढ़े का मांस निकालकर अजगर के मांस के साथ पकाऊँगा और सारे गाँव में बाँट दूँगा।···जला चूल्हा !···इधर-उधर करेगी तो ठीक नहीं होगा !'

मैं कोने में जाकर चूल्हा जलाने लगी।

चूल्हा जल जाने पर टिकोरा ने उस्ताद की लाश के टुकड़ों को अजगर के मांस के साथ पकाया और हड्डियाँ झोपड़े में गड्ढा खोदकर उसी में गाड़ दीं।···और मैं चुड़ैल सब-कुछ खड़ी-खड़ी देखती रही। मुझे माफ कर सकेगी मैना बहन !"

लजारो ने झुककर मैना के पैर पकड़ लिये और लोट पड़ी जमीन पर।

मैना रो रही थी। उसके बापू का दुःखद अन्त कितना भयानक था !

उसने लजारो को उठाया ; बोली—"औरत की जात होकर तूने अच्छा नहीं किया लजारो, फिर भी जाते-जाते तुझे माफ किये जाती हूँ।"

"इतना सब किया उसके लिए, फिर भी टिकोरा ने मेरे साथ दगा की। शाम को जब मैंने उससे कहा कि जलसे में मेरे साथ ब्याह कर ले तो उसने मेरे गाल पर तमाचे मारकर उसका जवाब दिया।"

ये लोग टीले के नीचे खड़े हुए बातें कर रहे थे।

उसी समय टीले के ऊपर दस-बारह मशालें चमकीं और पचासों व्यक्तियों का शोर सुनाई पड़ा।

टिकोरा की आवाज आई—"वह हैं ! पकड़ो !"

बहुत-से आदमी दौड़ते हुए नीचे उतरने लगे। टिकोरा सबसे आगे था !

"भागो मैना, जल्द भागो !" चिल्लाई लजारो।

पलभर बाद ही मैना और परदेसी वहाँ न थे।

और जब लजारो और चमकू ने घूमकर देखा, तो पीछे कोई नहीं था। परदेसी और मैना जाने कहाँ गायब हो गये थे।

दौड़ते हुए टिकोरा और उसके आदमी जलती मशालों के साथ

नीचे पहुँच गये। टिकोरा के हाथ में वही मणिधर था।

"ओह, तुम लोग हो?" चमकू और लजारो को टिकोरा लाल-लाल आँखों से देखता हुआ बोला—"टिकोरा के गुस्से से खेलना मजाक नहीं। बोलो, वे दोनों किधर गये हैं? अभी-अभी मैंने उन्हें तुम्हारे पास आते देखा था। तुम बोलो चमकू!"

"मैं नहीं जानता।" चमकू ने दृढ़ स्वर में कहा।

"कुत्ते! बदजात!" टिकोरा ने कुछ मन्त्र पढ़कर साँप आगे कर दिया—"नहीं बताता तो तू भी जा।"

आगे बढ़कर साँप ने चमकू के मस्तक पर जोरों से फन मारा। खून बह चला। विकराल मणिधर के विष से चमकू का बदन स्याह होकर नीचे गिर पड़ा।

"लजारो!" टिकोरा लजारो के सामने आया—"तू तो बहुत जल्दी कर गई! मैं तो तुझे अपनी रानी बनाता ही, मगर, तूने दुश्मन की मदद कर डाली। अब मैं तुझे माफ नहीं कर सकता। बोल, परदेसी और मैना कहाँ छिपे हैं?"

"मैं क्या जानूँ!" लजारो बोली।

"नहीं जानती तू? तुम लोग उधर खोजो, मैं इस कमीनी से निपट लेता हूँ।" टिकोरा ने कुछ व्यक्तियों को आज्ञा दी।

तभी बगलवाली दरार से एक हल्की-सी रोशनी की झलक बाहर आई। शायद अन्दर पहुँचकर मैना और परदेसी ने मशाल जलाई थी।

रोशनी देखकर टिकोरा चौंका, फिर क्रूर हँसी हँसकर बोला—"तो इस दरार के अन्दर हैं वे दोनों! तभी उस दिन आकर इसमें छिपे बैठे थे और मैं खोजता ही रह गया था। अब कहाँ जायेंगे बचकर दोनों?"

टिकोरा ने प्रज्ज्वलित नेत्रों से लजारो की ओर देखा और हाथ का साँप उसके कन्धे पर फेंक दिया।

लजारो चिल्लाकर पीछे हट गई, परन्तु साँप उसके गले में लिपटता चला गया।

"कमीनी! तूने मेरे साथ दगा की, अब फल भोग उसका।"

"मुझे छोड़ दो रसिया!" लजारो चिल्लाई।

"रसिया···! हाहाहाहा! रसिया तो तेरा चमकू था, जा तू भी उसी के पास।" कहकर टिकोरा ने कोई मन्त्र पढ़ा।

मणिधर फन निकाल खड़ा हो गया और भयानक गति से उसने लजारो के गाल पर अपने जहरीले दाँत लगा दिये।

लजारो का शरीर तुरन्त निर्जीव होकर गिर पड़ा।

टिकोरा ने साँप अपने हाथों में ले लिया और पुनः कोई मन्त्र पढ़ा।

साँप ने टिकोरा की हथेली पर अपनी मणि उगल दी और उसके हाथ में लिपटकर पड़ रहा।

"देखो," टिकोरा सँपेरों से बोला—"मैं उन दोनों की खोज में जाता हूँ, तुम लोग जाकर जलसा मनाओ। मैं अभी लौटकर आऊँगा।"

सँपेरे चले गये। जलती मशालें दूर होती गईं। केवल साँप की मणि की हल्की रोशनी वहाँ रह गई।

धीरे से टिकोरा उस दरार में घुस गया।

⊙

परदेसी के हाथ में जलती मशाल थी। मैना खड़ी होकर उस बन्द जगह में चारों देख रही थी।

"रास्ता तुम्हारा देखा नहीं है, फिर भला कैसे शहर पहुँचोगी मैना?" परदेसी ने पूछा।

"बापू ने मुझे रास्ता बता दिया था; जैसे उन्हें मालूम था कि वे हमारे साथ नहीं चल सकेंगे।···टिकोरा के चंगुल से हम बाहर हो चुके अब। धीरे-धीरे भूलते-भटकते पहुंच ही जायेंगे।"

"कौन-सा रास्ता है?"

"वह खुला दरवाजा, कुछ दूर चला गया है। दो-चार दिन शायद भूखे रहना पड़े।"

"तुम्हें देखकर ही मैं यह साहस कर रहा हूँ मैना! नहीं तो यह रास्ता मुझे बिलकुल पसन्द नहीं।"

"दूसरा रास्ता है ही कौन? बापू तो इस रास्ते कई बार शहर आ-जा चुके थे; कहते थे, अँधेरे से जी न ऊबे तो कोई तकलीफ नहीं होती इस रास्ते। परदेसी! मशाल बुझाओ। दरार से

कोई अन्दर आ रहा है।"

परदेसी ने तुरन्त मशाल बुझा दी और दोनों लपककर एक कोने में दुबक गये।

हथेली पर चमकती हुई मणि लिये टिकोरा अन्दर आया और आश्चर्य से लम्बे-चौड़े स्थान को देखने लगा।

परदेसी और मैना का कलेजा धड़कने लगा।

"बापू का साँप लिये है हरामी!" धीरे से बोली मैना—"यहाँ का पता कैसे पा गया?…देख लेगा तो खैर नहीं। और…और दुबक जाओ…अरी दैया! वह इधर ही बढ़ा आ रहा है।"

दोनों दीवार से सटकर पलस्तर हो गये।

टिकोरा इधर ही आ रहा था। वह विस्मित दृष्टि से ऊपर-नीचे देख रहा था, परन्तु उन दोनों पर अभी उसकी दृष्टि नहीं पड़ी थी क्योंकि मणि की रोशनी अत्यन्त क्षीण थी।

टिकोरा आकर उन दोनों के सामने खड़ा हो गया। उसकी पीठ इनकी ओर थी। दोनों ने अपनी साँस रोक ली, ताकि दिल की धड़कन सुनकर ही वह उनका पता न पा ले!

टिकोरा अपने-आप ही बड़बड़ाया—"जगह तो काफी बड़ी है, मगर वे दोनों गये कहाँ?…बिना पकड़े दम नहीं लूँगा!"

टिकोरा दो पग पीछे हटा। अब मैना और परदेसी के शरीर और उसकी पीठ में केवल एक बालिश्त का फासला रह गया था। जरा भी दोनों हिले कि टिकोरा ने घूमकर उन्हें पकड़ा।

"शायद उस दरवाजे में घुस गये हैं दोनों।" टिकोरा पुनः बड़बड़ाया—"देखता हूँ।"

टिकोरा आगे बढ़ा और एक दरवाजे में घुस गया।

"बच गये!" मैना ने जोर से साँस छोड़ी—"वह उस दरवाजे से गया है, हमें बगलवाले दरवाजे से चलना है। धीरे से बढ़ो आगे।"

दबे पाँव अँधेरे में दोनों आगे बढ़े। वे दरवाजे तक जा पहुँचे निर्विघ्न।

"मेरा हाथ पकड़ लो और आओ।" मैना ने दरवाजे में घुसते हुए धीरे से कहा—"अन्दर का रास्ता साफ है। दौड़ चलेंगे हम लोग।"

परदेसी ने मैना का हाथ पकड़ लिया और तेजी में दोनों आगे बढ़े। तीन-चार घण्टों तक कभी दौड़ते, कभी चलते रहे।

एकाएक आगे चलती हुई मैना रुक गई। उस अँधेरी सुरंग में आगे दूर पर एक क्षीण रोशनी दिखाई दे रही थी।

"आगे कुछ रोशनी दिखाई पड़ रही है।" बोली मैना।

"शायद यह रास्ता अब खत्म हो रहा है।" परदेसी ने कहा।

"हो सकता है,...मगर देखो, वह रोशनी धीरे-धीरे इधर ही बढ़ती आ रही है। हल्की हरी रोशनी दीख रही है। हे भगवान्! टिकोरा आगे से कैसे आ रहा है?"

"शायद उस दूसरे कमरे का रास्ता आगे जाकर कहीं आ मिला है इस रास्ते में!"

"टिकोरा ही तो है! मूंछें देख रहे हो न? अब तो सभी रास्ते बन्द हैं। आगे बढ़ नहीं सकते, पीछे लौटने से फिर उसी मुसीबत में जा पड़ेंगे।"

दोनों फिर दीवार से दुबक गये, मगर इस बार बचने की कोई आशा न थी, क्योंकि सुरंग चौड़ी न थी और टिकोरा के हाथ पर थी चमकती मणि!

"थोड़ी हिम्मत करोगे परदेसी?"

"बोलो!"

"वह जरा-सी पत्थर की नोक निकली है, तुम खूब छिपकर उसकी ओट में बैठ जाओ। टटोलकर पत्थर का कोई बड़ा-सा टुकड़ा हाथ में लिये रहना!"

"और तुम?"

"मैं यहीं बीच में खड़ी रहूँगी। मुझे देखकर टिकोरा सीधे मेरे पास आयेगा और मुझे पकड़ना चाहेगा, तब तक तुम पीछे से उसके सिर पर पत्थर दे मारना। वह पत्थर है बड़ा-सा। उठा लो उसे और जा छिपो जल्दी! वह नजदीक आता जा रहा है, जरा तौलकर हाथ छोड़ना!"

परदेसी पत्थर का टुकड़ा उठाकर थोड़ी दूर आगे जा छिपा।

मैना धड़कते कलेजे पर हाथ रखे बीच सुरंग में खड़ी रही। आते हुए टिकोरा की आकृति अब एकदम साफ हो गई थी। आँखें

क्रोध से लाल-लाल थीं।

दूर से ही उसने मैना की छाया देख ली। दौड़ता-दौड़ता वह उसके पास आ खड़ा हुआ।

"अब कहाँ जा सकती हो मैना रानी? परदेसी कहाँ गया? तुम्हारा परदेसी?" टिकोरा की विकट हँसी सुरंग में गूंज उठी।

"वह भाग गया मुझे छोड़कर।" मैना बोली।

"भाग गया?…टिकोरा को बहलाओ मत!" कहाँ छिपाया है उसे? बोल!"

परदेसी हाथ में पत्थर का टुकड़ा लिये टिकोरा के पास पहुँच चुका था।

तभी टिकोरा घूम पड़ा। परदेसी पर उसकी दृष्टि जा पड़ी। अपने सिर पर आता हुआ खतरा वह समझ गया।

उसने दौड़कर परदेसी को जा पकड़ा। परदेसी के हाथ का पत्थर दूर जा गिरा।

परिस्थिति विकट थी।

टिकोरा परदेसी से उलझा था, तब तक मैना में जाने कहाँ का बल आ गया। वह दौड़ी और झपटकर उसने टिकोरा की कमर में बँधा छुरा निकाल लिया।

टिकोरा सम्हल न सका और उसकी पीठ में एक-दो-तीन!

चक्कर खाकर भयानक सँपेरे का शरीर जमीन पर गिर पड़ा।

मैना चिल्लाई—"परदेसी! इसके सिर पर पत्थर मारो! जबान न हिला सके यह, नहीं तो मन्तर से साँप को बाँध देगा।"

परदेसी में अब फुर्ती आई। पत्थर उठाकर उसने उसके सिर पर दो-तीन बार पटका।

"अब रहने दो!" मैना बोली—"मर गया होगा…चल भागें।"

दोनों पुनः तेजी से भागने लगे।

लहू में सना टिकोरा पड़ा रहा। साँप की मणि जमीन पर जा गिरी थी। साँप टिकोरा के हाथों से निकलकर मणि के चारों ओर घेरा डाल बैठ गया था।

सामने से नदी बह रही है, जिसका चाँदी-सा सफेद पानी नाचता हुआ आगे बहा जा रहा है।

आस-पास ऊँचे-ऊँचे छायादार वृक्ष हैं। शरीफा के पौधे दूर-दूर तक जमीन पर बिछे हैं।

एक साफ चट्टान पर अधेड़ उम्र का व्यक्ति बैठा है। पास ही एक टट्टू घास चर रहा है। बगल में सामान की कुछ गठरियाँ पड़ी हैं।

"मैना !" अधेड़ व्यक्ति ने पुकारा—"जल्दी से शरीफा तोड़ ला, खा-पीकर चलना है कि नहीं ?"

"अभी आई।" दूर की एक झाड़ी से मैना का स्वर आया।

थोड़ी ही देर बाद मैना और परदेसी ढेर-से शरीफा लिये आ पहुँचे।

मैना बोली—"लो सौदागर ! खूब पके-पके लाई हूँ।...शहर अब तो थोड़ी ही दूर रह गया है न ?"

"दो-तीन कोस समझ ले।" अधेड़ सौदागर बोला—"तुम लोग खाकर तैयार हो जाओ, मुझे भूख नहीं है।"

मैना और परदेसी शरीफा खाने लगे।

"तुम न मिल जाते तो हमें शहर पहुँचने में बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती सौदागर !" बोली मैना—"खोह से बाहर निकलते ही तुम मिले तो जान में जान आई हमारे।"

"मैं तो अक्सर इसी रास्ते देहात से सामान खरीदकर लौटता हूँ। इधर का जंगल कोई खतरनाक नहीं, इसीलिए अकेला ही आता-जाता हूँ। आज चार दिनों से तुम लोग हमारे साथ हो। बात-बात में रास्ता भी कट गया और मालूम भी न पड़ा। हमारा तो काम ही ऐसा है कि आते-जाते कितने ही राही अपने बन जाते हैं। तुम्हीं लोगों से कोई जान-पहचान नहीं थी मगर चार दिनों में घनिष्ठता हो गई।...खा चुके तुम लोग ? तो अब सामान उठा लाओ !"

सौदागर उठ खड़ा हुआ और टट्टू पर अपना सामान लादने लगा।

थोड़ी देर बाद ये लोग चल पड़े।

घण्टेभर तक चलने के बाद पक्की सड़क मिली।

सौदागर बोला—"अब तुम लोग जाओ, मुझे इधर जाना है। इसी सड़क से जाकर तुम लोग शहर पहुँच जाओगे। बड़ा अच्छा साथ रहा इस सफर में, कभी इसे भूलूँगा नहीं।"

अपना टट्टू लेकर सौदागर चला गया।

मैना और परदेसी हाथ में हाथ डाले शहर की ओर बढ़ चले। आज वे दोनों बहुत खुश थे। उनके रास्ते के काँटे दूर हो चुके थे।

एकाएक मैना चौंककर रुक गई; बोली—"वह कौन-सी चीज आ रही है परदेसी, जिसपर कई आदमी बैठे हैं?"

परदेसी ने उधर देखा। माथा पकड़कर कुछ सोचा, फिर बोला—"ठीक याद नहीं पड़ता···शायद कार कहते हैं इसे। अमीरों की है यह।"

"दैया रे! कितनी तेज आ रही है परदेसी! पीछे से तो बड़ी धूल उड़ाती चल रही है।"

तब तक वह कार भी सर्राटे के साथ सामने से गुजर गई।

उसपर बैठे हुए आदमी गौर से इन दोनों की ओर देख रहे थे। इनका पहनावा भी तो विचित्र ही था!

"लो रुक गई।" मैना बोली—"अरे, वह तो पीछे घिसक रही है परदेसी!"

कार आगे जाकर रुक गई थी और अब पीछे को घिसटती आ रही थी। इन दोनों के सामने आकर रुक गई।

कार में एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति, एक युवती और एक बच्चा, यही तीन थे।

वह व्यक्ति गौर से परदेसी को देख रहा था। युवती भी उसे ही घूर रही थी।

मैना का कलेजा धड़कने लगा। उसने परदेसी का हाथ पकड़ लिया और बोली—"यहाँ से चलो परदेसी! ये लोग जाने कैसे देख रहे हैं तुम्हारी ओर! तुम्हें पकड़ ले गये, तो?"

परदेसी कुछ नहीं बोला। वह भी उन लोगों की तरफ घूर-घूरकर देख रहा था। उसका मस्तक भन्ना रहा था। मस्तिष्क की नसें बजने लगी थीं।

कार से उतरकर वह व्यक्ति परदेसी के सामने आ खड़ा हुआ। मैना ने परदेसी को खींचकर अपने पीछे कर लिया।

"मुझे पहचानते हैं?" उस व्यक्ति ने परदेसी से प्रश्न किया।

परदेसी ने अस्वीकृति-सूचक सिर हिलाया।

"और उन्हें?" उस व्यक्ति ने कार में बैठी युवती की ओर इशारा किया।

"नहीं।" परदेसी बोला, मगर उसका मस्तिष्क अब और वेग से उड़ने लगा था।

"उन्हें भी नहीं?...और उस बच्चे को?"

"यह किसी को नहीं पहचानता।" मैना घुड़ककर बोली—"तुम लोग कौन हो?"

मगर वह व्यक्ति बिना उत्तर दिये ही कार के पास लौट गया। उस युवती से बोला—"दिमाग इनका फिर गया है। देखती नहीं, सूरत कैसी हो गई है?"

"हैं तो वही न?" युवती से पूछा। इस समय उसका चेहरा आवेग से लाल हो रहा था, जैसे बहुत दिनों के बाद अपनी कोई खोई चीज उसे मिली हो।

"बिल्कुल वही हैं सरकार!...खुदा कसम! नाक पर छोटा-सा तिल आप देख लीजिये।" बोला वह व्यक्ति।

"तो ले चलो इन्हें।" युवती ने कहा—"वह लड़की रोके तो धक्का दे दो।"

वह व्यक्ति परदेसी के पास आया और उसे खींचता हुआ ले-जाकर कार में बिठा दिया। मैना भी पीछे-पीछे दौड़ी आई तो उस व्यक्ति ने उसे जोरों का धक्का दिया।

मैना गिर पड़ी और कार भाग चली। परदेसी कार पर से कूदने का प्रयत्न कर रहा था और वह व्यक्ति उसे मजबूती के साथ पकड़े हुए था।

गिरकर मैना तुरत उठी और 'परदेसी-परदेसी' चिल्लाती हुई कार के पीछे दौड़ी, मगर दौड़ते-दौड़ते थक गई और कार आँखों से ओझल हो चली।

"परदेसी!" चीखकर मैना सड़क पर गिर पड़ी और धूल में

बने हुए पहियों के निशान पर लोटने लगी, सिर धुनकर रोने लगी।

एकाएक उसके हाथों में किसी के पैर आ लगे। कोई उसके सामने खड़ा था। उसने जरा-सी आँखें उठाकर देखा—कमर में पहने हुए अजगर के चमड़े पर उसकी दृष्टि पड़ी। तड़पकर वह उठ खड़ी हुई और उसे बाहों में कसकर बोली—"परदेसी! मेरे रसिया!...आखिर लौट आये तुम!"

"हा-हा-हा-हा!" कोई मैना के कानों के पास चिल्लाया—"परदेसी तो गया मैना रानी! यह टिकोरा है, जिसे उस खोह में मारकर फेंक आई थी तुम। पीठ में छुरे का घाव भी ताजा है और सिर में पत्थरों की चोट भी दर्द कर रही है, फिर भी एक लगन लेकर टिकोरा यहाँ तक घिसटता चला आया है। सीधी तरह चलो, वर्ना यह साँप अब भी मेरे हाथों में है...हा-हा-हा-हा!"

मैना छिटककर दूर जा खड़ी हुई, मगर टिकोरा ने दौड़कर पकड़ लिया और घसीटते हुए ले चला उसे।



दूसरा भाग

मामूली-सी खटके की आवाज हुई।

पहरेदार ने सिर उठाकर देखा—कुछ ही दूर पर एक अस्पष्ट-सी छाया आधी रात के अँधेरे में खड़ी थी।

शहर का वह बाहरी हिस्सा था। बहुत ऊँची, पुख्ता चार-दीवारी के अन्दर खुशनुमा बाग के बीच तीन छोटे-छोटे महल बने थे, जिनमें से एक के दरवाजे पर यह लम्बा-चौड़ा जवान पहरेदार उपस्थित था।

चारों ओर सन्नाटा था। अँधेरी रात, जुगनुओं की चमक और तारों की टिमटिमाहट भी निगल गई थी। कुत्ते भौंक रहे थे, परन्तु अन्धकार में अपना-पराया पहचानने की फुर्सत नहीं थी। एक कर्त्तव्य निभाने की लगन लेकर ही वे मनमाना शोर मचा रहे थे।

पहरेदार सजग हुआ। बगल में रखी बन्दूक उठाकर उसने हाथ में ले ली, फिर उस स्पष्ट छाया की ओर मुँह करके धीरे से पुकारा—"कौन है ?"

"......" कोई आवाज नहीं आई, परन्तु वह छाया धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

"वहीं रुको !" पहरेदार ने छाया की ओर बन्दूक तानकर रोबीली आवाज में कहा—"कौन हो तुम ?"

"मैं हूँ।" एक पतली-सी मधुर आवाज हवा पर तैरती हुई पहरेदार के कानों से जा टकराई।

स्वर सुनते ही पहरेदार की बन्दूक नीची हो गई। तना हुआ हट्टा-कट्टा शरीर झुककर नम्र हो गया। वह आगे बढ़कर उस छाया के समीप जा खड़ा हुआ।

छाया एक कीमती शॉल में लिपटी थी परन्तु उसका मुख उस

अँधेरी रात में भी चांद की हल्की आभा की तरह चमक रहा था।

पहरेदार ने छाया के सामने सिर झुकाया, फिर अदब के साथ ताज्जुबभरी आवाज में बोला—"हुजूर, आप ?"

"हाँ वारिस ! कोई नई बात ?" स्वर किसी युवती का था, जिससे खूबसूरती और रोब टपकता था।

"कतई नहीं हुजूर !...खैरियत तो है कुँवरानी साहिबा ?"

"नहीं वारिस ! आज फिर कोई शरारत होनेवाली है। तुम जरा होशियार रहना !"

"या खुदा ! भले आदमियों के भी कितने दुश्मन होते हैं !... मैं होशियार हूँ हुजूर ! वारिस की चार पुश्तों ने आपका नमक खाया है, उसकी अदायगी के लिए वारिस के खून का एक-एक कतरा हाजिर है कुँवरानी साहिबा ! आजकल दुश्मन भी कितने बेआबरू हो गये हैं कि रात के वक्त चोरी-चोरी वार करते हैं। आमने-सामने की लड़ाई हो तब वारिस का हौसला देखें सरकार !...बत्ती जला दूं क्या ?"

"नहीं, दुश्मन होशियार हो जायँगे।" छाया ने कहा—"मैं कँवर साहब के कमरे में जाती हूँ। उन्हें भी होशियार करना है।"

"खुदा कसम हुजूर ! कुँवर साहब भी बेहद लापरवाह हैं। सीधे-भले आदमी बेचारे, समझते हैं कोई उनसे क्यों दुश्मनी करेगा ?...आज का इन्सान तो सरकार, चीटियों का भी दुश्मन बन गया है, फिर कुँवर साहब तो इतनी बड़ी रियासत के मालिक हैं। खुदा उनकी जान सलामत रखे !"

"चुप वारिस !" कुँवरानी ने उसे चुप करा दिया—"धीरे से बोलो ! वह सामने क्या है ?"

वारिस ने अँधेरे में उस ओर देखा। बाग के पेड़ों की छाया में दूर पर कोई काली आकृति धीरे-धीरे सावधानी के साथ महल की ओर बढ़ रही थी।

वारिस ने बन्दूक सीधी की, मगर कुँवरानी ने रोक दिया—"बन्दूक रख दो वारिस ! हमें उसे जिन्दा पकड़कर रानी साहिबा के आगे पेश करना है। मैं कुँवर साहब के पास जाती हूँ, तुम उधर चारदीवारी के पास छिप जाओ। कोई भागने लगे तो पकड़

लेना ।"

"जो हुक्म !...मगर आप अकेली हैं हुजूर !...क्या रानी साहिबा के महल में इत्तला कर दूं ?"

"नहीं, उन्हें आराम करने दो ।" कुँवरानी ने कहा—"होशियार रहो ! मैं जाती हूँ ।"

कुँवरानी घूम पड़ी और तेजी से महल के भीतर की ओर चली। वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगा ।

चारदीवारी के अन्दर बने हुए दो अन्य महल अँधेरे में मुँह छिपाये खामोश खड़े थे । कहीं से भी किसी के जागने की आहट नहीं आ रही थी । पेड़ों पर से पक्षियों के पर फटफटाने की आवाज़ अवश्य आ जाती थी कभी-कभी, जो उस सुनसान रात्रि में बड़ी भयानक लगती थी ।

कुँवरानी महल के आँगन में पहुँच गई । उस समय महल के पीछे से एक हल्की खड़खड़ाहट की आवाज आई । कुँवरानी आगे बढ़कर एक बन्द दरवाजे पर आ खड़ी हुई ।

धीरे से ढकेलकर दरवाजा खोला । भीतर अन्धकार था । टटोलती हुई वह आगे बढ़ी ।

"कौन है ?" अन्धकार में से किसी पुरुष का निद्रालु स्वर आया ।

"मैं हूँ ।" कुँवरानी सोनेवाले की चारपाई के पास पहुँच गई थी ।

"कुँवरानी तुम ?...क्या है ? नींद नहीं आ रही है क्या ?"

"आप जाकर मेरे कमरे में सो रहिये, ललित के पास ।"

"क्यों ?...तुम्हारा स्वर घबराया हुआ है, क्या बात है कुँवरानी ? ललित तो ठीक है न ? तीन साल की उम्र हुई उसकी, मगर बीमार तो वह कभी नहीं हुआ ?"

"बेटे की फिक्र छोड़िये कुँवर साहब, अपनी फिक्र कीजिये। समय कम है । आप चुपचाप मेरे कमरे में जाकर सो रहें । बाद को मैं सब-कुछ बता दूंगी ।"

"अजीब पहेली बुझा रही हो तुम ।"

तभी पुनः कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई । कुँवरानी ने कुँवर

का हाथ पकड़कर कमरे से बाहर कर दिया ; बोली—"जाओ, जल्दी से !"

जवानी की कच्ची नींद से उठे कुँवर ने अधिक समझने की कोशिश नहीं की। वह चुपचाप चला गया। उसके जाते ही कुँवरानी ने उसका बिस्तर ठीक किया ताकि देखनेवाला समझे कि कोई आराम से मीठी नींद सो रहा है। इसके बाद वह पलँग के नीचे छिपकर, साँस रोककर बैठ गई।

बाहर किसी का पदचाप सुनाई पड़ा, जैसे कोई दबे पाँव उस कमरे की ओर आ रहा हो। कुँवरानी सजग हो गई।

उसी समय भिड़काया हुआ दरवाजा धीरे से खुल गया। पलँग के नीचे से कुँवरानी ने प्रगाढ़ अन्धकार के बीच खड़ी हुई एक काली परछाईं देखी। धीरे-धीरे वह परछाईं आगे बढ़ी। उसके हाथ का लम्बा छुरा एक क्षण के लिए चमक उठा।

परछाईं पलँग के पास आ खड़ी हुई। उसका छुरा ऊपर उठा··· मगर नीचे नहीं गिर सका कि उसके पहले ही कुँवरानी ने पलँग के नीचे से अपना हाथ बढ़ाकर उसका पैर पकड़ लिया।

आक्रमणकारी घबड़ा गया और सँभल न सकने के कारण धड़ाम से गिर पड़ा।

मगर दूसरे ही क्षण कुँवरानी की नाक पर पैर की एक गहरी चोट लगी और उनके हाथ ढीले पड़ गये। उन्होंने उठकर भागते हुए आक्रमणकारी के पैरों की आवाज सुनी।

उसने तेजी से दौड़कर बत्ती जलाई, परन्तु दुश्मन तो भाग चुका था।

"क्या हुआ कुँवरानी ? हुआ क्या ?" धमधमाहट की आवाज सुनकर कुँवर अचलनारायण आ गया था—"तुम्हारी नाक से खून बह रहा है कविता ! कैसे चोट लग गई ? यह धमधमाहट की आवाज कैसी थी ?"

"खैरियत हुई कि आप बच गये।" कुँवरानी बोली—"मेरी नाक से खून बहा-तो-बहा, आपकी छाती से बहता खून मैं न देख सकी। ईश्वर को धन्यवाद दीजिये।"

"क्या कहती हो तुम ? पचीस बरस की मेरी उम्र हुई और

हमारी-तुम्हारी शादी हुए पाँच साल बीत चुके, मगर एक दिन भी तुमने यह पहेली बुझाने की आदत नहीं छोड़ी। नाक का खून तो पोंछ लो!"

"आपसे कितनी बार कह चुकी कि अपनी हिफाजत का खयाल कीजिये, मगर आप तो कुछ सुनते ही नहीं।"

"अपनी हिफाजत मैं क्या करूँ! सोने की अशर्फी तो हूँ नहीं कि चोरों का डर हो। चार साल पिताजी को स्वर्गवासी हुए हो गये। उसके बाद रियासत की मालकिन माताजी हैं। उन्हीं के कहने पर सारा काम करता हूँ मैं, मगर उन्होंने तो कभी मुझे अपनी जान की हिफाजत करने को कहा नहीं!"

"रानी साहिबा को कुछ मालूम हो तब तो आपकी हिफाजत का खयाल उन्हें आये? राजा साहब जीवित थे, तब की बात और थी। रामगढ़ रियासत में कोई सिर उठानेवाला नहीं था। मगर···उनके मरते ही दुश्मनों ने पैर फैलाने शुरू कर दिये। कई बार आप मौत के मुख से बच चुके हैं, अब तो सँभल जाइये!"

"तो क्या आज रात मेरी जान लेने की कोशिश की गई थी?" कुँवर ने आश्चर्य में भरकर पूछा।

"हाँ!···मुझे पता न लग जाता तो भगवान् जाने क्या होता? बाहरी दुश्मन हों तो उनसे बचाव भी हो सकता है।"

"दुश्मनों से बचाव के लिए ही तो पिताजी ने शहर के नजदीक यह महल बनवाया था, सो भी एक नहीं, तीन-तीन—एक अपने लिए और एक मेरे लिए, एक छोटे कुँवर के लिए। चारदीवारी एक और महल तीन—और हर महल पर बीसों पहरेदार। इससे बढ़कर और हिफाजत क्या हो सकती है? पिताजी मर गये तो क्या, उनके नाम का दबदबा तो है ही?"

"राजा साहब के नाम का दबदबा बाहरी शत्रुओं को रोक सकता है," कुँवरानी पलँग पर बैठती हुई बोली—"बैठ जाइये आप भी,—मगर घर के दुश्मनों का सामना तो स्वयं अपनी होशियारी ही कर सकती है।"

"घर के दुश्मन!" कुँवर अपने सुन्दर चेहरे पर आश्चर्य का भाव लाकर बोला—"कौन?"

"छोटे कुँवर !" दबी जबान से कहा कुँवरानी ने ।

"छोटे कुँवर ? क्या कहती हो कुँवरानी तुम ? चंचल तो अभी बच्चा है, मेरा छोटा भाई है ।"

"भाई तो है," कहा कुँवरानी ने—"मगर सगा नहीं ।"

"चुप रहो कविता ! हम दोनों के पिता एक ही थे, हम दोनों में एक ही खानदान का रक्त है, फिर चंचल क्यों मेरा सगा भाई नहीं है ?"

"आप उसे सगा समझिये मगर वह तो आपको सौतेला ही समझता है । मैं जानती हूँ कि रानी साहिबा देवी हैं और वे अपने बेटे चंचल से बढ़कर आपको प्यार करती हैं और अपने बाद आपको ही रामगढ़ रियासत का मालिक बनाने का उनका इरादा है । यही बात चंचल को खटक रही है । वह आपको रास्ते से दूर हटाकर स्वयं मालिक बनना चाहता है । रानी साहिबा से उसने यह बात कही थी, परन्तु उन्होंने फटकार दिया । अब उधर से निराश होकर वह ऐसी चालें चल रहा है ।"

"तुम बहुत बार मुझसे चंचल की शिकायत कर चुकी हो कुँवरानी ! मगर मैं चंचल या माताजी में कोई परिवर्तन नहीं देखता । माताजी मेरी अपनी माँ नहीं, फिर भी मुझे कितना चाहती हैं ! तुम ऐसी बातें माताजी से मत कहना ! सुनकर उन्हें बहुत दुःख होगा ।"

"मैं रानी साहिबा से कभी कहूँगी भी नहीं, मगर आप सावधान रहें तो अच्छा । माताजी से सलाह करके चंचल की अब जल्द शादी कर दीजिये । अब सुनती हूँ, होटल और क्लब में घूमता रहता है । राजा के बेटे की इतनी स्वतन्त्रता अच्छी नहीं ; बीस बरस का हो गया है अब ।"

"बीस नहीं, बयासी बरस का भी हो जाय, तो भी हमारी नजरों में वह बच्चा ही रहेगा ।" कुँवर हँसकर बोला—"छोटा है न कुँवरानी ! तुम उसे ललित के स्थान पर रखकर देखो, कितना भोला लगता है !"

"आप समझते हैं कि मुझे चंचल की शिकायत करने की आदत ही पड़ गई है ?" कुँवरानी के स्वर से पीड़ा टपक रही थी—

"ललित-जैसा मासूम होता तो उसे छाती का दूध न पिला देती तो कहते ! मगर साँप को अपनी छाती से लगाने की हिम्मत मुझमें नहीं। आप मेरे दुश्मन को भी भाई मान लें तो मैं उसे प्यार करने लगूँ, मगर आपको क्या कहूँ जो अपने भाई की दुश्मनी को भी नहीं पहचान सकते ?"

"मैंने बहुत बार ध्यान दिया मगर चंचल में मैंने अपने प्रति तनिक भी उपेक्षा का भाव नहीं देखा, फिर कैसे मैं तुम्हारी बातें सच मान लूं !"

"साँप का बदन बहुत मुलायम होता है कुँवर साहब ! काश, उसके दाँतों का जहर आप देख पाते ! लीजिये, ललित रोने लगा, अभी उसे लेकर आई।"

कुँवरानी चली गई और तुरन्त छोटे बच्चे को गोद में उठाये लौट आई।

"चुप हो गया !" कुँवर बोला—"तुम्हारी गोद भी कैसी है कि लोगों का रोना तक बन्द कर देती है।"

"चलिये, आप तो मजाक़ करते हैं।" कुँवरानी ने आँखों से तीर छोड़ते हुए कहा।

तभी बाहर से खटखट की आवाज आई और दौड़ता हुआ वारिस आ पहुँचा।

"क्या हुआ वारिसअली ?" कुँवर ने पूछा।

"आप बाखैरियत तो हैं हजूर ? अल्लाह की रहमत ! मैं तो रंजोगम से मुर्दा हो गया था गरीबपरवर ! दुश्मन हाथ में आकर निकल गया। महल से निकलते ही मैंने उसे पकड़ा, मगर कमबख्त छुरे का वार कर भाग गया।"

"अरे ! इसके कन्धे से तो खून निकल रहा है !" कुँवरानी घबराकर बोली।

"मेरा खून नहीं, आपका नमक निकल रहा है।" वारिस बोला, "थोड़ी-सी चोट है हुजूर ! दुश्मन का छुरा तेज था। खुदा करे मेरे कन्धे में घुसकर ही उसकी प्यास बुझ जाय और हुजूर का सीना सलामत रहे ! मैंने उसका पीछा किया था सरकार, मगर हरामी का बच्चा छोटे कुँवर के महल के पास पहुँचकर ऐसा गायब

हुआ कि उसकी बू तक नहीं मिली। छोटे कुंवर से दरियाफ्त किया तो वे बिगड़ पड़े। हुजूर मेरी गुस्ताखी माफ करें, दुश्मन जरूर छोटे कुँवर के महल में जा छिपा।"

"छोटे कुंवर के महल में ?" धीरे से कहा कुँवर ने, फिर कुँवरानी की ओर देखा।

"मैं रानी साहिबा की ड्योढ़ी पर भी इत्तला करता आया हूँ।" वारिस ने कहा।

"उन्हें क्यों जगाने गया तू ?"

"जगाता नहीं हुजूर, तो सबेरे रानी साहिबा सारी वारदात सुनकर मुझे ही डाँटने लगतीं, मैं जानता हूँ न ! खुदा बाखैर रखे रानी माँ को। गरीब-अमीर सब उनकी निगाहे-करम में एक-से हैं।"

"क्या है वारिस ?"

सबकी निगाहें दरवाजे की ओर घूम गईं।

मुख पर चालीस साल की गम्भीरता लिये एक सौम्य नारी-मूर्ति खड़ी थी। ये थीं रामगढ़ रियासत की रानी और छोटे कुँवर चंचलनारायण की सगी माँ।

"मेरा बेटा तो सकुशल है ? कुछ हुआ तो नहीं मेरे अचल को ?" रानी साहिबा अन्दर आकर बोलीं।

"आपका इकबाल है हुजूर कि मौत भी मात होकर लौट गई।" वारिस ने कहा—"खुदा जिसको जिन्दगी बख्शे, उसका मौत कुछ बिगाड़ नहीं सकती, रानी माँ ! हुजूर कुँवर साहिब बाल-बाल बच गये···शुक्र अल्लाहताला का।"

रानी साहिबा आकर पलँग पर बैठ गईं ; बोलीं—"मेरी समझ में नहीं आता कि राजा साहब के मरते ही अचल-जैसे लड़के का कौन दुश्मन पैदा हो गया ? यह तीसरी घटना थी शायद ! तू होशियार क्यों नहीं रहता रे अचल ?"

'मैं तो होशियार ही रहता हूँ माताजी ! आज ही देखिये, किस शान से बच गया !" बोला कुँवर।

"कुँवरानी बहू ! तू कुछ बता सकती है कि यह किसका काम है ?" रानी साहिबा ने पूछा।

"नहीं माताजी !" कुँवरानी ने कहा—"मैं क्या जानूं ?···

आज्ञा हो तो एक बात कहूँ ?"

"मैं जानती हूँ कि तू क्या कहेगी।" बोलीं रानी साहिबा—"यही कहेगी न कि अचल बड़ा लापरवाह है, इससे राज-काज सम्हलेगा नहीं और चंचल बड़ा होशियार है, उसे ही मैं सारी रियासत सौंप दूँ···मगर कुँवरानी ! तू जानती है कि अचल बड़ा है, रियासत इसकी है। मैं इसकी सगी माँ नहीं, फिर भी यह मुझे अपनी माँ समझता है। यह मुझे रखे तो रहूँ, निकाल दे तो चली जाऊँ चंचल को लेकर···मगर मैं दुनिया को यह कहते नहीं सुनना चाहती कि अचल रानी साहिबा का सौतेला बेटा था, सो उन्होंने उसका एकाधिकार छीनकर अपने बेटे को दे दिया।"

"ऐसा न कहिये माताजी !"

"बहू ! मैं स्वप्न में भी यह नहीं सोचती थी कि अचल मेरे पेट का नहीं। इसके-जैसा बेटा पाकर कौन स्त्री माँ बनना नहीं चाहेगी ? कुँवरानी ! माँ की गोद इतनी छोटी नहीं होती कि उसमें सिर्फ अपने पेट के बच्चे के लिए ही स्थान हो। नारी की ममता बहुमुखी होती है। उसका कोई सीमित दायरा नहीं। मैं समझती हूँ कि हम लोगों का अब अलग-अलग महलों में रहना ठीक नहीं। न जाने कब कौन-सी खुराफात उठ खड़ी हो ! कल से तुम लोग मेरे महल में चलकर रहो। चंचल की इच्छा होगी तो वह भी अपना महल खाली कर वहीं आ जायगा।"

"आप तो बेकार परेशान होती हैं माताजी !" कुँवर अचल-नारायण ने कहा—"हम लोग यहीं ठीक हैं। वहाँ चलने पर आपके पूजा-पाठ में बाधा पड़ेगी।"

"जहाँ इच्छा हो वहाँ रहो, मगर खूब सावधान होकर रहो। जिस दिन कुछ हुआ, सच कहती हूँ, मैं भी अपना गला टीप लूँगी।" रानी साहिबा करुण स्वर में बोलीं।

"रानी माँ जुग-जुग जीयें !" वारिस बोला—"खुदा कसम ! वारिस की जान जायेगी तब हजूर कुँवर साहिब पर वार होगा।"

"अरे वारिस ! तुझे यह क्या हो गया ? कन्धे से खून बह रहा है तेरे ! सारा शरीर तर हो गया है ! कैसे लग गया घाव ?" रानी साहिबा ने पूछा।

"ज़रा-सी खरोंच है रानी माँ ! अभी फूंक मारते अल्लाह कसम अच्छी हो जायेगी बिल्कुल ।"

"इस वारिस के बाप ने राजा साहब के पीछे अपनी जान दे दी, अब यह छोकरा अचल के पीछे पागल बना है। अरे बेवकूफ ! खड़ा-खड़ा मुँह क्या देख रहा है ? जाकर घाव धो डाल और पट्टी बाँध ले ।" रानी साहिबा ने वारिस को डाँटा ।

"खुदा कसम हुज़ूर ! हम गरीबों को आपकी दरियादिली ने बेमोल खरीद लिया है ।···मैं जाता हूँ, आप नाराज न हों रानी माँ ! सोचता था, गुलनार सोई होगी, उठते ही बिल्ली की तरह पूँछ उठाकर खाँव-खाँव करने लगेगी, वर्ना अब तक तो मैं चला गया होता ।"

वारिस चला गया ।

"वारिस-जैसे वफादार नौकर नहीं मिलते ।" रानी साहिबा ने कहा—"उसे खून बहता रहा और तुम लोग बैठे-बैठे देखते ही रहे ? छुट्टी भी नहीं देते बना उसे ? जानते थे कि बिना हुक्म पाये वह टलेगा नहीं, चाहे मरकर गिर जाय ।···ललित सो गया क्या ?"

"अभी तो उठा था माताजी !" कुँवरानी ने कहा ।

"माँ ! तुम भी आ गई हो ।" अभी-अभी दरवाजे पर आ खड़े हुए युवक ने कहा, जिसके बदन पर एक कीमती स्लीपिंग सूट था ।

"लो, चंचल भी आ गया ।" रानी साहिबा बोलीं—"आ चंचल ! तेरा बड़ा भाई तो आज बाल-बाल बच गया बेटा !"

"माँ ! वारिस से कह दो मुझे रात में जगाया न करे, मेरी नींद खराब हो जाती है ।" चंचल ने कहा ।

यही बीस साल की उम्र थी। राजा का छोटा लड़का था सो सौन्दर्य के साथ-साथ विलासिता की भी आभा थी मुख पर।

"क्या कहता है रे चंचल ?" रानी साहिबा बिगड़कर बोलीं—"इधर इतनी बड़ी घटना हो जाय और तुझे कोई जगाये भी नहीं ? तू छोटा बनकर क्या पैदा हुआ, सारा भार अचल पर लादकर खुद चैन करना चाहता है ?"

"भैया ! कहीं चोट तो नहीं आई ?" चंचल ने कुँवर से पूछा ।

"चोट नहीं आई तो जागा कैसे ?" अचल ने हँसकर कहा—"माताजी ! इसे एकाध छटाँक अफीम खिला दिया कीजिये, ताकि आराम से सोये।"

"तुम्हें ही तुम्हारी माताजी अफीम खिलाती रही होंगी सुलाने के लिए। रोते भी तो बहुत थे तुम लड़कपन में, कि सारा महल ही जग जाता था।" चंचल तुनककर बोला।

"क्यों रे चंचल ! तेरी और अचल की माँ कोई दो हैं क्या ?" रानी साहिबा ने कहा—"मेरे रहते तेरी ऐसी बात अच्छी नहीं। अरे ! बड़े कुँवर के पैर नहीं छुये ? कितनी बार तुझे समझाऊँ ? तू अपने खानदान का रस्मरिवाज एकदम ही भूलता जा रहा है।"

"माँ ! मैं भैया का पैर नहीं छूता, वे जूते से मेरी उँगली दबा लेते हैं। भाभी का पैर कहो तो छू लूँ। कितनी अच्छी हैं भाभी !" कहते हुए चंचल ने एक नजर कुँवरानी पर डाली।

"मेरा पैर न छुओ छोटे कुँवर !"

"क्यों बहू ?···छोटा है न ! बड़ों का आदर तो उसे करना ही चाहिए। रानी साहिबा ने कहा।"

"मगर पैर छूते-छूते छोटे कुँवर मेरे पैर की उँगली दबा देते हैं···नहीं माताजी ! मैं ऐसे नटखट कुँवर से अपना पैर नहीं छुआती।" हँसकर बोली कुँवरानी—"अब आप जाकर आराम करें माताजी !"

"नहीं तो सबेरे जुकाम हो जायगा, है न भाभी !" चंचल ने कहा—"माँ ! चलो हम लोग चलें, भाभी को नींद आ रही है। बाप रे बाप ! भाभी को जब नींद आती है तो इनकी आँखें कमल की कली बन जाती हैं कि रातभर तक खुलती ही नहीं।"

"तू बड़ा शैतान है चंचल !···चल, अब चलें।" रानी साहिबा जाने के लिए घूम पड़ीं।

चंचल और रानी साहिबा के चले जाने पर कुँवरानी भी ललित को गोद में लिये बाहर जाने लगी तो—

'कहाँ चली ?"

"अपने कमरे में !" बोली कुँवरानी, आम की फाँक-जैसी आँखों से रस ढालती हुई—"सोने नहीं देंगे क्या ?"

"सोओ न, रोकता कौन है ? मगर इसी कमरे में ।"

"क्यों ?"

"मुझे डर लगेगा न !" कुँवर ने हँसकर शरारत के साथ कहा ।

"चलिये, मैं नहीं सोती ।" आँखों से रस ढालने के बदले तीर चलाकर बोली कुँवरानी ।

"तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे कमरे में चलता हूँ । सच कहता हूँ कविता ! आज तो तुम्हारे बिना मैं एक पल भी नहीं रह सकूँगा । यहीं सो रहो न ! नींद उचट गई है । कुछ बात ही कर लेंगे घुल-मिलकर ।"

"रहने दीजिये घुलने-मिलने को···अरेरे ! हाथ छोड़िये न !··· अच्छा जी, मैं सोती हूँ, अब तो खुश !"

कुँवरानी पलँग पर आ बैठी और ललित को बीच में सुलाकर स्वयं भी सो गई ।

"यह क्या ?" कुँवर बोला—"बीच में यह दीवार कैसी ? इस ललित को एक किनारे सुलाओ कविता !"

"आखिर क्यों ?···इस दीवार की नींव भी तो तुम्हीं ने रखी थी ? यह ललित किसी दूसरे का बेटा तो नहीं ? किनारे सोने पर कहीं गिर पड़ा, तो ?"

"बातें मत बनाओ, सीधे से बीच में सोती हो या नहीं ?"

"नहीं !···क्या करोगे ?"

"तो यह···" कहकर कुँवर ने कुँवरानी को जबर्दस्ती अपने पास खींचकर बीच में सुला लिया ।

कुँवरानी ने हाथ बढ़ाकर 'बेडस्विच' दबा दिया । कमरे में अँधेरा घुस आया । दम्पति का शरीर लिहाफ में छिप गया ।

"यह क्या करते हो ?" अँधेरे में जैसे कोई कोयल कूक उठी ।

"कुछ नहीं ।" कुँवर का स्वर था—"दूर सिकुड़ी पड़ी हो, जरा ठीक से सोओ । शादी के चार साल बिता चुकी हो, क्या अब भी अँधेरे में लाज लगती है ?"

"आप तो बड़े वैसे हैं जी !···अँ···देखो, ललित जग जायगा । ···अपने हाथ जरा दूर ही रखो !"

"मेरे अपने हाथ अपने वश में नहीं ।"

"अच्छा !··· दिल से तो हाथ धो ही चुके थे, अब हाथ से भी बे-हाथ हो गये···अरी माँ ! बड़े बेदर्दी हैं आप तो ?···अब तो हो गया न ?···छोड़िये···छोड़िये भी, कोई पुकार रहा है क्या ?"

दोनों ध्यान से सुनने लगे ।

दूर से आवाज आ रही थी—

"गुलनार ! अब तो दरवाजा खोलो हूर !···खुदा कसम, ठण्ड से सिकुड़ा जा रहा हूँ । कम्बख्त जाड़े को भी आज ही पड़ना था । सुनती हो मेरी हूर ? जरा दिल का फाटक खोलकर झाँको तो मेरी मलिका !···तुम्हारे खाविन्द जनाब वारिसअली खाँ साहिब तशरीफ फरमाये हैं । गुलनार ! ओ गुलनार की चची !···सुनती है कि नहीं हरामजादी ? खुदा कसम, औरतों की नींद बिना लात खाये भागती ही नहीं । दरवाजा भी कमबख्त ऐसा जकड़बन्द है कि हाथ डालने तक का कहीं छेद नहीं । अरे, अब तो आँखें खोलो मेरी बुलबुल ! ···सुअर ने ऐसा छुरा भोंका है कन्धे में कि सारा-का-सारा खून पानी बनकर निकला आ रहा है बाहर । पकड़ पाता चचा को तो गुलनार कसम, भूनकर चबा जाता · या रब ! ऐसी सुतक्कड़ बीवी की ईजाद ही तूने क्यों की ?···सुनती है गुलनार !·· तेरी कसम, अब मैं लौट जाऊँगा ।"

बड़ी देर तक दोनों सुनते रहे । एकाएक कुँवरानी हँस पड़ी । बोली—"बेचारा वारिस पुकार रहा है अपनी बीवी को ।"

"और गुलनार आँखें बन्द किये चारपाई पर पड़ी-पड़ी सब-कुछ सुन रही होगी ।" कुँवर ने कहा—"औरतों का अन्दाज गजब का होता है ।"

"अच्छा, औरतों की तारीफ रहने दीजिये और आँखें बन्द करके नींद को बुलाइये ।"

"जरा और खिसक आओ न मेरे पास ! बीच में जगह खाली रहने से जाड़ा लगता है ।"

"लीजिये···अब तो जगह खाली नहीं रही ?···मुँह अपना उधर ही रखिये ।"

"क्यों ?"

"आपके दाँत बहुत तेज हैं।"

"और तुम्हारे गाल ?"

"बहुत मुलायम···" कहते-कहते जैसे कुँवरानी उस अँधेरे में भी शर्म से लाल-लाल हो उठी।

कुँवर ने उसका नाजुक बदन अपने हाथों में भर लिया।

छोटी-छोटी दूबों के सिर पर बैठी हुई शबनम मुस्कुरा पड़ी।

⊙

"अरी गुलनार ! कान पर जूँ रेंगी या नहीं ?" वारिस ने पुकारा।

"रेंग गई है···आती हूँ।" भीतर से एक मीठी आवाज सुनाई पड़ी।

"शुक्र है खुदा का, जागी तो सही···पुकारते-पुकारते परेशान हो गया बुलबुल तुम्हें।"

महल की चारदीवारी के एक कोने में नौकरों के रहने के लिए क्वार्टर बने थे। अपने क्वार्टर के दरवाजे पर रात के दो बजे जख्मी वारिस अपनी बीवी गुलनार को जगा रहा था।

बड़ी देर के बाद छोटा-सा दरवाजा हल्की आवाज के साथ खुला और हाथ में एक छोटी-सी लालटेन लिये सत्रह-अठारह वर्ष की एक बेहद हसीन सूरत दिखाई दी।

यह थी गुलनार, वारिस की चाँद-सी बीवी। चेहरा तो इतना खुशनुमा था कि हाथ की लालटेन भी शर्मा रही थी।

"अरे तुम हो मेरे मालिक !" अजीब अन्दाज से बोली गुलनार, वारिस को देखकर।

"तुम्हारी नरगिसी आँखों की कसम गुलनार ! ऐसी सोती हो कि वल्लाह, मैं तो मर गया जाड़े में खड़े-खड़े।"

"नींद निगोड़ी को क्या कहूँ मेरे राजा ! पकड़ लेती है तो छोड़ती ही नहीं। बड़ी जल्दी आ गये आज तो !···अभी तो मुर्गा भी नहीं बोला ?"

"कितनी देर से मुर्गे की तरह कुकुड़ूँ कूँ कर रहा हूँ मगर तुम सुनो तब तो !···तेरी भरी जवानी की कसम बुलबुल ! आज-जैसी तो तू कभी न सोई होगी।"

"मुझे माफ कर दो मेरी जान !···सच कहती हूँ, जैसे ही नींद खुली, दौड़ी आई हूँ···चलो।"

गुलनार ने अपने मुलायम हाथों से वारिस का कुर्त्ता पकड़ लिया मगर तुरन्त ही चौंककर छोड़ दिया और लालटेन की धुँधली रोशनी में अपनी हथेली देखने लगी।

देखकर मदिरालु आँखें भय से फट पड़ीं। गुलनार की नाजुक हथेली पर खून के गाढ़े धब्बे पड़ गये थे।

डरकर वह दो पग पीछे हट गई—"खून !···तुम्हारे कपड़े तर-बतर हो रहे हैं मेरे सरताज ! किसकी जान लेकर आ रहे हो तुम ?···ताजा खून है यह तो···मेरे खुदा ! यह क्या कयामत ले आये तुम ?"

"मेरा ही खून है यह गुलनार ! कन्धे में छुरा लग गया है।" बोला वारिस।

"ओ मेरी मैया ! छुरा मेरे कलेजे में क्यों न आ लगा ?" गुलनार लालटेन उठाकर वारिस का शरीर देखने लगी ; आँखें भर आईं उसकी।

"तेरी कसम गुलनार ! बहुत जरा-सी चोट है···रो मत अब। चल अन्दर।"

दोनों मकान के अन्दर आ चारपाई पर बैठ गये।

'किससे लड़ पड़े थे तुम ?"

"किसी से भी नहीं।"

"जरूर उलझ पड़े होगे किसी से···कोई बेकसूर को छुरा नहीं मारता। तुम्हें अपनी जान की फिकर नहीं तो इस मासूम गुलनार पर तो तरस खाया करो ! सच कहती हूँ, कभी कब्र में सोने चले, तो मैं तुमसे पहले ही तैयारी कर लूंगी। कितनी दफा कह चुकी कि मियाँ, जमाना बुरा है, पहलवानी छोड़ दो।"

"तुम तो खामखाह खफा होने लगती हो गुलनार !···वारिस को तुमने इतना जलील समझ लिया है कि अपनी जान की खातिर मैं अपने आका का खून बहता देखूं ?···मरहूम राजा साहिब को खुदा जन्नत बख्शे ! उनका नमक हमारे खानदान की रगों में बह रहा है। वारिस उसी बाप का बेटा है, जिसने आका के लिए अपनी जान

तक कुर्बान कर दी थी। एक गुलनार की खुशी वारिस की नमक-हलाली में फर्क नहीं डाल सकती।"

कहकर वारिस अपना कुर्त्ता उतारने लगा।

"क्या हुआ था ?" पूछा गुलनार ने।

"कोई शैतान का बच्चा बड़े कुँवर का खून करना चाहता था।" वारिस बोला—"यह तो कहो कि कुँवरानी साहिबा वक्त पर होशियार हो गईं। बीवी हो तो खुदा कसम ऐसी !"

"या मेरे मालिक ! यह तो बहुत बड़ा घाव है।" गुलनार चीख पड़ी।

"थोड़ा पानी दो···खड़ी-खड़ी चीखो मत। हो तो थोड़ी साफ रूई भी लेती आओ।"

गुलनार दौड़ पड़ी। थोड़ी ही देर में वारिस के घाव की मरहम-पट्टी हो गई।

"कौन मुआ इतना बड़ा घाव कर गया कन्धे में ?"

"कमबख्त भैंसे के बराबर था गुलनार !···मगर मैंने ऐसा दाव मारा बच्चू को कि चारों खाने चित्त गिरे। जब देखा कि कुश्ती में नहीं जीत सकता तो छुरा चलाकर भाग निकला हरामी का पिल्ला !"

"पकड़ लाये होते सुअरजादे को तो अपनी जूती से सिर चटनी कर देती।"

"रहने दो, तुम्हारी जूती बड़ी कमजोर है हूर ! और उसका सिर तो बिसखोपड़े-जैसा था।"

"बिसखोपड़े-जैसा !···कछुए की पीठ जैसा रहा होगा मजबूत तभी तो तुम्हारा घूँसा असर नहीं कर सका···मेरी मैया ! मुझपर कभी तुम्हारा घूँसा बैठ जाता है, तब तो तारे दिखने लगते हैं मेरी आँखों को।"

"जवानी कसम ! जब तुम मेरे घूँसे की तारीफ करती हो तो मेरा हाथ खुजलाने लगता है गुलनार !"

"किसी पर शक है तुम्हारा ? पहचाना नहीं उस मरदूद को ?"

"शैतान मुँह छिपाये हुए था···मुझे तो जमुना-जैसा लगता था।"

"कौन जमुना ? छोटे कुँवर का मुँहलगा भतीजा ?"

"अरे चुप !···नौकर को भतीजा बनाती है ?···जरूर वही कलूटा था बुलबुल ! देखा तो है तुमने, काला जिन्न-जैसा है। रात में कभी देख लो तो दिन को बुखार चढ़ जाय। पता नहीं क्या खाता है उल्लू का पट्ठा !"

"छोटे कुँवर ने भैंसा पाल रखा है चुनमुन के अब्बा !···जौ का आटा खिलाते होंगे।"

"क्या कहती हो गुलनार ! चुनमुन कौन है ? कहाँ है ?"

"मेरे पेट में।" कहकर गुलनार लजा गई।

वारिस ने उसे अपनी गोद में खींच लिया ; बोला—"सच कहती हो मेरी मलिका ?"

"सच कहने का इरादा तो नहीं था, मुआ यक-ब-यक मुंह से फूट पड़ा। अब तो तैयारी कर रखो बेटा खेलाने की।"

"मैं बिलकुल तैयार हूं। तुम बेटा दिखाओ तो सही !"

"मैं क्या दिखाऊँ ?···खुदा दिखाये जब तो ?···क्यों जी ! छोटे कुँवर, बड़े कुंवर साहिब की जान लेना चाहते हैं ?···रानी माँ कुछ नहीं बोलतीं ?···आखिर सौतेली माँ ही तो···"

"चुप रह गुलनार ! रानी माँ का कोई कसूर नहीं। उन्हें शायद कुछ मालूम भी नहीं। छोटे कुँवर, बड़े कुँवर की जान लेकर रियासत अपने कब्जे में करना चाहते है···और अपने बड़े कुँवर तो पूरे बकरे हैं, चाहे जो उनकी गर्दन तराश ले। ऐसों की गुजर इस दुनिया में नहीं अलबेली !"

गुलनार उसकी गोद से उठ खड़ी हुई और नीचे जमीन पर दूर जा बैठी।

वारिस ने पुकारा—"ऐ गुलनार ! सुनती हो ? अभी से मत रूठो ! खुदा कसम, जब बच्चा हो जायगा तब तो तुम और भी हसीन लगोगी। मैं तो इकटक देखा करूँगा तुम दोनों को। तुम्हारी यह दिलफरेब अदा, माँ बन जाने पर तो और भी गजब ढायेगी।"

"मुझे तुम्हारी यह तारीफ जरा भी नहीं भाती।"

"लो ! सच बात में कौन-सी तारीफ रखी है ?···सदके जी सदके !···आओ थोड़ा प्यार दे दो तो मैं चला जाऊँ अपनी ड्यूटी

पर। मेरे न रहने पर महल के सब पहरेदार मुर्दों से बाजी लगाते हैं पाजी !"

"ऐसी हालत में तो तुम्हें नहीं जाने दूंगी।" गुलनार पास आकर बोली—"तुम कितने जख्मी हो ?"

"अभी तो यह जख्म छोटा ही है गुलनार, मगर मेरे न जाने पर कोई वारदात हो गई तो इतना गहरा जख्म लगेगा कि खुदा कसम, मैं जिन्दा नहीं रह सकूंगा। मुझे जाना ही होगा बुलबुल ! फरमाँबर्दार नौकर के लिए अपने जिस्मानी दर्द की कोई कीमत नहीं, फर्ज ही उसका सब-कुछ है···देर हो रही है गुलनार !"

वारिस ने गुलनार को अपने पास खींच लिया और उसके गुलाबी गालों पर एक हल्की-सी चपत देकर बोला—"सीधे से बुलाता हूँ तो और दूर भागती हो मेरी जान !"

⊙

रानी साहिबा ने सिर उठाया। साड़ी के छोर से सुनहरे चश्मे को पोंछकर आँखों पर लगाया, फिर चंचल की ओर देखा। चंचल कुछ हिचकिचाया-सकुचाया-सा खड़ा था, जैसे कोई बात कहना चाहता हो।

"तू गया नहीं अभी चञ्चल ? कह तो दिया कि जा, देख आ सिनेमा···मगर तेरी यह घूमने-फिरने की आदत मुझे जरा भी नहीं भाती। जब देखो तब सिनेमा, क्लब···भगवान् जाने इसे और भी कोई काम सूझता है या नहीं ? अचल को देखता है कि नहीं ? दिन-रात बेचारा काम में पिसा रहता है। तू क्या और भी कभी जवान होगा ? अब तो लड़कनपन छोड़ दे, बीस सावन तो देख चुका।"

"माँ ! मैं नहीं जाऊँगा सिनेमा !" चञ्चल धम्म से कुर्सी पर बैठ गया।

"क्यों ?···माँ की बातों का तीर लग गया ? ऐसा ही हयादार होता तो तेरी जवानी को पर न निकलते। राजा का बेटा है तू तो कङ्गालों की तरह मारा-मारा क्यों फिरता है ?"

"मुझसे बिगड़ो मत माँ ! अचल भैया ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। दिन-रात उन्हीं के गुण गाती रहती हो, जैसे मैं तुम्हारा बेटा न हुआ, घूरे का कूड़ा हो गया···मेरी कोई गिनती

ही नहीं।"

"कौन तेरी गिनती नहीं करता ?···अचल और कुँवरानी तुझे आँखों में भरे फिरते हैं। मेरा तो बेटा ही है तू···मगर दुनिया में केवल रिश्ता ही प्यारा नहीं होता चञ्चल ! रिश्ते को मजबूत करने के लिए इन्सान में व्यावहारिक उच्चता भी होनी चाहिए। तू अपने को सुधार तो पहले !"

"तुम अपना दिमाग सुधारो माँ ! सारी रियासत तुमने गैरों को सौंप दी है।"

"कौन है गैर ?"

"मैं तुम्हारा बेटा हूँ, कभी मेरी भी राय लेती हो कुछ ? अचल भैया जो मन में आता है करते हैं। देख लेना, तुम्हारे मरने पर चञ्चल भीख न माँगने लगे तो कहना !"

"मगर अन्धे लड़के !" रानी साहिबा बिगड़कर बोलीं—"मैं पूछती हूँ, अचल क्या कोई गैर है ? मैं उसकी माँ न सही मगर वह मेरे पति का बेटा तो है ?···वह मेरे पेट से पैदा नहीं हुआ मगर तेरे बाप का खून तो है उसके शरीर में ?···तुझसे तो लाख दर्जे अच्छा है वह बड़ा कुँवर।"

"ऐसे नहीं चलेगा माँ !···तुम अपना हिस्सा अलग कर लो।"

"अपना हिस्सा अलग कर लूँ या तेरा ?···तुझे अलग रहना हो तो रह, मगर मेरे जीते जो रियासत का एक टुकड़ा भी तुझे नहीं मिलेगा, इसे याद रख !···रोटी बाँटकर खाई जाती है मगर जायदाद बाँटने से मिट जाती है। अचल-जैसा दिमाग जिस दिन हो जाय तो सारी रियासत तुझे ही वह सौंप देगा।"

"मुझे भीख नहीं चाहिये···मुझे अपना हिस्सा चाहिये। मैं नहीं जानता था कि माँ भी बेटे का गला काट सकती है।"

"चुप रह लड़के ! रियासत न तेरी है, न अचल की—मेरी है, मैं उसकी मालकिन हूँ। तू अभी दूर हो जा मेरे सामने से !"

"क्यों माता जी ! क्यों बिगड़ रही हो चंचल पर ?"

अचल को देखकर रानी साहिबा का क्रोध उड़ गया ; हँसने की कोशिश करती हुई बोलीं—"कुछ नहीं बेटा !···यह चंचल इतना बड़ा हो गया मगर तमीज नहीं आई इसे। राजा का बेटा होकर माँ

से लड़ता है । जमाना सुने तो क्या कहे ?"

रानी साहिबा ने असली बात छिपा ली । सुनकर अचल को व्यर्थ का दुःख होता ।

अचल ने चंचल का हाथ पकड़कर कहा—"क्यों रे, माता जी से क्यों लड़ रहा था तू ?"

"मैं कहाँ लड़ रहा था भैया !" अभिनय-पटु चंचल ने भी अपनी ऐक्टिंग बदल दी—"माँ ने ही तो पहले बिगड़ना शुरू किया था ।"

"सुन लो कुँवर, इस छोटे भाई की बात ! साँप की तरह क्षण-क्षण पर केंचुल बदलता है यह ।" रानी साहिबा ने कहा, "इतना बड़ा हुआ मगर सिनेमा और क्लब के सिवा इसे कुछ सूझता ही नहीं ।"

"तुम भी तो माताजी, इसपर बेकार बिगड़ने लगती हो । सिनेमा ही तो देखता है या और कुछ ?···छोटा है तो खेलेगा-कूदेगा नहीं ? इसे फिक्र किस बात की है ?···अब खड़ा क्यों है रे चंचल ? जाता क्यों नहीं ? या पूरे पैसे देकर आधा ही खेल देखने का इरादा है ?··· यह भी तो एक ही शैतान है ।" अचल ने छोटे कुँवर को डाँटा ।

चंचल मुँह बिचकाकर चला गया ।

बाहर उसकी कार खड़ी थी । ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया । चंचल अन्दर जा बैठा ।

'होटल चलूँ न हुज़ूर ?" पूछा ड्राइवर ने ।

"हाँ !···जमुना कहाँ गया ?"

'वे मिस एनी को लेकर होटल में आने को कह गये हैं ।" बोला ड्राइवर ।

और कार तेजी के साथ दौड़ पड़ी । थोड़ी ही देर में वह शहर के सबसे बड़े होटल के सामने जा खड़ी हुई ।

चंचल उतरकर भीतर की ओर चला । स्वयं मैनेजर ने दौड़कर उसका स्वागत किया, जैसे वह अक्सर वहाँ आता रहा हो ।

"कमरा खाली है ?" चंचल ने पूछा ।

"आपके लिए तो हमेशा एक कमरा रिजर्व रहता है हुजूर !" मैनेजर ने कहा—'आप नं० १३ में तशरीफ रखें ।"

चंचल होटल की खूबसूरत चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया । पीछे-पीछे वर्दी पहने एक बेयरा भी था ।

बेयरा ने लपककर दरवाजा खोला। चंचल भीतर प्रविष्ट हुआ।

कमरा बड़े ही अच्छे ढंग से सजा था। आदमकश शीशे, गद्देदार पलँग, बड़ी-बड़ी दो अलमारियाँ, एक बड़ी-सी डायनिंग टेबुल और अगल-बगल चार कुर्सियाँ, बेयरा को बुलाने की घण्टी, टेलीफोन का एक्सटेन्शन, कोने में एक छोटा-सा रेफ्रिजरेटर, दो कोच, एक रेडियो, एक बेडसाइड टेबुल—वह कमरा खास तौर से छोटे कुँवर के लिए सजाया गया था।

चञ्चल एक कोच पर जाकर बैठ गया।

बेयरा ने रेडियो का स्विच खोल दिया। कमरे में मधुर गायन-स्वर गूंज उठा।

"कुछ लाऊँ हुजूर ?" पूछा बेयरा ने।

"अभी नहीं।" चंचल ने कहा—"मिस एनी अभी तक नहीं आईं ?"

"नहीं हुजूर !...वक्त हो गया है, आती ही होंगी।" कहकर बेयरा जाकर दरवाजे पर रखे स्टूल पर बैठ गया। दरवाजे पर एक हरा पर्दा खींच दिया।

चंचल कोच पर पाँव फैलाकर पड़ गया। वह कुछ चिन्तित-सा लग रहा था। जेब से चाँदी का केस निकालकर उसने एक सिगरेट जलाई और पीने लगा। हृदय की चिन्ता धुएँ के गुबार के साथ बाहर निकलकर ऊपर हवा में उड़ चली।

कुछ ही देर बाद दरवाजे का पर्दा जरा-सा खिसका और एक एंग्लो-इण्डियन लड़की ने प्रवेश किया।

रङ्ग गोरा, चाल मस्तानी, आँखें कुछ भूरी मगर कातिल, पहनावा अंग्रेजी मगर बेहद आकर्षक, बाल आधुनिक ढंग से सँवारे, गालों पर पाउडर और होठों पर लिपस्टिक के कारण उम्र का अन्दाजा मुश्किल, हाथ में चमकता काला हैण्डबैग, कसी पोशाक के ऊपर उठे हुए छाती के दो उठाईगीरे !

चञ्चल आँखें बन्द किये कुछ सोच रहा था। उसने उस लड़की का आना नहीं देखा।

"Hallo चंचल कुँवर ! How do you do ?" लड़की ने कर आगे बढ़ाते हुए कहा।

चंचल ने सिर उठाकर देखा तो चेहरे पर हल्की मुस्कराहट आ गई ; बोला—"O kay, thank you, अभी चली आ रही हो क्या मिस एनी ?"

"Just coming ; तुम तो आज बड़ी अफसोस में नजर आती है चंचल कुँवर ? क्या बात हो गया ?" मिस एनी चंचल के पास कोच पर बैठती हुई बोली।

"कुछ नहीं मिस एनी ! जमुना तुमसे मिला था ? तुम्हें बुलाने गया था।"

"Mr. जमुना ?···No no, I didn't see him···हम एक friend के पास गया था। Mr. जमुना अब आती ही होगी Mummy से पूछकर। कल रात में कुछ Success मिला ?"

"नहीं मिस एनी ! जमुना को आ जाने दो तो सब-कुछ बताऊँगा। कुछ पियोगी ?" चञ्चल ने पूछा।

"Only Bear !"

"बीयर से क्या होगा ? कुछ और लो, थोड़ा सुरूर चढ़े तो काम की बात हो।"

"Then one peg dry Gin." एनी बोली।

चंचल ने घण्टी बजाई। बेयरा आया। उसने उसे ड्राई जिन लाने की आज्ञा दी।

थोड़ी ही देर बाद तश्तरी में बोतल और गिलास रखे बेयरा आया और 'बेडसाइड टेबुल' पर रखकर बाहर चला गया।

"मुझे बहुत थोड़ा दो···Mummy को मालूम हो गई तो नाराज होगा···बस, thats all."

ग़िलास में थोड़ी-सी जिन और सोडा डालकर चंचल ने अपने हाथों से एनी को पिलाया। फिर एनी ने भी तीन-चार पेग चंचल को पिलाये।

"तुम एक पेग और लो मिस एनी !" चंचल ने हठ किया।

"No no, हम जियादा नहीं पीयेगा।"

"तो हम भी नहीं पीयेगी।" उसी लहजे में चंचल ने कहा।

"तुमको पीना पड़ेगी, हम तुमको पिलाता है। तुम जरूर पीयेगी। हम तुमको कितना love करता है चंचल कुँवर !

तुमको मेरी कसम ! दो Peg और पी लो darling !" कहकर एनी ने दो पेग और पिलाये चंचल को।

"एनी डार्लिङ्ग ! तुम मुझे कितना प्यार करती हो !" चंचल ने एनी को अपने पास खींचते हुए कहा।

"और क्या तुम मुझको उतना प्यार नहीं करती ? कैसा बोलती है चंचल कुँवर ?" एनी गोल गेंद की तरह ढुलक आई चंचल की गोद में अपने-आप।

"मैं भी तुमको बहुत प्यार करता हूँ डार्लिङ्ग ! तुमने मुझपर जादू कर दिया है।" चंचल ने उसे अपने हाथों के बीच भरकर जोर से दबाते हुए कहा।

एनी ने एतराज नहीं किया; बोली—"जादू क्या बोलती ?··· Oh, you mean magic ?"

"यस !" कहकर चंचल ने एनी के होंठ चूम लिये।

"Oh, you sweet beast ! तुम्हारी होंठ lipstick से लाल हो गया···हमारी Makeup खराब कर दी। Rascal है तुम Nice little rascal !"

कहकर एनी चंचल की गोद में सिर रखकर लेट गई; बोली—"तुम हमको अपनी रानी बनायेगी चंचल कुँवर ?"

"Sure darling ! मुझे अपनी रियासत पर अधिकार कर लेने दो, फिर तो तुमसे शादी करके तुम्हें अपनी रानी जरूर बनाऊँगा। मुझपर विश्वास करो मेरी प्यारी एनी !"

"बात देकर बदल तो नहीं जायगी तुम ?"

"कभी नहीं। कितनी दफा तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखा चुका हूँ···क्या तुम्हें मुझपर यकीन नहीं आता ?·· दुनिया में मैं केवल दो ही चीजें पाना चाहता हूँ—एनी और रियासत को।"

"कल बड़ी कुँवर पर जो हमला किया उसमें Success मिला कि नहीं ? मिस्टर जमुना तो बड़ी बहादुर आदमी है। उसने बड़ी कुँवर को जरूर मार डाली होगी।"

"नहीं मिस एनी ! हम असफल रहे। कुँवरानी भाभी और वारिस के रहते हम कामयाब नहीं हो सकते।"

"वारिस कौन ? That giant ? My God ! he is like

an elephant …तो कल भी बड़ी कुँवर बच गई ? ऐसे कब तक काम चलेगी छोटी कुँवर ?…तुम जल्दी से Success हासिल करो।"

"हम तो बहुत कोशिश कर रहे हैं मिस एनी !…अचल भैया को रास्ते से हटाने के बाद, भाभी और ललित को भी तो हटाना पड़ेगा ! बड़ी मुसीबत है डार्लिङ्ग !"

"लो, मिस्टर जमुना भी आ गई।" एनी ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

उसी समय एक लम्बे-चौड़े आदमी ने प्रवेश किया, जिसका काला रंग रोशनी में अजीब ढंग से चमक रहा था। उसकी भयानक आकृति प्रकट कर रही थी कि वह प्रथम श्रेणी का विश्वासघाती एवं खूनी है।

"मिस एनी ! आप यहाँ ?" उसने आगे बढ़ते हुए कहा—"बातैसी है कि मैं आपके घर गया था। आपकी ममी से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा कि आप एक घण्टा पहले ही जा चुकी हैं।"

"क्यों मिस्टर जमुना ! कल तो तुम्हें Success नहीं मिला, अब क्या इरादा है तुम्हारी ?"

जमुना उतरा चेहरा लेकर पास आकर कुर्सी पर बैठ गया ; बोला—"बातैसी है कि पता नहीं कैसे कुँवरानी साहिबा होशियार हो गईं। मैं भी पकड़ लिया जाता मगर नसीब अच्छे थे, बचकर निकल आया। खैर ! कब तक हमारा वार खाली जायगा !… हमने दूसरा रास्ता सोच लिया है मिस एनी ! क्या बड़े कुँवर को बातैसी है कि जहर दे देना ठीक नहीं होगा ?"

"You mean poison !…बहुत ठीक होगी।" एनी ने कहा—"Poison दोगी तो बहुत जल्दी काम हो जायगी। बड़ी कुँवर के बाद कुँवरानी और ललित को भी एक-साथ Poison दे दिया जायगी।"

"मगर जहर मिलेगा कहाँ ?" चंचल ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"कोई डॉक्टर दे देगी।" बोली एनी।

"मैं सोच चुका हूँ।" जमुना ने कहा—"अपने फेमिली डॉक्टर दास बाबू हैं न ! बातैसी है कि उन्हीं को मिलाया जाय।"

"तुम भूलते हो जमुना ! डॉक्टर दास हमारे खानदान का

पुराना डॉक्टर है। वह कभी इस बात के लिए तैयार न होगा।"

"रुपया सब-कुछ कर सकता है छोटे कुँवर!" कहते-कहते जमुना के मुख पर एक पैशाचिक मुस्कुराहट खेल गई—"रुपये से इन्सान का ईमान खरीदा जा सकता है, कानून बदला जा सकता है, बातैसी है कि खून को पानी साबित किया जा सकता है।"

"ठीक है, मगर डॉक्टर दास रुपयों पर फिसलनेवाला नहीं; मुझसे बढ़कर वह अचल भैया का ताबेदार है।"

"Silly doctor. Put him on the point of your pistol." एनी ने तेजी से कहा।

"मिस एनी ने ठीक कहा—" जमुना बोला—"रुपये से नहीं तो पिस्तौल से डॉक्टर दास ठीक हो जायँगे। बातैसी है कि हमें यह काम जल्द-से-जल्द कर डालना चाहिये। वे लोग दिन-पर-दिन होशियार होते जा रहे हैं।"

"तो चलो, अभी डॉक्टर दास से मिल लें।" कहकर चंचल उठ खड़ा हुआ।

एनी और जमुना भी उठ पड़े।

तीनों होटल से बाहर आकर कार पर बैठ गये। कार ने दस मिनट में ही उन्हें डॉक्टर दास के दरवाजे पर पहुँचा दिया।

डॉक्टर दास रोगियों से छुट्टी पाकर खाना खाने अन्दर चले गये थे।

डॉक्टर का नौकर चञ्चल को पहचानता था। उसने इज्जत के साथ सबको बिठाया और अन्दर जाकर डॉक्टर दास को उनके आने की सूचना दी।

दो ही मिनट बाद डॉक्टर साहब लपके हुए आये।

अधेड़ अवस्था, फिर भी चाल में फुर्ती, चेहरे पर गम्भीरता, आँखों में अनुभव की चमक। डॉक्टर दास रामगढ़ रियासत के खानदानी चिकित्सक थे। राजा साहब उनकी बहुत इज्जत करते थे।

"ओहो, छोटे कुँवर की तबीयत आज फिर खराब हो गई?" कहते हुए डॉक्टर दास कुर्सी पर आ बैठे।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ डॉक्टर साहब!" बोला चंचल—"एक जरूरी काम से आपके पास आया हूँ।"

"कहिये !" कहते-कहते डॉक्टर की दृष्टि एनी पर पड़ी तो वे चौंक पड़े—"आप ?"

"ये मेरी दोस्त हैं।" चंचल ने कहा—"आपने इन्हें पहले मेरे साथ नहीं देखा होगा···अभी हाल ही में दोस्ती हुई है।"

"यही तो मैं भी समझता था।" डॉक्टर ने कहा—"हाँ, कहिये, क्या सेवा करूँ ?···बड़े कुँवर मजे में हैं ?"

"सब लोग ठीक हैं।···मैं एक गुप्त बात कहना चाहता हूँ, खुला दरवाजा बन्द कर देने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं ? हवा के साथ यदि दो-एक शब्द बाहर चले गये और उन्हें किसी ने सुन लिया तो हम दोनों के लिए बुरा होगा।"

"ठीक है···दरवाजा बन्द कर लीजिये। मगर बात क्या है छोटे कुँवर ? कोई गुप्त रोग···"

जमुना ने उठकर दरवाजा बन्द कर दिया और भीतर से सिटकिनी भी लगा दी।

तब चंचल बोला—"गुप्त रोग की बात नहीं है डॉक्टर साहब !···आप हमारे पुराने डॉक्टर हैं, सो कुछ मदद माँगने आया हूँ। काम हो गया तो समझिये हमारे साथ आपको भी काफी लाभ होगा।"

"आपकी रियासत से मेरी परवरिश होती है कुँवर साहब ! आप जो कहें, मैं करने को तैयार हूँ। लाभ की चिन्ता मुझे नहीं। आपकी कृपा से खाने-पहनने को काफी है। कोई बाल-बच्चे भी नहीं कि मरने के बाद की फिक्र करूँ।"

"आप डॉक्टर हैं···लोगों को दवा देकर जिलाते हैं, ठीक है न ?"

"जरूर, आप अपना मतलब बयान कीजिये।" डॉक्टर ने कहा। उसके मुख पर उद्विग्नता थी।

"क्या आप दवा से लोगों को मार भी सकते हैं ?" चंचल ने एकटक डॉक्टर के मुख की ओर देखते हुए पूछा।

डॉक्टर चौंक पड़े मगर अपना भाव छिपाकर बोले—"दवा का काम जीवन देना है कुँवर साहब ! जान लेने का काम तो जहर ही कर सकता है। मगर जहर भी इतना घृणित नहीं; उचित मात्रा

में सेवन करने से वह भी जीवन देता है।"

"मुझे जीवन देनेवाली दवा नहीं, जान लेनेवाला जहर चाहिये डॉक्टर साहब !...एक खूराक अभी और दो खूराक बाद को...और तीन खूराक के बदले तीन हजार कैश · बोलिये, तैयार हैं आप ?" चंचल ने पूछा।

"रुपयों का लालच डॉक्टर को अपने फर्ज से नहीं गिरा सकता चंचल कुँवर !" डॉक्टर ने दृढ़ स्वर में कहा—"मारनेवाला वह ईश्वर है। डॉक्टर से ऐसा कभी नहीं हो सकेगा। लोगों को जीवन-दान देकर इतना जो पुण्य कमाया है, वह एक ही पाप से धुल जायेगा छोटे कुँवर !"

"अच्छा तो पाँच हजार !"

"मुझे क्षमा करें आप।"

"सात, आठ, नौ हजार !"

"......"

डॉक्टर चुप हो रहे। रुपयों की चमक आँखों में समा रही थी। सोच रहे थे डॉक्टर दास।

"दस हजार...ग्यारह...बारह हजार !" तीर-पर-तीर छोड़ रहा था चंचल।

और अन्त में डॉक्टर दास घायल हो उठे।

एक लम्बी साँस लेकर बोले—"किसकी जान लेनी है ?"

"आप तैयार तो हैं ?...बारह हजार आपको कल सबेरे ही मिल जायँगे।"

"मैं तैयार हूँ...नाम बताइये।"

"नाम से आपको क्या वास्ता ? तीन खूराक जहर की कीमत में बारह हजार दे रहा हूँ, यह क्या कम है ?" बोला चंचल।

"कम तो नहीं, मगर देने के पहले मैं यह जान लेना चाहता हूँ कि उसे आप अपने ही खानदान पर तो नहीं प्रयोग करेंगे ?"

"अगर ऐसा ही करूँ, तो ?"

"तो फिर मैं बारह लाख पर भी तैयार नहीं।" डॉक्टर की आवाज दृढ़ थी।

"सोच लीजिये खूब !"

"सोच लिया है। मैं राजघराने के साथ दगाबाजी नहीं कर सकता।"

चंचल ने आँखों-आँखों में जमुना से कुछ इशारा किया, फिर डॉक्टर से बोला—"क्या यह आपका आखिरी फैसला है ?"

"बिल्कुल आखिरी !" कहकर डॉक्टर उठने लगे।

"बैठे रहो डॉक्टर !" चंचल तड़पकर बोला—"तुम्हें मैं केवल रुपया ही नहीं दूंगा, एक और चीज दूंगा।"

"वह क्या ?"

"मौत ! उधर देखो।"

डॉक्टर ने भयभीत दृष्टि से जमुना की ओर देखा, जिसके हाथों में एक वजनी पिस्तौल चमक रही थी।

"चंचल हारकर जाने नहीं आया है डॉक्टर ! रुपयों की तुम्हें जरूरत नहीं, मगर मौत की जरूरत है तुम्हें। देख रहे हो वह काली-सी मौत जमुना के हाथ में ?…मेरा जरा-सा इशारा पाते ही वह गोली उगल देगी। बोलो, क्या कहते हो तुम ?"

"मुझे छोड़ दीजिये।" डॉक्टर ने प्रार्थना की।

"तुम चाहो तो छूट सकते हो।" चंचल ने क्रूर हँसी हँसकर कहा—"सिर्फ तीन खूराक, ज्यादा नहीं… और बारह हजार रुपये कम नहीं…और यह तनी हुई पिस्तौल मामूली नहीं। जरा-सा धड़ाका और तुम्हारी जान बेजान…जल्दी बोलो डॉक्टर ! जमुना के हाथ कांप रहे हैं। अब पिस्तौल अधिक इन्तजार नहीं कर सकती। जमुना ! तुम डॉक्टर के ठीक पीछे खड़े हो जाओ, ताकि जरूरत पड़ने पर निशाना खाली न जाय।"

डॉक्टर का चेहरा पीला पड़ गया था। आँखों में भय नाच रहा था।

चंचल क्रूर आँखों से डॉक्टर को एकटक देख रहा था।

जमुना डॉक्टर के पीछे आ खड़ा हुआ था।

पनी खामोशी थी।

"मैं तीन तक गिनता हूँ। तीसरी आवाज पर तुम्हारी मौत आ जायेगी। रेडी ! एक…"

"……"

डॉक्टर का बदन काँप उठा।

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

"दो !"

चंचल ने इतने जोर से कहा कि डॉक्टर चौंक उठा।

"ठहरिये !" बोला वह हाँफता हुआ—"मैं एक खूराक दे दूंगा।"

"बारह हजार पर तीन खूराक ! समझे डॉक्टर ?"

"मैं रुपया नहीं चाहता।"

"मगर मैं तो तीन खूराक चाहता हूँ ! एक अभी, दो बाद में··· जल्दी बोलो, नहीं तो मेरे मुँह से तीन निकल जायेगा।"

"दूंगा।" डॉक्टर हताश वाणी में बोला—"अभी तो एक खूराक चाहिए न ?"

"हाँ, जल्दी करो !" बोला चंचल।

डॉक्टर ने पास की अलमारी खोली और सफेद पाउडर की पुड़िया बाँधकर चञ्चल की ओर बढ़ा दी।

चञ्चल पुड़िया लेकर उठा ; बोला—"देखो डॉक्टर, तुम्हारी जबान काबू में न रही तो हमारी पिस्तौल भी बेकाबू हो जायगी। भलाई इसी में है कि अपना मुँह बन्द ही रखना। जबान हिलाते ही मौत ! समझे ?"

डॉक्टर कुछ बोला नहीं ; सिर पकड़कर कुर्सी पर बैठ गया।

चञ्चल, एनी और जमुना बाहर आकर कार पर जा बैठे।

कार चल पड़ी।

रात के दस बज गये थे। छोटे-से शहर की भीड़-भाड़ सन्नाटे में परिवर्तित हो गई थी।

"जहर तो मिल गया," बोला चञ्चल—"अब इसे देने का उपाय ?"

"मिस एनी कर लेंगी।"—जमुना ने कहा—"बड़े कुँवर मिस एनी को पहचानते नहीं। ये किसी बहाने से उनसे मिलेंगी और चाय पीने की इच्छा प्रकट करेंगी···मौका देखकर बड़े कुँवर के प्याले में···ठीक है न मिस ?"

"O.K. I will do it." एनी ने कहा—"Poison मुझे

दे दो।"

"घबड़ाना मत मिस एनी !···लो, पुड़िया सँभालकर रखो। भैया से खूब दिल खोलकर मिलना, मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा। मगर देखना, भैया बड़े सुन्दर हैं। कहीं उन-पर लट्टू न हो जाना कि जहर का प्याला उन्हें न देकर खुद ही पी लो।"

"तुम क्या बोलती हो छोटी कुँवर ! हम जरूर Success करेगा।"

"Success तो करेगा तुम मिस एनी !" जमुना एनी की ही स्टाइल में बोला—"कहीं तुम fail कर गया तो छोटी कुँवर बहुत नाराज होगी।"

"नाराज कैसे होगी ?" एनी ने कहा—"हमारा Would be husband है छोटी कुँवर !"

कार भागी जा रही थी। हत्या के बाँधनू बँध रहे थे।

⊙

जब से उस रात कुँवर अचलनारायण पर हमला हुआ, कुँवरानी ललित के साथ उसी कमरे में सोती है। वह जानती है कि अचल बेहद लापरवाह है और उसकी लापरवाही किसी दिन उसकी जान ले सकती है। सारी खुराफात की जड़ चञ्चल है और चञ्चल की जरा भी शिकायत अचल सुनना नहीं चाहता।

अचल के कमरे में पलँग पर कुँवरानी बैठी है। छोटा ललित हँसता हुआ खेल रहा है। कुँवर मुग्ध दृष्टि से कभी कुँवरानी को देखता है, कभी ललित को। दाम्पत्य जीवन में कितना सुख है, इसका अनुभव कुँवर को विस्मृत कर देता है।

"ऐ ललित ! तू सोयेगा नहीं ?" कुँवरानी ने खेलते हुए ललित का हाथ पकड़कर कहा—"सो जा बेटा ! दस बज रहे हैं···दिन को सो जाता है तो रात को तेरी खुराफात चल निकलती है। इधर आकर सो रह अब।"

"पहले बाबूजी को छुलाओ माँ ! बड़े आदमी को पहले छोना चाहिये।" ललित ने तोतली वाणी में कहा।

"तेरे बाबूजी अभी नहीं सोयेंगे।"

"क्यों माँ ! ···जगकल क्या कलेंगे बाबूजी ?···तुमछे बातें ही कलेंगे न ?"

"नहीं रे, मुझे फुसलायेंगे।" कहकर हँसती हुई कुँवरानी ने तिरछे-तिरछे कुँवर की ओर देखा।

कुँवर भी हँस पड़ा।

ललित बोला—"माँ ! तुम्हें बाबूजी फुछलावें तो फुछलना मत, बले खलाब हैं बाबूजी। मुझे लकली का घोला भी नहीं ला देते माँ, तुम एक घोला मुझे ला दो तो मैं तुम्हें एक पैछा दूँगा। मिठाई खाना।"

"बड़ा मिठाईवाला बना है।" कुँवर ने कहा—"कभी अपने बाप को भी मिठाई खाने का न्योता दिया है बेईमान ?"

"तुम तो लोज मिठाई खाया करते हो, माँ को पूछते भी नहीं। माँ, बाबूजी को मिठाई मत देना, नहीं तो अपने घोले पर तुम्हें नहीं चल्हाऊँगा। वारिस मुझे घोला ला देगा, छोटा छा, लकली का।"

कमरे में बत्ती जल रही थी, परन्तु बाहर आँगन में अन्धकार था। कुँवरानी की दृष्टि एकाएक बाहर जा पड़ी, साथ ही वह चौंक गई।

बाहर आँगन में कोई छाया चल-फिर रही थी परन्तु अन्धकार के कारण उसकी सूरत दिखाई नहीं पड़ती थी।

इधर जो कुछ घटनायें राजमहल में घट रही थीं, उस कारण कुँवरानी अत्यधिक सावधान रहा करती थी।

धीरे से वह उठी और दबे पाँव बाहर की ओर आगे बढ़ी।

कुँवर ने रोका—"कहाँ चल दी कविता ?"

"अभी आती हूँ।"

कहकर कुँवरानी बाहर निकल आई और धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया।

दरवाजे की राह थोड़ा-बहुत प्रकाश आँगन में आ रहा था, वह भी गायब हो गया ; परन्तु अन्धकार में भी छाया को कुँवरानी ने देख ही लिया।

उस छाया ने भी शायद उसे देख लिया था और रुककर खड़ी

हो गई थी।

छाया हिली और कुँवरानी की ओर बढ़ने लगी। कुँवरानी सजग हो गई।

तब तक छाया पास आ गई थी और स्पष्ट स्वर कुँवरानी को सुनाई पड़ा—"मैं हूँ हुजूर! खुदा कसम, आपको जोर से पुकार भी नहीं सकता था···कुँवर साहिब जान जाते।"

"वारिस तुम?···क्या···"

"धीरे से बोलिये हुजूर!···बड़े कुँवर साहिब तक आवाज न पहुँचे!···वे आये हैं।"

"कौन?" धीरे से पूछा कुँवरानी ने।

वारिस ने झुककर कोई नाम बताया; बोला—"वह बहुत छिपकर आये हैं हुजूर! कहते हैं बड़ा ही जरूरी काम है, आपसे तखलिये में कुछ बातें करना चाहते हैं···बेहद डरे हुए हैं शायद। ठीक से बोल भी नहीं पाते।"

"तुम चलो, मैं अभी आई।"

वारिस चला गया। कुँवरानी दबे पाँव कमरे के पास आई और आहिस्ता से दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया।

भीतर ललित से बातें करते हुए कुँवर को यह नहीं मालूम हुआ कि दरवाजा बन्द हो गया है।

कुँवरानी धीरे-धीरे उस ओर बढ़ी जिधर बैठकखाना था।

दरवाजे पर उसने वारिस के पास एक आदमी को खड़े देखा, जिसने अपने मुँह और बदन का ज्यादातर हिस्सा एक काली चादर से छिपा रखा था।

कुँवरानी को देखकर धीरे से बोला—"बहुत छिपकर मिलने आया हूँ। उम्मीद न थी कि इतनी रात को तुमसे भेंट हो सकेगी, फिर भी चला आया। मैं जानता था कि वारिस तुम्हारा वफादार नौकर है, इसीलिए इसी से बुला भेजा। कुँवर साहब को तो नहीं मालूम हुआ?"

"नहीं।" कुँवरानी ने गम्भीर होकर कहा।

"तो ठीक है," वह बोला—"बैठक में चलो।"

कुँवरानी ने बैठक का दरवाजा खोला। वह आदमी चटपट

भीतर घुस गया।

कुँवरानी भी भीतर जाते-जाते वारिस से बोली—"तुम दरवाजे पर खड़े रहो। कोई इधर न आने पावे···समझे ?"

"समझ गया हुजूर !" वारिस बोला—"ईमान कसम, हवा को भी पास नहीं आने दूंगा···आप इत्मीनान से बातें कर लें।"

कुँवरानी ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। वारिस चौकन्ना होकर दरवाजे पर खड़ा रहा।

भीतर से आवाज सुनाई पड़ी—"रोशनी कर दूं ?" कुँवरानी थी।

"नहीं, कतई नहीं।" वह बोला—"मेरी बातें ध्यान से सुन लो, मुझे जल्दी है।"

इसके बाद धीरे-धीरे बातें होने लगीं। वारिस कुछ सुन न सका। वह दरवाजे पर इधर-उधर टहलने लगा। उस विचित्र आदमी के आगमन ने उसे भी हैरत में डाल दिया था। फिर भी वह एकदम तैयार था कि आफत पड़ने पर कुँवरानी उसे ज्योंही पुकारे, वह दरवाजा तोड़ अन्दर जा घुसे।

थोड़ी देर बाद कमरे के अन्दर से कुँवरानी की हिचकियाँ लेने की आवाज आई।

तड़पकर वारिस दरवाजे के पास आया और धक्का देकर पुकारा—"हुजूर ! क्या बात है ? अन्दर आऊँ ?"

दरवाजा अन्दर से बन्द था।

आवाज आई—"बोलो मत वारिस ! वहीं खड़े रहो···घबराने की कोई बात नहीं।"

स्वर कुँवरानी का ही था।

वारिस दरवाजे से हटकर पुनः टहलने लगा। कभी-कभी उसके कानों में कुँवरानी की हिचकी की आवाज आ जाती थी, तो वह बेचैन हो उठता था। कमरे में क्या हो रहा है, इसे जानने का उसके पास कोई तरीका न था।

बड़ी देर के बाद दरवाजा खुला और दोनों बाहर निकले। अंधेरे में भी वारिस की तेज आँखों ने कुँवरानी का अश्रुपूर्ण चेहरा देख लिया।

"इन्हें बाहर सड़क पर पहुँचाकर जल्द आओ...मैं यहीं खड़ी हूँ।" कुँवरानी ने वारिस से कहा।

वह आदमी वारिस के साथ चला गया। कुँवरानी हृदय में अगम चिन्ता का भार लिये वहीं खड़ी रही।

वारिस थोड़ी ही देर में लौट आया। उतावली के साथ बोला, "बात क्या थी हुजूर?...आप रो क्यों रही थीं?"

कुँवरानी धीरे-धीरे वारिस से कुछ कहने लगी। वह बड़ी देर तक उसे कुछ समझाती रही।

सुनकर वारिस बोला—"आप खातिर जमा रखें कुँवरानी साहिबा! वारिस की वफादारी में खुदा कसम, कभी धब्बा नहीं लगेगा। आपने जैसा कहा है, वैसा ही होगा...कोई जान भी नहीं सकेगा कि यह आदमी रात को आपसे मिलने आया था।"

कुँवरानी ने साड़ी के छोर से अपनी आँखें पोंछीं, फिर कुँवर के कमरे की ओर चल पड़ी।

धीरे से दरवाजा खोलकर वह अन्दर आ गई। अब तक उसने अपने को सँभाल लिया था।

"कहाँ चली गई थी तुम? देखो, ललित सो भी गया।" कँवर बोला।

"आपने उसे डांट-डपटकर सुला दिया होगा।"

कहकर कुँवरानी ने कमरे की बत्ती बुझा दी और आकर कुँवर के पास पलँग पर लेट गई।

"क्या बात है कुँवरानी? बाहर से आते ही बहुत गम्भीर हो गई हो?" पूछा कुँवर ने।

"कोई बात नहीं, अब सो जाइये।"

"कोई बात तो जरूर है। तुम्हारी आवाज काँप रही है।"

"घबड़ाइये मत, जरा-सी कै हुई है।" कुँवरानी ने बहाना कर दिया।

"कै?" कुँवर बोला—"डॉक्टर दास को बुलाऊं?...मेरी चिन्ता करते-करते तुमने ही तो अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया कुँवरानी! मैं अभी वारिस को भेजकर दास बाबू को बुलाता हूँ।"

कुँवर उठने लगा तो कुँवरानी ने रोक दिया; बोली—"अब

तबीयत ठीक है। सोने से आराम मिल जायगा।"

"अच्छा!"

कुँवर तो आराम की नींद सो रहा, परन्तु कुँवरानी की वह रात जागते ही कटी। उस विचित्र आदमी के मिलते ही उसे जाने कौन-सी चिन्ता हो आई थी। सारी रात उसकी आँखों से आँसू बहते रहे, मगर उदासीन अचल को इसका क्या पता?

⊙

बैठकखाना खूब सजा है। दरवाजों और खिड़कियों पर सुन्दर पर्दे पड़े हुए हैं। एक कोच, चार कुर्सियाँ और एक बड़ी-सी मेज लगी है।

मेज पर बैठा हुआ अचल कुछ लिख रहा है। यही उसका ऑफ़िस-रूम है। आराम की सभी वस्तुएँ यहाँ हैं, परन्तु विलासिता की एक भी चीज मौजूद नहीं।

अचल अपने कार्य में पूर्णतया निमग्न है। अभी प्रातःकाल के आठ बजे हैं, परन्तु अचल को सबेरे ही स्नान-ध्यान करके अपने कार्य में लग जाने की आदत है।

कमरे की दो खिड़कियाँ खुली हैं, जिनसे प्रातःकाल की खुशनुमा धूप कमरे में आ रही है, हल्के हरे रङ्ग के पर्दों से छन-छनकर।

लम्बे-चौड़े पहलवान वारिस ने वहाँ प्रवेश किया, परन्तु अचल उसका आना न जान सका। वह सिर झुकाये लिखता रहा।

"हुजूर!" वारिस ने धीरे से पुकारा।

कुँवर सजग हो गया और सिर उठाकर बोला—"क्या है वारिस अली?"

"एक मेम साहिबा तशरीफ लाई हैं गरीबपरवर!...हुजूर से मिलना चाहती हैं, इसी वक्त।" बोला वारिस।

"मेम साहिबा?" कुँवर आश्चर्य से बोला—"कौन हैं?...कुछ पूछा नहीं तुमने?...मुझसे क्यों मिलना चाहती हैं?"

"खुदा कसम! उन्हें आज के पहले इस गरीब ने देखा तक नहीं था। कहती हैं हुजूर से यह पहली मुलाकात है। दूर से आई हैं...बेहद हसीन, मुँह से मर्द को औरत बना देती हैं...बोलती हैं—तुम्हारी बड़ी कुँवर अन्दर है?"

कुँवर कुछ सोचने लगा, फिर वारिस से बोला—"तुम उन्हें इज्जत के साथ अन्दर पहुँचाओ।"

"जो हुक्म!"

वारिस चला गया और कुछ ही देर के बाद एक एंग्लो-इण्डियन युवती के साथ वापस आया।

"यही हैं हुजूर!" कहकर वारिस चला गया।

कुँवर ने सिर उठाकर उस युवती को देखा तो चौंक पड़ा। वह उसे पहचानता तो न था परन्तु उसकी सुन्दरता ने उसे आश्चर्य-चकित कर दिया था। उसने पहले कभी ऐसा नशीला सौन्दर्य नहीं देखा था।

"तशरीफ रखिये।" उसने युवती से नम्र स्वर में कहा।

युवती मेज के सामने कुर्सी पर बैठती हुई बोली—"बड़ी कुँवर आपको ही बोलती?"

उसकी टूटी-फूटी भाषा कुँवर की समझ में जरा देर से आई; बोला वह—"जी हाँ! मैं ही बड़ा कुँवर हूँ। आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"I am orphan Sir!" युवती बोली—"हमारा नाम मिस एनी रदरफोर्ड है but you may call me only Anne. आपका तारीफ सुनकर बहुत दूर से हम आया है। हमको Service देगी आप?"

"कैसी नौकरी चाहती हैं आप?" कुँवर ने पूछा।

"हम आपका Private secretary होना चाहता है।"

"मुझे अफसोस है मिस एनी! आपके लायक हमारे पास कोई काम नहीं।" कुँवर बोला।

"But please try." एनी ने अपने सुन्दर चेहरे पर दुःख का भाव लाकर कहा और नशीली आँखों से कुँवर की ओर देखकर एक घातक कटाक्ष किया।

परन्तु सभी प्रकार के नशे से दूर रहने वाले कुँवर पर एनी की नशीली आँखों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह हिला तक नहीं; बोला—"I am very sorry miss."

"Never mind." एनी ने कहा—"हमको एक कप चाय

पिलायेगी आप ? Really too tired I am."

"कोई बात नहीं, मैं अभी चाय मँगाता हूँ···वारिस !" पुकारा कुँवर ने वारिस को।

"हुजूर !" कहता हुआ वारिस अन्दर आया।

एनी गौर से हट्टे-कट्टे वफादार नौकर की ओर देखने लगी, जिसकी बहादुरी की तारीफ वह अक्सर चंचल और जमुना से सुनती आई थी।

"चाय लाओ !" कुँवर ने आज्ञा दी।

वारिस चला गया। कुँवर फिर अपना काम करने लगा।

एनी गौर से देख रही थी।

तभी कमरे में चञ्चल ने प्रवेश किया। उसे देखकर एनी ने इस तरह मुँह फेर लिया जैसे वह उसे पहचानती ही नहीं।

"भैया, मुझे पाँच सौ रुपया चाहिये।" चञ्चल बोला—"एक नया सूट सिलाया है। अरे, आप कौन हैं ?" एनी की ओर अनजानी दृष्टि से देखकर अपना वाक्य समाप्त किया चंचल ने—"इन्हें तो पहले नहीं देखा था ?"

"आ चंचल ! आप हैं मिस एनी रदरफोर्ड। नौकरी की तलाश में आई हैं···और मिस एनी ! यह है मेरा छोटा भाई, कुँवर चंचल नारायण !" कुँवर ने कहा।

"ओह छोटी कुँवर ! आपसे मिलकर बहुत खुश हुआ।" एनी ने भी पहले-पहल मिलने का भाव प्रदर्शित किया।

"भैया !" चञ्चल ने कहा—"मुझे पाँच सौ दोगे तो ? नहीं तो कल दे देना। बहुत जरूरत है।"

"देखो चञ्चल ! रुपयों के लिए तुम माताजी से कहो।"

"वे बिगड़ पड़ती हैं भैया ! मैं उनसे नहीं कहता, तुमको अपने पास से देना पड़ेगा, नहीं तो मैं भाभी से माँग लूँ···बोलो दोगे न ?" चञ्चल ने बनावटी हठ किया।

"दे दूँगा भाई, मेरा सिर मत खा सबेरे-सबेरे।" कुँवर ने कुछ लिखते-लिखते कहा।

तभी चाय की ट्रे लिये हुए वारिस आ गया। एक गहरी नजर उसने एनी और चंचल पर डाली, फिर ट्रे मेज पर रखकर बाहर चला

गया चुपचाप ।

"भैया ! चाय तो तुम अधिक नहीं पीते ?"

"मिस एनी के लिए मँगवाई है ।"

"Oh no no, आपको भी चा पीनी पड़ेगी बड़ी कुँवर ! मैं अकेला चा नहीं पीता ।" एनी ने कहा ।

"मैं भी पी लूँगा ।" कुँवर बोला—"चञ्चल ! चाय तैयार करो ।"

चंचल ने चाय तीन प्यालों में ढाली ।

कुँवर सिर झुकाये कुछ लिख रहा था ।

एनी के हाथ में कोई पुड़िया थी ।

चञ्चल ने कुछ इशारा किया । एनी के हाथ की पुड़िया झटपट खुल गई और उसमें का सफेद पाउडर एक प्याले में जा पड़ा ।

अचल कुछ देख न सका ।

मगर बाहरी दरवाजे के पर्दे की ओट से झाँकती हुई दो तेज आँखों ने सारा मामला देख लिया और तब पर्दे के पीछे गायब हो गईं ।

"लो बड़ी कुँवर ! चा पियो ।" जहरीली चाय का प्याला कुँवर की ओर खिसकाती हुई बोली एनी ।

कुँवर ने कलम रख दी और प्याला लेकर अपने आगे रख लिया । धीरे से प्याला उठाकर उसने अपने होठों की ओर बढ़ाया ।

एनी और चञ्चल की आँखों में एक अजीब चमक दिखाई दी । दोनों का कलेजा धड़कने लगा, जोर-जोर से ।

"हुजूर !" तभी तेजी से वारिस अन्दर घुसा । उसके हाथ में शीशे का एक गिलास था, जिसमें दूध भरा हुआ था ।

वारिस को देखकर एनी और चंचल चौंक पड़े । शैतान कैसे बेवक्त आ पहुँचा !

कुँवर के होठों तक पहुँचा हुआ प्याला रुक गया ।

बोला कुँवर—"क्या है वारिस ?"

"हुजूर, कुँवरानी साहिबा ने फरमाया है कि कड़ी चाय पीने से हुजूर की सेहत पर खराब असर पड़ता है, इसलिये उसमें दूध ज्यादा मिलाकर पीयें । मैं दूध लेता आया हूँ सरकार ! प्याला इधर

कर दें, थोड़ा डाल दूं।"

"तुम लोग बराबर मेरे पीछे परेशान रहते हो।" कुंवर ने हँसकर कहा—"लो, डाल दो थोड़ा दूध।"

वारिस ने प्याला ले लिया और उसमें गिलास का दूध डालने लगा।

एनी और चंचल एकटक वारिस की ओर देख रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर इस शैतान नौकर का इरादा क्या है ?

"बस करूं हुजूर !···प्याला तो खुदा कसम, भर गया। तश्तरी में भी थोड़ा दूध डाल दिया है···बिल्कुल गर्म है सरकार !"

"ठीक है, लाओ !" कुँवर ने प्याला लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

वारिस ने लबालब भरा प्याला आगे किया।

तभी एकाएक उसका हाथ काँप गया और गर्म चाय का प्याला फर्श पर गिरकर कई टुकड़े हो गये। चाय इधर-उधर बह चली। कुछ बूंदें छोटे कुँवर के कपड़ों पर भी जा पड़ीं।

वारिस ने लपककर कुँवर का पैर पकड़ लिया ; बोला—"माफ फरमायें गरीबपरवर ! बड़ी गुस्ताखी हो गई।"

"बड़ा लापरवाह है तू वारिस ! जा दूसरी चाय ला।" कुँवर ने कहा।

मगर चञ्चल को तो बेहद क्रोध चढ़ आया था, क्योंकि इस मनहूस नौकर ने उनकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था।

वह गरजकर बोला—"बेहूदा कहीं का ! एटीकेट जरा भी नहीं जानता, बेवकूफ !"

"मैं क्या जानूं पेटीकोट हुजूर छोटे कुँवर साहब !" वारिस बोला—"हाथ बेतरह हिल गया सरकार !···मैं माफी चाहता हूँ। अभी दूसरी चाय लाया···गलती तो सभी से होती है हुजूर ! मैंने जान-बूझकर कोई गुस्ताखी नहीं की है।"

कहकर वारिस चला गया। एनी और चंचल आँखों में निराशा का भाव लिये बैठे रहे।

तब तक वारिस दूसरी ट्रे लिये आ पहुँचा।

इस बार वारिस ने खुद चाय बनाई और कुँवर को प्याला

...पने हाथों से दिया। सब लोग चाय पीने लगे। वारिस वहीं खड़ा रहा।

चाय पीकर एनी उठ खड़ी हुई और बोली—"अब हम जाता है बड़ी कुँवर! Thank you."

साहब-सलामत के बाद एनी चली गई।

चंचल भी थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर उठकर बोला—"भैया! शाम तक पाँच सौ दोगे न?...नहीं-नहीं से काम नहीं चलेगा, मैं कल लेकर ही छोड़ूँगा।"

चंचल गया। कुँवर फिर लिखने लगा।

उसे क्या पता कि आज उसके वफादार नौकर की बदौलत ही उसकी जान बच पाई, वर्ना चाय के प्याले में घुले हुए जहर को पीकर अब तक तो वह सदा के लिए सो गया होता!

तीन घण्टे बाद वारिस ने पुनः प्रवेश किया; बोला—"गाँव का एक आदमी हुजूर की खिदमत में हाजिर है।"

"किस गाँव का?" कलम मेज पर रखते हुए कुँवर ने पूछा।

"रमजानपुर का।" वारिस ने कहा।

"भेज दो!"

मटमैले कपड़े पहने हुए एक ग्रामीण ने कुँवर के सामने पहुँचकर अदब के साथ अभिवादन किया।

"क्या है भाई? रमजानपुर में सब कुशल तो है?" पूछा कुँवर ने।

"सब आपकी दया है अन्नदाता! गरीब प्रजा उजड़ी जा रही है। दिन-दहाड़े लोगों की जानें जा रही हैं।" बोला ग्रामीण।

"बात क्या है?"

"रमजानपुर के पास का जंगल बहुत घना है मालिक! आज-कल एक चीते ने बड़ा उत्पात मचा रखा है। बारह आदमियों को वह अब तक फाड़ चुका है अन्नदाता! हम तो हुजूर की प्रजा हैं। फरियाद कर दिया, मालिक का जो हुक्म हो सो करें। दिन को भी खेत-क्यारी करना मुहाल हो रहा है सरकार!...हम लोग कैसे जीयेंगे! आप राजा हैं, आप ही का भरोसा हम गरीबों को है। आप खयाल नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

"ऐसा उत्पात उधर कभी नहीं होता था !" बोला कुँवर—"उस जङ्गल में भेड़िये और अजगर तो बहुत हैं मगर दरिन्दों की बात तो आज ही सुनी ।"

"पहले ही पहल वह चीता कहीं से भटककर आ गया है अन्न-दाता ! अब तक तो आपकी किरपा से हम लोग बड़े सुखी थे, किसी बात का गम न था ; अब तो जान के लाले पड़ गये हैं माई-बाप !"

"तुम जाओ···मैं कल तुम्हारे गाँव आऊँगा । हाँका करने के लिए कुछ आदमी तैयार रखना ।"

"जुग-जुग जीओ माई-बाप ! बड़े सरकार से भी दयालु हो छोटे राजा !"

आशीर्वाद देता हुआ ग्रामीण चला गया ।

"वारिस !" कुँवर ने पुकारा ।

"आया हुजूर !"

वारिस आ खड़ा हुआ ।

"इसे साफ करा दो···फर्श पर चाय गिर गई है, चीटियाँ लग जायँगी ।" कुँवर ने कहा ।

"खुदा कसम, इन चीटियों के मारे तो जान परेशान हो जाती है हुजूर ! अल्लाह ने इन्हें पैदा भी किया तो इतना छोटा कि आँख से दीखती भी नहीं । मैं अभी फर्श साफ करा देता हूँ सरकार !··· तू-तू···आ-आ, तू-तू ।"

"तू-तू क्या कर रहा है ?"

"कुत्ता बुला रहा हूँ सरकार !···अल्लाह कसम, ये कुत्ते अपनी जीभ से जैसी सफाई कर देते हैं, वैसी गुलशन की झाड़ू भी क्या करेगी ?···तू-तू···आ-आ···लीजिये आ गया एक ।"

"तू तो बेकार के काम किया करता है वारिस ! एक कपड़ा लेकर पोंछ दिया होता फर्श !" कुँवर ने कहा ।

"इसे ही चाट लेने दीजिये हुजूर ! गरीब की जबान को थोड़ा स्वाद ही मिल जायगा । इन कुत्तों को भी हम लोगों का ही तो सहारा है ! आ बेटा ! ले चाट चपाचप···खुदा कसम, बड़ी मीठी चाय गिरी है फर्श पर ।"

कुत्ता आगे बढ़कर फर्श पर गिरी हुई चाय चाटने लगा । पूरी

सफाई कर दी उसने। फिर वारिस उसका कान पकड़कर बाहर घसीट ले गया।

कुँवर सोफे पर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगा।

आधे घण्टे के बाद वारिस पुनः आया—"हुजूर !"

"क्या है वारिस ?" कुँवर ने पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ही पूछा।

"यह मर गया हुजूर !"

"कौन ?" कुँवर ने सिर उठाकर देखा।

वारिस के हाथों पर वही कुत्ता था, जिसने थोड़ी देर पहले जमीन पर गिरी हुई चाय चाटी थी।

"कैसे मरा यह ?" कुँवर ने पूछा आश्चर्य से।

"वही चाय चाटकर हुजूर ! खुदा कसम, आजकल लिपटन की चाय भी जहरीली होने लगी है। हुजूर भी खाने-पीने में जरा होशियार रहा करें।"

"क्या बकता है वारिस ! जा, कुत्ते को फेंककर अपना काम देख !"

कहकर कुँवर पुनः अपनी पुस्तक पढ़ने लगा।

वारिस थोड़ी देर तक मरे हुए कुत्ते को अपने हाथों पर लिये खड़ा रहा चुपचाप, इस आशा में कि कुँवर साहब सिर उठायें तो वह कुछ अर्ज करे, मगर कुँवर तो पुस्तक पढ़ने में इतना तल्लीन हो गया था कि उसने यह भी नहीं देखा कि वारिस गया या नहीं।

बेचारा वफादार वारिस अपने मालिक को शिष्टतापूर्वक एवं सप्रमाण यह बताने आया था कि उसके चाय के प्याले में जहर था, मगर लाचार होकर उसे वापस लौट जाना पड़ा।

⊙

होटल के अपने कमरे में कोच पर चंचल और एनी बैठे हैं। सामने की कुर्सी पर जमुना भी उपस्थित है। छोटी-सी मेज पर सोडा और जिन की खाली बोतलें और गिलास पड़े हैं, जिनसे प्रकट होता है कि कुछ ही देर पहले तीनों ने मदिरा से अपनी प्यास बुझाई है।

एनी आवश्यकता से अधिक गम्भीर है मगर चंचल और जमुना में बातें हो रही हैं।

जलती सिगरेट का धुआँ खींचकर बोला चंचल—"काम बड़ी सफाई से हुआ था मगर कामयाबी न मिल सकी। एनी ने भैया के सामने ही जिस चालाकी से उनके प्याले में जहर मिलाया कि मैं तो आश्चर्यचकित हो उठा। मगर बेहूदे वारिस ने पहुँचकर सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। शैतान ने दूध डालते-डालते हाथ से प्याला ही गिरा दिया।"

"वह बड़ा ही चालाक है कुँवर साहब !···उसने छिपकर सब-कुछ देख लिया होगा। बातैसी है कि···" जमुना बोला।

"नहीं जी, उसने देखा नहीं था। जिस समय एनी प्याले में जहर डाल रही थी, मैं चौकन्ना होकर चारों ओर देख रहा था। इत्तफाक से प्याला उसके हाथों से छूट गिरा। कुछ देख लिया होता तो भैया से जरूर बता देता वह।"

"अब क्या होगा ?·· क्या इरादा छोड़ ही दिया जाय ?"

"इतनी दूर आगे बढ़कर अब यह नहीं हो सकता। हम कोशिश करते चलेंगे। देखें कबतक सफलता नहीं मिलती ?"

"अब क्या करने का इरादा है ?" जमुना ने पूछा।

"इरादे को मैंने कार्यरूप में प्ररिणात भी कर लिया है। जहर का मामला नाकामयाब होते ही मैंने दूसरा रास्ता सोच लिया।"

"तो मेरी मदद की भी जरूरत पड़ेगी शायद ?"

"जरूर !···मैंने एक गरीब आदमी को अपनी तरफ मिला, सिखा-पढ़ाकर दोपहर को भैया के पास भेज दिया था। उसने जाकर कहा कि रमजानपुर में एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है, सो अचल भैया कल रमजानपुर जायेंगे। समझे कुछ मेरी चाल ?"

"बातैसी है कि मैं सब-कुछ समझ गया छोटे कुँवर ! रमजानपुर के पास का जङ्गल बहुत घना है। बड़े कुँवर को शिकार के बहाने जङ्गल में ले-जाकर अकेला छोड़ देंगे आप···फिर एक ही गोली सारा काम कर देगी। है न ?"

"बिलकुल !···मैं भी भैया के साथ जाने का हठ करूँगा। तुम मेरी पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे हमारा पीछा करोगे। जङ्गल में मौका देखते ही तुम अपना निशाना साधना, मगर जरा होशियार रहना··· दूर से कहीं तुम मेरी ही खोपड़ी मत उड़ा देना !"

"मुझसे ऐसी गलती नहीं हो सकती छोटे कुँवर ! ···यद्यपि बड़े कुँवर का कद भी आप ही जैसा है और दूर से देखकर भ्रम का होना सम्भव है मगर जमुना की आँखें मीलों दूर की चीजें देख लेती हैं।"

"फिर भी खूब होशियारी से काम करना। बाहर जाते समय हम दोनों भाई एक-सी पोशाक पहनते हैं, इसे न भूलना ! पहले निश्चय करके तब गोली चलाना।"

"ऐसा ही होगा कुँवर साहब ! जमुना की गोली छोटे कुँवर को कभी नहीं लग सकती, इसका आप विश्वास रखें।"

"तो अब चलना चाहिये। आठ बजे रात भैया माँ से मिलने आते हैं रोज। आज वे उनसे रमजानपुर जाने की आज्ञा लेंगे ; वहाँ मेरा भी उपस्थित रहना जरूरी है। पौने आठ बज रहे हैं। अरे ! मिस एनी ! सो रही हो क्या तुम ?"

"बातैसी है छोटे कुँवर, मिस एनी को नशा कुछ तेज हो आया है। मुझे इन्हें इनके घर तक छोड़ने जाना पड़ेगा शायद। एनी ! ··· ओ मिस एनी !"

"Don't disturb me rascal !" एनी आँखें बन्द किये हुए ही बोली।

चञ्चल उठता हुआ बोला—"तुम इन्हें किसी ताँगे पर पहुँचा देना, मैं कार पर जाता हूँ।"

होटल से बाहर आकर चञ्चल अपनी कार पर राजमहल को रवाना हो गया। रास्ते-भर वह अनेक बन्दिशें बाँधता रहा।

रानी साहिबा चंचल को जितना डाँटती थीं, उससे बढ़कर उसे प्यार भी करती थीं, इसे चंचल जानता था। तभी उस दिन बिगड़ा जाकर भी वह अपनी माँ से नाखुश नहीं हुआ था।

वह यह भी जानता था कि रानी साहिबा अचल को भी अपना ही बेटा समझती हैं, तभी तो वह चञ्चल का कुछ खयाल न करके अचल को रियासत सौंपना चाहती हैं।

अपनी माँ से मतैक्य न होने पर भी चञ्चल को रानी साहिबा पर क्रोध न था। उसका सारा क्रोध अचल पर था, जो उसका बड़ा भाई बनकर पैदा हुआ था और सौतेला होने पर भी जिसके अधिकार में सारी रियासत चली जानेवाली थी।

चञ्चल दृढ़-प्रतिज्ञ था। वह राजा बनना चाहता था। उसके रास्ते में जितनी बाधायें थीं, उन्हें वह शीघ्र-से-शीघ्र दूर कर देना चाहता था। अचल, कुँवरानी, ललित और अवसर आने पर यदि रानी साहिबा की सख्ती भी बाधा बनी तो उन्हें भी निर्दयतापूर्वक दूर करने में चंचल को संकोच न था; चाहे जिस तरह हो, वह सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार करना चाहता था।

राजमहल आ गया।

रानी साहिबा के महल के सामने कार रुकी। चञ्चल उतरकर अपनी माँ के कमरे की ओर चला। हाथ की घड़ी पर नजर डाली तो आठ बजकर पाँच मिनट बीत चुके थे।

वक्त का पाबन्द अचल ठीक आठ बजे रानी साहिबा से मिलने आ गया था। इस समय वह उनके सामने कुर्सी पर बैठा बातें कर रहा था।

रानी साहिबा पलँग पर तकिये के सहारे बैठी थीं।

चञ्चल दरवाजे के बाहर रुककर अन्दर की बातें सुनने लगा।

"माताजी! आपका कहना ठीक है," अचल कह रहा था—"मगर हमें अपनी जान बचाकर प्रजा का रोना नहीं सुनना चाहिये। गाँव का जो आदमी यह समाचार लेकर आया था, उसकी बातें आप सुनतीं तो रो पड़तीं। चीते के डर से लोगों का आना-जाना बन्द हो गया है। पता नहीं कब किसपर वह भयानक पशु हमला कर दे!"

"ऐसा तो होता ही रहता है बेटा! जंगली गाँव है, जानवरों का डर तो बना ही रहेगा। इस बात की फिक्र हम लोग कब तक करते रहेंगे?···राजा साहब शिकारी थे। वे होते तो मुझे जरा भी डर न लगता, मगर तू तो अभी नादान है अचल! चीते का मुँह भी कभी देखा नहीं होगा···मैं कैसे तुझे जाने की आज्ञा दे दूँ?"

"आज्ञा तो देनी ही पड़ेगी माताजी!" बोला अचल—"मैं उस आदमी से कल आने का वादा कर चुका हूँ।"

"तू अपने मन का वादा क्यों करता है रे अचल? मैं क्या मर गई थी? उसे हमारे पास क्यों नहीं भेजा?" रानी साहिबा ने मीठी झिड़की दी।

"आपके पास भेजता तो आप मेरी जान के खौफ से उसे टका-

सा जवाब दे देतीं। गाँववाले बहुत कष्ट में हैं माताजी ! विश्वास कीजिये, गाँव हमारी रियासत में है। हम वहाँ की मालगुजारी वसूल करते हैं तो वहाँ के लोगों का दुःख-दर्द कौन सुनेगा ? आप कुछ सोचिये तो ! पिताजी होते तो क्या चुपचाप उनका कष्ट देखते ?"

"उनकी बात क्या कहता है रे अचल ?" रानी साहिबा बोलीं—"उनकी आँखों में वरदान भरा था। जिसकी ओर देख लेते थे, उसका सारा दुःख दूर हो जाता था। तुम लोग तो अभी अबोध हो। एक वह चञ्चल का बच्चा है, कहीं सिनेमा में बैठा हुआ नाच-गाना सुन रहा होगा। उसे तो जैसे किसी की कोई फिक्र ही नहीं। राजा का बेटा बनते हैं।"

"राजा का बेटा आ गया माँ ! चञ्चल का बच्चा···" भीतर प्रवेश करते हुए कहा चञ्चल ने।

"देखा न अचल ? इसे छिपकर बातें सुनने की आदत पड़ गई है। न जाने कब से बिल्ली की तरह दुबका हुआ दरवाजे के बाहर खड़ा था !"

"बिल्ली की तरह नहीं माँ, मैं तो छिपकली जैसा दीवार से चिपका हुआ था।" कहता हुआ चञ्चल रानी साहिबा के पास आ बैठा—"मैंने सब सुन लिया है। मैं भी अचल भैया के साथ जाऊँगा। अकेले अचल भैया को मत जाने दो माँ !"

'तुम दोनों मेरा दिमाग खराब कर दोगे। जाओ, जो मन में आये करो।"

"लो अचल भैया ! माँ ने आज्ञा दे दी। अब जाकर चटपट तैयारी कर डालो। सबेरे-सबेरे ही चल देंगे हम लोग।" चञ्चल बोला।

"आप क्या कहती हैं माताजी ! तो कल जाऊँ मैं ? चञ्चल की बातों का खयाल मत करें। आप जो कहेंगी, वही मैं करूँगा। हमारे न जाने से प्रजा दिन-पर-दिन दुःखी होती जायगी। आपकी आज्ञा पर ही रमजानपुर की जनता का सुख-दुःख निर्भर है।"

"प्रजा के सुख-दुःख का खयाल मुझे है अचल !···रानी बनकर सोचती हूँ तो प्रजा का दुःख आँखों के सामने नाच उठता है ; परन्तु

माँ का हृदय बेटे को चीते के आगे जा पड़ने की आज्ञा देना नहीं चाहता। तुम लोग जाना चाहो तो जा सकते हो, परन्तु अपने को सुरक्षित लौटा लाने का वचन दो मुझे। मैं प्रजा के लिए अपने बेटों को खोना नहीं चाहती।" रानी साहिबा ने कहा।

"मैं तो अपने को लौटा लाऊँगा माँ, एकदम सुरक्षित।" चंचल बोला—"मगर अचल भैया को समझा दो तुम। कहीं जंगल की शोभा देखते-देखते ये वहीं न रह जायँ! प्रकृति की छटा इन्हें बहुत प्यारी लगती है माँ, जानती तो हो।"

"तो हम लोग कल सबेरे ही प्रस्थान करेंगे, ठीक है न माँ?" अचल ने पूछा।

"तू बार-बार मुझसे क्या कबूल करवाता है रे अचल?···चले जाना कल और परसों ही लौट आना।"

इसके बाद अचल उठ खड़ा हुआ और रानी साहिबा का पैर छू-कर कमरे से बाहर हो गया।

चंचल भी अपने महल को चला गया।

⊙

'तुमको शक हो गया है कुँवरानी!" अचल ने पलँग पर लेटे-लेटे ही कहा।

'शक नहीं हुआ है मुझे··बात बिल्कुल सत्य है।" अचल के पास बैठी हुई कुँवरानी बोली।

"कैसे मान लूँ मैं तुम्हारी बात कविता!···चंचल लाख बुरा है मगर अपने भाई की जान का भूखा वह नहीं हो सकता। इन्सान अपने भाई को जहर देने की कोशिश करे, यह बात मैं सोच भी नहीं पाता कभी···और तुम कहती हो कि सुबह जो चाय पी रहा था, उसमें जहर था।"

"मैं ठीक कह रही हूँ, मगर आप मानते नहीं। वारिस ने प्याला तोड़ा न होता तो गजब हो गया होता।"

"मगर चाय का प्याला तो वारिस से अनजाने में ही टूट गया था और उसके लिए उसने माफी भी बहुत माँगी थी।"

"माफी तो सिर्फ दिखाने के लिए माँगी थी उसने। वास्तव में जान-बूझकर ही उसने प्याला नीचे गिराया था। उसने उस लड़की

को आपके प्याले में कुछ डालते हुए अपनी आँखों से देखा था।"

"और मैंने क्यों नहीं देखा ?"

"आप सिर झुकाए लिख रहे थे। दोस्त-दुश्मन को पहचानने की कोशिश किया कीजिये कुँवर साहब !"

"तुम कहती हो, उस लड़की ने जहर मिलाया···मगर वह तो पहले-पहल आई थी मेरे पास। उसकी मुझसे क्या दुश्मनी हो सकती है ?"

"आपके पास पहली बार आई रही होगी, मगर चंचल की वह गहरी दोस्त है। होटल में रोज दोनों मिलते हैं।" कुँवरानी ने कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"वारिस ने पता लगाया है।"

"तुम और वारिस, दोनों का दिमाग खराब होता जा रहा है।" अचल बोला—'कभी तो कोई मुझपर हमला करता है, कभी कोई मुझे जहर देता है, तुम दोनों हमेशा यही सोचा करते हो ; मगर तुम्हारी इन शिकायतों का कोई सबूत मिल नहीं पाता। बिना किसी पक्के सबूत के मैं तुम लोगों की बात पर कैसे विश्वास कर लूँ कविता ?"

"आप सबूत देखकर भी तो समझ नहीं पाते ?"

"मुझे सबूत किसने दिया ?"

"आज सबेरे वारिस ने एक कुत्ता नहीं दिखाया था आपको ?"

"कैसा कुत्ता ?"

"जो फर्श पर गिरी हुई चाय को चाटने के बाद ही मर गया था ?"

"ओह ! दिखाया तो था।"

"और आपने देखकर भी कुछ नहीं समझा ; उल्टे बेचारे वारिस को डाँट दिया।"

"मगर कविता ! मैं कैसे मान लूँ कि वह कुत्ता चाय के ही जहर से मरा ? पहले से ही उसे कोई बीमारी रही होगी।"

"मैं कैसे समझाऊँ आपको ?" कुँवरानी परेशान होकर बोली—"दुनिया में सीधे आदमियों की गुजर नहीं और आप तो बहुत ही असावधान हैं। कभी आपपर कोई आफत आ गई तो मैं

कहाँ जाऊँगी ?"

"बार-बार आफत का नाम ले रही हो तुम," बोला कुँवर—"मगर वारिस के अतिरिक्त और भी कोई गवाह है तुम्हारे पास ?"

"वारिस-जैसे स्वामिभक्त नौकर की हर बात विश्वसनीय है। कोई कारण नहीं कि आप उसकी गवाही की उपेक्षा करें। बेचारा वारिस, जो अपने मालिक के पीछे पागल है, जो उसके दर्द से परेशान है, उसपर अविश्वास करना मनुष्यता को धोखा देना है, उसकी नमकहलाली का उपहास करना है।"

"वारिस की तारीफ रहने दो कुँवरानी ! मैं जानता हूँ कि वारिस तुम्हारे खिलाफ कभी जा ही नहीं सकता।" कहते-कहते अचल का स्वर गम्भीर हो गया।

उसकी गम्भीरता कुँवरानी से छिपी न रही। उसके आखिरी वाक्य में जो अप्रकट व्यंग्य छिपा था, वह भी कुछ-कुछ समझ गई वह ; बोली—"वारिस केवल मेरा ही नौकर नहीं। मैं तो कुछ ही सालों से यहाँ आई हूँ। वह तो आपके यहाँ बचपन से है। उससे जितना आपने पढ़ा होगा, उतना मैंने नहीं।"

"मगर तुमने तो उसे अपने वश में कर लिया है।"

कुँवरानी चौंक पड़ी—"क्या कहते हैं आप ?"

कुँवर गम्भीर स्वर में बोला—"ठीक ही तो कह रहा हूं ! तभी जब रात में तुमसे कोई मिलने आता है तो वारिस चुपके-चुपके तुम्हें बुला ले-जाता है···और तुम भी बाहर जाने लगती हो तो मेरे कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द करती जाती हो···मगर वह खिड़की बन्द करना शायद तुम भूल ही जाती हो।"

कुँवरानी का चेहरा थोड़ी देर के लिए पीला पड़ गया, मगर अपने को सम्हालकर वह बोली—"तो आप सब-कुछ जान चुके हैं ?"

"सब-कुछ तो नहीं।" कुँवर ने कहा—"उस खिड़की से निकलकर मैंने केवल यही देखा कि तुम किसी आदमी के साथ बैठकखाने में कुछ देर तक अन्धकार में रही और वारिस बाहर खड़ा पहरा देता रहा···सुन नहीं सका मैं कुछ। मगर इतना देखना क्या काफी नहीं था कुँवरानी ? कब की दोस्ती है उससे तुम्हारी ?"

"आप कैसी बात कर रहे हैं आज ?"

"केवल अपनी शंका का समाधान करना चाहता हूँ मैं। तुम्हारा पति हूँ न, इतना अधिकार तो मुझे है ही। बताना न चाहो तो मेरी ओर से कोई जबर्दस्ती नहीं···तुम घबरा उठी हो बहुत ?"

"आपने यह बात ऐसे ढंग से उपस्थित की है कि मैं परेशान हो उठी हूँ। मैं तो स्वयं ही इसे आपको बताना चाहती थी।"

"अच्छा ! इतना साहस है तुममें ?" बनावटी आश्चर्य के साथ अचल ने कहा—"अपने गुप्त प्रेम की बात अपने पति के सामने साहसपूर्वक प्रकट करने की यह घटना शायद नारी-जाति के इतिहास में पहली ही है। तुम कहो, मैं सुनूंगा।"

"आपको शक हो गया है।"

"आँखों से देखने पर विश्वास होना है कविता ! शक नहीं।"

"आपको कोई सन्देह था तो रात में ही आपने मुझसे क्यों नहीं पूछा ? आपकी इस खामोशी का मुझे बहुत दुःख है।"

"दुःख तो मुझे बहुत हुआ, अपनी पत्नी को अँधेरे कमरे में एक अनजाने पुरुष के साथ काफी देर तक रहते देखकर, मगर मैं खामोश रहकर इस बात का पता लगाना चाहता था। इस समय अनायास ही मेरे मुँह से वह बात निकल आई·· क्षमा करना।"

"वह आदमी अनजाना नहीं था।" कुँवरानी ने कहा।

"हाँ, तुम तो उसे बहुत पहले से जानती रही होगी, तभी तो वह तुमसे मिलने आया था, सो भी रात को छिपकर।"

"मैं जानती ही हूँ और उसे आप भी कम नहीं जानते। उम्र भी उसकी कुछ कम नहीं, मेरे पिता के बराबर है।"

"कौन था वह ?" शान्त स्वर में पूछा कुँवर ने।

"डॉक्टर।"

"कौन डॉक्टर ?"

"दास बाबू।"

कुँवर और भी गम्भीर बन गया ; पूछा—"वे इतनी रात को छिपकर क्यों आए थे ? और तुमसे ही मिलकर क्यों चले गये ?"

"उन्हें अपनी जान का खौफ था···और मुझसे ही केवल इसी-

लिये मिले कि आप उनकी बातों का विश्वास न करते ।"

"किन बातों का ?"

"शाम को चंचल, जमुना और वह लड़की उनके यहाँ गये थे और उन्हें डरा-धमकाकर एक पुड़िया जहर ले आये थे। दास बाबू मुझे सावधान करने आये थे, उसी के फलस्वरूप आज सुबह वारिस ने आपकी जान बचाई ।"

"उलझन बढ़ती जा रही है ।" हैरान स्वर में कहा अचल ने— "खैर, मैं वापस आकर डॉक्टर से मिलूँगा ।"

"कहाँ से वापस आकर ? क्या आप कहीं जा रहे हैं ?"

"हाँ ! मुझे कल सबेरे ही रमजानपुर जाना है । वहाँ एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है। माताजी की आज्ञा मैं ले चुका हूँ ।"

"मैं भी साथ चलूँ ?"

"नारी का साथ सेज पर ही अच्छा लगता है कुँवरानी !" इस बार अचल जरा हँसकर बोला—"लड़ाई के मैदान में तो मर्दों का कलेजा काम करता है ।"

"तो वारिस को अपने साथ ले जाइये, वह तो मर्द है न !"

"चञ्चल तो मेरे साथ रहेगा ही ।"

"चञ्चल ?" कुँवरानी पुनः चौंक पड़ी—"वह किस काम से जा रहा है ?"

"मेरा साथ देने ।"

"साथ देने के लिए क्या कोई दूसरा आदमी नहीं सकता ?"

"मिल तो सकता है मगर भाई का साथ अधिक विश्वसनीय होता है ।"

"आपको अब भी मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ ?" कुँवरानी दुःखित स्वर में बोली ।

"कल मुझे जाना जरूरी है, नहीं तो रुककर तुम्हारी बातों की सत्यता का प्रमाण खोजता । अब लौटकर ही छान-बीन करूँगा । चंचल का मेरे साथ जाना सुनकर अगर तुम्हें मेरी जान का डर हो आया हो तो मैं तुमको वचन देता हूँ कि पूर्ण सावधान रहूँगा ।"

इसके बाद कुँवरानी कुछ नहीं बोली । ललित को एक ओर

खिसकाकर वह चुपचाप पलँग पर लेट गई।

वह बहुत दुःखी थी इस समय। विवाह के पश्चात् आज पहले-पहल ही अचल को उसपर शंका हुई थी।

शंका भी हुई तो गुप्त-प्रेम की!

बेचारी कुँवरानी अचल को कैसे विश्वास दिलाये?

रात में जब डॉक्टर दास उससे छिपकर मिलने आये और उसने उनसे अचल को जहर देकर मार डालने के षड्यन्त्र की बात सुनी तो वह अपने पति की विपत्ति का खयाल कर रोने लगी थी। वृद्ध डॉक्टर ने जब बहुत समझाया, तब जाकर कहीं रोना बन्द हुआ।

मगर अचल को तो इन बातों पर विश्वास ही नहीं है। उसे तो कुँवरानी पर शंका है। और पति की शंका पत्नी के लिए कितनी घातक हो सकती है, इसे कुँवरानी जानती है!

⊙

रमजानपुर रामगढ़ रियासत के अन्तर्गत एक छोटा-सा गाँव था जो एक भयानक जंगल के किनारे बसा हुआ था। गाँव के निवासी कृषक थे, जो आस-पास की जमीन जोत-बोकर अपनी जीविका चलाते थे। रमजानपुर के आस-पास भी कई गाँव थे।

रामगढ़ के स्वर्गीय राजा साहब अच्छे शिकारी थे। वे अक्सर रमजानपुर शिकार खेलने के लिए आया करते थे।

रमजानपुर में उन्होंने एक छोटा-सा बँगला भी बनवा लिया था, जहाँ वे शिकार के लिए आकर ठहरा करते थे।

राजा साहब के मरने के पश्चात् अब तक वह बँगला उजाड़ पड़ा हुआ था।

परन्तु आज उसकी सफाई हो गई है। बड़ी चहल-पहल दिखाई पड़ रही है वहाँ।

अचल और चंचल कुर्सियों पर शिकारी पोशाक पहने बैठे हैं। दोनों के बदन पर एक ही रंग की पोशाकें हैं। बगल में दो बन्दूकें भी रखी हैं। सामने ही दस-बारह किसान खड़े हैं, हाथ जोड़े हुए, अदब के साथ।

"तो तुम लोगों में से कोई भी हमें इत्तला करने नहीं गया?" अचल ने पूछा।

"नहीं सरकार !" एक किसान बोला—"हमें कोई तकलीफ होती, तब तो हुजूर को खबर देते ? यहाँ तो सब राजी-खुशी है अन्नदाता !"

"और वह चीते के उत्पात की खबर ?" चञ्चल ने पूछा।

"एकदम झूठ है माई-बाप ! यहाँ से तो कोई खबर लेकर गया नहीं, किसी बदमाश ने बेकार हुजूर लोगों को परेशान किया।" बोला किसान।

"अजीब बात है !" अचल आश्चर्य से बोला—"उस आदमी को हमें यहाँ व्यर्थ बुलाने से क्या मिला ?···तुम लोग गाँव के सभी आदमियों को यहाँ बुलाओ। मैं पहचानूँगा कि कौन यह झूठी खबर लेकर मेरे पास गया था।"

"जो हुक्म अन्नदाता !"

थोड़ी ही देर के बाद गाँव के सभी आदमी बारी-बारी से अचल के सामने आने लगे।

सैकड़ों आदमियों को देखकर भी अचल ने उस आदमी को नहीं देखा, जिसने यह झूठी खबर दी थी।

"अब कोई नहीं बचा है सरकार !" एक किसान ने कहा।

"सब आ गये मेरे सामने ?"

"हाँ, हुजूर !"

अचल परेशान होकर कुछ सोचने लगा।

चञ्चल बोला—"जाने दो भैया ! किसी मसखरे का काम था यह।"

"मगर अजीब था वह आदमी चञ्चल ! इस तरह से गिड़गिड़ाकर बोल रहा था, जैसे सचमुच ही गाँव पर बहुत बड़ी आफत आ गई है। उसके चेहरे से जरा भी बनावटीपन नहीं टपक रहा था। खैर, आज रात तो मैं यहीं रहूँगा। शाम को एक बार फिर सब आदमियों को देखूँगा···उस आदमी का चेहरा अब भी मुझे याद है।"

"अब आराम करें भैया !" बोला चंचल।

"अब आराम तो नहीं करना चाहता चञ्चल ! सोचता हूँ जङ्गल में चलकर कुछ हिरन या सूअर आदि का शिकार ही करूँ···चलोगे तुम ? बेकार यहाँ बैठकर क्या किया जायगा ?"

"चलिये, शिकार के लिए तो मैं साथ आया ही हूँ।" चंचल अपने दिल की खुशी छिपाकर बोला।

वह तो स्वयं ही प्रस्ताव रखने वाला था परन्तु अचल पहले ही प्रस्तुत हो गया। चञ्चल का रास्ता अपने-आप साफ होने लगा।

"तो कब चलोगे भैया?"

"बस, बन्दूक उठाओ और पैदल ही चल दो। बेचारे गाँववालों को छुट्टी दे दो और शोफर से कहो कि कार उधर लाकर धो डाले और सफाई कर ले···रास्ते की धूल से एकदम भर गई है।"

चञ्चल बाहर चला गया और थोड़ी ही देर बाद लौटकर बोला—"चलो भैया, सब ठीक कर दिया है।"

"कारिन्दा से कह दो चंचल, कि हम लोग शाम को लौटकर खुद ही शिकार पकायेंगे, सामान सब तैयार रखे।"

"मैंने कह दिया है भैया! अब चलो। दोपहर होने को आई, अब देर करना ठीक नहीं।"

अचल उठ खड़ा हुआ; बन्दूक उठाकर बाहर निकला और धूलभरी पगडण्डी से पैदल ही जगल की ओर रवाना हुआ।

चंचल अपनी बन्दूक लिये उसके पीछे-पीछे चला।

इस समय उसके हृदय में अनेक प्रकार की भावनायें उदय हो रही थीं। आज अचल को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था उसने। सुनसान जंगल के बीच जो अमानुषिक कार्य होगा, उसकी गवाही कोई भी नहीं दे सकेगा। चंचल का काम भी बन जायेगा और वह बेदाग निर्दोष भी प्रमाणित होगा।

"मैं ठीक पीछे ही हूँ भैया! बढ़े चलो, सूरज सिर पर आ गया है।"

अचल तेज चलने लगा।

कुंवरानी से अपने सावधान रहने का वह जो वचन दे आया था उसे भूल गया। चंचल पर उसे तनिक भी शंका नहीं थी। भोला-भाला अचल तेज पैरों से जङ्गल में चला जा रहा था।

काफी देर तक चलते रहे दोनों।

गाँव चार मील पीछे छूट चुका था। इधर का जंगल बहुत घना था। जानवरों के पैरों द्वारा बनी हुई लीक पर दोनों चले जा रहे

थे। आस-पास दीर्घाकार वृक्ष और घनी झाड़ियाँ थीं।

अब तक उनकी दृष्टि में कोई जानवर न पड़ा था, जिसका वे शिकार करते।

चलते-चलते चञ्चल की दृष्टि कुछ दूर की झाड़ी के पीछे जा पड़ी।

"तुम चलो, मैं उस झाड़ी से थोड़े-से बेर चुन लूँ···देखकर तबीयत ललच गई है···ज्यादा नहीं, दस-बीस तोड़ूँगा सिर्फ।"

"तोड़ लो।" कहकर अचल ने पैरों की गति धीमी कर दी और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

चञ्चल उस झाड़ी की ओर आगे बढ़ा, जिसमें पके हुए लाल-लाल बेर दिखाई पड़ रहे थे।

वह बेर तोड़ने लगा। थोड़ी देर बाद वह धीरे से बोला—"जमुना!"

झाड़ी के पीछे से एक हल्की-सी आवाज—"मैं तैयार हूँ छोटे कुँवर! बातैसी है कि पिस्तौल मेरे हाथों में मुस्तैद पड़ी है। गोली चलाऊँ क्या? बड़े कुँवर यहाँ से साफ दीख रहे हैं।"

"अभी नहीं···और घने जङ्गल में पहुँचकर···तब पिस्तौल उठाना।"

"मगर छोटे कुँवर! आप दोनों साथ रहेंगे तो मैं दूर से पहचान न सकूँगा···एक-सा ही कपड़ा पहन रखा है। मैं बहुत दूर से आपके पीछे रहा हूँ, मगर जब-जब आप दोनों को देखा है, तब-तब बातैसी है कि मैं संशय में पड़ गया हूँ।"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था।" चंचल बोला।

"मगर मुझे विश्वास नहीं था कि मेरी आँखें इतनी बेकाम हो जायँगी।"

"नजदीक से निशाना लगाने पर भैया तुम्हें देख सकते हैं। खैर, मैं आगे चलकर किसी चट्टान पर सुस्ताने के लिए भैया के साथ बैठ जाऊँगा। थोड़ी देर के बाद किसी बहाने से उठकर मैं कुछ दूर चला जाऊँगा, तब तुम उस चट्टान पर बैठे हुए आदमी को अपना लक्ष्य बनाना···समझ गये?"

"ठीक है।" झाड़ी के पीछे से वही धीमी आवाज सुनाई दी।

पास की ही दूसरी घनी झाड़ी के आँचल में बाहर झाँकती हुई दो प्रज्ज्वलित आँखें उधर देख रही थीं, मगर चंचल या झाड़ी के पीछे छिपे हुए जमुना, दो में से किसी की भी दृष्टि उधर नहीं पड़ी।

जब चंचल बेर तोड़कर उधर चला जिधर अचल जा रहा था, तो वे आँखें उस झाड़ी में घुसकर गायब हो गईं।

जमुना भी हाथ में पिस्तौल लिये तीन सौ गज के फासले पर दोनों कुँवरों का पीछा करने लगा।

चंचल तेज चलकर अचल के पास पहुँच गया।

"बड़ी देर कर दी चंचल ?"

"झाड़ी में काँटे बहुत थे भैया ! ···अकेले डर लगता था क्या ?" कहकर चंचल हँसा।

"नहीं तो ! मगर ऐसे भयानक जंगल में दोनों का साथ रहना आवश्यक है। अभी तक कोई जानवर भी दिखाई नहीं पड़ा।"

फिर दोनों चुपचाप आधे घण्टे तक तेजी के साथ चलते रहे।

अब जंगल काफी घना हो चला था। झाड़ियाँ तो इतनी अधिक थीं कि दो-चार हाथ आगे देख सकना भी मुश्किल था।

एक चट्टान की ओर इशारा करता हुआ बोला चंचल—"थका-वट आ गई अब तो भैया, इस चट्टान पर आओ थोड़ी देर बैठ लें।"

अचल कुछ बोला नहीं ; चुपचाप चंचल के साथ चट्टान पर आ बैठा।

"बड़ा घना जंगल है !" चंचल बोला।

"और भयानक भी ! मगर कितना खुशनुमा लगता है यह जङ्गल ! कितना शान्त ! कितना नीरव ! यहाँ की चिड़ियों को भी जबान नहीं कि बोल सकें।"

कहकर अचल चारों ओर आँखें घुमाकर जङ्गल की शोभा देखने लगा।

चट्टान से दस गज दूर की एक झाड़ी पर अचल की आँखें रुकीं, फिर आगे बढ़ गईं।

मगर थोड़ी ही देर बाद फिर वहीं लौट आईं।

झाड़ी के पीछे कोई था।

अचल सावधान हो गया।

उसने गौर से झाड़ी की ओर देखा।

छिपकर कोई खड़ा था और अचल को अपने पास आने का इशारा कर रहा था।

अचल ने कुछ कहना चाहा तो उसने चुपचाप अपने पास आने का इशारा किया।

अचल बहुत परेशान हो उठा। इधर जाने कैसी घटनायें हो रही हैं कि उनका तारतम्य अचल कहीं से जोड़ नहीं पाता।

वह धीरे से उठने लगा।

"कहाँ भैया ?"

"अभी आया चंचल, लघुशंका करके।"

कहकर अचल झाड़ी की ओर बढ़ा।

उसे आते देखकर वह आकृति झाड़ी में जा छिपी।

चंचल को कुछ शंका नहीं हुई। अचल इतना चतुर होगा, इस-पर उसे कभी विश्वास नहीं था। वह चुपचाप चट्टान पर बैठा रहा। यह भी उसे याद नहीं रहा कि उसने जमुना से क्या कहा है। उसने कहा था कि अचल के साथ एक चट्टान पर बैठेगा, फिर स्वयं किसी बहाने उठ जायगा, तब जमुना अचल पर गोली दागेगा।

मगर यहाँ तो अचल ही उठकर चला गया था और चंचल चट्टान पर सोचता हुआ बैठा था।

वहाँ से लगभग ३०० गज दूर की एक झाड़ी में छिपकर बैठे हुए जमुना ने अचल को उठकर जाते देखा तो उसने समझा कि अपने कथनानुसार चंचल ही उठकर चला गया है और चट्टान पर बैठा हुआ व्यक्ति अचल है।

उसने पिस्तौल उठाई।

इधर चंचल के पास से उठकर अचल उस झाड़ी के पीछे पहुँचा तो वह चौंककर बोल उठा—"वारिस, तुम ?"

वारिस ही था वह ; बोला—"हाँ, हुजूर ! मैं ही हूँ।"

"यहाँ क्यों आये ?"

"कुँवरानी साहिबा ने मुझे पीछे-पीछे भेजा है हुजूर !···खुदा कसम, इस वक्त आपकी जान बेहद खतरे में है।"

"क्या बकते हो तुम ?"

"आहिस्ता बोलिये हुजूर !···इधर आइये।" कहकर वारिस ने अचल का हाथ पकड़ लिया और खींचता हुआ कुछ दूर ले गया।

पीपल का सघन पेड़ था, जिसके चारों ओर आदमकद ऊँची झाड़ियाँ थीं।

वहाँ पहुँचकर वारिस बोला—"यहीं रुककर अब देखिये क्या होता है ?···इस दरार में देखिये हुजूर ! वह सामने छोटे कुँवर बैठे हैं···देखते चलिये, अभी आपकी समझ में सब-कुछ आ जायेगा। अपने को छिपाये खड़े रहिये, मैं जरा उधर जाकर जमुना को देख लूं। खुदा कसम, वह शैतान भी हाथ में पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे आया है।"

बन्दूक कन्धे पर रखे वारिस चल पड़ा।

आश्चर्यचकित अचल उसी पीपल के पेड़ के नीचे खड़ा रहा।

छिपते-छिपते सौ कदम की दूरी पर जाकर वारिस की निगाह जमुना पर पड़ी। वह वहीं छिपकर उसकी गतिविधि देखने लगा।

जमुना ने चट्टान पर बैठे हुए व्यक्ति को अचल समझा था और उसकी ओर निशाना साधकर उसकी पिस्तौल तन चुकी थी।

दूसरे ही क्षण धाँय की आवाज हुई। जमुना की पिस्तौल की गोली मौत बनकर छूटी—

और तुरन्त ही सारा जंगल चंचल की चीख से गूंज उठा।

वारिस के मुख से खुशी की हल्की आवाज निकली। उसने अपने मालिक की जान बचा ली थी और दुश्मन की गोली खुद दुश्मन को ही जा लगी थी।

चंचल की चीख सुनकर जमुना को अपनी गलती मालूम हो गई। वह उठकर चंचल के पास जाने लगा।

तभी एक और जोरदार चीख सुनाई पड़ी, जो अचल के गले की थी।

वारिस चौंक पड़ा। अचल की चीख ने उसका सारा शरीर कँपा दिया।

वह दौड़ पड़ा उस पीपल की ओर, जहाँ वह अचल को खड़ा छोड़ आया था।

अचल के मुख से लगातार तीन चीखें सुनाई दीं और तब सन्नाटा

छा गया।

वारिस सरपट भाग रहा था उस पीपल की ओर।

तभी जमुना की दृष्टि वारिस पर जा पड़ी। वह समझ गया कि इन सारी खुराफातों की जड़ वारिस ही है।

वह भी दौड़ा वारिस के पीछे।

वारिस दौड़ता हुआ जब उस पीपल के पास पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर उसका शरीर भय से काँप उठा।

उसके मुख से निकला—"या खुदा! तेरी मेहरबानी!...जिसे तू मारना चाहे, उसे जिलाने की ताकत वारिस में नहीं...रहम कर अल्लाह!"

एक अजगर था, भयानक तने-जैसा मोटा!

पीपल के पीछे से निकलकर उसने अचल का सिर अपने मुँह में रख लिया था और धीरे-धीरे उसे निगलता जा रहा था। जल्दी-जल्दी में उस भयानक अजगर को अचल के शरीर को लपेटने का मौका तक नहीं मिला था।

थोड़ी देर तक वारिस उस दर्दनाक नजारे को देखकर अपनी छाती पीटता और खुदा का नाम रटता रहा, मगर तुरन्त ही उसे होश आ गया।

अचल का कमर तक का हिस्सा अजगर के मुँह के भीतर था।

वारिस ने अपनी बन्दूक उठाई और अजगर की ओर करके निशाना साधा।

तभी उसके सिर पर पीछे की ओर से तेजी के साथ कोई वजनी चीज गिरी। उसका सिर चकरा गया, बन्दूक हाथों से छूट पड़ी और वारिस बेहोश होकर गिर गया जमीन पर।

वारिस के पीछे-पीछे दौड़ता हुआ जमुना ठीक उसी समय वहाँ पहुँचा, जब वह अजगर को मारने के लिए अपनी बन्दूक तान चुका था।

एक ही नजर में जमुना सारा मामला समझ गया। उसने बन्दूक का वजनी कुन्दा वारिस के सिर पर जोरों से पटक दिया।

सिर से खून का फव्वारा छूट पड़ा। कटे पेड़-सा वारिस जमीन पर गिरकर निश्चल हो गया।

अब इधर की चिन्ता छोड़कर जमुना उस ओर बढ़ा, जिधर से चट्टान पर बैठे हुए चंचल की चीख उसने पहले सुनी थी।

मगर चट्टान सूनी थी। चंचल गायब था।

जमुना ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, मगर वह कहीं दिखाई न पड़ा।

वह सोचने लगा, क्या चंचल को भी कोई जंगली जन्तु उठा ले गया ?

अपने से तो वह कहीं जा नहीं सकता था, क्योंकि जमुना की गोली उसे जा लगी थी।

"छोटे कुँवर !" जमुना ने जोर से पुकारा।

तभी चट्टान के पीछे से चंचल का सिर उठता हुआ दिखाई पड़ा।

जमुना लपककर वहाँ पहुँचा ; बोला—"छोटे कुँवर ! आप सकुशल तो हैं ?...बातैसी है कि मैंने जरा जल्दबाजी कर दी। कहीं चोट तो नहीं आई आपको ?"

"गलती मेरी ही थी जमुना !" चंचल चट्टान की ओट से निकलकर बैठता हुआ बोला—"मुझे अपनी गलती का खयाल तब हुआ जब तुम्हारी गोली सनसनाती हुई मेरे सिर के ऊपर से निकल गई और रोकते-रोकते भी मैं जोरों से चीख उठा। फिर मैंने सोचा, शायद तुम दूसरी गोली भी चलाओ, इसलिए मैं दौड़कर नीचे जा छिपा। उधर मुझे अचल भैया की भी कई चीखें सुनाई पड़ी थीं और किसी जन्तु की फुफकार भी...पता लगाओ तो !"

"मैं सब पता लगा चुका हूँ।" जमुना क्रूर अट्टहास करता हुआ बोला—"ईश्वर इस समय आपकी ही मदद पर हैं छोटे कुँवर ! उन्होंने कालदेव को अजगर बनाकर भेजा है, जो बड़े कुँवर को निगल रहा है, धीरे-धीरे। बातैसी है कि वारिस शैतान भी न जाने किधर से मिट्टी सूँघता पहुँच गया था और अजगर को मारकर बड़े कुँवर की जान बचाना चाहता था, मगर मैंने उसे भी ठीक कर दिया। चलिये, आप भी देख लीजिये।"

जमुना के साथ चंचल उस पीपल के नीचे आया। दूर खड़े होकर उसने देखा, एक विकराल अजगर और उसके मुँह से बाहर निकले हुए दो पैर, और कुछ दूर पर बेहोश पड़ा हुआ वारिस।

देखते-ही-देखते दोनों पैर भी अजगर के मुख में समा गये और तब चंचल के मुख से एक ठण्डी साँस निकली।

जमुना बोला—"अब तो सब खत्म हो गया छोटे कुँवर! आनन्द की बंसी बजाइये।"

'अभी तो महल में एक बार तूफान खड़ा होगा। इस वारिस को भी यहीं खत्म कर दो!"

"वारिस खत्म हो गया होगा छोटे कुँवर! ऐसी गहरी चोट मारी थी कि मुँह से आवाज भी नहीं निकली गिरते-गिरते। खैर, कुछ चोटें और कर दूँ। बातैसी है कि इसका बचना खतरनाक ही होगा।"

जमुना बेहोश वारिस के पास आ खड़ा हुआ। बन्दूक का कुन्दा ऊपर उठा और प्रबल वेग से नीचे गिरा। रूई की तरह धुनने लगा जमुना, बेहोश वारिस के शरीर को। सिर कई स्थानों पर फट गया बदन के हर हिस्से से खून की धारा बह चली।

'बस करो जमुना!···इसे यहाँ से घसीटकर जानवरों के रास्ते पर रख दो···मुर्दे के मांस की बेचारे दावत ही कर लेंगे।"

वारिस की एक टाँग पकड़कर जमुना, मरे कुत्ते-सा उसे घसीट ले चला। पीपल से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर उसने उसे बीच रास्ते पर छोड़ दिया। वह रास्ता मनुष्यों का नहीं, जानवरों का था।

इसके बाद दोनों हँसते हुए रमजानपुर की ओर तेजी से चल पड़े।

◉

ऊँची चारदीवारी के अन्दर बने हुए तीनों महल इस समय हाहाकार कर रहे हैं।

शाम हो गई है। अँधेरा धीरे-धीरे गाढ़ा हो चला है। बत्तियाँ जल रही हैं। आसमान पर चाँद भी चमक रहा है।

परन्तु लगता है, जैसे सभी जगह अन्धकार हो।

तीनों महलों में चीख-चिल्लाहट, करुण पुकार गूंज रही है। नौकर-चाकर सब घबड़ाये हुए इधर-से-उधर दौड़ रहे हैं।

कोई भयानक घटना घट गई है शायद।

रानी साहिबा अपने महल में पलँग पर पड़ी हुई, मछली की

तरह छटपटा रही हैं। उन्हें होश रहते भी होश नहीं है। सिर के बाल बिखर गये हैं। मस्तक पटक-पटककर रोने के कारण कई जगह गुमटियाँ निकल आई हैं।

चंचल सामने सिर झुकाये खड़ा है। कपड़े उसके फट गये हैं। बालों पर धूल जमी हुई है।

"अरे चंचल! तू तो पूरा दगाबाज निकला।" रानी साहिबा सिर पीटती हुई बोलीं—"तूने मेरे अचल को चबा डाला! तूने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी! तूने मुझे डुबो दिया बीच नदी में!"

"मैं क्या करता माँ?" चंचल बनावटी शोक के साथ बोला।

"क्या करता?...पूछता है मुझसे?...अरे कुलांगार! भाई को आफत में देखकर भी तू खड़ा-खड़ा छाती पीटता रहा? कुछ भी करते न बना तुमसे?...अचल के बदले तूने ही अपने को अजगर के पेट में क्यों नहीं डाल दिया? पूछता है, मैं क्या करता? मर जाता तू वहीं, मगर अपना काला मुँह दिखाने न आता मुझे! लोग कहेंगे, सौतेली माँ ने बच्चे को खा लिया। मेरी छाती पर तूने कोड़े मार दिये रे चंचल!"

"माँ! तुम तो यह समझती हो कि सारा कसूर मेरा ही है।" चचल रुआँसा होकर बोला—"ईश्वर ने मेरे ही लिए काल भेजा होता तो तुम्हारा कलेजा ठण्डा हो जाता। मुझे कसूरवार समझती हो तो गला काट लो मेरा। तुम्हारी छाती पर से कोड़ों के दाग मिट जायँ। दुनियावाले भी तुम्हें निर्दोष समझें। भैया के मरने पर मुझे भी अब जीने की चाह नहीं रही। मैं स्वयं ही अपनी जान दे दूंगा।"

"चुप रह रे चंचल! तेरे मुँह में कीड़े पड़ गये हैं क्या, जो जीने-मरने की बात करता है तू?...अचल तो चला ही गया, अब क्या तू भी इस बुढ़िया की दुनिया उजाड़ जायगा?...वह अजगर नहीं, मेरे भोले बच्चे का काल आया था और उसे निगल भागा। तूने उसे पकड़ा भी नहीं, उसका बदन बन्दूक से छेद भी नहीं दिया, उसका पता भी नहीं लगाया कि वह काल मेरे बड़े कुँवर को निगलकर कहाँ जा छिपा। तूने कुछ नहीं किया चचल! तू दगाबाज है।"

"मैंने बहुत-कुछ किया माँ! वह शैतान बरगद के तने-जैसा

मोटा था, कैसे पकड़ता उसे ? भैया को निगलकर वह जाने कहीं खिसक गया ! बहुत खोजा, मगर पता न लगा ।"

"हाय मेरा लाल ! तू कहाँ गया ?···मेरा अचल···कहाँ चल दिया मुझे छोड़कर ?" रानी साहिबा पलँग पर अपना सिर पटकने लगीं ।

चंचल भी रोने लगा ।

तभी किसी ने रानी साहिबा का सिर पकड़ लिया और उनके मस्तक को अपनी गोद में रखकर कोमल हाथों से बूढ़े बालों को सहलाना शुरू किया ।

रानी साहिबा कुछ आश्वस्त हुईं ।

बोलीं चंचल से वह—"कल उस जंगल में सैकड़ों आदमियों को भेजकर पता लगवाओ और उस काल को पकड़कर मेरे पास, मेरे सामने लाओ ! जरा मैं भी देखूँ कि वह कैसा है, जिसने मेरे लाल को अपने पेट में भर लिया है । अरे चंचल ! मेरी वह भोली-भाली बहू सुनेगी इसे, तो कैसे जिन्दा रह सकेगी ?···वह तड़प-तड़पकर अपनी जान दे देगी । चाँद-से पति को खोकर कौन स्त्री धीरज रख सकती है ? तू उसे खबर कर दे बेटा ! हाय मेरी बहू, तेरा भाग्य आज फूट गया बेटी !···चञ्चल ! बुला तो बहू को, समझा-बुझा दूँ उसे ।"

"भाभी आ गई है माँ ! तुम्हारे सिर को गोद में लिये बैठी हैं, तुम्हारा माथा सहला रही हैं वही तो ।"

"बहू !" चौंककर रानी साहिबा उठ बैठीं ।

कुँवरानी पर उन्होंने दृष्टि डाली तो उसने अपना सिर नीचा कर लिया ।

मगर रानी साहिबा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सागर का वक्ष, अन्तर में ज्वालामुखी छिपाये एकदम शान्त था इस समय ।

आँखें लाल तो थीं, मगर भीगी नहीं ।

मुख उजड़ा हुआ था, मगर उस समय असीम गम्भीरता थी ।

"बहू !" रानी ने कुँवरानी को पुकारा ।

"माता जी !" कुँवरानी के मुख से निकला हुआ स्वर सुनकर रानी साहिबा आसमान से गिरीं ।

यह स्वर वे जीती-जागती कुँवरानी का सुन रही हैं या किसी मुरदे का ?

दुःख के आवेग ने कुँवरानी को पागल कर दिया था, परन्तु हृदय पर पत्थर रखकर उसने अपनी आँखों का पानी पी डाला था। नारी की सहनशक्ति की वह परकाष्ठा थी—आँखों में एक बूँद आँसू नहीं, कलेजे में धड़कन की एक आवाज नहीं, मुख से दुःख की आह तक नहीं।

हाथों की चूड़ियाँ फूट गई थीं, माँग का सिन्दूर धुल गया था, बदन की चमकती साड़ी का रंग सफेद हो गया था, कल की हँसती-बोलती प्रतिमा आज विधवा बन गई थी, उसका संसार उजड़ गया था।

नारी की यह कितनी बड़ी मजबूरी है कि पुरुष के मरते ही उसकी सारी तमन्नायें मर जाती हैं ! उसकी हँसी, उसका सुहाग, उसका सुख—सब-कुछ पुरुष की चिता पर स्वाहा हो जाता है और नारी बेचारी मरकर भी जिन्दा रहती है।

"हाय ! आज मेरी फूल-सी बहू विधवा हो गई !" रानी साहिबा पुनः रोने लगीं।

कुँवरानी ने उनका सिर खींचकर अपनी गोद में रख लिया। गम्भीर होकर वह बोली—"माताजी ! आप धीरज रखें ! छोटी-छोटी नदियाँ हिमालय का बाँध नहीं तोड़ सकतीं। दुःख-सुख तो आते ही रहते हैं और आँखों के आँसू कभी सूखते भी नहीं ; जो होना था वह तो हो चुका।"

कहते-कहते कुँवरानी का गला रुँध गया। इसके आगे वह कुछ बोल नहीं सकी।

बूढ़ी रानी साहिबा अपनी इस छोटी-सी बहू के आगे एकदम बच्ची हो गई है। वे रो रही हैं और···और वह उन्हें समझा रही है।

सिर पर किसी के पहाड़ गिर पड़े और अडिग रह जाय, ऐसी है यह कुँवरानी कविता।

रानी साहिबा को बड़ी ग्लानि हुई।

कहाँ तो उन्हें कुँवरानी को समझाना चाहिये था, कहाँ वही उनको समझा रही है !

वे उठकर बैठ गई और फिर लपककर कविता को उन्होंने अपने कलेजे से दाब लिया। दो जलते दिलों की आग मिलकर लपटें फेंकने लगी, मगर दोनों नारियों ने उन लपटों को अपनी आँखों के भीतर कैद रखा।

"वह दगाबाज चला गया बेटी ! मगर तू धीरज रख ! धोखेबाजों के लिए आँसू गिराना ठीक नहीं।" रानी साहिबा कविता का सिर सहलाते हुए बोलीं।

"इन्सान रोना चाहे तो जिन्दगी के पग-पग पर आँखों से आँसू निकल चलते हैं माताजी !···धोखेबाज लोग अच्छे तो नहीं होते, मगर दिल जिससे एक बार प्यार पा जाता है, उसे भूल नहीं पाता कभी। भगवान् ने मेरे सुखों को आँसुओं के सागर में डुबो दिया है माँ, मगर कविता इससे विचलित नहीं होगी। नारी कमजोर होती है जरूर, मगर आँसू की बूँदें उसका क्या बिगाड़ लेंगी !" कुँवरानी कविता ने कहा।

"चञ्चल ! जाकर कपड़े बदल डाल।" रानी साहिबा ने कहा।

चञ्चल एकटक अपनी भाभी का वह गम्भीर सौन्दर्य देख रहा था। अन्तर की आग की लपटों से बदन का गोरा रंग सुनहला हो गया था। विधवा भाभी का वह देदीप्यमान रूप देखकर चञ्चल चलायमान हो उठा।

माँ का स्वर सुनकर वह धीरे से उठा और शोक-सन्तप्त होने का नाट्य करता हुआ कमरे से बाहर हो गया।

"ललित अकेला होगा बेटी ! चल तुझे पहुँचा दूँ।" रानी साहिबा ने कविता से कहा।

"मैं चली जाऊँगी माताजी !" बोली कुँवरानी—"वे तो चले गये, लेकिन मेरी चलने-फिरने की ताकत नहीं गई। पति के न रहने पर नारी के लिए और सभी चीजें बेकार हैं। पुरुष के गम में तड़पते-तड़पते जान निकल जाय, इसी में नारी के जीवन की सार्थकता है।"

"क्या कह रही है कविता तू ?···रो ले बेटी ! तबीयत हल्की हो जायगी। ये आँसू किसी जहर से कम नहीं होते। इन्हें पीते ही इन्सान की मौत आ जाती है। ताकत बची हो देखने की, तो बेटे में

पति की छाया देखकर सब्र कर। चल, पहुँचा दूं तुझे।"

रानी साहिबा कविता के साथ उसके महल तक आईं। पलँग पर घण्टों बैठकर उसे समझाती रहीं।

कुँवरानी कविता कुर्सी पर बैठी-बैठी चुपचाप सब सुनती रही।

रानी साहिबा जब चली गईं तो वह टूटे कगार की तरह शोक-सागर में गिरकर छटपटाने लगी।

आज उसका पलँग सूना था। सोये ललित को उसने कसकर अपने सीने में छिपा लिया, परन्तु शोख पति की याद को भोले बच्चे की मासूमियत दूर नहीं कर सकी।

सुनसान देखकर आँखों का सागर भी उमड़ पड़ा। रोने लगी कविता धैर्य का बाँध तोड़कर।

कल जिस मुख पर बासन्ती बहार थी, आज उससे सावन-भादों की धार बरस रही थी। काली-काली अलकों के बीच की माँग पतझड़ बन गई थी।

रात बीतने लगी। उपर चढ़ता चाँद धीरे-धीरे नीचे उतरकर जा छिपा। कविता के आँसू नहीं रुके।

जवान पति की अचानक मृत्यु के बाद की पहली रात नारी किस प्रकार तड़प-तड़पकर काटती है, इसकी कहानी कोई कविता के आँसुओं से पूछ ले।

⊙

रात की जवानी ढल चली। जागरण का सन्देश लेकर दूर से मुर्गे की आवाज आई।

अभी अँधेरा ही था। कविता जागकर रो रही थी।

तभी बाहर दरवाजे पर कुछ खटपट की आवाज हुई।

किसी ने पुकारा—"दरवाजा खोलिये हुजूर!"

स्वर किसी स्त्री का था—रुआँसा, दर्दभरा।

कविता ने चटपट उठकर दरवाजा खोल दिया; देखा—धुँधले अँधेरे में कोई स्त्री-मूर्ति खड़ी है।

कविता ने बाहर की बत्ती जला दी। उजाले में गुलनार को वहाँ खड़ी देखा उसने। उसके कन्धे से लगकर और भी कोई खड़ा था—बदहवास, लहूलुहान, सिर आगे की ओर लटका हुआ।

यह तो वारिस है !

कपड़े खून और धूल से सनकर लथपथ हो रहे हैं, जगह-जगह से फट गये हैं। सिर म लम्बे-लम्बे घाव दिखाई पड़ रहे हैं, जिनमें से मांस के लोथड़े उतरा आये हैं। नीचे जमीन पर अब भी ताजा रक्त चू रहा है।

बरगद-जैसे वारिस की जड़ कट गई है ; मामूली जटायें उसे अब अधिक देर तक खड़ा नहीं रख सकतीं।

गुलनार चुप है। अपने पति को वह पहचानती है। अपनी जान पर खेलकर वह अपने मालिक की जान बचानेवाला है।

मगर आज आधी साँस लिये, एक पैर कब्र में लटकाये वह अपनी मालकिन से मिलने आया है। जान बाहर निकलने को तड़प रही है, परन्तु उसकी स्वामिभक्ति से जैसे मौत को भी परास्त होना पड़ा है।

"देर···हो रही···है···गुलनार !" वारिस के मुख से अस्फुट शब्द निकले—"जरा जल्दी···बुला दे !"

"क्या है वारिस ?" कुँवरानी आश्चर्यचकित-सी आगे बढ़ आई।

"मुझे जमीन पर बिठा दे गुलनार !"

जमीन पर धीरे से बिठाया गया उसे।

बोला वारिस—"जान···हलक में आकर···अटकी हुई है··· हुजूर !···खुदा कसम ! बदन की एक-एक हड्डी टूट···गई है··· किसी कदर घिसटते-घिसटते एक फर्ज की याद लिये···यहाँ तक··· आ पहुँचा हूँ···वक्त ज्यादा नहीं···कुछ सुन लें तो मेरी जान को निजात मिल जाय, तड़फड़ा रही है हुजूर···निकल जाने के लिए···"

"गुलनार ! मैं इसे देखती हूँ, तू जरा बाहर जाकर नौकरों को डॉक्टरों के पास भेज ! शहर में जितने डॉक्टर हों, सबको बुला ! वारिस की जान जाने के पहले मेरी दौलत जायगी।"

गुलनार दौड़ती चली गई।

कविता ने वारिस को सहारा दिया।

वारिस की आँखें बन्द थीं। जबान लटपटाकर चल रही थी— "बेकार है हुजूर !···डॉक्टरों के आने के···पहले ही मौत आ

जायगी···आपसे मुझे···माँ की मुहब्बत मिली है कुँवरानी साहिबा !···आपकी···गोद···में मेरी जान निकल रही है···दुनिया में किस नौकर···की ऐसी किस्मत होगी हुजूर !···कुँवर साहब को साँपों से···बचाया तो अजगर ने निगल लिया···मैं कुछ नहीं कर सका सरकार !···वारिस···की इस···गलती को माफ कर दें।"

और वारिस का सिर एक ओर लटक गया।

कुँवरानी ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा और वारिस के शरीर को धीरे से जमीन पर लिटा दिया।

उस समय पिछली रात का अँधेरा धीरे-धीरे दूर हो रहा था।

○

"ओह, चंचल कुँवर !" होटल के कमरे में घुसते हुए एनी ने कहा—"By God, हम तुमको देखने के लिए बहुत anxious था। आज बीस दिनों के बाद तुम यहाँ आई। Is it not ?"

"आओ मिस एनी !" कोच पर उसे बैठने की जगह देता हुआ बोला चंचल—"मैं बहुत व्यस्त था।"

"How are you Mr. जमुना ?" बैठती हुई एनी ने जमुना से पूछा।

"सब आपकी मिहरबानी है मिस साहिबा !" जमुना ने कहा—"बातसी है कि छोटे कुँवर अपने भाई के क्रिया-कर्म में फँसे हुए थे।"

"Congratulations छोटी कुँवर ! आखिर बड़ी कुँवर को खुदा ने बुला ली।"

"एक बात बड़े ताज्जुब की है छोटे कुँवर !" एकाएक जमुना बोला।

"कौन-सी बात ?"

"उस शैतान वारिस की।" जमुना ने कहा—"उसकी हड्डी-पसली तोड़कर जंगल में रख आया था मैं, मगर शैतान घिसटता-घिसटता उसी रात महल आ पहुँचा।"

"मर तो गया ही होता वह, मगर भाभी ने पानी की तरह रुपये बहाकर बचा लिया उसे।" चञ्चल कुँवर ने कहा।

"रानी साहिबा भी तो कम परेशान नहीं हुईं उसके लिए।

दिन में तीन बार उसे देखने जाती थीं। नौकर क्या हुआ, विलायती कुत्ता हो गया। अब तो वह चलने-फिरने भी लगा है। कल देखा था उसे एक नजर ; ललित को छोटी गाड़ी पर घुमाने निकला था। बदन की अकड़ वैसी-की-वैसी ही है। बेईमान ने हमारी खूब शिकायत की होगी कुँवरानी से···शायद रानी साहिबा से भी कहा हो।"

"माँ से उसने कुछ कहा होता तो वे मुझसे जरूर पूछतीं··· और भाभी का भी व्यवहार पहले-जैसा ही नम्र है। वारिस ने किसी से कुछ कहा नहीं शायद। कह दिया होता तो अब तक आफत आ जाती। उसने चोट करते हुए तुम्हें देखा नहीं था, वरना उसकी जबान चुप न रहती अब तक।" बोला चंचल।

"महल का क्या हाल-चाल है?"

"धीरे-धीरे सब ठीक होता जा रहा है।" चंचल ने कहा—"भैया की याद लोग भूलते जा रहे हैं। पहले तो भाभी ने कई दिन तक खाना नहीं खाया, मगर अब खाती भी हैं, सोती भी हैं और हँसती-बोलती भी हैं। माँ का शोक भी अब बहुत-कुछ दूर हो गया है।"

"तो फिर अब धीरे-धीरे दूसरी कार्रवाई शुरू की जाय··· ललित और कुँवरानी को भी दूर करना है।" जमुना बोला।

"केवल ललित को···पति और बेटे को खोकर नारी का प्यार सूना हो जायगा और वह आँखें पसारकर किसी दूसरे का प्यार खोजेगी। तब मैं उसके सामने जा पड़ूँगा। अगर भाभी ने मुझे चुना, तब तो ठीक, नहीं तो बाद में उसे भी···"

"चंचल कुँवर!" एनी तेज स्वर में बोली—"तुमने तो मुझसे शादी की वादा की थी, फिर अपना भाभी का Love क्यों पाना चाहती है?"

'तुम चुप रहो एनी!" चंचल ने कुछ कठोरता के साथ कहा—"एक आदमी क्या दो औरत नहीं रख सकता?"

"But the love is divided then." एनी ने कहा—"हम इसे पसन्द नहीं करता। तुमने हमसे शादी करने का वादा की थी। हमको धोखा देगी तो अच्छी नहीं होगी!"

"नहीं होगा, न सही। इस समय चुप रहो तुम!" चंचल ने

उसे डांट दिया ।

एनी लाल-लाल आँखों से उसे घूरती रही ।

"तो पहले ललित को दूर किया जाय ?"

"हाँ !"

"कैसे ?"

"सुबह वारिस उसे गाड़ी पर हवा खिलाने ले जाता है न !"

"बस, समझ गया ।···तो कब ?"

"कल ही···दो-तीन आदमी रहना ! वारिस अभी कमजोर है तो क्या, ललित को बचाने के लिए वह अपनी जान तक दे देगा ।" बोला चंचल ।

"मैं खब सावधान रहूँगा छोटे कुँवर ! मगर बात ऐसी है कि बच्चे की हत्या करते···"

"बच्चा कहते हो उसे जमुना ?···वह तो साँप है साँप ! कल को जवान होकर आधी रियासत का हकदार बन जायगा । नहीं-नहीं, उसे अपने रास्ते से हटाना ही होगा !"

"ठीक है···मैं तो ताबेदार हूँ आपका । कल सुबह ही वारिस से उसे छीनकर गला टीप दूँगा उसका । फिर रात में उसकी लाश कहीं जमीन की गोद में दफन कर दी जायगी ।"

"जगह जरा सुनसान देखकर छापा मारना । अब चलो ।"

कहकर चंचल उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर बढ़ा ।

जमुना उसके पीछे-पीछे चला ।

एनी से बगैर कुछ कहे दोनों कमरे से बाहर निकल गये ।

अपनी यह उपेक्षा-देखकर एनी की आँखें क्रोध से जल उठीं । वह इतनी मासूम नहीं थी कि पुरुष का दुर्व्यवहार चुपचाप ही सहन कर लेती ।

वह थी आधुनिक नारी ।

○

दिन के दौरान में भले ही कुँवरानी अपने पति की याद भूली रहती हो, परन्तु रात की नीरवता में उसके आँसू बहने लगते हैं ।

इधर बीस दिनों में वह मुश्किल से बीस घंटे सोई होगी । और वह निद्रा भी कैसी ! कभी तो विकराल अजगर दिखता है सपनों में,

कभी अचल की करुण चीख सुनाई पड़ती है।

बेचारी कविता आँखें बन्द करके भी सो नहीं पाती।

वारिस उसके पति की जान बचाने गया था, तो वह भी अपनी जान आधी लेकर लौटा। कविता पति को खोकर अब ऐसे वफादार नौकर को खोना नहीं चाहती। उसने उसके पीछे रुपयों की दीवार खड़ी कर दी। धन-लोलुप डॉक्टरों ने मौत से भयानक युद्ध किया।

और आज वारिस भला-चंगा है।

कविता का अहसान वह भूल नहीं सकता। दोनों मियाँ-बीवी कुँवरानी का गुण-गान करते हैं।

मगर कविता की आँखों में लहराते हुए सागर को सुखाने की ताकत गरीब वारिस में नहीं। उसके अन्तर की आग को बुझाने की शक्ति वह कहाँ से लाये?

अपनी जान देकर भी यदि वह उसके चेहरे पर मुस्कराहट देख ले, तो इस कुर्बानी के लिए वारिस हर मिनट तैयार है।

मगर छटपटाकर भी वारिस कविता का दुःख दूर नहीं कर पाता।

छोटे ललित की परवाह भी कविता ने बहुत कम कर दी है, सो बेचारा वारिस उसकी माँ बनकर दिनभर उसे गोद में लिये रहता है। कभी कुँवर की याद उसे सताती है तो वह पहाड़-सा पहलवान मासूम ललित को कलेजे से लगा किसी कोने में जाकर दो-चार बार रो लेता है।

गुलनार भी कम दुःखी नहीं। वफादार नौकर की बीवी दिन-दिन और रात-रातभर कविता के सामने हाजिर रहती है। कोई दुःख न हो कविता को, कुँवर की कोई चीज उसकी आँखों के सामने पड़कर उसके आँसुओं को न उकसाये, इन बातों का बेहद खयाल रखती है गुलनार।

कभी-कभी कविता इन मियाँ-बीवी पर बेतरह झल्ला उठती है।

वह जानती है कि वे दोनों रानी साहिबा के हुक्म से ही उसकी निगरानी कर रहे हैं, ताकि अपने जीवन से ऊबकर वह अपना गला न दबा सके।

कभी-कभी वह सोचती है कि वह रानी साहिबा से सारी बातें

कह दे । उन्हें बता दे कि उनके पेट से आदमी का बच्चा नहीं, साँप का पोआ पैदा हुआ था । सारी खुराफातों की जड़ उनका चंचल है ।

मगर रानी साहिबा का प्यार उसकी जबान पकड़ लेता है ।

किस मुख से वह सारी बात उनसे कहेगी ? सुनकर उन्हें क्या कम दुःख होगा ? इतना गहरा धक्का शायद उनका बूढ़ा शरीर बरदाश्त न कर सके और मौत की गोद में आराम करने चल दे ।

अचल भी तो कहा करता था कि माता जी से चञ्चल की कोई शिकायत मत करना ।

पति के बाद अब कौन रह गया है कविता के पास, जिसकी रक्षा के लिए वह चंचल की शिकायत करे ? बेटे की शैतानी सुनकर बूढ़ी रानी साहिबा का दिल टूट जायगा ।

कविता ने अब तक अपनी जबान बन्द ही रखी है और हमेशा बन्द रखेगी ।

O

आसमान पर उषा खेल रही थी । ऊपर उठते हुए सूर्य की लालिमा फैल चुकी थी ; गोला अभी क्षितिज के आँचल में छिपा था ।

कविता अभी-अभी पूजा करके उठी थी और अचल की फोटो के सामने सिर झुका रही थी ।

तभी गुलनार तेजी से आकर बोली—"हुजूर ! एक लड़की आपसे मिलने आई है···अँगरेज है···बड़ी जल्दी में है···रोका तो रुकती ही नहीं थी···लीजिये, वह आ ही पहुँची ।"

कविता ने देखा—दरवाजे पर अंग्रेजी पोशाक पहने एक गोरी युवती खड़ी थी ।

चौंक पड़ी वह—"आप ?"

"Excuse me Sister !" युवती बोली—"मेरा नाम एनी है···जल्दी था, इसलिए बिना पूछे चला आया हम ।"

एनी ? ···

नाम तो कभी सुना है कविता ने ।

याद आया, वारिस कह रहा था कि यही लड़की चंचल की प्रेमिका है और उस दिन अचल को जहर देने आई थी ।

सोचकर कविता का मस्तक भन्ना उठा ; परन्तु बाहर से वह

शान्त रहकर बोली--"आइये, बैठिये !"

एनी पलंग पर आकर बैठ गई।

कुँवरानी ने सिर से पाँव तक उसे एकबार देखा, फिर बोली—"कैसे कष्ट किया आपने ?"

"आप हमको नहीं जानता कुँवरानी साहिबा !...हम छोटी कुँवर की Beloved है, I mean माशूक। हम आपसे कुछ पोशीदा बात कहने आया है। आप सुनेगा तो आपका फायदा होगा।"

"आप कहिये !" कविता ने कहा।

आप हमारी मदद करेगा न ? I am disappointed...हमको धोखा दिया गया है। छोटी कुँवर बड़ी शैतान है। वह बड़ी कुँवर का जान लेना चाहती थी...अब वह आपको अपना Wife बनाना चाहती।"

"मुझे मालूम है।" कविता ने शांत स्वर में कहा।

"You know everything ? My goodness ! Yet you are silent ?"

"आप हिन्दी में बात कीजिये, मुझे यह जबान नहीं आती।" कविता बोली।

"Oh, sorry ! हम बोला, आप सब-कुछ जानता हुआ भी अब तक क्यों खामोश है ? अपना खाविन्द खोकर भी आपने रानी साहिबा से शिकायत नहीं बोला ?...Too strange ! हम खुद रानी साहिबा के पास जायगा।"

"अभी आप कुछ दिनों तक खामोश रहिये। वक्त आने पर रानी माँ सब-कुछ जान लेंगी।"

"No-no, हम वक्त का इन्तजार नहीं कर सकता। हम छोटी कुँवर को बरबाद कर देगा।"

"मिस एनी !" कविता गम्भीर स्वर में बोली—"मुझे देखो, मैं लुटकर चुप हूँ, केवल इस खानदान की भलाई के लिए। तुम भी कुछ दिनों तक चुप रहो। तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय होगा।"

"Do you promise ?...I mean, क्या आप वादा करता है ?"

"हाँ, समय पड़ने पर मैं स्वयं रानी माँ के सामने सारी बातें

रख दूंगी। उस समय क्या तुम सच्ची गवाही दोगी? सब-कुछ बता दोगी, जो तुम जानती हो?"

"By God, हम सब-कुछ बता देगा। रात में जमुना ने बड़ी कुँवर पर Knife लेकर हमला बोली, छोटी कुँवर डॉक्टर दास के पास जहर माँगने गई, चा की प्याली में हमने जहर डाला, बड़ी कुँवर को जङ्गल में ले जाने के लिए झूठा आदमी भेजा, Mr. जमुना पीछे-पीछे पिस्तौल लेकर गई, बाद को कुँवरानी को अपना wife बनाना बोला, ललित का जान मारने को Mr. जमुना को कहा—I will tell everything Madam!"

"ललित की जान?" कविता चौंक पड़ी।

"ओह! भूल गया था।" एनी जल्दी-जल्दी बोली—"यही बात कहने हम इतना morning में आया।"

"कौन-सी बात?"

"आज ललित का जान मारा जायगा। छोटी कुँवर ने Mr. जमुना को सब-कुछ समझा दी है।"

"भगवान्! अबोध ललित ने किसी का क्या बिगाड़ा है? कैसे उसकी जान ली जायगी मिस एनी? क्या जहर से?" कुँवरानी भयभीत हो उठी थी।

"No-no, आज सुबह को Mr. वारिस जब ललित को टहलाने ले-जायगी, उसी वक्त Mr. जमुना हमला बोलेगी। आप आज ललित को walking के लिए मत जाने देना!"

कविता के मस्तक से पसीना छूट पड़ा। वह चिल्ला उठी—"गुलनार!"

"आई मालकिन!"

दौड़ी आई गुलनार।

"वारिस कहाँ है?" बदहवास स्वर में पूछा कविता ने।

"वे तो हुजूर ललित कुँवर को गाड़ी पर हवा खिलाने ले गये हैं।"

"कितनी देर हुई?"

"घंटे-भर से ऊपर।"

"उफ्! क्या होना चाहता है?" कविता ने अपना सिर पीट

लिया—"वारिस अभी कमजोर है···ललित को कैसे बचा सकेगा वह ?"

कविता की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। सूरज निकल आने पर सितारे छिटकने लगे। सिर पकड़कर बैठ गई वह पलँग पर।

परन्तु, तुरन्त ही कुछ निश्चय कर लेने के बाद उसने सिर उठाया ; बोली—"मिस एनी ! तुम जाओ। गुलनार ! तुम यहीं रहना।"

कहती हुई कविता तेजी से उठी और अलमारी के पल्ले खोलकर कुछ खोजने लगी।

दूसरे ही क्षण उसके हाथ में एक भयानक पिस्तौल थी।

हाथ में पिस्तौल दबाये वह बढ़ चली दरवाजे की ओर।

तभी दौड़े आते हुए वारिस पर उसकी नजर पड़ी। उसके पीछे-पीछे ललित की छोटी गाड़ी भी बेतहाशा भागी आ रही थी।

"आ गया मेरा ललित !···वारिस उसे लौटा लाया !" कविता के मुख पर सन्तोष की आभा झलकी।

वारिस पास आ गया। कविता आगे बढ़कर गाड़ी के पास खड़ी हुई। गाड़ी में दृष्टि डालते ही उसके पैरों के नीचे की जमीन काँप उठी।

चिल्लाई वह—"वारिस !···मेरा ललित ?···कहाँ है मेरा बच्चा ?"

वारिस बदहवास-सा था ; गिड़गिड़ाकर कविता के पैरों पर गिर पड़ा—"मेरी माँ ! माफ करो···ललित खो गया मुझसे। खुदा कसम मेरा कोई कसूर नहीं हुजूर !"

"क्या हुआ ? जल्दी बताओ !"

"सड़क के किनारेवाले बगीचे में कनेर के फूल लगे थे···" वारिस बोला—"ललित मचल गया लेने को···मैं तोड़ने अन्दर गया; लौटकर देखा तो गाड़ी खाली थी। बहुत खोजा हुजूर, मगर पता न लगा। मुझे आपने जिन्दगी दी है और मैंने आपका बच्चा खो दिया···मेरी जान ले लो सरकार ! मेरी बोटी-बोटी काट दो ! वारिस की जबान उफ करे तो कहना।"

"मैं समझ गई।" कोमल नारी का स्वर गम्भीर था और आँखें

प्रतिहिंसा की भावना से जल रही थीं।

वारिस उसका वह प्रचण्ड रूप देखकर डर गया; बोला—"हुजूर!"

"मैं अब सहन नहीं कर सकती।" चिल्लाकर बोली कविता, "मैं रानी माँ से सब-कुछ कह दूँगी। मेरे ललित को कोई नहीं छू सकता! आज मैं चञ्चल का खून करूँगी!"

हाथ में पिस्तौल ताने कविता दौड़ पड़ी, रानी साहिबा के महल की ओर।

वारिस, गुलनार और एनी आश्चर्यचकित-से खड़े रह गये।

आज कविता सिंहनी बन गई थी। पति की मृत्यु पर भी मूक रह जानेवाली जबान, बेटे के शोक में आज खुलने जा रही थी। हाथ की पिस्तौल गोली उगलने के लिए तैयार थी। दृढ़ उँगलियाँ घोड़े पर थीं।

रानी साहिबा के कमरे के पास आकर कविता रुक गई।

रानी साहिबा पलँग पर बैठी थीं। परेशान चंचल सामने खड़ा था।

कविता दरवाजे की आड़ में छिप गई। पिस्तौल नीची करके भीतर की बातें सुनने लगी।

"मैं पूछती हूँ कि तुम लोग लम्बी तानकर क्यों सोये रहते हो?" रानी साहिबा तड़पकर बोलीं—"इतनी बड़ी घटना हो गई और तुझे पता तक नहीं? कहे देती हूँ, ऐसे नहीं चलेगा चंचल! या तो अपनी आँखें खोल और इन घटनाओं का पता लगा, नहीं तो तुझे जेल में डाल दूँगी। तू मुझे केवल माँ मत समझ! मैं रानी भी हूँ··· जुर्म को दबाना मेरा काम है।"

"तो क्या मैंने यह सब किया है माँ?" चंचल बोला।

"किया हो या नहीं, मगर अचल नहीं रहा, तो तू ही उसका काम सँभाल। मुझे पता लगाकर बता कि वे लोग कौन थे जो उसे उठाये जा रहे थे?"

"सारी दगाबाजी भाभी की है माँ! वह मुझे बदनाम करना चाहती हैं। सब लोगों से कहती फिरती हैं कि अचल भैया को मैं ही निगल गया···खुद रात को पराये पुरुषों से मिलती हैं।"

"क्या बकता है तू लड़के ?"

"भैया थे तब की बात है। मुझे पता लगा था कि कोई आदमी उनसे रात के वक्त मिलने आया था, जिसके साथ वे बैठक में काफी देर तक रहीं और वारिस का बच्चा पहरा देता रहा। झूठ नहीं कहता माँ ! जब ऐसी आदत है भाभी की तो कभी तुम भी जान लोगी।"

सुनते-सुनते कविता का क्रोध उमड़ पड़ा। यह आस्तीन का साँप सबको डँस चुकने पर भी सीना ताने खड़ा है !

उसका हाथ उठा। पिस्तौल सीधी हुई। उँगली घोड़े पर जमकर बैठ गई।

तभी पलँग के उस पार नीचे से किसी बालक का स्वर सुनाई पड़ा—"लानी माँ ! मैं घोला लूँगा लकली का।"

सुनकर कविता चौंक पड़ी। पिस्तौल छूटकर जमीन पर जा गिरी।

"मेरा ललित !" पागल की तरह दौड़ पड़ी कविता कमरे के अन्दर।

पलँग के उस पार, बैठकर खेलते हुए ललित को उठाकर उसने अपने सीने में छुपा लिया। आँखों से बेतरह पानी बहने लगा।

"ललित !···मेरा बच्चा !" हिचकियाँ ले-लेकर वह ललित का मुख चूमने लगी।

"अरी ओ ललित की बच्ची !···छोड़ उसे, पहले इधर मुझे जवाब दे।" रानी साहिबा ने कहा।

कविता ललित को छोड़कर उठ खड़ी हुई। बच्चे को पाकर उसका सारा क्रोध पानी बन गया था। मुख की वेदना अजीब ढंग से मुस्करा रही थी।

"मैं यह पूछती हूँ कि उस बड़े कुँवर के मरते ही तू क्या पागल हो गई है ?···अपने को तो भूलती ही जा रही है, मगर इस खिलौने का भी क्या तुझे कुछ गम नहीं ?···देख बहू ! तुम सब ऐसे रहोगे तो एक-एक को निकाल बाहर करूँगी !"

"वारिस इसे टहलाने ले गया था माताजी !"

"मगर उसे चारदीवारी के बाहर जाने की क्या जरूरत थी ?

आने दो उस वारिस के बच्चे को ! छड़ी से मार-मारकर उसकी जान न ले लूं तो कहना । हूँ:! टहलाने ले गया था ! फूल-सा बच्चा कहीं इतनी दूर टहलाया जाता है कि हवा लगते ही मुरझा जाय ?"

"मैं इसे ही खोजने दौड़ी आई थी माताजी !"

"चुप रह बहू ! मेरा महल कोई भूलभुलइयाँ नहीं है कि यहाँ खोजने दौड़ी आई । यह तो कह कि मेरी नजर उन बदमाशों पर पड़ गई । हवा खाकर लौट रही थी कार पर, तो उस बाहरवाले बगीचे के पीछे से किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी । कार रोककर दौड़ी गई । मुझे देखते ही वे शैतान भाग गये । देखा तो वह ललित था ! तुम लोग इतने लापरवाह क्यों हो गये हो कि कोई तुम्हारा गला काटकर चल दे और तुम्हें खबर भी न हो जरा-सी ? इसे पैदा करते वक्त तुझे पीड़ा नहीं हुई थी क्या कविता ?···हुई थी तो इसकी परवाह क्यों नहीं करती तू ? मिट्टी के खिलौने की तरह क्यों इसे इधर-उधर फेंकती चलती है ?···तुम सब लोग बागी हो गये हो । अचल चला गया, मगर मैं मरी नहीं । अब ललित को मारकर तुम सब लोग मेरी जान लेना चाहते हो ताकि इतनी बड़ी रियासत तुम्हारी हो रहे । मैं अन्धी नहीं । एक दिन सबको जेल में कर दूंगी ।"

चंचल सन्नाटे में आकर खड़ा हुआ सब सुन रहा था । यद्यपि रानी साहिबा वे सब बातें सबको लक्ष्य कर कह रही थीं, परन्तु चञ्चल को लगा, जैसे उसी के लिए यह सब कहा जा रहा है, जैसे रानी साहिबा के अन्तर में उसके प्रति कोई शंका घर कर गई है, जिसे वे अव्यक्त रूप से व्यक्त कर रही हैं ।

रानी साहिबा कहे जा रही थीं—"बहू ! अब तू चल दे यहाँ से । इस ललित की तू नहीं सँभाल करती है ; यह तुझे अब मिलेगा भी नहीं । मैं जानती हूँ हमारे बहुत-से दुश्मन पैदा हो गये हैं । अब तक जितनी खुराफात हो रही हैं, सबका कारण मैं समझती हूँ, फिर भी खामोश हूँ । वक्त आने पर जो कसूरवार साबित होगा उसे फाँसी दे दूंगी ।"

सुनते-सुनते चञ्चल का सिर चकरा गया । यह तो सीधा उसी के ऊपर कटाक्ष है ।

"माताजी ! ललित को ले जाऊँ ?" कविता ने प्रार्थना की।

रानी साहिबा तड़पकर बोलीं—"नहीं, कभी नहीं ! ललित मेरे साथ रहेगा !···तू उसे खो देगी बहू ! हठ करेगी तो निकाल बाहर करूँगी···जा यहाँ से ! चञ्चल ! तू भी चल दे अब। ओ रे ललित ! इधर आ बेटा !···लकली का घोला लेगा ?"

"लूंगा लानी माँ !"

"यहाँ रहेगा तू ?"

"जलूल ! हमको मिठाई दोगी लानी माँ ?"

"जलूल !" रानी साहिबा ने भी उसी टोन में जवाब दिया।

कविता हँसने लगी। चञ्चल चला गया था।

ललित को पाकर कुँवरानी सब-कुछ भूल गई थी। ललित चाहे उसके पास रहे चाहे रानी साहिबा के पास। रानी साहिबा के महल में वह एकदम सुरक्षित रहेगा।

O

सूरज उगता और गर्मी उगलकर चला जाता। चाँद आता और चाँदनी बिखेर डूब चलता। दिन आते तो चहल-पहल मच जाती। रातें आतीं तो सपने जग पड़ते।

समय तूफानी गति से निकल जाता है और इन्सान की आँखें देखकर भी नहीं देखतीं।

कई महीने बीत चुके।

याद की पीड़ा ढल चली है। गुजरे लोगों की सूरत लोग भूलते जा रहे हैं। वेदना के आँसू अब पलक के कोरों पर नहीं उतराते।

कविता का गम अब बहुत-कुछ दूर हो चुका है। ललित तभी से रानी साहिबा के पास रहता है। उससे निश्चिन्त होकर अब कविता और भी असावधान हो गई हे।

चञ्चल ने अब ललित की जान लेने का विचार त्याग दिया है। रानी साहिबा के महल में उसकी एक भी चल नहीं चल सकती। रानी साहिबा इधर चंचल से कुछ होशियार भी रहने लगी हैं, जिसका आभास चंचल को उनकी बातों से अक्सर मिलता है। वह भी अब जल्दबाजी करके कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहता, जिससे रानी साहिबा के सन्देह का अंकुर पनपकर वृक्ष का रूप धारण करे।

एनी भी चंचल से दूर हो गई है। कई बार वह उससे मिलने उसके घर पर भी गया, परन्तु उसकी माँ ने उससे मिलने न दिया।

चञ्चल उससे अब मिलना भी नहीं चाहता। उसकी आँखों की सारी प्यास अब कविता की ओर केन्द्रित हो गई है। कविता यदि उसपर सदय हो जाती है तो उसकी वासना को एक आकर्षक आधार मिल जाता है और रियासत भी उसकी होकर रह जाती है।

आजकल वह कविता का बहुत खयाल रखता है। दिन में कई-कई बार वह उससे मिल आता है। कभी-कभी रात के दस बजे तक वह अपनी भाभी के पास बैठा-बैठा मीठी-मीठी बातें किया करता है।

वह उसे हँसाने की कोशिश करता है और ऐसा भाव प्रदर्शित करता है, जैसे उसके एक-एक सुख के पीछे वह बेकरार है, उसकी जरा-सी फीकी हँसी के लिए वह पागल है।

कविता सब-कुछ समझती है।

चञ्चल की सारी खुशामद उसे भाती नहीं, फिर भी वह अपने पति के छोटे भाई के साथ उपेक्षा का व्यवहार नहीं कर पाती कभी।

और इसीलिए चंचल की आशा उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही है। वह समझ रहा है कि धीरे-धीरे बुलबुल उसके जाल में आ फँसेगी।

रात सयानी होती जा रही थी। काली चादर चारों ओर खूब तनी थी। कविता सोने की तैयारी कर रही थी। पलँग पर लेटी-लेटी नींद लाने के लिए कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थी।

तभी—

"भाभी! ···सो गई क्या तुम?"

कविता ने सिर उठाया तो चञ्चल को भीतर आते देखा; चौंक पड़ी वह।

इतनी रात को उसके कमरे में चञ्चल को देखकर कोई क्या समझेगा?

चञ्चल ने धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया, फिर आकर कविता के साथ पलँग पर बैठ गया।

कविता उठ खड़ी हुई; बोली—"इतनी रात को कैसे आये

कुँवर ?…कोई देख ले तो क्या कहे ?"

"कहेगा क्या भाभी ?" चंचल हँसा—"तुमसे मेरा अटूट सम्बन्ध है। भाभी के पास आने के लिए मुझे दिन और रात की पाबन्दी नहीं। तुम उठकर खड़ी क्यों हो गई ? दरवाजे की सिटकिनी लगा दूँ क्या भीतर से ?"

और कहता-कहता चंचल उठकर दरवाजे की सिटकिनी भी बन्द कर आया।

कविता का माथा ठनका, फिर भी वह संयत स्वर में बोली—"दरवाजा क्यों बन्द कर दिया तुमने ?"

"ताकि किसी के आने का डर न रहे।" बोला चंचल एकटक कविता का सौन्दर्य पीता हुआ।

"कोई काम है क्या छोटे कुँवर ?" कविता ने पूछा।

"नहीं तो ! शाम को आज तुम्हारे पास नहीं आ सका था, सो तबीयत बेचैन थी भाभी ! इस समय अवकाश मिलते ही दौड़ा आया हूँ। न कहोगी चंचल के लिए दिल…बेचैन रहता है तुम्हें देखे बिना। ऐसे कब तक चलेगा भाभी ?"

"कैसे ?"

"तड़पते-तड़पते।"

"कौन तड़प रहा है ?"

"तुम भाभी और कौन ?…तुम्हारा यह जोगन का रूप मुझसे देखा नहीं जाता।"

"तो आँखें बन्द कर लो अपनी।"

धीरे-धीरे कविता अलमारी के पास पहुँच गई थी, पीछे हटते-हटते।

"तुम मजाक करती हो भाभी ! इसीलिये तो मैं तड़प रहा हूँ तुम्हारे लिए…इधर आकर बैठो न ! भैया के गम में तुम कब तक घुलती रहोगी ? यह चंचल भी तुम्हें कम प्यार नहीं करता।"

"मैं जानती हूँ कुँवर ! तुम मुझे बहुत चाहते हो। अगर तुम्हारी आँखों में बीघे-दो-बीघे जगह होती तो मेरे रहने के लिए वहाँ एक बँगला तुम बनवा देते।" कविता बनावटी मुस्कराहट होठों पर लाकर बोली।

"बड़ी वैसी हो भाभी ! हर बात में मजाक ! ···एक बात कहूँ, बुरा न मानना ! दिल का दर्द सुना रहा हूँ तुम्हें···सुनकर ठुकरा न देना ! रात-रातभर नींद नहीं आती।"

"डॉक्टर दास के पास जाओ। मेरे पास नींद की कौन-सी दवा रखी है ?"

चञ्चल उठता हुआ बोला—"मेरी दवा तो तुम्हारे ही पास है भाभी ! ···एक खुराक दे दो तो नींद आ जाय, सारा दर्द दूर हो जाय।"

"एक खुराक नहीं, मैं दो-तीन खुराक दे दूं, मगर···दे सकोगे बारह हजार ?" कविता ने गम्भीर स्वर में कहा।

हाथ पीछे करके उसने अलमारी में रखी पिस्तौल उठा ली धीरे से।

बारह हजार की बात सुनते ही चञ्चल का चेहरा पीला पड़ गया ; रुकता हुआ बोला—"क्या कहती हो भाभी ?"

"घबड़ाओ मत कुँवर ? डॉक्टर दास ने तुम्हारे साथ दगा नहीं की है। यह भेद तो मुझे वारिस के जरिये मालूम हुआ है। मैं सब-कुछ जानती हूँ चञ्चल ! ···पति को खोकर भी मैं खामोश हूँ, केवल उस देवी का खयाल कर जिसने तुम-जैसे राक्षस को जन्म दिया। तुम्हारी चालबाजी की बातें सुनकर रानी माँ आत्महत्या कर लेंगी।"

कहते-कहते कविता का स्वर कठोर हो चला था। काँपते हाथ में पीठ-पीछे पिस्तौल दबी थी चुपचाप।

अपने लिए राक्षस का सम्बोधन सुनकर चंचल की भवें तन गईं। क्रूर हँसी हँसकर बोला वह—"तो तुम सब जानती हो भाभी ? और माँ से कहने का साहस तुममें है नहीं, यह भी अच्छा ही है मेरे लिए। मुझे कुछ छिपाना नहीं है तुमसे। इस समय मेरा रास्ता साफ है। मैं ही राजा हूँ। मुझे पसन्द कर लो तो तुम भी रानी बनकर ऐश करोगी भाभी !"

"मुझे नहीं करना है। भला चाहो तो चले जाओ यहाँ से !" कविता जोर से बोली।

"मैं जाने नहीं आया हूँ भाभी ! तुम्हें अपनी बनाने आया हूँ।"

कहकर चंचल झपटा कविता की ओर।

"दूर खड़े हो जाओ चंचल!...ठीक नहीं होगा, मेरा बदन छुओगे तो!" चिल्लाई कविता।

"धीरे-धीरे बोलो भाभी! चीख सुनकर नौकर-चाकर इकट्ठे हो जायेंगे, फिर वह बात जिसे केवल हम दोनों को ही जानना चाहिये, सभी की जबान पर होगी।"

चंचल ने कविता का हाथ पकड़ना चाहा।

तभी चमककर एक काली-सी पिस्तौल बीच में आ तनी।

चौंककर चंचल दो कदम पीछे हट गया। फिर हँसता हुआ बोला—"पिस्तौल का मुझे डर नहीं; बड़े शौक से मेरी जान ले लो तुम। मगर मरते दम तक मेरी जबान यही रटेगी कि भाभी गैरों से रात में मिलती थी; मैंने देख लिया तो मेरी जान ले ली। फिर तो मरते आदमी की बात को कौन झूठ समझेगा? माँ के सामने तुम कौन-सा मुख दिखाओगी! वफादार वारिस तुमपर थूक देगा घृणा से। चलाओ न गोली! पिस्तौल की नली नीचे झुकी जा रही है! हाथ काँप रहा है तुम्हारा!"

और कविता के कम्पित हाथों से छूटकर जा गिरी पिस्तौल जमीन पर।

"चिल्लाना चाहो तो चिल्लाओ! लोग आकर देखें कि एक विधवा अपने देवर के साथ इतनी रात को बन्द कमरे में क्या कर रही है? उनसे सब-कुछ बता दूँगा भाभी! तुमने हमको बुलाया था अपनी हसरत मिटाने के लिए, इसे सुनकर लोग बड़े खुश होंगे। माँ तो तुम्हें देवी ही समझेंगी। सिर नीचा किये क्या सोच रही हो रानी? जो कुछ करना हो जल्दी कर डालो, वर्ना मैं आगे बढ़ता हूँ।"

कविता ने अपना सिर पकड़ लिया और बदहवास-सी होकर दीवार से लग गई।

शिकार को विवश देखकर शिकारी की आँखें चमक उठीं।

झुककर जमीन पर पड़ी हुई पिस्तौल उठा ली चंचल ने और उसे ले-जाकर अलमारी में रख दिया।

फिर कविता के शरीर को अपने हाथों में बाँधता हुआ बोला—"देखा रानी! चंचल कभी हारता नहीं। शेर के पास कोई हथियार

नहीं होता, केवल अपनी ताकत होती है !···आओ, पलँग पर बैठो।"

डोर में बँधी पतंग-सी कविता खिंची चली गई पलँग पर।

आज वह लुटी हुई नारी और लुटेगी, सब-कुछ खोकर। उसके शरीर पर जो थोड़ा-सा गोरा चाम बच रहा है, उसपर भी अब धब्बा लग जायगा कलङ्क का, बदनामी का, चरित्रहीनता का।

कविता बेहोश हो चली।

⊙

"कभी-कभी तो तुम दिन में दस-बारह बार दिखाई पड़ोगे और कभी दस-दस दिन तक गायब रहोगे ! कुछ पता ही नहीं लगता मुझे कि तुम कहाँ लुप्त हो जाते हो ?" चंचल ने जमुना से कहा।

इस समय वह अपने महल के एक कमरे में बैठा हुआ था और उसके सामने खड़ा था जमुना।

"क्या करूँ, छोटे कुँवर !" बैठता हुआ जमुना बोला।

"करोगे क्या ?···दस दिन के बाद आज तुम्हारी काली सूरत दिखाई पड़ी है। ऐसा ही है तो तुम मेरा साथ छोड़ दो।"

"अब तो मौत ही साथ छुड़ायेगी छोटे मालिक !···आप सुनिये तो ! बात ऐसी है कि मुझे बुखार आ गया था, ऐसा कि आज पूरे दस दिनों के बाद चारपाई छूटी है। मैं तो खुद परेशान था आपसे मिलने को। इधर का समाचार कुछ बताइये। बहुत डोरे डाल रहे थे, पतंग कटी या नहीं ?"

"कटते-कटते फिर उड़ गई जमुना ! क्या कहूँ अपनी किस्मत को ?" ठण्डी साँस लेकर बोला चंचल।

"बड़ी ठण्डी साँसें भर रहे हैं, बात क्या है ?" जमुना ने पूछा।

"क्या बताऊँ ! उस रात भाभी को फाँस चुका था, सिर्फ दस मिनट देर थी कि माँ पहुँच गईं।

"रानी साहिबा ?···बाप रे बाप !···उतनी रात को वे वहाँ कैसे पहुँच गईं ?"

"पता नहीं।" चंचल बोला—"दरवाजा बन्द पाकर उन्होंने खटखटाया। मैंने खोला। माँ का चेहरा गम्भीर हो गया था। मैं तो डर गया था। मगर माँ ने मुझसे कुछ नहीं कहा। भाभी से

बोलीं—ललित सो नहीं रहा है, बड़ा परेशान करता है बहू !... इसके बाद मैं वहाँ से चला आया।"

"फिर ?"

"दूसरे दिन मुझसे माँ ने पूछा कि मैं भाभी के कमरे में उतनी रात बीते क्यों गया था, तो मैंने कह दिया कि भाभी ने बुलाया था। भाभी को माँ की नजरों से गिराना है न, इसीलिये मैंने कहा।"

"रानी साहिबा सब-कुछ जान तो नहीं गईं ? बन्द कमरे के बाहर खड़ी-खड़ी सुनती न रही हों सब-कुछ, और मौका देखकर खटखटा दिया हो दरवाजा।"

"शक तो मुझे भी है जमुना, कि माँ मेरी चालों को बहुत-कुछ समझ गई हैं परन्तु उनकी आकृति देखकर मुझे विश्वास नहीं होता। जान लेने पर वे अब तक चुप न रहतीं···मगर भाभी तो सभी-कुछ जानती है।"

"तो क्या उससे कुछ कम डर है ?"

"नहीं, माँ से मेरी शिकायत करने का उसमें साहस नहीं, इसका मुझे पक्का विश्वास है। जो स्त्री पति की मौत पर भी अपनी जबान बन्द रख सकती है, वह छोटी-छोटी शिकायत लेकर माँ के सामने नहीं जायगी।"

"आगे इरादा ?"

"मैंने चाल चल दी है।" बोला चंचल—"भाभी से मुझे अब कोई आशा नहीं। जोर-जबरदस्ती से तो चाहे वह दो क्षण को आत्म-समर्पण कर दे, मगर उसे हमेशा के लिए अपनी बनाना एक सपना है। अब ऐसी चाल फेंकी है जमुना, कि एक ही बार में भाभी और ललित दोनों का सफाया ! थोड़ी-सी हिम्मत कर जाओ, तब देखो कि क्या गुल खिलता है।"

"अपनी चाल आप मुझे समझाइये, हिम्मत की कमी जमुना में नहीं।" उत्सुक होकर बोला जमुना, भयानक मुख पर हँसी लाकर।

जमुना के कान में जाने क्या कहता रहा चचल थोड़ी देर तक। जमुना भी बड़े गौर से सुनता रहा ; फिर बोला—"पक्की चाल है छोटे कुँवर ! इस बार तो जमुना जीतकर ही लौटेगा।"

"मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता···माँ को सन्देह हो जायगा।

सारी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। वारिस साथ रहेगा। होशियार रहना! जीतकर लौटोगे तो भरपूर इनाम के लिए कोट के सभी जेब खाली किये आना।"

"आप विश्वास रखें छोटे कुँवर!"

"तो तुम जाओ अब, मैं भी जरा माँ से मिल लूँ; देखूँ उधर का क्या हाल है।"

जमुना चला गया।

चंचल कपड़े बदलकर रानी साहिबा के महल की ओर बढ़ा।

अपने कमरे में रानी साहिबा पलँग पर लेटी थीं। ललित इधर-उधर दौड़कर खेल रहा था।

तभी तेजी के साथ कविता वहाँ आ पड़ी।

देखकर रानी साहिबा बोलीं—"आओ बहू! ललित को देखने आई हो या मेरा पाँव देखने? पूछो मत बहू! कल से ही गठिया तेज हो गई है। रातभर दर्द से परेशान रही। इस समय तो कुछ आराम है, मगर दर्द उठता है तो हिलना-डुलना मुश्किल हो जाता है। बैठो कविता!"

कविता बैठ गई। रानी साहिबा के मुख की ओर उसने देखा तो आश्चर्यचकित रह गई।

चेहरे पर गम्भीरता के पीछे छिपी हुई गहरी वेदना की स्पष्ट छाया झलक रही थी। लगता था, जैसे कोई गुप्त चिन्ता उन्हें दिन-रात सताया करती है। पीड़ा से वे घुलती जा रही हैं।

"माताजी! तबीयत तो आपकी ठीक रहती है न?" पूछा कविता ने।

रानी साहिबा करुण स्वर में बोलीं—"बूढ़ी तबीयत का क्या पूछना बेटी? साँस चलती चले, इतना ही बहुत है।...एक बात बता, चंचल इधर फिर पास गया था कभी?"

"नहीं तो!" चौंककर कविता बोली—"क्यों?"

"ऐसे ही पूछ बैठी। जानती हूँ कि मेरी बहू लक्ष्मी है; वह कोई ऐसा काम नहीं करेगी, जिससे राजा साहब के खानदान में धब्बा लगे, मगर चंचल को क्या कहूँ कविता? इतना बड़ा हो गया, फिर भी समझ नहीं आई उसे। कोई गलती की हो उसने तो

माफ करना बेटी ! इस बूढ़ी का खयाल करके।"

"आप यह कहती क्या हैं माताजी ? छोटे कुँवर से मुझे कोई शिकायत नहीं। उन्होंने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे मुझे दुःख पहुँचे।"

"मैं सब समझती हूँ कुँवरानी ! तू मुझे समझाने की कोशिश मत कर ! दुनिया देख-देख बूढ़ी हो चली, मगर नारी की कोख से साँप पैदा होते नहीं देखा।"

कविता चौंककर रानी साहिबा का मुख देखने लगी।

तो क्या रानी साहिबा भी कुछ-कुछ जानती हैं ?

"यह तेरे हाथ में कैसा कागज है कविता ?···कोई चिट्ठी है क्या ?"

"मैं इसीलिए तो आई थी, मगर भूली जा रही थी।" कहकर कविता ने वह कागज रानी साहिबा के आगे रख दिया।

वे उसे पढ़ने लगीं।

"तेरे मैके का पत्र है यह तो बहू ! तबीयत ज्यादा खराब है तेरे पिता की, पता नहीं कब चल बसें। तुझे बुलाया है, साथ ही ललित को भी। यह किसकी चिट्ठी है कविता ?"

"मुनीमजी ने लिखी होगी।"

"बूढ़े हो गये तेरे पिता। कौन जाने इस बीमारी में क्या हो ?··· कल से ही बोली बन्द है··· तुझे जाना ही चाहिये बेटी !"

"मैंने सब तैयारी कर ली है माताजी ! बाहर कार खड़ी है। वारिस भी जा रहा है · ललित को लेने आई हूँ।"

"ललित को तो यहीं छोड़ जा कविता ! अब तो इसके बिना जी नहीं लगता। गठिया आ गई, नहीं तो मैं खुद चलती तेरे साथ।" बोलीं रानी साहिबा।

"कहीं पिताजी को कुछ हो गया तो फिर ललित को देखने की लालसा अधूरी ही रह जायगी। मैं इसे कल ही भेज दूंगी माताजी !"

"नहीं-नहीं, अकेले मत भेजना इसे नौकरों के साथ। वहाँ होशियारी से रहना और इसे अपने साथ ही लेकर आना। दर्द कुछ कम हुआ तो मैं भी कल-परसों तक आकर देख लूंगी। ओ ललित ! जा माँ के साथ।"

खेलता हुआ ललित रानी साहिबा के पास आकर बोला—"लानी माँ! तुम हमको अपने महल छे निकाल रही हो?"

"नहीं बेटा! तू जाकर अपने नाना को देख आ, मैं भी कल आऊँगी वहाँ।"

"नाना मुझे लकली का घोला देंगे लानी माँ?"

"हाँ···अब जा राजा बेटा!"

कुँवरानी ने ललित को गोद में उठा लिया।

तभी आ पहुँचा चंचल!

कविता मुँह फेरकर बाहर चली गई। चंचल की ओर देखा भी नहीं उसने।

मगर रानी साहिबा ने इस बात को बड़े गौर से देखा।

बाहर कार खड़ी थी, छोटी, मगर तूफान-सी चलनेवाली।

ड्राइवर काफी हट्टा-कट्टा था और उसी की बगल में बन्दूक लिये बैठा था वारिस, तन्दुरुस्त बरगद-जैसा।

कविता को देखकर ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया। वह ललित के साथ पिछली सीट पर जा बैठी।

ड्राइवर ने कार स्टार्ट की तो वारिस बोला—"देखो भाई शंकर! कार खूब तेज ले चलो। दुश्मन हमारे हजार हैं···खुदा कसम, जाने क्यों हाथ काँप रहा है मेरा!"

कार भाग चली। छोटा-सा शहर शीघ्र ही खत्म हो गया। हरे-भरे खेतों से घिरी सड़क गुजरने लगी। कभी-कभी दूर पर गाँवों की झोपड़ियों की दीवारें दिखाई पड़ जाती थीं।

कार की रफ्तार चालीस मील थी।

घण्टे-भर के बाद ही सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी खुशनुमा पहाड़ियाँ दौड़ने लगीं। कोसों तक कहीं गाँव-गिराँव का नाम नहीं। बड़े-बड़े दैत्याकार पेड़ों के अतिरिक्त गुजरनेवाले किसी आदमी की बू तक नहीं।

वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देख रहा था। मंजिल का यही हिस्सा सबसे सुनसान और खतरनाक था, और वारिस के ऊपर इस समय दो कीमती जानों का भार था।

एकाएक वारिस चौंक पड़ा।

तेज स्वर में वह ड्राइवर से बोला—"भाई शंकर ! खुदा कसम, कार की चाल कम कर दो···फौरन !"

वारिस के घबड़ाये स्वर ने कविता को चैतन्य कर दिया।

"क्या है वारिस ?" पूछा उसने।

"होशियार हो रहिये हुजूर !···खुदा कसम, वारिस का कलेजा बेकार नहीं धड़कता। सामने देखिये···सौ हाथ की दूरी पर। किसी बदमाश ने हमारी कार को रोकने के लिए सड़क पर इस पार से उस पार तक एक मोटा रस्सा बाँध दिया है।"

ड्राइवर ने भी शायद देख लिया था। उसने कार की रफ्तार कम कर दी। मगर तेज जानेवाली कार रुकते-रुकते भी सड़क पर बंधे हुए रस्से से दस हाथ की दूरी तक पहुँच गई।

उसी समय वारिस चिल्लाया—"कार घुमाकर पीछे दौड़ा ले चलो ! यहाँ एक मिनट भी न रुको !"

ड्राइवर ने कार घुमाई।

तभी न जाने कहाँ से निकलकर सात-आठ आदमियों ने कार को चारों ओर से घेर लिया।

वारिस बन्दूक रखकर नीचे कूद पड़ा। सामने के दो आदमियों को दोनों हाथों से घूंसे जमाकर उसने गिरा दिया। फिर वह चिल्लाकर बोला—"शंकर ! तुम भी आओ जल्दी ! इन बदमाशों से निपटना है। खून को पानी बनाकर बहा दो जवान !"

वारिस चिल्ला भी रहा था और प्रबल वेग से उन बदमाशों से लड़ भी रहा था। जो भी इस भीमकाय पहलवान के सामने पड़ता, वह जमीन सूँघने लगता था।

कार स्टार्ट छोड़कर लम्बा-चौड़ा शंकर भी कूद पड़ा। जमकर लड़ाई होने लगी।

"हुजूर ! आप पिस्तौल निकालकर इन शैतानों को दागिये।" वारिस गरजकर बोला—"खुदा कसम ! वारिस की जान जब तक बाकी है, कोई मर्द का बच्चा आपको छू नहीं सकता।"

कुँवरानी इस अचानक आक्रमण से घबड़ा उठी थी। उसे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि अपने बीमार पिता को देखने जाते समय उसपर यह विपत्ति आयेगी।

सभी आक्रमणकारी भिन्न-भिन्न पोशाकों से अपने मुँह और शरीर छिपाये हुए थे, जिससे उनको पहचानना कठिन था।

वारिस की पुकार पर कुँवरानी सजग हुई।

उसने अपनी पिस्तौल उठाई।

धाँय!···

चीखकर एक बदमाश लोट गया।

वारिस के मुँह से खुशी की एक चीख निकली—"एक-एक को ताक-ताककर हुजूर!···जवानी कसम, इन कुत्तों की खाल खींच लूँगा!"

बदमाशों का सरदार थोड़ी दूर पर खड़ा चुपचाप इस भयानक लड़ाई का दृश्य देख रहा था।

कुँवरानी की गोली से अब तक दो बदमाश बेकार हो चुके थे।

सरदार ने धीरे से पिस्तौल निकाली और कविता की ओर निशाना ठीक किया।

तभी लड़ते-लड़ते वारिस की दृष्टि उधर जा पड़ी; चिल्लाया—"हुजूर! सिर नीचा कीजिये···गोली!"

चिल्लाता हुआ वारिस कूदकर सरदार के सिर पर जा पहुँचा।

गोली छोड़ने के पहले ही पिस्तौल जमीन पर जा गिरी। सरदार का मुँह एक ही घूंसे से लहूलुहान हो गया।

"ये लोग आपकी जान लेना चाहते हैं हुजूर!" वारिस पुनः तड़पा—"आप सीट के नीचे छिप जाइये···ललित को भी···"

इस समय वारिस की बहादुरी देखते ही बनती थी। जान की बाजी लगाकर नमक अदा करनेवाला यह नौकर साक्षात् काल बन गया था। जिस्म में एक भी साँस रहते वह कविता की जान और आन पर छाँव किये रहेगा। किसकी मजाल कि उसके पास पहुँच सके!

उधर शंकर भी कम खतरनाक नहीं था।

मालिक के लिए जी-जान से लड़नेवाले इन दो बहादुरों के आगे किराये पर लाए हुए गुण्डे शिथिल पड़ते जा रहे थे।

"शंकर! तुम कार ठीक रखो, मैं आया।"

शंकर कार पर आ बैठा। मशीन पहले ही चल रही थी।

वारिस ने तीन बदमाशों को साथ ही पटका और कूदकर कार पर चढ़ गया।

कार गति में आई।

और देखते-देखते वह काफी दूर निकल गई।

"अब सीट पर बैठ जाइये हुजूर!" वारिस ने कहा।

कविता नीचे से उठकर सीट पर बैठ गई, ललित को भी उसने गोद में बिठा लिया।

"किधर चल रहे हो वारिस?" पूछा उसने। इतनी घबड़ा गई थी वह कि दिशा का ज्ञान भी भूल बैठी थी।

"महल को लौट रहा हूँ हुजूर!" वारिस ने कहा—"खुदा कसम, आगे जाने में बेहद खतरा है। यह छोटे कुँवर की कोई चाल थी सरकार! मेरा दिल कह रहा है कि वह खत नकली है। आपके वालिद हुजूर अभी लाख बरस जिन्दा रहेंगे। सीधे महल पहुँचकर कार रुकेगी अब तो···और तेज शंकर! यह बियावान पीछे छूट जाय तो आहिस्ता चलना।"

कार की तेजी बढ़ी। नीचे भागती हुई जमीन एक भूरे पर्दे-सी नजर आने लगी।

"हमारा पीछा किया जा रहा है···कार की आवाज···" वारिस ने पीछे घूमकर देखा—"कार ही तो है! बड़ी तेज आ रही है। वे ही बदमाश सवार हैं, शंकर! और तेज!"

तभी पिछली कार से धाँय की आवाज आई और एक गोली वारिस के सिर पर से दन्नाती हुई निकल गई।

"हुजूर! पिस्तौल मुझे दीजिये···आप सीट पर लेट जाइये। शंकर! खुदा कसम वे लोग पास आते जा रहे हैं।"

कविता ललित को लेकर सीट पर लेट गई। वारिस पिस्तौल ताने उठ खड़ा हुआ।

धाँय!···

वारिस की गोली छूटी।

और पिछली मोटर पर एक जोरदार धड़ाका हुआ।

"वह मारा!" वारिस खुशी से चीख पड़ा—"उनका पहिया पञ्चर कर दिया मैंने। अब भाग चलो शंकर! दो-तीन कोस रह

गया है शहर। शुक्र है तेरा अल्लाह! वारिस की इज्जत तूने रख ली। अब ठीक से बैठ जाइये हुजूर!"

कविता पुनः उठकर बैठ गई।

पन्द्रह मिनट बाद ही सड़क कुछ चौड़ी मिली, मगर धूल से भरी। आते-जाते दो-एक मुसाफिर भी दीखने लगे।

अधेड़ उम्र का सौदागर टट्टू पर बहुत-सा सामान लादे पैदल ही चला आ रहा था। बेचारा तेज आती हुई कार का धक्का खाते-खाते बचा।

शङ्कर अब भी कार को तेज लिये जा रहा था।

"जरा देखिये हुजूर!" वारिस बोला—"आगे सड़क के किनारे। कैसी अजीब पोशाकें हैं उनकी! खुदा कसम, साँप की खाल पहने हैं। एक छोकरी है, एक जवान···दोनों इसी तरफ देख रहे हैं···"

कहते-कहते वारिस रुक गया और गौर से उस ओर देखने लगा, जहाँ सौ गज आगे सड़क के किनारे एक युवती और एक युवक खड़े हुए कार की ओर आश्चर्य के साथ देख रहे थे। दोनों के बदन पर विचित्र ढंग की पोशाकें थीं।

एकाएक वारिस चौंककर बोला—"हुजूर!···उस जवान को आप देख रही हैं, जो उस लड़की के बगल में खड़ा है?···खुदा कसम, वारिस की आँखों ने कभी इतना बड़ा धोखा नहीं खाया था। वही हैं सरकार!···बिल्कुल वही। अपने बड़े कुँवर साहिब!···या अल्लाह! मेरी आँखों को क्या हो गया है आज? कहाँ अजगर का खौफनाक जबड़ा, कहाँ इस जंगली लड़की का साथ!"

कविता भी उसी ओर देख रही थी।

तभी कार उस स्थान से होकर गुजरी, जहाँ वे दोनों खड़े थे।

वारिस के मुख से खुशी की एक चीख निकली।

कविता के मुख से सुनाई पड़ा गम्भीर स्वर—"शंकर! कार रोको।"

थोड़ी दूर आगे जाकर कार रुकी।

"पीछे लौटाओ!" कविता ने आज्ञा दी—"वारिस, तुम अपने होश दुरुस्त रखो, ज्यादा चिल्लाओ मत!"

मगर सच बात तो यह थी कि उस विचित्र लड़की के साथ

सड़क के किनारे खड़े युवक को एक नजर देखकर ही कविता का भी कलेजा धड़कने लगा था।

हे ईश्वर ! आज यह क्या गुल खिलना चाहता है ?

पीछे घिसटती हुई कार उस स्थान पर आ खड़ी हुई, जहाँ वे दोनों खड़े थे।

कविता और वारिस गौर से उस युवक को देखने लगे।

युवक भी इन्हीं की ओर देख रहा था, मगर इन्हें पहचानने का कोई भाव उसके चेहरे पर नहीं था।

अर्द्ध-पागल-सा वह इन्हें घूर रहा था।

कविता परेशान हो उठी। जिससे कभी मिलने की आशा न हो, उसे सामने देखकर कौन होश में रह सकेगा ?

मगर कविता के जागरण एवं सपनों में, उसकी आँखों पर तिरनेवाली यह प्यारी-प्यारी सूरत आज उसके पास होकर भी उसे पहचानती क्यों नहीं ?

"वारिस ! जाकर पूछो।" उसने आज्ञा दी।

वारिस भी अब तक संभल चुका था। कार से उतरकर वह उधर को चल पड़ा।

उसे आते देखकर उस युवती ने युवक को अपने पीछे कर लिया।

वारिस कुछ बातें करके कविता के पास लौट आया ; बोला—"इनका दिमाग फिर गया है। आप देखती नहीं, सूरत कैसी पागलों-जैसी हो रही है ? ये किसी को पहचान नहीं पा रहे हैं।"

"हैं तो वही न ?" कविता ने पूछा।

इस समय आवेग से उसका चेहरा लाल हो गया था।

"बिल्कुल वही हैं सरकार ! खुदा कसम, जरा भी फर्क नहीं। नाक पर का छोटा-सा तिल आप देख लीजिये।"

"तो ले चलो इन्हें।" कविता ने कहा—"वह लड़की रोके तो धक्का दे दो।"

वारिस घूम पड़ा। पास जाकर उसने उस युवक का हाथ पकड़ा और उसे कार की ओर घसीट ले चला।

युवक छटपटा रहा था। बड़ी कठिनाई से वारिस ने उसे कार के

अन्दर ढकेला और स्वयं उसे पकड़कर कविता के पास बैठ गया।

तभी वह युवती 'परदेसी-परदेसी' चिल्लाती हुई दौड़ी आई तो वारिस ने उसे ढकेल दिया।

कार भाग चली वेग से।

"मुझे छोड़ दो! मुझे जाने दो! मेरी मैना···" वह युवक चिल्ला रहा था और वारिस के हाथों से छूटने के लिए जोर मार रहा था।

वारिस के हाथों में कई जगह उसने अपने दाँत लगा दिये थे।

"हुजूर! बड़े कुँवर साहिब तो एकदम पागल हो गये हैं।" वारिस बोला—"मुझे आप इनके हाथ-पैर बाँधने और मुँह में कपड़ा ठूँसने की इजाजत दें। गुस्ताखी माफ हो सरकार! इनको कब्जे में करना मुश्किल हो रहा है।"

कविता बेहोश-सी हो रही थी। उसने इशारों से अपनी आज्ञा व्यक्त की।

कार खड़ी कर दी गई। शंकर और वारिस ने मिलकर उस युवक के हाथ-पैर कस दिये और मुँह में कपड़ा डालकर आवाज बन्द कर दी।

कार पुनः चल पड़ी।

कविता की आँखों से आँसू बहने लगे—एक आँख से अचल को पा लेने की खुशी के, दूसरी आँख से उसका दिमाग खराब हो जाने के गम के।

"या खुदा! यह सब कैसे हो गया? हुजूर कुँवर साहिब भला अजगर के पेट में जाकर कैसे बच गये? इनका दिमाग कैसे खराब हो गया? मेरे अल्लाह! तू सबको बुलाकर फिर वापस भेज दिया कर ऐसे ही।···अब क्या होगा हुजूर? कुँवर साहिब का दिमाग कैसे ठीक होगा?"

"सब ठीक हो जायगा वारिस!" प्रगाढ़ चिन्ता में निमग्न कविता बोली।

"इन्हें पा लिया है सरकार! मगर खुदा कसम, इनके खो जाने का बेहद डर है। छोटे कुँवर को पता लगा तो आफत मचा देंगे।"

"मैंने सोच लिया है वारिस!" बोली कविता—"जब तक

इनका दिमाग ठीक नहीं होता, मैं इन्हें अपने महल में ही छिपाकर रखूँगी। डॉक्टर दास विश्वासी आदमी हैं। अपनी बीमारी के बहाने उन्हें बुलाकर इनका इलाज कराऊँगी। देखूँ, क्या फल होता है।"

शहर आ गया था। शाम हो चली थी।

चारदीवारी के अन्दर कार घुसी और कविता के महल के सामने आ रुकी।

"तुम इन्हें पीठ पर लादकर चुपके से मेरे कमरे में पहुँचाओ।" कविता ने वारिस से कहा—"कोई देखने न पाये! मैं ललित को रानी माँ के पास छोड़कर अभी आती हूँ, तब तक तुम इनके पास रहना।"

उसने ललित को गोद में उठा लिया और रानी साहिबा के महल की ओर चल पड़ी।

रानी साहिबा लेटी हुई चञ्चल से कुछ बातें कर रही थीं; कविता को देखकर चौंक पड़ीं—"बहू, तू लौट आई?"

'बीच से ही वापस आना पड़ा माँ! वह खबर झूठी थी।"

कविता ने ललित को रानी साहिबा के पास पलंग पर बिठा दिया।

"झूठी खबर थी? क्या कहती है बहू?"

"रास्ते में सात-आठ बदमाशों ने हमपर हमला किया था। वारिस जान पर खेल गया···किसी तरह हम लोग बचकर निकल आये।"

"हूँ···" कहकर रानी साहिबा गम्भीर हो कुछ सोचने लगीं।

चञ्चल तो कविता को देखते ही मुर्दा-सा बन गया था। सोच-विचारकर चली हुई उसकी यह चाल भी असफल रही।

"तू जा बहू!" रानी साहिबा बोलीं—"मुझे कुछ-न-कुछ अब करना ही पड़ेगा। बदमाशों की बदमाशी बढ़ी ही जा रही है। मैं सुबह वारिस को बुलाकर पूछूँगी।"

कविता को भी जल्दी थी। वह उठकर चल पड़ी अपने महल की ओर।

थोड़ी देर बाद चञ्चल भी चला गया।

ललित को गोद में लिये रानी साहिबा कुछ सोचती रहीं। चेहरे

की बूढ़ी नसें कभी-कभी फूल उठती थीं। वेदना की छाया आँखों में आँसू बन दो-चार बूँदों में ढल जाती थी।

कोई भारी चिन्ता थी रानी साहिबा को। कोई दुर्दमनीय कष्ट था जो इस बुढ़ापे में उन्हें कष्ट दे रहा था, उन्हें बेचैन किये जा रहा था।

○

दूसरे दिन शाम को—

चञ्चल अपने कमरे में बेचैनी से टहल रहा है। कल जब से उसने कविता और ललित को अपने जाल से बचकर निकल आते देखा है, क्रोध से वह जल रहा है।

उसे नींद नहीं आती, खाना नहीं अच्छा लगता।

जमुना भी उससे फिर नहीं मिला। मरा है अब तक या जीता, कुछ पता नहीं।

चञ्चल ने कल रात से आज शाम तक पीते-पीते दो बोतलें खत्म कर दी हैं। नशे से भरा हुआ दिमाग और उड़ता जा रहा है।

तभी महल के बाहर किसी कार के रुकने की हल्की-सी आवाज आई और थोड़ी ही देर बाद परेशानी की मुद्रा धारण किये हुए जमुना अन्दर आया।

उसे देखकर चञ्चल का क्रोध और भी उद्दीप्त हो उठा। लपककर वह उसके पास आया; लाल-लाल आँखों से उसे घूरता हुआ बोला—"अब लौट रहे हो जीतकर तुम ?···कल शाम को अपनी सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ी तुम्हें ?···मैं फिर कहता हूँ कि तुम हमारा साथ छोड़ दो, अपना रास्ता लो।"

"सुनिये तो कुँवर !" जमुना बोला—"बातैसी है कि मैं बड़ी परेशानी में पड़ गया था। सब-कुछ बताता हूँ। कल आपके कथनानुसार सात गुण्डों को लेकर मैं उस छोटी-सी पहाड़ी के पास छिपा था। सड़क पर इस पार से उस पार तक हमने रस्सा बाँध दिया था। जैसे ही कुँवरानी की कार आई और रुकी, वैसे ही हम लोग टूट पड़े। वारिस और शंकर ने हमसे जमकर लड़ाई की। मैंने कुँवरानी और ललित पर पिस्तौल तानी, मगर वारिस ने देख लिया। हमें परास्त कर वे भागे। कार पर हमने पीछा किया।

हमारा पहिया पंचर कर दिया। दूसरा पहिया लगाते-लगाते वे लोग काफी आगे भाग चुके थे ; फिर भी हमने पूरी तेजी से पीछा किया मगर वे लोग नहीं मिले।"

"मिला क्या खाक ?"

"खाक नहीं छोटे कुँवर !•• एक लड़की ! किसी विचित्र गाँव की रहनेवाली, मगर बेहद सुन्दर ! देखेंगे आप तो खुश हो जायँगे··· रास्ते में मिल गई। साँप का चमड़ा पहने हुए थी और एक भयानक आदमी उसका हाथ पकड़कर घसीटे लिये जा रहा था। वह भी कोई सँपेरा मालूम पड़ता था। मैंने मोटर रोककर लड़की को छुड़ाया। अपना नाम मैना बताती है छोटे कुँवर ! कहती है, वह एक परदेसी के साथ भागकर शहर आई थी, जिसे कुछ लोग पकड़-कर शहर की ओर ले गये। और उसे घसीटकर ले-जानेवाला उसी के गाँव का टिकोरा नामक एक सँपेरा था, जिसने उसके बाप की जान ली और उसका पीछा करता-करता यहाँ तक आया था। पहले तो वह बहुत उछली-कूदी, मगर जब मैंने उसे यह विश्वास दिलाया कि शहर ले-चलकर उसके परदेसी की खोज करूँगा, तब चुपचाप साथ चली आई।"

"कहानियों पर मुझे विश्वास नहीं होता जमुना !"

"कहानी नहीं कुँवर साहब, सत्य घटना है। वह लड़की मेरे साथ आई है। कल रात में देर ज्यादा हो गई थी, इसीलिए नहीं लाया आपके पास। दिन में उसे लेकर आता तो लोग शङ्का करते, इसीलिए अब शाम को छिपाकर लाया हूँ। पहले आप उसे देख तो लें !"

"ओह !" कुँवर ने कहा और कोच पर जा बैठा।

जमुना बाहर चला गया ; थोड़ी देर में लौटा तो उसके पीछे सिमटी-सकुचाई सौन्दर्य की एक प्रतिमा भी थी।

चंचल एकटक उसे देखता रह गया। आसमान पर एक चाँद है केवल, तो जमीन पर सैंकड़ों हैं, इसका विश्वास करना ही पड़ा चंचल को।

"देखो मैना !" जमुना उस लड़की से बोला—"ये यहाँ के राजा हैं। इन्हें खुश कर दो, ये तुम्हारे परदेसी की खोज करा देंगे।"

"सरकार !" मैना ने लपककर चंचल का पैर पकड़ लिया—"मेरे परदेसी को बुला दो ! तुम्हारे शहर के लोग उसे पकड़ लाये हैं।"

मैना की बोली ने तो चंचल पर और भी गजब ढाया ; अपना पैर छुड़ाकर बोला—"तुम ठीक से बैठो मैना, और मैं जो पूछता हूँ उसका जवाब दो।"

मैना कुछ दूर हटकर जमीन पर बैठ गई ; बोली—"मैं सब-कुछ बता दूँगी सरकार ! मेरा परदेसी मुझे मिल जाय।"

"तुम कौन हो ?"

"मैं दूर गाँव की एक दुखिया हूँ सरकार ! सँपेरों के सरदार की बेटी···नाम मैना है। टिकोरा मुझे बहुत सताता था। मेरे बापू की जान ले ली उसने और खुद सरदार बन बैठा। डरकर मैं अपने परदेसी के साथ भागी, मगर मेरा पीछा नहीं छोड़ा···उसी से इन बाबू ने मुझे बचाया था।"

"परदेसी को तुम प्यार करती हो ?"

"हाँ सरकार···बहुत-बहुत !" कहते-कहते मैना के गाल लज्जा से लाल हो उठे।

"कौन था परदेसी ?···क्या नाम था ?"

"मैं क्या जानूँ सरकार ! टिकोरा जङ्गल से एक दिन अजगर पकड़ लाया था, उसी के पेट से वह निकला था, बेहोश।"

"अजगर के पेट से निकला था ?···आदमी ?" चौंककर बोला चंचल। उसका चेहरा गम्भीर हो चला था।

"हाँ सरकार ! हम लोग अजगर का मांस खाते हैं न ! मेरे बापू ने अपनी दवा और मन्तर के जोर से उसे जिला तो दिया, मगर उसका माथा खराब हो गया था। वह अपना नाम-गाँव सब-कुछ भूल गया था।"

चंचल ने एक गहरी निगाह डाली जमुना पर।

जमुना भी गम्भीर था ; धीरे से बोला—"शायद बड़े कुँवर ही रहे होंगे।"

"तुम घबड़ाओ मत मैना ! मैं तुम्हारे परदेसी की पूरी खोज करूँगा। तुम मेरा कहना मानोगी तो ?"

"मानूंगी सरकार !···आप जो कहें, करने को तैयार हूं, मगर मेरा परदेसी···"

चंचल ने एक आँख दबाकर जमुना को कोई इशारा किया।

जमुना भयानक ढंग से मुस्कराता हुआ बाहर चला गया।

बाहर से दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनकर मैना चौंकी; बोली—"दरवाजा क्यों बन्द कर दिया ?"

चंचल ने झुककर जमीन पर बैठी हुई मैना का हाथ पकड़ उसे खींच लिया और अपने पास बिठाता हुआ बोला—"अभी से घबड़ा गई तुम ?·· परदेसी को पाना चाहो तो मेरे मन की कर दो।"

'मैं बहुत सताई हुई हूँ बाबू !" मैना गिड़गिड़ाकर बोली—"मेरे पास अपना कुछ नहीं···सब-कुछ उस परदेसी का है। नहीं-नहीं···मैं···नहीं···"

तभी दरवाजा खोलकर घबड़ाया हुआ जमुना अन्दर घुसा—"छोटे कुँवर ! रानी साहिबा आ रही हैं।"

"इस लड़की को चटपट कहीं छिपा दो जमुना ! माँ के सामने इसका पड़ना ठीक नहीं।" चंचल परेशान स्वर में बोला।

जमुना ने मैना का हाथ पकड़ लिया और उसे घसीटकर ले चला। तभी—

"उसे छोड़ दो जमुना !" दरवाजे पर खड़ी रानी साहिबा का गम्भीर सुनाई पड़ा।

मैना का हाथ छोड़कर जमुना दूसरी राह से बाहर भागा।

चंचल का सिर नीचा हो गया। चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

मैना आश्चर्य से उस बूढ़ी नारी की ओर देखने लगी, जिसे देखते ही दो-दो नरपिशाच पंगु बन गये थे।

रानी साहिबा भी गौर से उसकी ओर देख रही थीं। इन्सान को साँप की खाल पहने उन्होंने आज ही देखा था।

"तू कौन है बेटी ?···यहाँ क्यों आई है ?" रानी साहिबा ने पूछा।

"मेरा नाम मैना है मैया !···मेरा परदेसी खो गया है।"

"माँ ! यह लड़की जमुना को मिल गई थी। मैं इससे अभी-अभी इसका परिचय पूछ रहा था कि तुम आ गईं।" चंचल बोला

साहस करके।

"हूँ ..." रानी साहिबा वैसे ही गम्भीर स्वर में बोलीं—"इसका कोई खो गया है शायद ?"

"किसी परदेसी के साथ यह शहर तक आई है। बेचारी अनजान जगह में आकर बड़ी परेशान हो उठी है। मैं इसे आपके पास ही भेज रहा था, परन्तु यह जा ही नहीं रही थी। जमुना इसे घसीटने लगा कि आप आ पहुँचीं।" चंचल बराबर अपनी सफाई दिये जा रहा था।

"यह मेरे पास रहेगी।" रानी साहिबा बोलीं—"चलो मैना, तुम्हारा जब तक जी चाहे, मेरे साथ रहना। परदेसी तुम्हारा मिल जाय, तो चली जाना।"

कहकर रानी साहिबा घूम पड़ीं। मैना भी उनके पीछे-पीछे कमरे से बाहर हो गई।

चंचल हाथ मलने लगा। मैना उसे अँगूठा दिखा चली गई थी।

O

कविता को अचल मिला सही, मगर अन्धा-गूँगा-बहरा होकर।

वह उसे देखता है, मगर पहचानता नहीं। उससे कभी प्रेम की बातें नहीं करता। वह सुनता है ; मगर जवाब नहीं देता।

कविता जानती है कि अचल का मस्तिष्क विकृत हो गया है। वह पिछली सारी बातें भूल गया है। वर्तमान को पाकर अतीत की स्मृति उसे नहीं, तभी तो वह दिन-रात मैना-मैना रटा करता है।

पति का दूसरी स्त्री के पीछे पागल होना, पत्नी पर सबसे बड़ा प्रहार है। फिर भी कविता सब-कुछ सहन कर रही है।

विक्षिप्त पति की वह बच्चे की तरह सेवा करती है, उसे दुलारती-पुचकारती है, परन्तु अचल की जबान पर एक मैना ही जीवित है। अन्य सभी लोग मर चुके हैं उसके लिए। कभी-कभी टिकोरा का नाम लेकर वह दाँत पीसता है।

वह अवसर पाकर भाग जाना चाहता है। कविता तो दूसरों से उसकी छाया तक को बचाती है। अचल पहले से ही असावधान था, अब तो पागल ही हो गया है। चंचल को पता लग जाय तो वह उसकी जान लेने के लिए जमीन-आसमान एक कर दे।

इसीलिए कविता उसे एक एकान्त कमरे में बन्द रखती है; अपनी बीमारी का बहाना करके वह किसी से मिलती-जुलती नहीं; दिन-रात अचल के पास बनी रहती है।

मगर अचल उसे देखते ही कुछ इस तरह से डर जाता है, जैसे किसी मासूम बच्चे के आगे कोई चुड़ैल आ पड़ी हो। वह उसकी कुछ सुनता नहीं। कभी-कभी वह उसके पैर पकड़कर मैना से मिला देने की करुण-प्रार्थना करता है। कभी रोते-रोते जमीन पर लोट जाता है।

कविता बेचारी बहुत-बहुत परेशान है।

अब तक अचल के विषय में केवल चार ही व्यक्ति जान पाये हैं—कविता, वारिस, शंकर और डॉक्टर दास। मगर ऐसा ही हाल रहा तो कविता कितने दिनों तक उसे छिपाये रहेगी?

डॉक्टर दास बीमार कविता को देखने के बहाने दिन में दो बार अचल को देखने आते हैं। मगर अचल न तो ठीक से दवा पीता है, न अपनी जाँच करने देता है। बेचारे वारिस को अपने पागल मालिक के साथ कभी-कभी बेरहमी का बर्ताव भी करना पड़ जाता है और उसकी आँखों से आँसू चू पड़ते हैं।

जबर्दस्ती उसे बहुत-सी दवायें खिलाई गईं, इन्जेक्शन भी दिये गये, मगर लाभ कुछ नहीं हुआ।

शाम के समय डॉक्टर दास कविता के कमरे में उपस्थित हैं।

रानी साहिबा पलँग के सामने जड़ाऊ कुर्सी पर बैठी हैं। कविता की बीमारी का हाल सुनकर वे उसे देखने आई हैं।

बेचारी कविता को झूठा बहाना बनाकर, बीमार बन पलँग पर लेटना पड़ा है।

डॉक्टर दास रानी साहिबा को दिखाने के लिए कभी कविता की नाड़ी पकड़ते हैं, कभी उसकी जीभ देखते हैं।

"बहू कब से बीमार पड़ी है, मगर एक दिन भी तो देखने न आ सकी!" रानी साहिबा ने कहा—"गठिया का रोग ही बड़ा विचित्र होता है डॉक्टर! चल-फिर नहीं पाती तो क्या करूँ?···पड़े-पड़े या तो ललित से बातें किया करती हूँ, या उस छोकरी मैना से उसके परदेसी की कहानी सुनती हूँ।"

मना का नाम सुनकर डॉक्टर चौंक पड़ा। यह नाम वह अक्सर अचल के मुख से सुनता आया है।

"डॉक्टर! अजगर के पेट में जाकर भी क्या आदमी जिन्दा बच सकता है ?" रानी साहिबा ने सोचते हुए पूछा।

"सम्भव नहीं।" डॉक्टर बोला—"फिर भी यदि चार-पाँच घण्टों से अधिक देर न हुई हो तो कुछ उम्मीद की जा सकती है। उस हालत में उसे जीवन देना एक्सपर्ट डॉक्टर का ही काम है। बात यह है कि अजगर के पेट में जाकर इन्सान गर्मी से बेहोश हो जाता है, मगर उसकी जान निकलते-निकलते कुछ घण्टे लग जाते हैं। साँप का काटा आदमी इक्कीस दिन तक जीवित रहता है रानी साहिबा!"

"मन्त्रों पर क्या तुम विश्वास करते हो डॉक्टर ?"

"सुना तो बहुत-कुछ है, मगर विश्वास करने का कोई अवसर ही नहीं आया।"

"मैना कहती है कि उसका बापू बहुत-से मन्त्र जानता था और अजगर के पेट से निकले हुए परदेसी को उसने जिन्दा कर दिया था, मगर परदेसी का दिमाग खराब हो गया। विश्वास तो नहीं होता है डॉक्टर, इस कहानी पर।···कहीं मेरा अचल भी ऐसे ही बच गया हो, इस आशा को लेकर आजकल मैं मन्त्रों पर विश्वास करने लगी हूँ। अच्छा चलूँ, तुम ठीक से रहना बहू! अपनी बीमारी का खयाल रखना, जमाना बुरा है।"

उठकर रानी साहिबा चली गईं।

कविता उठ बैठी। रानी साहिबा की यह गम्भीरता उत्तरोत्तर जटिल होती जा रही थी। कविता सुलझना चाहकर भी उलझती ही जाती थी।

वारिस की जबानी कविता को पता लग चुका था कि अचल के साथवाली लड़की को चञ्चल के आदमी पकड़ लाये हैं और वह आजकल रानी साहिबा के महल में रह रही है।

मगर उसने यह आज ही जाना कि मैना के बाप ने अजगर के पेट से निकालकर उन्हें जीवित किया था। अगर ऐसा है, तो मैना के बहुत-से उपकार उसके ऊपर हो चले हैं।

"क्या सोच रहे हैं डॉक्टर साहब ?"

"कुछ नहीं। रानी साहिबा ने अभी जिस लड़की का नाम लिया, क्या वही बड़े कुँवर के साथ थी ?"

"हाँ!" कविता ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं सोचता हूँ, बड़े कुँवर पर इतनी कीमती दवाओं का असर क्यों नहीं हो रहा है ?...असल में ये उसी मैना की याद में बेहद परेशान हैं। जब तक उससे इन्हें मिलाया नहीं जाता, तब तक इनके दिमाग को सुधारने की कोशिशें व्यर्थ रहेंगी, दवायें बेकार होती रहेंगी।"

"डॉक्टर!" कविता चौंककर बोली—"क्या यही रास्ता है ?"

"सिर्फ यही! मैं चलता हूँ, कल सबेरे आऊँगा। आप इस बात पर गौर करें। जब वह लड़की इतने पास है, तो कोई कारण नहीं कि हम उसे बड़े कुँवर से दूर रखकर इनका मर्ज और बढ़ावें।"

कहकर डॉक्टर उठ खड़े हुए।

उसके बाहर जाते ही कविता पलँग पर लेट गई और आँखों से आँसू बह चले; विचारधारायें मस्तिष्क में तूफान-सी उठ खड़ी हुईं।

नारी का कलेजा इतना बड़ा नहीं कि वह अपने पति की गोद में अपने ही हाथों दूसरी नारी को बिठाये।

मगर कविता करेगी सब-कुछ। मैना के कारण ही वह अपने पति को देख सकी है; उसका यह अहसान वह भूल नहीं सकती।

सौत का नाम बुरा होता है, मगर पुरुष की छाया इतनी कम नहीं कि उसमें दो नारियाँ खड़ी न हो सकें।

कविता मैना को अपनी बहन मानेगी। खुश होकर अचल उसे जितना अधिकार देगा, उतने में ही वह सीमित रहेगी। दिमाग ठीक हो जाय उसका, यही चाहती है कविता।

"वारिस!" पुकारा उसने।

"आया हुजूर!" आ गया वारिस।

"देखो, तुम किसी नौकर को रानी माँ के महल में भेजकर उस लड़की को बुलवा लो।...रानी माँ को कहला दो कि गुलनार को बच्चा हुआ है और मेरी तबीयत खराब है, सो मेरे पास सेवा-टहल के लिए उसका होना जरूरी है।"

"खुदा कसम, मैं खुद जाता हूँ हुजूर !"

"नहीं, तुम्हें वह पहचानती है···देखकर वहीं लगेगी चिल्लाने। शंकर को भी मत भेजो···कालीचन्द को भेज दो, जाकर अभी लाये उसे।"

वारिस चला गया। कविता पलँग पर बैठी-बैठी पुनः विचार-सागर में निमग्न हो गई।

आधे घण्टे बाद वारिस मैना के साथ लौटा ; बोला—"यह तो कालीचन्द के साथ आती ही नहीं थी हुजूर ! जब रानी माँ ने डाँटा तो चली आई चुपचाप। दरवाजे पर मुझे देखा तो पैर पकड़कर लिपट गई। अब आप ही इसका परदेसी इसे दीजिये।"

मैना की दृष्टि कविता पर पड़ी तो वह दौड़कर उसके पैरों से लिपट गई ; रोने लगी ; बोली—"सरकार ! मेरा परदेसी आपके किसी काम का नहीं, उसे छोड़ दीजिये ! वह पागल है, मर जायगा। हुजूर, वह मेरे बिना···"

कविता ने उसका हाथ पकड़कर उठाया और प्यार से उसे अपने पास बिठा लिया ; कहने लगी—"मैना ! मैं तुम्हारा परदेसी लौटा दूंगी, मगर एक शर्त पर !"

"मुझे उसकी एक झलक दिखा दो सरकार ! फिर जान भी माँगो तो दे दूं।"

"तुम यह वादा करो कि अपने परदेसी के साथ हमेशा मेरे पास रहोगी।"

"मैं वादा करती हूँ।"

"जब तक उसका दिमाग ठीक नहीं हो जाता, तब तक तुम किसी से भी उसका जिक्र न करोगी। उसे छिपाकर महल के अन्दर रखोगी। उसे कह-सुनकर दवा पिलाओगी।"

"मैं सब-कुछ करूंगी, मगर तुम भी वादा करो कि उसका दिमाग ठीक होते ही तुम मुझसे उसको फिर नहीं छीनोगी।"

"मैं वादा करती हूँ !" कविता ने रुद्ध कंठ से कहा।

"आप बहुत दुःखी हैं सरकार ! मेरे परदेसी के लिए आप इतनी क्यों परेशान हैं ? आपका कौन है वह ?"

"मेरे पति !"

"वह ललित आपका बेटा है ?"

"हाँ !"

मैना के चेहरे पर करुणा खेलने लगी। इतनी बड़ी रियासत का मालिक है उसका परदेसी ! उसके तो गुलाब-जैसी पत्नी और कमल-जैसा बेटा है ! दिमाग ठीक होते ही भला मैना-जैसी नाचीज के लिए उसकी आँखों में क्या जगह रह जायेगी ?

"क्या सोच रही हो मैना ?...मैंने वचन दिया है तुम्हें। मेरा विश्वास करो ! मेरे पति पर पहले तुम्हारा अधिकार होगा, उसके बाद मेरा।"

"मुझे अधिकार नहीं चाहिये सरकार ! मुझे प्यार चाहिये।" मैना रोने लगी—"मेरे परदेसी का दिमाग ठीक होता तो वह कभी मुझसे दिल न लगाता। मगर अब तो गलती हो ही गई। सब-कुछ छीन लेना, मगर मुझे दुत्कारना मत ! नौकरानी की जगह मुझे दे दोगी, तो परदेसी को देख-देखकर जिन्दगी काट लूंगी, और कुछ नहीं चाहिये मुझे।"

"तू कैसी बातें करती है मैना ? मेरी बहन है तू। चल उनसे मिला दूँ तुझे। रानी माँ ने तुझे उनके बारे में कुछ नहीं बताया था क्या ?"

"नहीं, वे सिर्फ मेरी कहानी सुनती थीं, अपनी बात कुछ नहीं बताती थीं। एक बार सिर्फ यही बताया था कि तुम्हारे पति का नाम अचल था, जिन्हें मरे कई महीने हुए।"

"मेरे साथ आ।"

कविता चल पड़ी। मैना भी पीछे हो ली।

आँगन में पहुँचकर कविता ने एक दरवाजा दिखाकर कहा—"उसी में हैं वे, जा मिल आ।"

मैना आगे बढ़ी। दरवाजा बाहर से बन्द था। धीरे से खोला उसने।

भीतर से अचल चीखा—"मुझे जाने दो ! मेरी मैना रो रही होगी।"

"परदेसी !" मैना भीतर घुसी।

अचल ने चौंककर देखा, फिर दौड़कर मैना को अपनी बाँहों में

कस लिया—"मेरी मैना !···तुझसे छूटकर मैंने बहुत दुःख सहे। अब कभी साथ नहीं छूटेगा। यहाँ के लोग बड़े खराब हैं। हम दोनों मौका पाते ही भाग चलेंगे।"

"नहीं ; हम यहीं रहेंगे अचल बाबू !" मैना करुण स्वर में बोली।

"अचल बाबू ? यह कौन है मैना ?"

"यह तुम्हारा नाम है, मैंने रखा है।"

"तुमने रखा है, तब तो ठीक है। मगर···मुझे परदेसी नाम ज्यादा अच्छा लगता है, मुझे उसी नाम से पुकारा करो।···तो यहाँ से नहीं चलोगी तुम ?"

"नहीं ; यहाँ के लोग बड़े अच्छे हैं।"

"तभी तो मुझे पकड़ लाये थे और इस कमरे में बन्द कर रखा था। मैना ! यहाँ मेरा दिल नहीं लग सकता। एक वह है जिसे लोग कुँवरानी कहते हैं और जो मुझे पकड़ लाई थी। बड़ी चाल-बाज है। कहती है, मैं उसका पति हूँ।"

"उन्हें बुरा मत कहो परदेसी ! उन्होंने ही मुझे तुमसे मिलाया है।"

"तब तो बड़ी अच्छी हैं। मगर मुझे जबर्दस्ती पकड़ क्यों लाई थीं ?"

"उन्होंने भूल से तुम्हें अपना पति समझ लिया।"

"अच्छी भूल रही !···भूलना ही था तो भाई क्यों नहीं समझ लिया ?"

"उनके पति कई महीनों से खो गये हैं परदेसी ! चलो, मिल लो उनसे। माफी भी माँग लो।"

"कहाँ हैं ?"

"बाहर आँगन में खड़ी हैं।"

तब तक कविता भी आ पहुँची।

अचल ने उसके सामने पहुँचकर हाथ जोड़ भोलेपन से कहा—"मुझे माफ करें सरकार !···आप भूल से मुझे पकड़ लाईं और मैं भूल से आपको बुरा समझ बैठा। दोनों बराबर हो गये···क्यों मैना ?"

"हाँ !"

"तो अब हम लोगों को इजाजत दीजिये सरकार ! हम लोग बहुत दूर चले जायँ कि आप भूल से फिर कभी हमें पकड़ न सकें।" अचल ने कहा।

"यह क्या कह रहे हो ?" मैना बोली—"हम लोग तो यहीं रहेंगे न ?"

"मगर···अच्छा ठीक है···यहाँ आराम भी तो है। कुँवरानी साहिबा की सेवा हम लोग किया करेंगे। मगर हुजूर से कह दो कि अब दरवाजे की कुण्डी बाहर से बन्द न किया करें। मैं भागूंगा नहीं।"

"आप भागेंगे जरूर।" इस बार कविता बोली।

"मैना ! कुँवरानी साहिबा मुझे 'आप' कहती हैं, सुन लो ! मेरा नाम परदेसी है हजूर, 'आप' नहीं।" अचल हँसकर बोला।

तभी हाथ में बोतल लिये आ पहुँचा वारिस ; कविता से बोला, "यह दवा डॉक्टर साहिब ने भेजी है हुजूर ! अभी लेता आ रहा हूँ। कुँवर साहिब को इसकी एक खुराक अभी पिला दीजिये।" कहकर वारिस चला गया।

कविता ने बोतल मैना को देकर कहा—"लो, इन्हें पिला दो।"

मैना ने गिलास में दवा डालकर अचल के आगे की।

"मगर वह तो कुँवर साहब को पिलाने के लिए कह गया है।" बोला अचल।

"उसका मतलब तुम्हीं से था परदेसी !" मैना ने कहा।

"अजीब रिवाज है यहाँ का ! जो भी आता है, अलग-अलग नामों से मुझे पुकारता है। मेरे कितने नाम हैं मैना ?"

"पहले दवा पी लो तो बताऊँ।"

मैना ने गिलास अचल के होठों से लगा दिया। वह चुपचाप गया। कविता ने सन्तोष की साँस ली।

जो अचल डराने-धमकाने और अनुनय-विनय के बाद भी बिना जबर्दस्ती किये एक घूंट भी न पीता था, वही अब मैना के जरा-सा कहने पर पूरी खुराक एक साँस में पी गया।

"चलती हूँ। तुम दोनों यहीं रहोगे। कोई तकलीफ नहीं होने

पायेगी।" कविता ने कहा।

वहाँ से आकर वह पलँग पर लेट गई। हँसे या रोये, कुछ समझ नहीं पा रही थी।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गये। मैना तथा कविता की सेवाओं से अचल की हालत सुधरने लगी। डॉक्टर नित्य-प्रति देखने आते थे। यद्यपि उसकी याददाश्त के लौटने के कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं पड़ते थे, फिर भी उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा हो चला था। अब वह दवा पीने में हिचकता नहीं। डॉक्टर से जाँच कराने में डरता नहीं। कविता से भी बोल लेता है अक्सर, मगर बात-बात में उसे हुजूर-सरकार कहना नहीं भूलता।"

O

रानी साहिबा अपने कमरे में बेचैनी के साथ टहल रही हैं। बूढ़े पैर क्रोध के आवेश में काँप-काँपकर चल रहे हैं। चेहरा अतिशय गम्भीर है। हाथ की मुट्ठियाँ कसकर बँधी हैं।

दरवाजे पर कुछ खटका हुआ। कविता अन्दर आई। उसके पीछे-पीछे वारिस भी था।

रानी साहिबा की गम्भीरता देखकर कविता का माथा ठनका। वारिस भी सन्न रह गया।

आज जरूर कोई घटना घटी है, जो रानी साहिबा को असह्य हो उठी है, तभी तो वे गठिया का दर्द भूलकर कमरे में टहल रही हैं।

"मुझे···आपने बुलाया है माता जी ?" साहस कर कविता ने पूछा।

"हाँ !···और वारिस को भी, जिसके बाप ने राजा साहब के लिए अपनी जान दे दी थी और जो तुम्हारा वफादार नौकर है। ठीक से खड़े हो जाओ तुम दोनों ! अपने को कैद समझो !" रानी साहिबा के स्वर से क्रोध फूटा पड़ रहा था।

कविता और वारिस चुपचाप खड़े रहे। किसी से बोलते नहीं बना कुछ।

"क्यों रे वारिस ! तूने जो मेरे साथ इतनी बड़ी दगाबाजी की, क्या तेरा बाप यही वफादारी तुझे सिखा गया था ?"

"खुदा कसम, मैंने हुजूर की तो शान में कोई गुस्ताखी नहीं की। अनजाने में ही कोई बेअदबी हो गई हो तो माफी चाहता हूँ रानी माँ!"

"मैं सब जानती हूँ। तेरी सब बदमाशी मुझे मालूम हो चुकी है। मैं तेरी एक-एक बोटी काटकर अलग कर दूँगी छोकरे! तू रोज-रोज डॉक्टर को बुलाने दौड़ा जाता था…क्या सचमुच बहू की तबीयत खराब थी?"

कविता चौंक पड़ी।

मगर वारिस उसी स्वर में बोला—"खुदा कसम! बेहद खराब हुजूर!"

"खुदा के बच्चे! अपना नमक खिला खिलाकर तुझे इतना बड़ा किया, क्या इसीलिए कि तू मुझसे झूठ बोले? मुझे धोखा दे? और यह कविता तो मुझे देखकर पलँग पर ऐसी पड़ जाती थी जैसे महीनों की बीमार हो। मैं पूछती हूँ, तुझे क्या बीमारी थी बहू?"

"सिर में दर्द रहता है माताजी!"

"मैं जानती हूँ तेरे सिरदर्द का कारण!" क्रोध से रानी साहिबा बोलीं—"चुपके-चुपके अपने महल में एक मर्द को छिपा रखना, अपनी बीमारी के बहाने उसकी दवा करना…मुझे तुम लोगों ने अन्धी समझ लिया है क्या? कुल की बहू का अच्छा कर्तव्य निबाहा तूने कविता!…कब की जान-पहचान थी उससे?…बोलती क्यों नहीं?"

कविता क्या जवाब दे? हतबुद्धि-सी वह खड़ी-की-खड़ी रह गई।

उसकी चुप्पी ने रानी साहिबा का क्रोध और भड़का दिया। वे गरजकर बोलीं—"मुँह में जबान है या नहीं?…जवाब क्यों नहीं देती?"

"मुझे क्षमा कीजिये माताजी! मैं यह भेद अभी नहीं बता सकती।" कविता ने काँपते हुए कहा।

"तब कब बतायेगी?" टहलती-टहलती रानी साहिबा पलँग पर जा बैठीं।

"समय आने पर आप सब-कुछ जान जायँगी माताजी!"

बोली कविता।

"तू भी नहीं बतायेगा वारिस ?" इस बार रानी साहिबा का स्वर कुछ धीमा हो गया था।

'खुदा कसम, मैं कुछ नहीं जानता हुजूर !"

"सब-कुछ जानता है तू। तुम सब लोग मेरे साथ बगावत करना चाहते हो। एक-एक को फाँसी पर लटका दूंगी।···कविता ! इधर आ तो।"

अन्तिम वाक्य कहते-कहते रानी साहिबा का स्वर बहुत कोमल हो गया था।

कविता चुपचाप उनके सामने जा खड़ी हुई।

उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठा लिया और उसका सिर अपनी छाती से लगाकर बोलीं, प्यारभरे स्वर में—"मुझपर तेरा विश्वास नहीं है बहू ?···तू अपना भेद मुझे बताना क्यों नहीं चाहती ?"

रानी साहिबा के भाव-परिवर्तन से कविता और वारिस चकित हो उठे। उनके दिल की थाह पाना दोनों के लिए असम्भव था।

थोड़ी देर रुककर वे करुण स्वर में बोलीं—"बहू ! अचल की इतनी बड़ी दुश्मन तो मैं नहीं थी कि उसे देखकर डँस लेती ? इस बूढ़ी से ऐसी क्या गलती हो गई कि इसके बेटे को तुम लोगों ने अब तक छिपा रखा ? चाहे उसको मुझे न दिखाती, मगर बता तो देती कि मेरा बच्चा सही सलामत अजगर के पेट से निकल आया है ?···बहू ! तूने मेरी छाती पर लात मार दी ! माँ का बेकस दिल तू नहीं देख सकी। इतनी बड़ी सजा तूने किस अपराध पर दी बहू ? यह वारिस छोटा था तो कितना भला था, मगर जवान होकर साँप बन गया।"

रानी साहिबा की आँखों से आँसू बह चले। बड़ी-बड़ी बूंदें बूढ़े गालों पर उतरकर चमचमा उठीं। उतनी बड़ी ममता पाकर कविता का कलेजा पानी-पानी हो आँखों से निकल चला।

वारिस दौड़कर रानी साहिबा के पैरों पर गिर पड़ा—"या खुदा, रानी माँ के आँसू पोंछ दे ! हमसे बेहद गलती हुई माँ ! इस नादान वारिस को माफ कर दो।"

एकाएक रानी साहिबा के आँसू रुक गये ; चेहरे की करुणा गम्भीरता में परिवर्तित हो गई—"उठो तुम लोग। बहू ! तू अचल के पास जा। उसका दिमाग खराब हो गया है न ! ठीक से दवा करना। ललित को भी अपने साथ लेती जा, बगल के कमरे में खेल रहा है। तू कहाँ चल दिया वारिस ?...अभी रुका रह तू।"

वारिस रुक गया। कविता चली गई।

"वारिस ! जब बदन का फोड़ा पक जाता है तो उसके लिए नश्तर जरूरी है न ?" रानी साहिबा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"बेशक हुजूर ! कमबख्त फोड़े खुदा कसम बगैर नश्तर के अच्छे अच्छे ही नहीं होते।"

"तो यह नश्तर उठा ला।" एक ओर उँगली से दिखाया रानी साहिबा ने।

"मगर वह तो हंटर है हुजूर !" वारिस आश्चर्यभरी वाणी में बोला।

"उसे लेकर मेरे पीछे-पीछे आ !" कहकर रानी साहिबा उठीं और दरवाजे की ओर बढ़ीं।

हाथ में हंटर लिये उनके पीछे चलता हुआ वारिस चकित था कि आज क्या हो गया है रानी साहिबा को ?

उनके पैर जब चंचल के महल की ओर बढ़े तो वारिस कुछ चौकन्ना हुआ, फिर भी उनके पीछे-पीछे बढ़ता गया। दूर से ही देखा उसने, आज चंचल के महल के चारोंओर बन्दूकधारी पहरेदार घूम रहे हैं। दिन को तो ऐसा पहरा पड़ता नहीं, फिर ?

रानी साहिबा को आते देखकर पहरेदार अदब के साथ खड़े हो गये। वारिस ने देखा—महल के सदर दरवाजे पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था। रानी साहिबा ने ताला खोला अपने पास की चाबी से, फिर वारिस को अन्दर करके बाहर से ताला लगा दिया और लौटने लगीं।

अपने को कैद देखकर वारिस चौंककर बोला—"मगर हुजूर ! कसूर ?"

एकाएक रानी साहिबा लौट पड़ीं और ताला खोलती हुई बोलीं—"ओह ! मेरा दिमाग खराब हो गया है वारिस ! मुझे भी तो

अन्दर आना था।"

ताला खोलकर रानी साहिबा भी भीतर प्रविष्ट हुईं और चंचल के कमरे की ओर बढ़ीं। वारिस समझ गया कि इस समय उनका मस्तिष्क किसी बात से इतना खराब हो गया है कि वे पागल-सी हो उठी हैं, तभी तो वे उसे बन्द करके लौटी जा रही थीं।

चंचल के कमरे में भी ताला लगा हुआ था। देखकर वारिस बहुत विस्मित हुआ।

ताला खोलकर रानी साहिबा अन्दर गईं। पीछे-पीछे वारिस भी था, हाथ में हंटर लिये।

चंचल पलँग पर बदहवास-सा लेटा था। रानी साहिबा को देखकर उठा ; बोला—"तुमने मुझे कैद किया है माँ ?"

"हाँ !" वे बोलीं गम्भीर स्वर में, और जाकर अस्त-व्यस्त-सी एक कुर्सी पर बैठ गईं ; हाँफने लगीं।

"मेरा कसूर ?" चञ्चल ने पूछा।

"पके फोड़े में नश्तर लगाने आई हूँ चञ्चल ! तेरा कसूर खुद तेरी जबान बोलेगी। वारिस ! कैदी को पचास कोड़े लगा।"

"हुजूर···"

"खबरदार जो मुँह से कोई बात निकली !" रानी साहिबा गरजकर बोलीं—"शुरू कर !"

सड़ाक !—वारिस के हाथ का हंटर चल पड़ा। अपने मालिक के दुश्मन के प्रति उसे तनिक भी दया नहीं थी।

सड़ाक !—चीख उठा चंचल। पहलवान हाथों का कोड़ा वज्र बनकर गिर रहा था।

"और जोर से !" रानी साहिबा ने तड़पकर कहा।

सड़ाक !···सड़ाक !···सड़ाक !

चञ्चल चीखने लगा—"माँ ! मुझे माफ करो···मेरा कसूर बता दो माँ !"

"वारिस का हंटर तेरा कसूर तो बता रहा है ! यह मत समझ कि तेरी एक भी शैतानी मुझसे छिपी है। मैं सब-कुछ जानती हूँ, आज से नहीं, बहुत पहले से ही। माँ की ममता बेटे का कसूर देखकर भी नहीं देखना चाहती थी। मेरे प्यार ने मेरा घर उजाड़ दिया।

तू दिन-पर-दिन बिगड़ता गया। अचल, कुँवरानी और ललित ने तेरा क्या बिगड़ा था ?...बोल ?...वारिस ! अगर हंटर ढीला आ तो तेरी ही पीठ पर बरसेगा।"

"मुझे छोड़ दो माँ !...मैं माफी माँगता हूँ।" चञ्चल गिड़-गिड़ाकर बोला।

वारिस का हंटर जब-जब पड़ता था, वह दर्द से चीख उठता था।

'माफी माँगना हो तो अचल, कुँवरानी, ललित और इस वारिस से माँग। बेहया ! तूने मेरी कोख गन्दी कर दी। यह भूल गया तू कि जो पैदा कर सकती है, वह मार भी सकती है। और जोर से वारिस ! इसके बदन की एक-एक टुकड़ी खाल अलग होकर गिर पड़े। मैंने चुपचाप समझाने की कोशिश की, मगर तेरी चाल बढ़ती गई। यह सुनकर कि अचल अजगर के पेट से जिन्दा निकल आया है और वह कुँवरानी के महल में पागल बना छिपा है, तूने फिर दूसरी चाल चली और डॉक्टर को डरा-धमकाकर कहा कि वह अचल को जहर का इञ्जेक्शन दे-दे। डॉक्टर को तू इतना नीच समझता है ?...तेरे कारण अचल इतना कष्ट भोग रहा है परन्तु तेरे कसाई दिल को अब भी दया नहीं आई ?...अचल के लिए मैं दिन-रात तड़पती रहती थी, परन्तु मेरे आँसू पोंछने के बदले तू मेरे जिगर में घाव किये जा रहा था ?"

चीखता-चिल्लाता चंचल जमीन पर गिर पड़ा—"अब बस करो माँ ! अब कभी गलती न होगी।"

"तू माँ के प्यार में पला, अब उसके क्रोध में तड़प-सिसककर मर। इसे साँप की तरह धुन डाल वारिस ! जिन्दा बचा तो सबको डँस लेगा।"

चंचल की चीख धीरे-धीरे कम होती गई। वारिस का हंटर चलता रहा। बेहोश हो गया चंचल।

O

अपने परदेसी को पाकर भी मैना तो खोई-खोई-सी रहती है। वह अब समझ गई है कि उसके प्रेम-वृक्ष में तृप्ति के फल नहीं लग सकते। परदेसी तो पराया धन है। उसपर मैना का कोई अधिकार

नहीं।

फिर भी मैना ने उसे प्यार किया है, और नारी का प्यार इतना खोखला नहीं होता कि उसपर आसानी से कोई और रंग चढ़ जाय। प्यार तृप्ति का माध्यम नहीं हो सकता। प्यार असीम है और तृप्ति सीमित—दोनों की कोई तुलना नहीं।

अबोध मैना को प्यार ने सजग बना दिया है। वह त्याग की परिभाषा जान गई है। आँसुओं को अब वह सँजोकर रखती है, अनमोल मोती समझकर।

बैठे-बैठे दिल नहीं लग रहा था, सो परदेसी का साथ छोड़कर वह चारदीवारी के अन्दर इधर-उधर घूम रही थी। कहाँ उसका छोटा-सा उजाड़ गाँव, जहाँ साँपों की फूत्कार कदम-कदम पर सुनाई पड़ती थी और कहाँ इस चारदीवारी के अन्दर बने हुए तीन-तीन महल, और हर महल में सम्पदा का अतुल कोष! उसका परदेसी पराया न बन गया होता तो उसके साथ यहाँ रहकर वह कितनी खुश होती!

मगर दिल के अन्दर पतझर लिये मैना को बाहर की हरियाली कैसे अच्छी लगे?

विचार-सागर में निमग्न मैना दूर निकल आई थी। कुछ आदमियों की बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी। चौंककर सिर उठाया उसने; देखा—वह चारदीवारी के मुख्य फाटक के पास तक पहुँच गई थी।

एकाएक उसकी दृष्टि फाटक के बाहर खड़े दो भयानक आदमियों पर पड़ी। उसका सारा शरीर भय से सिहर उठा और वह लपककर आड़ में हो गई। फिर चारदीवारी से सटे-सटे फाटक के नजदीक बढ़ी, ताकि वह उनकी बातें सुन सके।

उन दोनों की दृष्टि अभी मैना पर नहीं पड़ी थी। वे अचल के महल की ओर इशारा करके कुछ बातें कर रहे थे।

उन दोनों की सूरतें एक-से-एक भयंकर थीं। एक था अजगर की खाल का वस्त्र पहने, हाथ में मणिवाला साँप पकड़े छोटी पहाड़ी-सा दीर्घाकार टिकोरा, जिसकी भयानकता का डर मैना की हर साँस में समाया हुआ था; और दूसरा था काले देव-सा लम्बा-

चौड़ा, मैना को टिकोरा के हाथ से छुड़ा लानेवाला जमुना।

दो राक्षसों में इतनी दोस्ती देखकर मैना का शरीर काँपने लगा। हृदय की धड़कनों के तेज स्वर को दोनों हाथों से दबाये, निस्तब्ध रह वह उनकी बातें सुनने लगी।

"मैना भी उसी महल में है ?" टिकोरा का भयानक स्वर था।

'हाँ, और तुम्हारा दुश्मन परदेसी भी। कुछ करने की हिम्मत है ?"

"टिकोरा डरता नहीं। इस साँप को देख रहे हो न ? इसके मुँह में मणि है, उगल दे तो रात उजली हो जाय, काट ले किसी को तो उल्टी साँस भी न ले सके ; अन्तर-मन्तर दवा-दारू सब बेकार है। अभीही इसे परदेसी पर फेंकता हूँ, देखूं उसकी जान कौन बचाता है ?···जानते हो, मन्तर से बाँधकर मैं इस साँप को छोड़ दूंगा। यह जाकर परदेसी को खोज लेगा और उसे डँसकर वापस आ जायगा। हा हा हा !"

टिकोरा की भीषण हँसी सुनकर छिपी हुई मैना का कलेजा दहल गया।

"ठीक है।" जमुना कह रहा था—"काम फतह हो गया तो मैना को पा जाओगे और छोटे कुँवर भी तुम्हें काफी इनाम देंगे।"

"इनाम का लालच मत दो तुम मुझे।" इस बार टिकोरा का स्वर बेहद भयानक हो गया था—"मैं टिकोरा हूँ और टिकोरा ने अब तक अपने किसी भी दुश्मन को जिन्दा नहीं छोड़ा। तुमने मुझे मैना का पता तो बताया, मगर मैं तुम्हारी बन्दूक के कुन्दे की चोट अब तक नहीं भूला हूँ।"

"क्या कहते हो तुम टिकोरा ?" उस दुर्दान्त सँपेरे की भावभंगी देखकर जमुना भी डर गया था।

"अगर तुमने उस दिन मैना को मुझसे अलग न किया होता तो मैं अब तक अपने गाँव पहुँचकर चैन करता होता, हाथ में साँप पकड़े भूखा-प्यासा मैना की खोज में शहर की खाक न छानता।"

टिकोरा मन-ही-मन कुछ बुदबुदाने लगा। हाथ में निश्चल-पड़े हुए साँप ने सजग होकर एक तीव्र फूत्कार छोड़ी।

डरकर बोला जमना—"टिकोरा !"

"टिकोरा ने दुश्मन को माफ करना नहीं सीखा, लो !"

कहकर उसने हाथ का साँप जमुना के सिर पर फेंक दिया।

विकराल काला साँप जमुना के गले से लिपट गया।

और दूसरे ही क्षण जमुना का लम्बा-चौड़ा शरीर निश्चल होकर जमीन पर आ गिरा। टिकोरा ने झुककर साँप को पुनः हाथों में ले लिया और भीषण रूप से हँसा।

छिपी हुई मैना के मुख से एक चीख निकलते-निकलते बची। वह दौड़ पड़ी अचल के महल की ओर !

अचल कमरे में बैठा था चुपचाप। मैना को बेतहाशा भागी आती हुई देखकर वह उठ खड़ा हुआ।

मैना हाँफ रही थी; आकर उसके सामने खड़ी हो गई—"टिकोरा···साँप···जमुना···"

"क्या है मैना ?"

"टिकोरा आ पहुँचा है परदेसी !" घबड़ाये हुए स्वर में बोली वह—"उसके हाथ में बापू का मणिवाला साँप है। तुम्हारी खैर नहीं परदेसी ! यहाँ से भागना पड़ेगा। उसने यह महल देख लिया है। साँप को मन्तर से बाँधकर तुम्हें काटने के लिए छोड़ेगा—कहता था।"

"तुम्हें भी देख लिया उसने ?" अचल भी घबड़ा गया था।

"नहीं···मगर जमुना ने उसे सब-कुछ बता दिया है। वह टिकोरा हरामी मेरे पीछे पागल हो गया है परदेसी ! मुझे न पाकर वह सब-कुछ कर डालेगा। मैं उसके पास जाऊँगी। मुझे जाना ही पड़ेगा। तुम्हारी जान की खातिर आज मैं अपनी कुर्बानी दे दूँगी परदेसी !"

"नहीं मैना ! तुम मुझे यों छोड़कर कहीं नहीं जा सकती। मैं अपनी जान दे दूँगा।" अचल ने मैना को अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

"अच्छा ठहरो, मैं कुँवरानी से मिलकर अभी आई। तुम जरा चौकन्ने बैठे रहो···कौन जाने वह हरामी साँप ही छोड़ दे !"

कहकर मैना कविता के कमरे की ओर बढ़ी।

डॉक्टर दास कविता के सामने बैठे हुए चञ्चल के विषय में

बातचीत कर रहे थे। वारिस भी वहाँ मौजूद था।

"क्या है मैना ? घबड़ाई क्यों हो ?" कविता ने पूछा।

"गजब होना चाहता है। आप जल्दी कुछ इन्तजाम कीजिये, नहीं तो कुँवर साहब की जान खतरे में पड़ जायेगी।" मैना ने थोड़े में सब बातें कविता को समझा दीं।

वारिस उठता हुआ बोला—"खुदा कसम ! मैं कुँवर साहिब को दिन-रात कन्धों पर उठाये खड़ा रहूँगा। साँप की मजाल नहीं की बगैर मुझे काटे उन तक पहुँचे···पहुँचने के पहले ही मैं उसकी गर्दन तोड़ दूँगा।"

मैना की घबड़ाहट ने सबको घबड़ा दिया था।

कविता तेजी से उठी। डॉक्टर दास भी उठ खड़े हुए।

तभी बाहर से अचल की चीख सुनाई पड़ी—"टिकोरा··· साँप···"

सब झपटकर कमरे से बाहर निकले।

अचल चीखता हुआ तेजी से दौड़ा आ रहा था और उसके पीछे-पीछे था एक विकराल काला साँप—आंधी की तरह फुफकारता हुआ।

स्वामिभक्त वारिस की भवें तन गईं। वह दौड़ा उस ओर, पूरी तेजी के साथ।

कविता, मैना और डॉक्टर दास वह दृश्य देखकर चित्रलिखित-से खड़े रह गये।

लोगों ने देखा—वारिस के पहुँचने के पहले ही साँप अचल के पैरों से लिपट गया और···

मैना के मुख से जोरों की चीख निकली। कविता बदहवास-सी हो जमीन पर बैठ गई। डॉक्टर दास उस ओर बढ़े जिधर अचल का निश्चल शरीर जमीन पर गिरा हुआ था और वारिस उसे हिला-डुलाकर देख रहा था। साँप का कहीं पता न था।

वारिस और डॉक्टर ने बेहोश अचल को उठाकर कमरे में पलँग पर ला सुलाया। जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ मांस चीरकर निकाल दिया डॉक्टर ने।

चारों ओर हाहाकार मच गया। वारिस छाती पीट रहा था।

कविता आँखों में उजड़ा संसार लिये खड़ी थी। मैना पलँग के पास बैठकर, साँप के जितने मन्त्र उसे मालूम थे, सब आजमा रही थी।

थोड़ी देर में रानी साहिबा भी आ पहुँचीं। अचल की दशा देखकर बदहवास-सी कुर्सी पर गिर पड़ीं। बूढ़ी पलकों से जवान बूँदें ढलक चलीं।

डॉक्टर दास कार पर घर चले गये थे, दवा लेने। दस मिनट बाद वे भी आ पहुँचे। इन्जेक्शन दिये जाने लगे।

अचल के दाँत बैठ गये थे। चेहरा काला पड़ गया। मुँह से झाग बह रही थी। मैना के मन्त्र बेकार गये और डॉक्टर की दवायें भी। मैना दूर जाकर रोने लगी। डॉक्टर ने करुण गम्भीरता से सिर हिलाया।

"वारिस! यह ताली ले···चंचल को यहीं ला खड़ा कर। इधर अचल की जान निकलेगी, उधर चंचल की भी।"

लोगों ने देखा, रानी साहिबा के हाथों में एक पिस्तौल थी।

वारिस ताली लेकर चला गया।

कमरे में पूर्ण सन्नाटा छा गया। अचल के जीवन से सभी निराश हो उठे।

"कुछ करो डॉक्टर!" रानी साहिबा की आवाज रो रही थी।

"कुछ कर पाता तो उठा न रखता।" हाथ मलता हुआ बोला डॉक्टर।

एकाएक मैना हिली। गम्भीर गति से चलती हुई वह पलँग के पास आ खड़ी हुई। गौर से उसने उस स्थान को देखा, जहाँ साँप ने काटा था और डॉक्टर ने मांस चीरकर घाव कर दिया था।

मैना की आँखों में एक चमक दिखाई दी, पुनः मुख पर करुणा छा गई। उसका मुख धीरे-धीरे नीचे झुका, और उस जहरीले घाव से जा लगा!

लोग चौंक पड़े, मगर शान्त रहे।

सँपेरे की बेटी साँप का जहर चूस रही थी, और लोग आश्चर्य में भरे देख रहे थे।

उसी समय चंचल को लिये वारिस आ पहुँचा। यहाँ की घटना वारिस ने उसे बता दी थी। आज उसके मुख पर भी पश्चात्ताप की

छाया झलक रही थी, आँखों में आँसू छलक आये थे।

रानी साहिबा ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा, फिर हाथ की पिस्तौल ठीक की, और तब उस ओर देखने लगीं, जिधर घाव से मुँह लगाये एक त्यागमयी प्रेमिका अपने प्रेमी का जहर चूस रही थी।

मैना का शरीर ज्यों-ज्यों काला पड़ने लगा, त्यों-त्यों अचल के बेहोश शरीर पर चमक आने लगी। मैना की आखिरी कोशिश बेकार नहीं गई थी।

सब ध्यान से उस ओर देख रहे थे। अब अचल का शरीर रह-रहकर काँप उठता था, और मैना निश्चल होती जा रही थी।

कविता आगे बढ़ आई थी और ध्यान से अचल की ओर देख रही थी।

एकाएक मैना का शरीर बेहोश होकर जमीन पर लुढ़क गया। वारिस ने लपककर उसे सँभाला।

उसी समय अचल का शरीर जोरों से काँपा। उसने कराहकर करवट बदली। आँखें धीरे-धीरे खुल गईं।

कविता का दिल तेजी से धड़कने लगा, अचल की आँखों में पहले-जैसा तेज देखकर! उनमें विक्षिप्त मस्तिष्क की छाया न थी। पुतलियाँ सतर्कता के साथ इधर-उधर देख रही थीं।

हे ईश्वर! कविता की साधना क्या सफल होने जा रही है? क्या अचल का विकृत मस्तिष्क अब ठीक हो चला है?

तभी अचल की पुतलियाँ थोड़ी देर के लिए उसके चेहरे पर आ रुकीं और मुख से शिथिल स्वर निकला—"कविता! मुझे सहारा देकर उठा दो।"

कविता को जैसे दुनिया की सारी निधि मिल गई। वह दौड़ पड़ी। आँखों से बह चलते आँसुओं को सम्हाला उसने और धीरे से अचल को उठाकर बिठा दिया।

"वह अजगर कहाँ गया कुँवरानी, जिसने अभी-अभी मुझे पकड़ लिया था? और तुम इस जंगल में कैसे आ पहुँची?···अरे! मैं तो महल में हूँ···क्या बात है कविता?"

अचल को बरसों पीछे की घटना ताजा लग रही थी।

"सब-कुछ सुनोगे बेटा! कहानी बड़ी लम्बी है।" रानी साहिबा

ने आगे बढ़कर उसके सिर को अपने सीने से लगा लिया।

"माताजी! मुझे माफ कर दो।" बोला अचल—"मेरी असावधानी से मुझे एक अजगर ने पकड़ लिया था, लेकिन बच गया मैं। वारिस कहाँ है? उसी ने मुझे पीपल के नीचे ला खड़ा किया था।"

वारिस मृतप्राय मैना को सम्हाले हुए था और डॉक्टर दास उसे इञ्जेक्शन दे रहे थे। जिस नारी ने उसके मालिक की जान बचाई थी, उसके लिए शक्ति-भर प्रयत्न करना उनका कर्त्तव्य था।

अचल की पुकार सुनते ही वारिस दौड़कर उसके पैरों पर जा गिरा; रो-रोकर बोला—"या खुदा! जिसे तू जिन्दगी बख्शे, उसे मार सकने की ताकत किसी में नहीं। मेरा कसूर माफ कर दो हुजूर! अल्लाह कसम, मैंने बहुत बड़ी गलती की थी।"

"ओ चंचल! वहाँ क्या खड़ा है तू चुपचाप?" अचल ने दूर खड़े चंचल को पुकारा—"माताजी! आपने इसे कुछ कहा-सुना है क्या?"

"मैं कैदी हूँ भैया!" चंचल रुआँसा होकर बोला।

"भला-चङ्गा तो खड़ा है, हाथ-पैर भी खुले हैं, यह कैसी कैद है? माताजी! इसकी तो कोई गलती नहीं थी···मैं स्वयं ही उठकर अजगर के पास चला गया था। इसे माफ कर दीजिये···इधर आ न चंचल!"

चंचल दौड़कर अचल के पैरों से लिपट गया; बोला—"मुझे माफ कर दो भैया! मैंने बहुत-से अपराध किये हैं। मेरे कारण तुम्हें बहुत-से कष्ट झेलने पड़े, अब कभी ऐसी गलती न होगी।"

अचल हैरान स्वर में बोला—"यह क्या बक रहा है माताजी? पागल हो गया है क्या? अरे, इसका तो सारा बदन सूजा हुआ है।"

तभी बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई पड़ा। हाथ में विकराल साँप पकड़े, अजगर की खाल पहने एक भयानक व्यक्ति ने वहाँ प्रवेश किया।

वह था टिकोरा! मैना के पीछे पागल वह निर्दयी सँपेरा!

जमीन पर पड़ी हुई मैना पर दृष्टि जाते ही वह दौड़कर वहाँ पहुँचा। मैना को गोद में उठाकर गम्भीर वाणी में बोला—"मेरी

मैना ! जिस बात से मैं डर रहा था, आखिर तूने वही किया। तूने साँप का जहर चूस लिया।"

मैना बेहोश थी। टिकोरा को जवाब न मिला।

वारिस उसकी ओर बढ़ा तो वह चिल्ला उठा—"खबरदार ! मेरे पास कोई आयेगा तो यह साँप खींच मारूँगा। तुम लोग मेरे दुश्मन हो। मेरी मैंना छिन गई मुझसे···मगर मैं टिकोरा हूँ, हारकर भी हारना मैं नहीं जानता। अपनी पूरी ताकत लगा दूंगा। जय उस्ताद !"

टिकोरा के भयानक होंठ हिलने लगे। जलती आँखें एकटक मैना का मुरझाया मुख देखने लगीं।

"यह कौन है कविता ? बड़ा भयानक आदमी है···और वह लड़की कौन है ? क्या हुआ है उसे ?" अचल ने पूछा। मस्तिष्क ठीक हो जाने पर वह टिकोरा, मैना सबको भूल गया था।

परिस्थिति कविता की समझ में आ गई। उसने संक्षेप में सारी घटनायें बता दीं। सुनकर अचल को बेहद आश्चर्य हुआ कि अजगर के निगलने की घटना पिछले साल की है और उसने पागलपन की अवस्था में उस लड़की से प्रेम किया था।

उधर टिकोरा के मन्त्र एक के बाद एक असफल होते जा रहे थे। अपनी आँखें खोलकर उस भयानक सँपेरे ने मैना को देखा; बोला—"तुम वापस नहीं लौट सकती मैना ?···टिकोरा को हरा दिया तुमने। मैं अपनी हार कबूल करता हूँ। जाना हो तो चली जाओ, मगर एक छन के लिए आँखें खोलकर दो बातें कर लो !"

टिकोरा की आँखें पुनः बन्द हो गईं। होठ बुदबुदाने लगे।

दस मिनट के बाद मैना का शरीर जरा-सा हिला। होठों से क्षीण आवाज निकली—"किसने बुलाया मुझे ?"

"मैं हूँ मैना !···तुम्हारा टिकोरा···आँखें खोलो !" टिकोरा की तेज आँखें तीव्र रूप से मैना की बन्द पलकों पर पड़ रही थीं।

कुछ देर बाद मैना की पलकें हिलीं और धीरे-धीरे खुल चलीं, जैसे कोई अदृश्य शक्ति बलपूर्वक उसकी आँखें खुलवा रही हो।

उसके मुख से पुनः वही बेहोशी-भरा स्वर निकला—"क्या है टिकोरा ?···क्यों बुलाया मुझे ?"

"जा तो रही हो मैना," भयानक टिकोरा रो पड़ा—"मगर सुन लो ! तुम्हारे पीछे टिकोरा की एक-एक साँस गाँव की पहाड़ियों पर भटका करेगी । जाते-जाते मुझे माफ करती जाग्रो मैना !"

"माफ किया···परदेसी कहाँ है ?"

"देखोगी उसे ?" उसके अवश शरीर को हाथों पर लिये हुए टिकोरा अचल के सामने ग्रा खड़ा हुग्रा—"देख लो मैना, अपने परदेसी को ।"

मैना का विह्वल निगाहें परदेसी की ग्रोर उठीं, फिर बन्द हो गईं ; मुँह से उखड़ा हुग्रा स्वर फूटा—"परदेसी ! तुमको···मैंने··· अपनी···जान···दी है, भूलना नहीं···याद···करते···रहना···मैं चली···"

ग्रौर मैना का सिर एक ग्रोर को लटक गया ।

"परदेसी बाबू !" टिकोरा बोला—"ग्राज तुम्हारे दरवाजे से हार लेकर जा रहा हूँ । मैना मेरी है, तुम इसे नहीं पा सकते । खबरदार, कोई पास ग्रावेगा तो यह साँप फेंक मारूँगा । हा-हा-हा !"

भीषण ग्रट्टहास करता हुग्रा टिकोरा मैना की लाश को हाथ पर रखे, कमरे से बाहर निकल गया ।

धीमी गति से वह सदर फाटक की ग्रोर बढ़ रहा था । लोग दूर से भयानक सँपेरे की गम्भीर चाल देख रहे थे । बहती हुई हवा मैना की लाश से टकराकर सिर झुकाये ग्रलग हटी जा रही थी । त्याग की वह प्रतिमा ग्रपनी पीड़ा का इतिहास लिये चुपचाप सो रही थी ।

सड़क पर से किसी की दर्दनाक ग्रावाज ग्रा रही थी—

"मत करियो रे कोई परदेसी से प्रीत,
कोई बेदरदी से प्रीत !"



भाटिया कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा कुमार ब्रादर्स प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली